चौरासी वैष्णवनकी वार्ता



श्रीः

श्री गोपीजनवल्लभो विजयतेतराम्

श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

चौरासी वैष्णवनकी वार्ता.

★

अनुक्रमणिकासहित

यह पुस्तक

पुष्टिमार्गीय श्रीवल्लभ-संप्रदायी वैष्णवनके

नित्य नैमित्तिक पठनार्थ

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण : मार्च २०१८, संवत् २०७४

मूल्य : २५० रुपये मात्र

Printed by Shri Sanjay Bajaj for M / s Khemraj Shrikrishnadass proprietors Shri Venkateshwar press Mumbai 400 004. at their Shri Venkateshwar press, 66, Hadapsar Industrial Estate, Pune-411013.

अथ चौरासीवैष्णवनके वार्ताकी

अनुक्रमणिका.

★

(४) चौरासीवैष्णवनकेवार्ताकी अनुक्रमणिका.

श्रीकृष्णायनमोनमः

श्रीगोपीजनवल्लभायनमोनमः

अथ श्रीआचार्यजीमहाप्रभूनके सेवक चौरासी वैष्णवकी वार्ता लिख्यते

★

अथ दामोदरदास हरसानीकी वार्ता

एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू पृथ्वीपरिक्रमाकौं पधारे हुते तब तहां दामोदरदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके साथ है सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप दामोदरदासों अपने श्रीमुखसों दमला कहते जो यह मार्ग तेरेलिये प्रगट कीनों है सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू सो पृथ्वीपरिक्रमा करते श्री गोकुल पधारे सो श्री गोकुलमें एक चांतरा श्रीगोविंदघाट ऊपर हुतो तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभू आय विश्राम करते ताठोर ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी बैठक है और श्रीद्वारकानाथजीको मन्दिर है तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभू बैठे हुते ता समय श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको महा- चिंता उपजी जो श्रीठाकुरजीने तो आज्ञा दीनी है जो तुम जीवनकों ब्रह्मसंबन्ध करावो तब श्रीआचार्यजी

महाप्रभू अपने मनमें विचारें जो जीवतो दोषवंत है और श्रीपुरुषोत्तमजीतो गुणनिधान हैं तातें केसें संबन्ध होय तातें चिन्ता उपजी सो अत्यंत आतुर भए तासमय श्रीठाकुरजी आप तत्काल प्रगट होयकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों पूंछें जो तुम चिंता आतुर क्यों हो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कहे जो जीवको स्वरूपतो तुम जानतही हो दोषवंत है सो तुमसों संबन्ध केसें होय तब श्रीठाकुररजी आप कहें जो तुम जीवनकों ब्रह्मसंबन्ध करावोगे तिनको हों अंगीकार करूंगो तुम जीवनकों नाम देउगे तिनके सकल दोष निवर्त होंयगे ये बातें श्रावणशुदि ११ के दिन अर्द्धरात्रिकों भई प्रातकाल पवित्राद्वादशी हुती ताते पवित्रा सूतको करिराख्यो हुतो सो पवित्रा श्रीपूररुषोत्तमजीकों पहरायो मिश्री भोग धरी ता समयके ये अक्षरहुते ताकों श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप सिद्धांतरहस्य ग्रंथ कीये हैं ।

सो श्लोक॥ श्रावणस्यामले पक्षे एकादश्यां महानिशि।
साक्षाद्भगवताप्रोक्तमेतदक्षरमुच्यते ॥ १ ॥

ता समय श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने पूंछो जो दमलाते कुछ सुन्या तब दामोदरदासने बीनती कीनी जो महाराज श्रीठाकुरजीके वचन सुनतोसही परन्तु कुछ समझो नहीं तब

श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कही जो मोको श्रीठाकुरजीनें आज्ञा कीनी है जो तुम जीवनकौं ब्रह्मसंबंध करावोगे तिनकौं हों अंगिकार करूंगो तिनके सकल दोष निवृत्त होंयगे ताते ब्रह्मसंबंध अवश्य करनो ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

बहुर श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने श्रीठाकुरजीके पास यह मांग्यो जो मेरे आगे दामोदरदासकी देह न छूटे और श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने दामोदरदाससों कछू गोप्य न राखते और श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीभागवत अहर्निस देखते कथा कहते और मार्गको सिद्धांत भगवतलीला रहस्य श्रीआचार्यजीमहाप्रभू आप दामोदरदासके हृदयमें स्थापन कीयो ॥ ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

और एकसमय दामोदरदास और श्रीगुसांईजी एकान्तमें बैठे हुते तब श्रीगुसांईजीनें दामोदरदाससौं पूंछौ जो तुम श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको कहाकरि जानतहौ तब दामोदरदासने कही जो हम तौ श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकौ जगदीश जो श्रीठाकुरजी तिनहूंते अधिककरि जानत हैं तब श्रीगुसांईजी दामोदरदाससोंकहैं जो तुम ऐसे क्यों कहत हौ जो श्रीठाकुरजीतें श्रीआचार्यजी बडे हैं तब दामोदरदासनें कही जो महाराज दान बडौके दाता बडौ काहूके पास धन बहुत

होय तौ राज कहाकरे जो देय ताको जानिये और श्रीआ-चार्यजी महाप्रभूनको सर्वस्व धन श्रीठाकुरजी हैं सो हम जीव-नकी दान किये वातें हम श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकों सबते बडे कारि जानत हैं ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

और एकसमय श्रीआचार्यजी महाप्रभू तथा श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें बैठे हुते पास द्वैचार वैष्णव हँसिवे खैलवैके बैठे हुते आप उनसौं हंसते खैलते मसखरी करते बहुत प्रस-न्नतामें उनसों खेलवेकी वार्ता करतहुते ता समय दामोदरदास आये ता समय श्रीगुसांईजीनें बहुत आदर सन्मान जो कियौ पाछै दामोदरदास बैठे तब श्रीगुसांईजीसों दामोदरदा-सने कही महाराज अपनो मार्ग निश्चयतको नाही यह मार्ग अत्यंत कष्ट आतुरताको है तब श्रीगुसांईजीने कही जो तुम आछी बात कहतहौ पारि हमकौ जब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपा होयगी तब कष्ट आतुरता होयगी यह मार्गता श्रीआचार्यजी महाप्रभूनका कृपाते न होय तब दामोदरदास साष्टांग दंडवत कारिके बीनतीकी जो हमकौ तो एकवार राजसों बीनती करनीहै पाछें आप प्रभूहो भली जानोंगे सो करोगे पर यह मार्गतो या भांतिको है तब श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भए और कहें जो हमको यह वार्ता श्रीआचार्यजीद्वारा है और कहै जो तुम

(६) चौरासीवैष्णवनकेवार्ताकी अनुक्रमणिका.

इति चौरासीवैष्णवनके वार्ताकी अनुक्रमणिका समाप्त.



कृष्णदासमेघनछत्रीकी वार्ता

एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभूनने पृथ्वीपरिक्रमा करी तब कृष्णदासमेघन साथ है सो बद्री नारायणके परली ओर किरनीनाम पर्वत है सो तहांते एक बडी शिलागिरी सो कृष्णदासने हाथसो थांभी तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू प्रसन्न भये तब कृष्णदाससों कह्यौ जो मांगि कहा मांगतहै तब तीन वस्तु मांगी एक तो मुखरताको दोष जाय दूसरे मार्गको सिद्धांत समझों तीसरे मेरे गुरुके घर पधारो तामें दोय वस्तु दीनी गुरूके घर पधारवेकी नाहीं कीनी बहुर बद्रिकाश्रमते आगे पधारें जहां जीवकी गम्य नाहीं है तहां वेदव्यासजीको स्थान है तहां पधारे तब कृष्णदाससों कह्यो जो तू ठाडो रहियौ तब श्री आचार्यजी महाप्रभू आगें पधारे तब वेदव्या-सजी साम्हे आये सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको अपने धाममें ले आये पाछें वेदव्यासजीने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यौ जो तुमने श्रीभागवतजीकी टीका कीनी है सो मोको सुनावो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने जुगलगीतके अध्यायकौ एक श्लोक कह्यौ ॥

सो श्लोक-वामबाहुकृतवामकपोलोवलितभ्रूधरार्पितवेणुं
कोमलांगुलिनिराश्रितमार्गगोप्यईरयतियत्रमुकुन्दः ॥१॥

या श्लोकको व्याख्यान कह्यो सो तीन दिनमें सम्पूर्ण-भयौ तब वेदव्यासजीने बीनती करी जो मैं या भागवतके व्याख्यानकी अब धारना करि सकत नाहीं तातें अब क्षमा करौ पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने वेदव्यासजीसों कह्यौ जो तुम वेदांतके ऐसें सूत्र कहा कीयें जो मायावादपर अर्थ लाग्यौ तब व्यासजीने कह्यौ जो मैं कहा करूं मोको आशा ही ऐसी हुती जो ऐसे अर्थकरियों तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कही जो मैं ब्रह्मवादपर अर्थ कियो है सो व्यासजीको सुनायौ सो व्यासजी सुनकर बहुत प्रसन्न भये ता पाछे वेद-व्यासजीसों बिदा होयके तीसरे दिन पधारे तब कृष्णदाससों कह्यौ जो तू गयो नाहीं सो काहेते तब कृष्णदासने कही जो महाराज हौं कहां जाऊं मोकों तुम्हारे चरणारबिन्द बिना और आश्रय नाहीं है तब यह सुनके श्रीआचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये तब कह्यौ जो मांगि तब वेही तीन वस्तु मांगी एक तो मुखरताको दोष जाय दूसरे मार्गको सिद्धांत समझो तीसरे मेरे गुरुके घर पावधारौ सो तामें दोय वस्तु दीनी गुरूके घर पधारवेकी नाहीं कीनी ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

बहुर एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू गंगासागर पधारे तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभू पोढे हुते तहां कृष्णदास पाव

दाबत हुते तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू मनमें विचारू जो धानके मुरमुरा होय तो लीजियै तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके अंतःकरनकी कृष्णदास मेघनने जानी इतनेमें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको निद्रा आई तब श्रीकृष्णदास उठिकें गंगा सागर ऊपर आये तब देखें तौ पार एक दीया बरत है ताकी अटकरतें पैरके गंगाजीपार आये तहां गांव है सो खेतमेंते गीलेधान कटवाये तहां गांवमें जायकें भर भूजाकौ टकाकी जगह चारटका देके मुरमुरा सिद्ध करवाये तब लेके आये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके चरणारबिन्द दाबके जगाये और मुरमुरा आगैं राखै तब कह्यो राज-आरोगो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने पूछो जो तू कहांते लायो तब समाचार कहै जो महाराज मैं पारते लायौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये तब कह्यो जो मांगि तब वेही तीन वस्तु मांगी मुखरताको दोष जाय मार्गको सिद्धांत मेरे हृदयमें आवै तीसरे मेरे गुरुके घर पाव धारौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यो जो जीव कहां मांगि जानें यासमय जो मांगि तौ सोई देतौ जो कहतौ तौ श्रीठाकुरजीको स्वरूप दिखाव तौ तहांते श्रीआचार्यजी महाप्रभू सोरों पधारे तब कृष्णदासने बीनती करिकें कह्यौ जो महाराज मेरे गुरू हैं सो बुलाय

लाऊं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो तू खेद पावैगौ पाछे कृष्ण दास अकेलो गुरूके पास आयौ तब कृष्णदासकौ गुरूने देख्यौ तब कृष्णदाससों गुरूने कह्यौ जो अरे तैंने और गुरू कीयौ तब कृष्णदासने कह्यौ जो मेंनें तौ और गुरू नाहीं कीयौ मेरे गुरू तो तुमहीं हो पर तुम्हारी कृपाते मेने पूरणपुरुषोत्तम पाये हैं तब गुरूने कहो जो पुरुषोत्तम क्यौं जानियै तब गुरूके आगे अग्निकी अंगीठी धक धकाती हुती तामेंते कृष्णदासने दोऊ हाथकी अंजुली भरिके अंगार हाथमें लियै और कह्यौ जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूजी पूरणपुरुषोत्तम होय तो मेरे हाथ मति जारियौ और भांति होंयतो मेरे हाथ भस्म होय जइयों सो एक मुहूर्तलो अग्नि हाथमें राखी तब गुरुने भय खाई और कह्यौ जो अग्निडार देउ पाछें उन गुरुनने कृष्णदासके हाथमेंसों अपने हाथसो पकरिके अग्नि डरवाय दीनी तब कृष्ण दास उहांते खेद पायके उठि आयौ यह प्रसंग सब श्रीवल्लभाष्टककी टीकामें श्रीगोकुलनाथजीने विस्तार करिके लिखाहै ॥ प्रसंग ॥२ ॥

बहुर मार्ग हृदयारूढ भयौ पाछें कदाचित गोप्य वार्ता होय सो सबनके आगे कहै पाछें काहूवैष्णवने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यो जो कृष्णदास सबनके आगे गोप्यवार्ता कहतहै तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कृष्णदाससो

न कहौ तौ कौन कहै हम तुमको देखतहैं तब अतिप्रसन्न होत हैं आप श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक जानिकें दामोदरदासकी शिक्षा मानत भये ताते बडेसोबडे ॥ प्रसंग ॥४॥

और प्रथम श्रीआचार्यजीमहाप्रभू श्रीठाकुरजीके पास यह मांग्यौ जो मेरे आगे दामोदरदासकी देह न छूटे ताको हेतु यह जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभू संन्यास ग्रहण करिवेको विचार मनमें करें तासमय श्रीगोपीनाथजी श्रीगुसांईजी यह दोऊ भाई बालक हुते तातें मार्गको सिद्धांत वार्ता श्रीआचार्यजी महाप्रभू संन्यास ग्रहणकीए तब कितनेक दिना पीछे श्रीगुसांई जीने अक्काजीसौं पूछौ सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने मार्ग प्रगट कीनोहै सौ उच्छवकौ कहा प्रकार है हमतो कछू जानत नाहीं तब श्रीअक्काजीने कह्यो जो मार्ग तथा उच्छवको प्रकार सब दामोदरदाससौं कहेहै सो तुम उनसों पूछौ तुमसौं दामोदरदास कहैगो तब श्रीगुसांईजी दामोदरदासने बहुत सन्मानकरि भक्तिभावसों घरमें पधराये पाछैं उच्छवको प्रकार श्रीगुसांईजीनें पूछो सो दामोदरदासने सब कह्यौ ॥ प्रसंग ॥ ५ ॥

और एक समय दामोदरदासके पिताकौ श्राद्ध दिनहुतौ वा दिन श्रीगुसांईजी दामोदरदासके घर पधारे और दामोद-

रदासकों श्राद्धकरवायो पाछै उत्थापनकै समय दामोदरदास दर्शनकों आये तब श्रीगुसांईजीनें कही जो मोकों श्राद्धकरवायेकी दक्षिणामें एकबात कहूंगो सो सिद्धांतरहस्यके डेढ श्लोकको व्याख्यान कहे यह ऐसी बात है तब श्रीगुसांईजी नें कहीं जो आगे कहौ तब दामोदरदासने कही जो मैंने तौ इतनोही संकल्प कीयौहै तब श्रीगुसांईजीके आगे कही श्रीगुसांईजी चुपकररहे पाछें दामोदरदासने मार्गके प्रनालिका श्रीगुसांईजीके आगे कही श्रीभागवतकी सुबोधिनी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ग्रन्थकी टीका और रहस्यवार्ता श्रीआचार्यजी महाप्रभूकहेहैं सो सब कही ता पाछैं श्रीगुसांईजी दामोदरदासको नमस्कार करन न देते याते जो श्रीगुसांईजी अपने मनमें विचारे जा श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको स्वरूप दामोदरदासके हृदयविषें सदासर्वदा विराजमानहै तो इन पास दंडौत नमस्कार न करवानी याते नमस्कार न करने देते पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें दामोदरदासको दर्शनदीयो और आज्ञादी जा अबते तू श्रीगुसांईजीको चरणोदक नित्यलीयौकर तब प्रातःकाल दामोदरदास श्रीगुसांईजीके पास आये और चरणोदक मांग्यौ तब श्रीगुसांईजीने चरणोदककी नाहीं कीनी तब दामोदरदासनें श्रीगुसांईजीसों कही जो मोको श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी आज्ञा भई है और दर्शन भए हैं

और कह्यो जो तू श्रीगुसांईजीको चरणोदक नित्य लीजियौ तब श्रीगुसांईजी न चरणोदक दियौ और दामोदरदासकौ श्रीआचार्यजी महाप्रभू तीसरे दिन दर्शन देते मार्गकी रहस्य वार्ता कहते और कदाचित तीसरे दिन दर्शन न हो तो तादिन दामोदरदासके पेटमें पीडा होती अत्यंत कष्ट पावते पाछें जब दर्शन होतौ तब तत्कालकष्ट निवर्तहो जातो ऐसे कितने वर्षपर्य्यंत दामोदरदासकों श्रीगुसांईजीने दर्शनदीनो तथा श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने दर्शन दीनो ऐसीकृपा करते जो बात होती सो दामोदरदास श्रगुसांईजीके आगे कहते और मार्गके प्रकारकी वार्ता अहर्निश कहते जो दामोदरदासके हृदयमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभू आप विराजमान हैं ताते दामोदरदासको दंडौत न करन देते और कहते जो दामोदरदासकी वार्ताको पार नाहीं ऐसे मार्गके टेकके कृपापात्रहैं ॥ प्रसंग ॥ ६ ॥

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू दामोदरदासकौं पूंछैं जो दामोदरदास तू श्रीगुसांईजीकौ कहाकरि जानतहौ तब दामोदरदासने कही जो महाराज हमतो तुम्हारे पुत्रकरि जानतहैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने दामोदरदासकौ आज्ञा

दीनी जो ऐसे तुमसोको जानतहो तैसे इनको स्वरूप जानियो और श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने शृंगाररस मंडनग्रन्थ कीयोहै तामें लिखे हैं ताते ये दामोदरदास ऐसे कृपापात्र भगवदीय है ॥ प्रसंग ॥ ७ ॥

और प्रथम श्री आचार्यजी महाप्रभू दामोदरदासों कह्यो जो यह मार्ग तेरे लिखे प्रगट कियो है ताको हेत यह जो जहांलगि श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके मार्गकी स्थित है तहांतांई दामोदरदासकी स्थित गोप्य है पाछे दामोदरदासने कह्यो जा मैं श्रीठाकुरजीके वचन तो सुने पर कुछ समझ्यो नाहीं वा समय श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यो जो अजहूं दशजन्मको अंत-रायहै ताको हेतु यह जो जब लग श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके मार्गकी स्थित है तहां तांई दामोदरदासके प्रागट्य फेर फेर हैं मार्गके स्थंभ प्रथम यातें कहैं श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने दामोदरदासके हृदयमें भगवदलीला स्थापी संपूर्ण सृष्टिको सम्बोधन करिवेको ताको यह हेत जो जब लगि श्रीआचा-र्यजी महाप्रभूनके मार्गकी स्थित है तब लगि दामोदरदासकी हूँ स्थित है सो वे दामोदरदास ऐसे टेकके कृपापात्र भगव-दीय हैं ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥८॥ वैष्णव ॥ १ ॥

जो तू गयो नाहीं सो काहेते तब कृष्णदासने कह्यौ जो महाराज तुम्हारी आज्ञा न मानों तौ सेवक काहेको ? सेवकको आज्ञामें चलनो सो कृष्णदास ऐसे कृपापात्र भगवदीय प्रभूनकी आज्ञा मानते ताते श्रीआचार्यजी महाप्रभू कृष्णदासके ऊपर सदा प्रसन्न रहते पाछें मुखरताको दोष मनमें न लावते ऐसे आप उदारराय जीवनकी ओर न देखते दया राखते और अपनी ओरते दया राखी जीवनको अंगीकार करते जीवनकी ओरको विचार न करते कृष्णदास मार्ग तथा घरमें सदैव रहते सो वे कृष्णदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ताको पार नहीं सो अब कहां तांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥७॥ वैष्णव ॥ २ ॥

अथ दामोदरदास सम्बलवारे खत्री कन्नौजके वासीकी वार्ता

सो दामोदरदासको एक पत्र तामेको पायो और स्वप्नमें वासें कह्यौ जो जा पत्रको बांचे ताकी तू सरण जैयो सो वह पत्र काहूंसों बांच्यौ न जाय सो कितेक दिन पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू कन्नौज पधारे तहां गांवके बाहिर आय उतरे और कृष्णदास मेघनको गांवमें पठायो और कह्यो

जो सीधोसामग्री ले आउ पारि काहूसों कहियो मती जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू यहां पधारे हैं तब कृष्णदास गांवमें जाय सीधो सामग्री सब लीनो सो लेके जब चलन लागे तब दामोदर दास ताही समय राजद्वारसे आवत हुते सो मार्ग जात कृष्णदासको देख्यो तब दामोदरदास घोडातें उतरके कृष्णदासके पास आये और दण्डवत कीये पाछे पूछो जो तुम कहांते आये और और श्रीआचार्यजी महाप्रभू पधारे हैं तब कृष्णदासने कह्यो जो आज्ञा नाहीं तब दामोदरदासने कह्यो जो यह श्रीआचार्यजी महाप्रभून विना काहेको आवै सो जब कृष्णदास चले तब पाछें दामोदरदास आये और घोडा हो सो पठाय दीयो सो कृष्णदासकों दूरते आवत श्री आचार्यजी महाप्रभूननें देख्यो पाछे दामोदरदासकों देख्यो तब दामोदरदासने दण्डवत कीनी तब कृष्ण दाससों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पूछो जो तैंनें यासों क्यों कहीं तब कृष्णदासने कह्यो जो महाराज मैंनें तो इनसों नाहीं कही तब दामोदरदासने बीनती कीनी जो महाराज इन मोसों नाहीं कह्यो हुंतो इनके पाछें २ चल्यो आयो हूं और श्रीआचार्यजी महाप्रभू नाहींकी ऐसो याते कन्नौज पधारेंगे तब पावन करने हैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू मनमें विचारे जो आज्ञा भई है सो आपही होयगी ताके लिये

नाहीं कही हुती पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें दामोदरदा-
ससों पूछो जो पत्र लायो है तब दामोदरदासने बीनती कीनी
जो महाराज पत्रको कहा काम है मोकों शरण लीजियै तब
श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कही जो तोकों आज्ञा भई है जो
यह पत्र बांचे ताकी तू शरण जइयो तातें तू पत्र लाउ तब
पत्र मँगायो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पत्र बांच्यो पाछें
वा पत्रको अभिप्राय दामोदरदाससों कहो दामोदरदासकों
पाछें नाम सुनायो पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको दामो-
दरदासने अपने घर पधराये पाछें दामोदरदास तथा दामोद-
रदासकी स्त्री दोउ जने स्नान करिकें श्रीआचार्यजी महाप्र-
भूकी शरण आये तब दामोदरदासको समर्पण करावायो और
दामोदरदासकी स्त्रीकों प्रथम नाम सुनायो पाछें श्रीआचा-
र्यजी महाप्रभूनने समर्पण करवायो तब दामोदरदासने
बीनती कीनी जो महाराज अब हमको कहा आज्ञाहै अब
हम कहा करें तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें आज्ञा करी जो
अब तुम सेवा करौ तब दामोदरदासने कही जो महाराज सेवा
कौन भांति करें तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कही जो कहूं
श्रीठाकुरजीको स्वरूप देखो सो एक दरजीके घरमें श्रीठाकुर-
जीको स्वरूप हुतो सो ताको दामोदरदास द्रव्य देकें लेआये
पाछे सब घर पोतोपात्र सब बदलाये पाछे श्रीआचार्यजी

महाप्रभूनने वा स्वरूपको पंचामृतमें स्नान करवायो श्रीद्वारकानाथजी नाम धरचौ पाछें सिंहासन बैठाये तब दामोदरदासके मांथे सेवा पधरायकें पाछें भोग समर्प्यो समयानुसार भोग सराय बीडा समर्पन लागे तब देखें तो पान हरे हैं तब श्रीमहाप्रभूनने कह्यौ जो दामोदरदास हरे पान कबहूं नहीं समर्पिये उत्तम सामग्री होय सो श्रीठाकुरजीको समर्पिये श्रीठाकुरजी तो उत्तम वस्तुके भोक्ता हैं पाछें स्त्री पुरुष भलीभांतिसों सेवा करन लागे तब श्रीद्वारकानाथजीकी सेवा भलीभांतिसों होन लागी और श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें आज्ञा दीनी जो उतरचौ परकालौ होय सो श्रीठकुरजीकूं कबहूं न समर्पिये वह काम न आवै सारे परकालेमेंते प्रथम श्रीठाकुरजीको लीजिये और उत्तम सामग्री होय सो श्रीठाकुरजीके काम आवैं पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें और आज्ञा दीनी जो उत्तम सामग्री होय सो श्रीठाकुरजीके लिये अपनेघर लेआइयै श्रीठाकुरजीकी सामग्रीमेंते और ठोर खर्च न करियै तब दामोदरदास स्त्रीपुरुष दोऊजने भलीभांतिसों सेवा करने लागे और सामग्री उज्वल होती जो रूपानके कटोरानमें अपरस राखते सो ऐसी उज्वल कोई जानतो नाहीं जो यामें सामग्री है या भांतिसों सेवा करन लागे ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

कह्यो जो क्यौं रे तू सबनके आगे गोप्यवार्ता कहतहै तब कृष्णदासने कह्यौ जो महाराज आप उनहींसों पूछिये जो मेने कहाकह्यौहै तब उन वैष्णवनसो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने पूछो जो तुमसो कृष्णदासने कहा वार्ता कहीहै तब वैष्णवननें कही जो महाराज हमको तो सुधिरही नाहीं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू मुसिक्यायके चुपकारिरहे ॥ प्रसंग ॥ ३॥

और एकसमय श्रीठाकुरजीकी इच्छाते श्रीआचार्यजी महाप्रभूसों कृष्णदासने प्रश्न पूछो जो जो महाराज श्रीठाकुरजीको प्रियवस्तु कहाहै सो मोसों कहौ सो ताको प्रतिउत्तर श्रीआचार्यजी महाप्रभूकहैं जो श्रीठाकुरजी उत्तम वस्तुके भोगता हैं परंतु गोर शब्देन बानी कहीयतु है गोरसअति प्रियहै ताके भाव अनिर्वचनीय है और सबनते भक्तिको स्नेह प्रभाव अतिप्रिय है ताते भक्तबत्सल कहावतहैं तब कृष्णदासने फिर प्रश्न पूछौ जो महाराज श्रीठाकुरजीको अप्रियवस्तु कहाहै तबश्रीआचार्यजी महाप्रभूनें कह्यो जो श्रीठाकुरजीकोधूंआंसमान अप्रिय वस्तु कछू नाहीं और तातें अप्रिय भक्तनके द्वेषी है .फिर कृष्णदासनें प्रश्न पूछौ जो महाराज श्रीरघुनाथजी संपूर्ण सृष्टिको लेकें स्वधाममें पधारे हैं और राजा दशरथको स्वर्ग दीयो सो काहेते ताको प्रति उत्तर श्रीआचार्यजी महा-

प्रभूननें कह्यौ श्रीरघुनाथजी परम दयाल हैं ताते स्वर्ग दीयो नातर दशरथको स्वर्गकी योग्यता न हुती यातें अपनो वचन सत्य करिवेकों बनवास पठा दिये ऐसो कर्म कायो ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥

और एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कृष्णदासने प्रश्न पूछौ जो महाराज भक्त होयके श्रीठाकुरजीकी लीलाको भेद नाहीं जानत सो काहेते तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो एविधिपूर्वक समर्पण जो कह्यो है सो नाहीं करत अनुभव क्यों जानें और भगवद्भक्तको संग करे तो श्रीठाकुरजीकी लीलाको भेद जाने सो तो आपको योग्यता मान काहूका संग नाहीं करत और कछू करत है सो अन्तःकरन पूर्वक नाहीं करत है मोते श्रीठाकुरजीके स्वरूपको तथा लीलाको भेद नाहीं जानत उत्तम भक्तनको संगकर श्रीभागवत श्रीसुबोधिनी ग्रंथनको अहर्निश अवगाहन करे तब भागवद्भाव उत्पन्न होय श्रीठाकुरजी भक्तनके हृदयविषैं सदैव रहते हैं तथा सेवा करिकें बंधे हैं तहां एक अन्य मार्गी वैष्णव जाके हृदयमें श्रीठाकुरजी बिराजत हैं ताको संग करनो तहां गजन धावन वैष्णवको दृष्टान्त दिये हैं जिन जिन भाव पूर्वक सेवा करी तिनके सकल निवर्त्त भये तातें लीलास्थ ब्रज भक्तनके भावको बिचार करना जे वैष्णव

श्रीठाकुरजीको स्वरूप जानत हैं तिनको स्वरूप अलौकिक दृष्टिसों जानो जाय जो आज्ञा होय सो जानो जे वैष्णव श्रीठाकुरजीको जानत हैं सो जो कुछ कारज करत हैं और श्रीठाकुरजीसों बिरह भाव ताप करत हैं अपनो स्वदोष भाव विचार करत हैं अपनो स्वरूप जाने जो हौं कोन हों पहले कहा हुतो भगवत्संबंध कियेते कहा भयो अब मोकों कहा करतव्य रात्र दिवस ऐसो बिचार करत रहै तब अपनो स्वरूप जाने ए प्रागट्य ब्रज भक्तनके अर्थ तथा एतन्मार्गी-यके अर्थ तातें उत्तम संग होय तो एतन्मार्गके एठाकुर जाने और शास्त्र पुराण अनेक सिद्धांत इतिहास हैं तातें ब्रजराजके घर प्रगटे सो श्रीठाकुरजी न जाने जाय ए श्रीठाकुरजीको तबही जाने तातें भगवद्भक्तको संग करनो सेवाको प्रकार एतन्मार्गी वैष्णव जानत हैं तिनसों मिलि तिनको भाव पूछीकें सेवा करनी तब भगवद्भाव उत्पन्न होय श्रीठाकुर-जीकी स्नेहयुक्ति सेवा करि जो श्रीठाकुरजी वाको सब जतावै ॥ प्रसंग ॥ ५ ॥

और एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीबद्रीनाथजीके मन्दिरमें पधारे तब वेदव्यासजी साथ हैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें वेदव्यासजीसों पूछो जो भ्रमरगीतको अध्याय तामें उद्धवजीको ब्रजभक्तनके पास पठाए है ता प्रसंगमें

श्लोक आधो घटत है तब वेद व्यासजीने श्लोक आधो कह्यो ॥

श्लोक ॥ आत्मत्वाद्भक्तवत्सलात्सतवक्तात्स्वभावतः ॥

याकी टीका श्री आचार्यजी महाप्रभूननें पहले ही कीनी हैं सो सुनिके वेदव्यासजी बहुत प्रसन्न भये ता पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभू बद्रीनाथजीके मन्दिरमें पधारे ता दिन वामन द्वादशीको दिन हुतो सो ता दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको बिचार मनमें व्रत करिवेको हुतो तब श्रीबद्री-नाथजीनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यो जो मैंनें फला-हारको सर्वत्र योजन कीनो परि पाइयत नाहीं ताते तुम रसोई करि श्रीठाकुरजीको भोग धरि भोजन करौ श्रीठाकु-रजीकी इच्छा ऐसी दीखत है इतनेमें श्रीकृष्णदासनें आयकें कह्यो जो महाराज यहां तो कछू पावत नाहीं पाछें ता दिनते वामन द्वादशीके दिन वृत्त न करते 'उत्सवांते च पारणं' एसो वचन है पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू बद्रीनाथ जीते बिदा भये तब कृष्णदास साथ ही है ॥ प्रसंग ॥ ६ ॥

प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभू वेदव्यासजीके मंदिरमें पधारे तब कृष्णदाससों कह्यो जो तू ठाढो रहियो तब कृष्णदास ठाढे रहे पाछे आप तीसरे दिन पधारे तब कह्यौ

और दामोदरदास श्रीठाकुरजीकों जल आप भरते सो एक दिन वाको सुसर दामोदरदासके घर आयकें दामोदरदाससों कहन लाग्यौ जो तुम जल भरि लावत हो सो हमको जातिमें लज्जा आवत है तातें तुम जल मतिभरो लौंडीके हाथ जल भरावो तब दामोदरदासने एक घडा तोआप लीयौ और एक घडा स्त्रीके हाथमें दियौ तब दोऊजने घडा लेके वाकी हाटके आगें होयके निकसे तब जल भरिकें घर आये पाछें दामोदरदासको सुसर आयौ सो आयके पावन परयौ और वीनती करिके कह्यौ जो में चूकौ अबते तुमही जल भरौ परि स्त्री पास जल मति भरावो आज पाछें हम कछू न कहैंगे तब आपही जल भरन लागे जो चाहिये सो श्रीद्वारकानाथजी दामोदरदाससे मांग लेते बातें करते सेवा करिके श्रीठाकुरजीको ऐसे प्रसन्न किये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपने श्रीमुखते कहें जो जिननें राजा अंबरीष न देख्यौ होय सो दामोदरदासको देखें राजा अंबरीष तो मर्य्यादामार्गीय हुते और यह पुष्टिमार्गीय है इनमें इतनी अधिकता है ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

और एक दिन उष्णकालके दिन हुते तब श्रीद्वारकानाथजीको पौढाये आप दामोदरदास जायके चौवारेमें सोये सो वा दिन गरमी बहुत भई तब श्रीद्वारकानाथजीने लौंडीको आज्ञा दीनी जो किवाड खोल मोकों गरमी बहुत लागत है तब

लौंडीने किवाड खोले तब श्रीद्वारकानाथजीनें लौंडीसों कह्यो जो पंखा करि तब लौंडीने पखा कियो सो घडी एक लों पंखा कियो पाछे लौंडी सों कह्यो जो तू अब जायके सोय रहि तब लौंडी किवाड खुले छोडके सो रही तब सवारो भयो तब दामोदरदास देखे तो किवाड खुले पडे हैं तब पूंछो किवाड किन खोले तब लौंडीनें कही जो मोंको श्रीठाकुरजीनें किवाड खोलनेकी आज्ञा करी है तब किवाड खोले हैं तब दामोदरदास लौंडीते बहुत खीजे और कह्यो जो तेनें किवाड क्यों खोले जो मोकों श्रीठाकुरजीनें किवाड खोलनेकी आज्ञा क्यों न करी आप क्यों न खोले और लौंडीसों क्यों कही पर प्रभू बडेदयालु हैं ता विषय स्नेह होय ताही सों संभाषण करें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके अंगीकारमें सब समान हैं लौकिकमें कोऊ ऊंच नीच कहलेउ श्रीठाकुरजी तो स्नेहके बस हैं पाछें श्रीठाकुरजी नें कह्यो जो मेनें किवाड खुलाए हैं तब इन खोले हैं तूतो चोवारेमें जाय सोयो और मोकों भीतर सुवायो मोंकों गरमी बहुततातें लगी खुलाये हैं तू लौंडीसों क्यों खीजत हैं यों कहिके बहुत खीजे तब दामोदरदासने कह्यो जो प्रसाद तब लेउ जब मंदिर सम्हराऊं तब स्त्रीने कह्यो जो प्रसाद न लेउ तो ऐसो क्यों बने यह तो पांच सात दिनको काम नाहीं प्रसाद

लीयेबिना क्यों चले तब कह्यो जो प्रसाद तो नाहीं लेउ फलाहार करूंगो तब ऐसे करत करत मंदिर सिद्धभयौ तब श्रीद्वारकानाथजीके मंदिरमें पाठ बैठाये तब उत्सव कीयौं वैष्णवको प्रसाद लिवायौ ता पाछें आपने प्रसाद लियो ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

और एक दिन दामोदरदास श्रीठाकुरजीको राजभोग समर्पिके सइयामंदिरमें समारनगये तब देखें तो दुलीचाऊपर बिल्लीने बिगार दियौ है तब दामोदरदासने कही जो श्रीठाकुरजी अपनी सैयाहू राखसकत नाहीं एसें कह्यौ तब श्रीठाकुरजीने थार चौकी ऊपरसों लात मारिके डारदीनी और दामोदरदाससों श्रीठाकुरजीने कह्यौ जो तू कैसो सेवक है सेवक होयकें या भांति कहत है ऐसे बहुत खीजे पाछें दामोदरदासनें बीनती कीनी मनुहार बहुत करी सामग्री सिद्ध करवायके श्रीठाकुरजीको भोग समर्पियो तब श्रीठाकुरजी आरोगे पर वोहु मास दोयलों बोले नाहीं तब दामोदरदासनें बीनती बहुत कीनी तब फेर बोलन लागे॥प्रसंग॥४॥

बहुर एक समय दामोदरदास हरसानी इनके पर पाउने आए सो दामोदरदास संबलवारेके घर पांच सात दिन रहे तब इनने भलीभांतिसो समाधान कीयौ पाछें दामोदरदास

हरसानी इनसों बिदा होयकें अडेल आये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें दामोदरदास सो कह्यौ जो दमला तू कहां उतरयौ है और कहां प्रसाद लीयो है तब दामोदरदास हरसानीने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों बीनती कीनी जो महाराज कन्नोजमें दामोदरदास संबलवारेके घर उतरयोहौ पर अनसखडी महाप्रसाद लेतो सखडी न लेतौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू दामोदरदाससंबलवारेके ऊपर अप्रसन्न भये और कह्यौ जो यह मेरौ अंतरंग सेवक याकों सखडी महाप्रसाद क्यों न लिवायौ सो यह बात श्रीआचार्यजी महाप्रभूके अंतःकरन की दामोदरदास संबलवारेने घर बैठे जानी जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप अप्रसन्न भये मेरे ऊपर तब स्त्रीसों कह्यौ जो तू श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकीभांतिसों करियौ और मैंतो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके चरन देखवेको अडेल जातहों सो तब तहांते चले सो अडेल जाय पहुंचे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शन करिकें साष्टांग दण्डवत कीनी तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों बीनती कीनी जो महाराज मेरो अपराध कहाहै और जीवतो अपराध करतही आयो है परिअपराध जनियै तो भलौ है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यो जो तेने दामोदरदास हरसानीको अपने घर महाप्रसाद अनसखडी क्यों लिवायो सखडी क्यों न लिवायौ तब दामोदरदास संबल-

वारेनें बीनती कीनी जो महाराज दामोदरदास सों आप पूछियै जो सखडी क्यों न लीनी तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूने दामोदरदासहरसानी सों कह्यो जो तेनें सखडी महाप्रसाद क्यों न लीनीदामोदरदासने कह्यो जो महाराज श्रीठाकुरजी प्रातःकाल बालभोग आरोगते पाछें पकवान मिठाई दूधपाक बहुत लेतो सो सखडीकी रुचि रहती नाहीं ताते न लेतो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो तूतो अपनी इच्छाते न लेतो पारि मोकों तो याके ऊपर बडी खुन्स भई हुती सो भक्तनके अंतःकरनकी वृत्ति देखवेकों प्रभूनको प्रागट्य है काहेते जो दामोदरदासंबलवारेने अपने घर कन्नौजमें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके अन्तःकरनकी जानी तो श्रीआचार्यजी महाप्रभू तो भक्तनके हृदयमें सदा स्थिति हैं तौ भक्तनके हृदयकी बात क्यौं न जाने पारि भक्तनकी परीक्षार्थ यह प्रागटयको प्रागटय है पाछें दामोदरदास संबवालेने बहुत सन्मान करिके श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें वाको अपने घरको पठायौ तब दामोदरदास अपने घर कन्नौजमें आए तब दोऊ स्त्री पुरुष भली भांतिसों सेवा करने लगे ॥

॥ प्रसंग ॥ ९ ॥

और सिंहनन्दनके वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास जाते सों सब कन्नौजमें दामोदरदासको मिलिकें जाते जो

वैष्णव आवते तिन सबनको कन्नौजमें अपने घर आदर सन्मान करिकें उतारते सबनकों महाप्रसाद लिवाते पाछें जब अडेल बिदा होते तब तिन वैष्णवप्रति एक एक मोंहर एक एक श्रीफल श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी भेंट पठावते काहेते जो मेरी दंडोत खाली हाथन कैसे करेंगे ऐसे श्रीआचार्यजी महाप्रभू इनपर सदा प्रसन्न रहते ॥ प्रसंग ॥ ६ ॥

बहुर दामोदरदासको सुसर बहुत प्रसन्न हुतो तिनने सौ लौंडी बेटीके दायजेमें दीनी जो मेरी बेटी बैठी रहेगी काज सब लौंडी करेगी परिऐसे न करती सेवा सम्बन्धी कार्य सब आपु करती सो वह ऐसी भगवदीय ही प्रसंग ॥ ७ ॥

बहुर एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप दामोदरदासके घर पौढे हुते और दामोदरदास पांव दाबत हुतो तब श्रीआ-चार्यजी महाप्रभूननें दामोदरदास सों पूछो जो दामोदरदास तेरे मनमें काहू बातको मनोरथ है तब दामोदरदासने कह्यो जो महाराज मोकों तो काहु बातको मनोरथ आपके अनु-ग्रहते रह्यो नाहीं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो तू अपनी स्त्रीसों पूछ आऊ जो तोको काहू बातको मनोरथ है तब दामोदर दास जायकें अपनी स्त्रीसों पूछौ जो कोई

बात को मनोरथ रह्यां नाहीं एक पुत्रको मनोरथ है एक पुत्र होय तौ भलौ तब यह बात दामोदरदासने जायकें श्रीआ-चार्यजी महाप्रभूनसो कह्यौ जो महाराज स्त्रीको मनोरथ है जो एक पुत्र होय तो भली है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कहैं जो हां होयगो पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप तौ श्रीनाथजीद्वार पधारे पाछें जब वाकें समय भयो तब स्त्री गर्भस्थित भइ पाछे वा वाखरमें कितनेक दिनमें एक डाकौतिया आयौ तब वाकों सब साथकी स्त्री पूछन लागी तब तामेंते काहूने दामोदरदासकी स्त्रीसों कही जो अमुकी तुहू पूछि देखी जो कहा होयगौ बेटा होयगो के बेटी होयगी पाछें वाकी लौंडीने जायके वा डाकौतियासों पूछी जो दामोदरदा-सकी स्त्रीके कहा होयगो बेटा होयगो के बेटी होयगी तब वा डाकौतियाने कही जो बेटा होयगो पाछें श्रीआचार्यजी महा-प्रभू कितनेक दिनमें कन्नौजमें पधारे तब दामोदरदास चरण छूवन लागे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो मोकों छूवे मति तोकों अनाश्रय भयौहै तब दामोदरदासने कह्यौ जो महाराज में तो कछू जानत नाहीं हौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो तू अपनी स्त्रीसों पूछि आउ तब दामो-दरदासनें स्त्रीसों जो पूछौ जो तेने कछू अनाश्रय कीनोहै

सो स्त्रीने जो प्रकार भयौ हुतो सो सब कह्यौ सो बात श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कही जो याके पेटमें म्लेछ होयगो पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप तो अडेल पधारे पाछें यह बात दामोदरदासकी स्त्रीने सुनी तबते श्रीठाकुरजीके पात्रादिक सेवा संबंधी वस्तु स्पर्श न करती और कहती जो मेरे पेटमें म्लेछहै ताते श्रीठाकुरजीके पात्र तथा सामग्री कैसे छूऊं या भांतिसों कहती पाछें जब प्रसूतके दिन आए तब दामोदरदासकी स्त्रीनें अपनी महतारीसों कहवाय पठाई जो मेरे पुत्र होयगो सो होत मात्र तू अपने घर लेजैयौहम वाको मुख न देखेंगे जो हम वाको मुख देखेंगे तौ हमारो धर्म नष्ट होयगो तातें हम वाको मुख न देखेंगे सो उपाय तू करियौ पाछें वाकी महतारीने ऐसें ही कीयौप्रसूतमात्र होत अपने घर लेगई पाछें धायको देके बडौ कीयौ ॥ प्रसंग ॥ ८ ॥ ॥

बहुर कितनेक दिन पाछें दामोदरदासकी देह छूटी तब वाकी स्त्रीने छिपाय राख्यो पाछें वा स्त्रीने एक वैष्णवसों कही जो तुम अडेलको एक नाव भाडे करि ल्यावौ सों वह वैष्णव भाडे करि ल्यायौ ता नावमें श्रीद्वारकानाथजी और घरमेंकी सामग्री तिनूका पर्य्यंत कछू घरमें राख्यौ नाहीं घरमें जो हुतो सा सब नावमें भरयो तब वा वैष्णवसों कह्यो जा

यह नाव अडेलकों लेजाउ श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके मन्दि-
रमें पहुंचाय आवो सो वह वैष्णव नाव लेके चल्या सो
कोस तीस पर नाव गई ता पाछें स्त्रीने प्रगट करी जो
दामोदरदासकी देह छूटि गई है सब वैष्णव जुरि आये दामो-
दरदासको बेटा तुरक भयौ हुतौ सो आयौ आयके घरमें देखे
तो कछू नाहीं जलको भर्यौ करवा घरमें धर्यौ है सो
देखिके मूंड पीट रह्यौ पाछें दामोदरदासकौ सुसर आयौ
तिनने अपनी बेटीसों कह्यौ जो बेटी तुमने घरमें कछू राख्यौ
नाहीं सो तू अब कहा खायगी तब वाने कही जो तुम
देउगे सो मैं खाऊंगी क्षत्री लोगनके पासमें सगे सोदरे कछू
देत हैं एसी ग्यातीकी रीति है तब दामोदरदसकी स्त्रीने
अन्न जलको त्याग कीयौ सो थोरेसे दिनमें वाकीहू देह
छूटी तब कृत्य दोउनकौ साथही भयौ वह ऐसो भगवदीय ही
सो यह बात कितनेक दिन पाछें काहू वैष्णवने श्रीआचा-
र्यजी महाप्रभूनके आगे आय कही तब श्रीआचार्यजी महा-
प्रभूनने कही इनकों योंही चाहिये वे दोउ जने ऐसे भगव-
दीय हैं उनकी सराहना श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीमुखते करते
तातें इनकी वार्ता अनिर्वचनीय है इनकी वार्ता कहां ताँई
लिखिये प्रसंग ॥ ९ ॥ वै० ॥ ३ ॥

अथ पद्मनाभदासकन्नौजिया ब्राह्मण कन्नौजमें रहते तिनकी वार्ता

सो एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू कन्नौज पधारे तब पद्मनाभदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनको आए तब पद्मनाभदासने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके श्रीमुखते भगद्वार्ताको प्रसंग सुन्यो तब जानी जो एतो साक्षात् ईश्वर हैं ऐसे श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शन भये प्रथम पद्मनाभदास व्यास आसन बैठते सो कन्नौजमें अपने घर कथा कहते ऊँचे आसन बैठते श्रोता बहुत कथा सुनिवेकों आवते काहुको घर जानो न पडतौ वृत घरबैठे चली आवती या भांतिसों रहते सो पद्मनाभदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके श्रीमुखतेभगवत् प्रसंग सुन्यौ तबते जानों जो ए साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हैं सो पूरन पुरुषोत्तम जानिके पद्मनाभदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी शरण आये नाम पायौपाछें समर्पण करवायो तब उत्थापनके समय श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पोथी खोली तहां दामोदरदास संबल वारेके घर बैठे हुते ता समय पद्मनाभदास अपने घर ते आये श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकों दंडवत् करिके बैठे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने पोथी खोली और श्लोक निबंधनको कह्यो—

श्लोक॥पठनीयंप्रयत्नेनसर्वं हेतुविवर्जितम्।वृत्यर्थैंनैवयुंजीत प्राणैः कण्ठगतैरपि॥तदभावेतथैवस्यात्तथानिर्वाहमाचरेत्॥

यह श्लोक पढे सो पद्मनाभदासनें सुन्यौ पाछें दशमस्कन्धकी कथा कही सो सुनी तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कथा कहि रहे तब पद्मनाभदासनें जलकी अञ्जली भरिके संकल्प कियौ जो अबते कथा कहिवे कौ वृत न करूंगो ऐसे श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे संकल्प कीयौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें श्रीमुखते कह्यौ जो श्रीभागवत वृत्तार्थ न कहनौ और तो तुम्हारीवृत हैं तुम ब्राह्मण हौ और पुराण महाभारत तो इत्यादिक कहनौ तब पद्मनाभदासने कह्यौ जो महाराज हमने अबतौ संकल्प कीयौ सोतो कीयौ यातें कछू न कहनौं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहैं जो तुम गृहस्थ हौ सो कौन भांति निर्वाह करोगे तब पद्मनाभदासने कह्यौ जो महाराज भिक्षा मांगिके निर्वाह करूंगो पाछें एक जिजमानके घर वृत्तर्थ गए तिन तब बहुत आदर सन्मान कीयौ तब पद्मनाभदासके मनमें बहुत ग्लानि आई जो कबहूं पहले तो भिक्षावृत्य करी नाहीं और अब वैष्णव भये ताकौ तो यह भिक्षाहू उचित नाहीं तब फेर संकल्प कीयौ जो अबतो भिक्षा कबहूं न करूंगो तब फेर श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो अब निर्वाह कौन भांति करोगे तब पद्मनाभदासने कही जो अब

वैष्णवकृत्य कारि निर्वाह करूंगो पाछें कौडी बेचते लकडी ले आवते पर और बात न बिचारी या भांति देहादि निर्वाह कीनो ऐसे टेकके कृपापात्र भगवदीय है ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभू प्रयागमें पधारे हैं तब पद्मनाभदास साथ है रात्री पहर एक गई ही तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने पद्मनाभदाससों कही जो श्रीअक्काजीकों पारते पधराय लावो सो सुनतही पद्मनाभदास उठि चले तब पांच सात वैष्णव तहां बैठे हुते सो कहन लागे जो यह ब्राह्मण बावरो भयो है या बेर कहां जायगो नाव सब बंधी है घटवार सब घरगये हैं ताते यह बिरियां जाइबेकी नहीं परि याकोंतो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी आज्ञा है ताको विश्वास जो यह काम अधिक अवश्य होयगो सो घाट ऊपर आये तब इत उत देखन लागे इतनेमें देखेंतो अकस्मात एक लरिका वर्ष दसको एक डोंगी लेकर आयो सो वानें पद्मनाभदासकौ पूछो जो तू पार जायगो तब पद्मनभदासने कह्यौ हां हां जाऊंगो तब उन पार उतार दीनो पाछें फेर पूछो जो तू फेर आवेगो तब पद्मनाभदासने कह्यौ जो घडी दोय पाछें आउंगो तबलरिकाने कह्यौ जो डोंगी राखत हों तू बेगी आईयो पाछें अडेलमें जायके श्रीअक्काजीको पधराय लाये

तब वाही डौंगीहु नाहीं और लरिकाहुनाहीं पाछें श्रीअका-
जीको पधरायकें घर आये पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें
पद्मनाभदासकों आज्ञा दीनी जो जाउ सोय रहो जब जहां
वैष्णव सोये हुते तहां आये तब वैष्णव सब पूछन लागे जो
तुम कहा करि आये तब पद्मनाभदासने सब समाचार कहै
तब वैष्णवननें कह्यौ जो तेनें श्रीठाकुरजीको श्रम बहुत कर-
वायौ पाछें वैष्णवननें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों पूछौ जो
महाराज पद्मनाभदासनें श्रीठाकुरजीको श्रम बहुत करवायौ तब
श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो भयो है कछु सो मेरी
इच्छातें भयो है ताते तुम पद्मनाभदाससों कछु मति कहौ ॥
प्रसंग ॥ २ ॥

बहुर एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोकुलते अडे
लको जात हुते तब एक ब्यौपारी कछु वस्तु लेके साथमें
चल्यो और श्रीआचार्यजी महा महाप्रभू कन्नौजके बीच
पधारे तब ब्यौपारी पीछें रह्यौ ताके ऊपर चोर आय पडे
सो वस्तु सब लूट लीनी और श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप
तौ दामोदरदास संबलचारेके घर पधारे सो वहां उतरे रसोई
करि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो इतनेमें बहु ब्यौपारी रोवत
पीटत आयौ तब पूछौ जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहा करत
हैं तब पद्मनाभदासनें कह्यौ जो भोजन करत होयंगे तब वा

ब्यौपारीने कह्यौ जो हमारो माल सब लुटि गयौ है और श्रीआचार्यजी महाप्रभू भोजन करत हैं तब पद्मनाभदासने अपने मनमें विचारयौ जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू सुनेंगे तो भोजन न करेंगे घडी दोयकी अबार होयगी तातें पद्मनाभदास वा ब्यौपारीकी बांह पकरिके एक साहकी दुकानपर लेगये ता साहने पद्मनाभदासको बहुत आदरसनमान कीयो तब वाने कह्यौ जो आज्ञा करो कैसे पधारे हौ तब पद्मनाभदासने वा साहसों कह्यौ जो या ब्यौपारीकों इतनो द्रव्य दियो चाहियो या द्रव्यको खत पत्र व्याज हम लिख देयंगे तब साहने कह्यौ जो पद्मानाभदासजी तुमको जितनों द्रव्य चाहियै तितनों लेउ खत पत्रकी कहा बात है तब पद्मनाभदासने कह्यौ जो पहले तो खत पत्र लिखोंगो पीछें द्रव्य लेउंगो बिना खत लिखे तो लेउंगो नाहीं तब साहने कही जो तुम्हारी इच्छा पाछें पद्मनाभदासने खत लिख दीनों तब साहने वा ब्यौपारीको द्रव्य दीयो तब वह ब्यौपारी तो अपनो द्रव्य लेके अपने घर गयौ तब पद्मनाभदास अपने घर आये तब पद्मनाभदाससों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पूछौ जो पद्मनाभदास तू कहां गयौ हो तब पद्मनाभदासनें कह्यौ जो महाराज एक काम गयौ हो सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप तो साक्षात् ईश्वर सो तत्काल जानि

गये तब पद्मनाभदाससो श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो हम वा ब्यौपारीको संग तौ लीनों न हतौ वाकों माल देनों वह पीछे रह्यौ हम कहा करे पारि तेने बहुत बुरी करी सो ऋण काढिकें पैसा दीनों तब पद्मनाभदासने कही जो महाराज सो तो सांच पारि वह ब्यौपारी पुकार तो तौ राज भोजनमें दोय घडीकी अबार होती तो मेरो जन्म सब वृथा जातौ और ऋण मोकलि देउंगो यह कितनीक बात है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो तेने धर्म गहने लिख दीनों सो काहेते तब पद्मनाभदासनें कह्यौ जो महाराज ऐसो गाढौ लिख दीयो जो बिना दिये न जाय पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू तौ अडेल पधारे पाछें पद्मनाभदास एक राजा हुतौ ताके पास गये तब पद्मनाभदासको वा राजाने बहुत आदर सनमान कीयौ पाछें राजाने कह्यौ जो मोको कृपा करिकें कछु सुनावो तब पद्मनाभदासने कह्यौ जो राजा श्रीभागवत तौ नाहीं सुनाऊं कहौ तौ महाभारत सुनाऊ सो राजानें कह्यौ जो महाभारतही सुनावौ सो महाभारतही कहन लागे सो जब युद्धको प्रसंग आयौ तब सबनके हथियार छुडाय धरे तब आगें कहन लागे सो कथा कहतमें कोई वीररस ऐसौ उपज्यौ सो आपसमें सब लात मुक्कीनसों लरन लागे पाछें कितेक दिनमें महाभारत सम्पूरण भयौ तब राजा बहुत दक्षिणा देन

लाग्यौ तब पद्मनाभदासनें कह्यौ जो इतनो तौ मैं नाहीं लेउंगो मेरे मांथे ऋणि है तितनों लेउंगो पाछें वा साहको मूल ब्याज देनों हुतो तितनों लीनो बाकीको फेर दीनों पाछें साहकौं द्रव्य देके खत फारि डारो ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

और पद्मनाभदासकें एक बेटी कुमारी हुती वाकेनिमित्त एक वर श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको सेवक चाहित हुतौ सो वैष्णवननें कह्यौ जो एक वर श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकौ सेवक है पारि सनौडिया ब्राह्मण है सों पद्मनाभदासको लौकिक त्यागमें बिबहार की सुधि रही नाहीं वैष्णवनने कह्यौ जो भलो वैष्णव है सो याको बेटी दीजियौ तब पद्मनाभदासने कह्यौ जो भलो सो पद्मनाभदासने वा वैष्णवको तिलक कीयौ विवाह सही करिके अपने घर आये तब तुलस बडी बेटी हुती तासों कह्यौ जो अपनी बेटीकी विवाह अमुके वैष्णव सों सटी कर आयौ हूं तब तुलसाने कही जो वह तौ सनौडिया ब्राह्मण है और आपुन कनौजिया ब्राह्मण हैं सो ऐसे कैसे होय तब पद्मनाभदासने कही जो अब तो भई सो भई तब तुलसाने कह्यौ जो सगाई फेरो तब पद्मनाभदासने कही जो सगाई कैसें फेरी जाय पाछे पद्मनाभ, दासने कही छुरी लावौ मेरो अंगूठा काटौ तब तुलसाने

कह्यौ जो अंगूठा कैसे काट्यौ जाय तब पद्मनाभदासने कह्यौ जो सगाई कैसे फेरी जाय जा अंगूठा काटे तो सगाई फेरी जाय पाछें पद्मनाभदासनें विवाह कर दीनों जातके सब झकमार रहे वैष्णवके कहेको बिस्वास तात सगाई नफेरी ॥ प्रसंग॥४॥

और एक क्षत्राणि पद्मनाभदासके घर नित्य आवती तब एक दिन तुलसाने कह्यौ जो क्षत्राणि जो तू नित्य क्यों आवत है तब वा क्षत्राणीने कही जे पद्मनाभदास बडे भगवदीय है और महापुरुष है और मेरे संतती नाहीं होत है ताते आवत हौ ताते तुम पद्मनाभदाससों मेरी बीनती करौ तब पद्मनाभदाससों एक दिन तुलसाने कह्यौ जो पद्मनाभदास एक क्षत्राणीके संतति नाहीं होत है ताकेलिये तुमसों बीनती करत हौ तब पद्मनाभदासने कह्यौ जो तुलसा जल लाउ तब तुलसाने जल लायकें आगें धरौ तब जल लेकै अंगूठाको चरणोदक करिकें पद्मनाभनादासने वा क्षत्राणीको चरणोदक दियौ और कह्यौ जो जा तेरे पुत्र हो यगौ ताकौ तू मथुरादास नाम धरियौ पाछें वाके पुत्र भयौ ॥ प्रसंग ॥ ५ ॥

और एक समय बडे रामदासजी अपने सेव्य ठाकुरजीकौ पद्मनाभदासके घर पधरायके आप श्रीनाथजीकी सेवा करने लागे श्रीनाथजीके भीतरिया भये तब पद्मनाभदास श्रीठाकु-

रजीकी सेवा करने लागे सो कितेक दिवस पाछें मुगलकी फोज आई ताने गांव लूटचौ सो श्रीठाकुरजीको मुगल लेगयौ तब पद्मनाभदास वा मुगलके पीछे सात दिनलौं रहै जल पान न करचो तब वा मुगल सों वाकी मुगलानीने कह्यौ जो यह ब्राह्मण जल पान हूं नाहीं करत याको सात दिन भये हैं अन्न जल छोडे सो जो तेरौ संग छोड देउंगी नातर देव याके तेरे पास है सो तुम देव याके देउ तब वा मुगलनें पद्मनाभदासको श्रीठकुरजी दीये सो लेके पद्मनाभदास अति आनन्द पायकें अपने घर आये पाछें आये स्नान करि श्रीठाकुरजीको पंचामृतसो स्नान कराये अंग वस्त्र करि श्रृंगार कियौ रसोई करि भोग समर्प्यो पाछें समयानुसार भोग उसराय अनोसार करि पाछें महाप्रसाद आपु लीनौ और जा दिन ते वा कन्नौजमें श्रीठाकुरजी मुगलके हाथ परे सो तादिन रामदासनें हूं यह बात जानी सो ता दिन ते बडे रामदासने हूं सात दिनतांई महाप्रसाद लीनों नाहीं परि श्रीनाथजीकी सेवा सावधानीसों करत रहे यह बात पद्मनाभदासनें घर बैठे जानी जो रामदासहूं या बातके ऊपर बहुत दुख पायौ सात दिनलौ जलपान हूं नाहीं लीयौ यह जानि पद्मनाभदास श्रीनाथजीके दर्शन तथा रामदासजीकों मिलिवेको श्रीनाथजीद्वार आये तब रामदासजीके

दर्शन कीयौ पाछें रामदासजीसों मिले तब रामदासजीने पद्मनाभदाससों कह्यौ जो तुमने बहुत दुख पायौ तब पद्मनाभदासनें कह्यौ जो हुंतौ दुख पायौ सो तौ न्याव है परि तुम मेरे माथे सेवा पधराय आये और तुमनें सात दिनलों महाप्रसाद नाहीं लीयौ सो काहेते तब रामदासनें कह्यौ जो तुम कहत ही सो तो सांच है परि मेहूं तौ बहुत दिनलों सेवा कीनी है तातें इतनों तो संबन्ध चाहियै पाछें कितनेक दिनलों उहां रहिकें पद्मनाभदास श्रीनाथजीसों तथा रामदासजीसों बिदा होयकें अपने घर आए पाछें सेवा करन लागे ॥ प्रसंग ॥ ६ ॥

और एक समय पद्मनाभदास अपने सेव्य श्रीठाकुरजी श्रीमथुरानाथजी तथा अपनो कुटुंब लेकर अडेल आय रहै परन्तु द्रव्यको संकोच बहुत हुतो तातें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पते सो छोला तीलके समर्पते सो छोला आछी रीति सो बीनके पहिले दिन भिजोय राखते दूसरे दिन नीकी भांतिसों तलिके परोसते एक मुट्ठी भरिकें कहैं जो यह दारि एक मुट्ठी भरिकें धरें और कहै जो यह रोटी है या भांति जितने साल न होय तितनेनको नाम लेके एक२ मुट्ठी समर्पते या भांतिसों नित्य करते सो श्रीठाकुरजी सोई आरोगते पाछैं एक वैष्णवनें

श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे कह्यौ जो महाराज पद्मनाभदास श्रीठाकुरजीकों या भांति समर्पत हैं सो एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभू भोग समर्पिबेकी विरियां आप पद्मनाभदासके घर पधारे सो जैसे नित्य भोग समर्प्यो हो सो जब भोग उसरायो तब पद्मनाभदासने कह्यौ जो महाराज यह खीर है भात है यह दारिहै यह साक है यह सिखरनहै यह रोटी है यह बराहै ऐसें कहिकें सब सामग्रीनके नाम लेकै छौलानकी ढेरी बताई तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको हृदय भरि आयो और कह्यौ जो द्रव्यकौ संकोच है ताके लिये ऐसे करत है पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आपतो घरतो पधारे तब श्रीअक्काजीसे कह्यौ जो पद्मनाभदासके घर नित रसोईकी सामग्री पठावति रहियौ तब दूसरे दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पद्मनाभदासके घर नित सीधो सामग्री पठायो तब पद्मनादासने तुलसासों कह्यौ जो इहांते प्रभू काढन हार भये हैं तब पद्मनाभदासने दिन द्वै चारिको सामान करि पाछें अपने सेव्य श्रीठाकुरजी श्रीमथुरानाथजीसों कही जो महाराजकौ मन होय तो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास पधराय आऊं तहां सकल सामग्री सिद्ध है तब श्रीमथुरानाथजीने कह्यौ जो मोकों तेरोहो कीयौ भावत है ताते तेरे यहां बहुत प्रसन्नहों तू कछू संकोच मति करै ऐसे श्रीमथुरानाथजी आप कहे तब

पद्मनाभदासनें नाव भाडे कीना तामें श्रीठाकुरजी पधराये और सब कुटुम्ब नावमें बैठायकें आप श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों बिदा होन गये और सीधो सामग्री दिन द्वै चारकौ आयौ हतौ सो भंडारीकों फेर देके आप श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास बिदा होयकें दर्शन करिके दंडौत करिके कह्यौ जो महाराज हम तो चलत हैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रनभूने पूछौ जो श्रीमथुरानाथजी कहां है तब पद्मनाभदासने कह्यौ जो महाराज श्रीठाकुरजी तो नावमें विराजत हैं श्रीठाकुरजीकों नावमें पधरायकें हौं महाराजके पास दर्शन करिवेको तथा बिदा होयवेको आयौ हूं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने पद्मनाभदासको बिदा कियो माछें भंडारीने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों आयकें कह्यौ जो महाराज पद्मनाभदासके घर सीधो सामग्री दिन द्वै चारकी पठाई हुती सो पद्मनाभदास फेर दे गएहैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो सीधो सामग्री पठाई तातें पद्मनाभदास गयो नातर न जातो यह बात आप श्रीमुखते कही सो पद्मनाभदासकी वार्ता श्रीगोकुलनाथजी श्रीसर्वोत्तमकी टीकामें लिखे हैं सो पद्मनाभदाससों बिरला कोटिश्वपि दुर्लभ हैं सो वे पद्मनाभदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय है तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं पद्मनाभदासकी ऐसी २ कितनीक वार्ता हैं ॥ प्रसंग ॥ ७ ॥ वैष्णव ॥ ४ ॥

पद्मनाभदासकी बेटी तुलसाकी वार्ता

सो एक समय एक वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको सेवक तुलसाके घर आयौ सो श्रीठाकुरजीको दर्शन कीयौ तब राजभोग समर्प्यो हौ तब तुलसाने वा वैष्णव सों कह्यौ जो उठो स्नान करो महाप्रसाद लेउ तब वा वैष्णवने कह्यौ जो हुं तो घर जायकें महाप्रसाद लेउंगो तब स्नान करूंगो तब तुलसा चुपह्वै रही पाछें वह वैष्णव उठिकें अपने घर गयौ तब तुलसाके मनमें बहुत खेद भयौ जो देखौ मेरे घर ते वैष्णव भूखौ गयौ बहुरि मनमें आई जो ग्याति व्यवहारके लियै सखडी न लीनी होगी पर भलौ सकारे पूरी करी महाप्रसाद लिवाउगी पाछें मेदा छानि सिद्ध करवाई तब सोई पाछें रात्रिको मथुरानाथजी पद्मनाभदासके सेव्य ठाकुरजी तिनने स्वप्नमें तुलसासों जतायौ जो सकारें वा वैष्णवको सखडी महाप्रसाद लिवाइयौ वह वैष्णव अपने घर प्रासाद घर नाहीं लेइगो पाछें वा वैष्णव स्वप्नमें कही जो सकारे तू सखडी महाप्रसाद तुलसाके घर लीजियौ पाछै प्रातःकाल स्नान करि तुलसाने पूरी करी श्रीठाकुरजीकों जगाय सेवा करन लागी इतनेमें वह वैष्णव आयौ श्रीठाकुरजीके दर्शन करि बैठे रह्यौ तब तुलसा भोग समर्पिके बाहर

आई तब वा वैष्णवसों कह्यौ जो भलौ तब वा वैष्णवने स्नान करि तिलक मुद्रा करिके स्मरन कीयौ इतनेमें राजभोग सन्यो तब वा वैष्णवने दर्शन कीयौ पाछे तुलसाने श्रीठाकुरजीकौ अनोसरि करि तुलसा बाहर आई तब पूरी बूरो साधांनों वा वैष्णवके आगे राख्यौ और कह्यौं जो महाप्रसाद लेउ तब वा वैष्णवने कह्यौ जो यहतौ नाहीं लेउंगो हूंतो सखडी महाप्रसाद लेउंगो तब तुलसाने कह्यौ जो कछू संकोच मति करौ यहतौ जाति व्यवहारहै तब वा वैष्णवने कह्यौ जो सो तो सांच पहिले तौ ऐसेही मनमें आई हुती परि अबतो आज्ञा भई है पाछे वा वैष्णवने सखडी महाप्रसाद लीयौ तब दोउजने परस्पर प्रसन्न भये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

बहुर एकदिन तुलसाके घर श्रीगुसांईजी पधारे तब तुलसाने भली भांतिसे सेवा कीनी ताते श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये और एकदिन श्रीगुसांईजी भोजन करिके पोढेहुते तब तुलसाने भगवद्वार्ता करी अति प्रसन्नतामें श्रीगुसांईजी कही जो पद्मनाभदासकी संतति ऐसीही चाहियै पाछे श्रीगुसांईजीने तुलसासों पूछौ जो श्रीठाकुरजी सानुभावता जतावत हैं तब तुलसाने कह्यौ जो महाराज अबतौ पेटभरि खाइयत है और नींदभरी सोइयत है और श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पंथनको पाठ करियतहै तब श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये वह तुलसा

ऐसी भगवदीय हुती ताते श्रीठाकुरजी अति सहिनसके ताते वा तुलसाके ऊपर श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न रहते ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ वैष्णव ॥ ५ ॥

अथ पद्मनाभदासको बेटा ताकी बहू पार्वतीकी वार्ता

सो पार्वती श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकी भांति करती और पुरुषोत्तम दास महरा इनको नीकी भांतिसों जानतो जब कन्नौज जातो तब पार्वतीके घर उतरतौ तब कितनेक दिन पाछें पार्वतीके हाथ पाँव श्वेत व्हैगये तबते श्रीठाकुरजीकी रसोई करत तथा स्परस करत बहुत २ ग्लानि आवती तब पुरुषोत्तमदास महराकों पार्वतीनें पत्र लिख्यौ तामें लिख्यौ सो मेरी बीनती श्रीगुसांईजीसों कहियौ मेरी देहको यह प्रकार भयोहै तातें मोकों सेवा करत पाक करत बडी ग्लानि आवत है सो मैं कहाकरूं सो पुरुषोत्तमदास महराने पार्वतीको लिख्यौ पत्र श्रीगुसांईजीको बांच सुनायौ और बीनती कीनी भेंटकी मोहर ही आगे राखी पाछें श्रीगुसांईजीने पुरुषोत्तम महराको आज्ञा दीनी जो दिन द्वैचारिमें कहूंगो पाछे दिन द्वैचारि बीते तब श्रीगुसांईजीने पुरुषोत्तमदास महराको आज्ञा दीनी जो पार्वतीको पत्र लिख तामें लिखियौ जो तू श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकीभांतिसों करियौ

काहू बातकी ग्लानि मतिलाइयो श्रीठाकुरजी तेरो रोग सब आपहीवे दूर करेंगे तब पुरुषोत्तम महराने पार्वतीको पत्र लियौ तामें श्रीगुसांईजीने श्रीमुखते बचन कहे सो लिख पठाये सो वह पत्र पार्वतीपै पहुंचौ सो पत्र बांचके श्रीगुसांईजीकी आज्ञाते सेवा प्रसन्नतासो करन लागी कछू ग्लानि मनमें नहीं लावती पाछें महीना तीन चारिमें हाथ पांव नीके भए तब पार्वती बहुत प्रसन्न भई सो प्रसन्नतासों सेवा करनलागी बहुर श्रीगुसांईजीको पत्र लिख्यौ भेंट पठाई और कह्यौ जो महाराजके प्रतापते नीकी भईहों सो पत्र बांचिके श्रीगुरुसांईजी बहुत प्रसन्नभये सो वह पार्वती बडी कृपापात्र भगवदीय हुती प्रभूनके पर मानचलती ताते श्रीगुसांईजी इनके ऊपर सदा प्रसन्न रहते यह वार्ता सब पद्मनाभदासके कुटुम्बकी भई ताते पद्मनाभदास बडे भगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखियै प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६ ॥

अथ पद्मनाभदासकौ नाती पार्वतीको बेटा रघुनाथदासकी वार्ता

सो रघुनाथदास बनारसमें बहुत शास्त्र पढिके श्रीगोकुल आयौ तब श्रीगुसांईजी दंडोत कीनी सो गुसांईजी बडेनकी कानिते इनके ऊपर कृपा करवे कथा कहते सो रघुनाथदास सुनते सो एकदिन परमानन्द सौनीने इनसों पूछौ जो

जो रघुनाथदास तुम तौ बहुत शास्त्र पढे हौ पंडित हो आज श्रीगुसांईजीने कहा कथा कही हुती सो कहौ तब रघुनाथदासने परमानन्द सौनी सौं कह्यौ जो तुम तौ सांच पूछत हौ परि हूंतो कछू समझत नाहीं तब यह बात परमानन्द सौनीने श्रीगुसांईजीके आगे कही जो महाराज रघुनाथजीदास तौ कछू समझत नाहीं पाछें श्रीगुसांईजीने रघुनाथदासको ग्रन्थ दोय चार पढाय और मार्गकी प्रनालिका कही पाछें रघुनाथदास समझन लाग्यौ बडौ पंडित भयौ सो कितनेक दिन पाछें अपने घर कन्नौजमें आयौ तब मातासों कही जो हूंतो नियारो होयगौ श्रीठाकुरजीकी सेवा करूंगो तब माताने कही ओ भलेई तू सेवा करि पाछें न्यारो भयौ वाकी माता जलभर लावती पार्वती पात्र माँजती श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकी भांतिसों करती परचारगी सब करती जब राजभोग सरतौ तब अपने घर अकेली लीटी करि श्रीठाकुरजीको भोग समर्पि वा भोग सराय आप प्रसाद लेती या भांतिसों करती ऐसे करत दिन पांच सात बीती तब अपने सेव्य श्रीठाकुरजीने कह्यौ जो अरी पार्वती मेरोगरो खरखरात है है अकेली लीटीनते ताते तू दारितौ करचौ तब पार्वतीने कह्यौ जो महाराज तुमतौ दारिभात सालनसो आरोगतहो तब श्रीठाकुरजीने कह्यौ जो मेतो तेरो कीयौ आरोगतहो

पाछें दारभात सब सालन करन लागी ताते पार्वती बडी कृपापात्र भगवदीय हुती यह वार्ता सब पद्मनाभदासके परिवारकी भई ताते वे पद्मनाभदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं से इनकी वार्ता ऐसी २ कितनी कहैं ताते अब कहां तांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥७॥

अथ रजो क्षत्राणी अडेलमें रहती ताकी वार्ता

सो वा रजो क्षत्राणी नित्य पकवान सामग्री करि श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके लिये ले आवती सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आरोगते वाको नित्य नेम हुतो सो एक दिन लक्ष्मण भट्टजीकौ श्राद्धदिन आयौ सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने ब्राह्मण भोजनको बुलाए हुते तहां घृत थोरोसो चाहियत हुतौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें एक वैष्णवसों कही जो रजो केसे घृत लेआउ तब वा वैष्णवने रजोसों कही जो रजो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने घृत मंगायौ है तब रजोने वा वैष्णवसों कह्यौ जो घृत काहेको चाहियत है तब वा वैष्णवनें कह्यौ जो आज श्रीलक्ष्मन भट्टजीको श्राद्धदिन है सो ब्राह्मण भोजनको बुलाए गये हैं सो थोरो घृत रसोईमें घट्यौ है तातें मंगायौ है तब रजोने कह्यौ जो मेरे तौ घृत

नाहीं है तब वह वैष्णव फिर आयौ आयके श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यौ जो महाराज रजोके घृत नाहीं है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो तू फेरिजा और खीजके कहियौ जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें घृत मंगायौ है तब वह वैष्णव फिर गयौ और रजोसों कह्यौ जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू खीजत हैं तबहू रजोने घृत नाहीं दियौ तब वह वैष्णव फिर आयौ तब श्रीआचार्यजो महाप्रभूनसों कह्यौ जो महाराज रजो घृत नाहीं देत तब श्रीआचार्यजी महा-भूनने कह्यौ जो अबके फेरि जा और कहियौ जो श्रीआ-र्यजी महाप्रभू खीजत हैं तातें घृत देउ तबहूं नाहीं दियौ तब श्रीआर्यजी महाप्रभूसों कह्यौ जो महाराज रजो घृत नाहीं देत श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें और ठौरते काम चलायौ तब रात्रीकों रजो पक्वान लेके आई तब रजोको देखिकें श्रीआ-चार्यजी महाप्रभू पीठदे बैठे तब रजोनेकही जो महाराज मेरो अपराध कहा है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो तेरे घृत न हुतौ तो सामग्री कहांते करलाई तब रजोने कह्यौ जो हूं लक्षमन भट्टकी लोंडीतो नाहीं मेरे घृत हुतौ ताते न दीनो ताते तुम्हारे घृत हुतो सो क्यों न दीनो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जोमैं श्रीठाकुरजीको घृत क्यों करके देउ तब रजोने कही जो में श्रीठाकुरजीको घृत

क्यों करके देउ बत आप बोले नाहींतब रजोने सामग्री आगेराखी और कही जोराज आरोगेतब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो आज श्राद्धदिन है ताते दूसरी वार लेनो नाहीं तब रजोने कही जो महाराज तुम्हारे घरको होय जो मति लेउ यह तौ लीयौ चाहिये तबरजोके आग्रहते श्रीआचार्यजी महाप्रभूनें आरोगी रजोश्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी ऐसी कृपापात्र भगवदीयही तातेइन रजोकी वार्ता कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ८ ॥

अथ पुरुषोत्तमदासक्षत्री बनारसमें रहते तिनकी वार्ता

सो सेठ पुरुषोत्तमदासकों श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी आज्ञा हुती जो तुम पास कोई नाम लेन आवै ताको तुम ना दीजियौ तातें सेठ पुरुषोत्तमदास नाम देते और अपने घर श्रीमदन-मोहनजीकी सेवा करते पारि कबहू विश्वेश्वरनाथ महादेवजीके दर्शनकों नजाते ऐसे बहुत दिन बीते तब एकदिन विश्वेश्व-रनाथ महादेवजीनें सेठ पुरुषोत्तमदाससों कह्यौ जो सेठजी तुम हमसों गांवको नातोतो राखौ कबहूं हमको प्रसाद तौ दियौ करौ ऐसे स्वप्नमें कही तब सवारे सेठ पुरुषोत्तम-दास उठि सेवासों पहुंचके बाहर आये तब वस्त्रपहरके बीडा

दोय प्रसादी लेके डवरा प्रसादको लेके विश्वेश्वरनाथ महादेवजीके दर्शनकों चले तब गांवके लोग आश्चर्य भए जो सेठ पुरुषोत्तमदास कबहूं दर्शनको न आवते सो आज क्यों आये सो सब लोग साथ आए सो सेठ पुरुषोत्तम दासने देवालयमें जायके विश्वेश्वरनाथ महादेवजीके आगे बीडा दोय धरि प्रसादको डवरा धरि श्रीकृष्ण स्मरन कहिकें उठि चले तब बडे १ पंडित ब्राह्मण हुते तिनने सेठ पुरुषोत्तमदासनों कह्यौ जो सेठ पुरुषोत्तमदास दंडोत नमस्कार कछू न कीनों श्रीकृष्णस्मरण कहिके उठिचले सो तो तुमको उचित नाहीं तब सेठ पुरुषोत्तमदासने उन ब्राह्मणनसों कह्यो जो तुम महादेवजीकों पूछि लीजियौ तुमसों महादेवजी कहेंगे पाछे उन ब्राह्मणनमें एक महादेवजीको बड़ो कृपापात्र भगवदीय हुतो तासों महादेवजीने स्वप्नमें कह्यौ जो हमने इनसों महाप्रसाद मांग्यो हो सो देन आये हैं हमारो इनको ब्योहार जै श्रीकृष्णको है ताते तुम इनसो कछू मति कहौ पाछे सेठ पुरुषोत्तमदास बडे उत्सवको प्रसाद कबहू २ लेजाते तब एकदिन महादेवजीने कालभैरवसों कह्यौ जो सेठ पुरुषोत्तमदास वैष्णवन के घरते अबेरो सबेरो आवतहै ताते तू इनके घरकौ चौकी पहरा नित्य देव रहियौ सों कालभैरव नित्य इनके घरकौ चौकी पहरा देतौ सो एक दिन सेठ

पुरुषोत्तमदास वैष्णवनके घरते अबारे आवत हैं सो सेठ पुरुषोत्तमदास घरके द्वार आये तब फिरके देखें तौ कालभैरव एक ठौर ठाढौ है तब सेठ पुरुषोत्तमदासने वासों पूछौ जो तू कौन है तब वह बोलो जो हूं कालभैरवहों मोको महादेवजीने आज्ञा दीनी है ताते तुम्हारे घरकी चौकी पहरा देतहों तब सेठ पुरुषोत्तमदास खिरकी देकें भीतर गये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

बहुर एक दक्षिणदेशको ब्राह्मण सैवी हुतो सो बडो पंडित महादेवजीकौ कृपापात्र हुतौ सो वा ब्राह्मणको महादेवजीको साक्षात् दर्शन होतो सो वह ब्राह्मण नित्य प्रति महादेवजीके दर्शन करतौ तब जलपान करतौ ऐसौ महादेवजीको भक्त हुतौ सो एक समैं जन्माष्टमीको उत्सव आयौ सो विश्वेश्वरनाथ महादेवजी सेठ पुरुषोत्तमदासके घर गये जन्माष्टमीको उत्सव देखनकों सो वा ब्राह्मणने जन्माष्टमीके उत्सवके दिना दर्शन न पायो और नवमीके दिना दुपहरलों जब सेठ पुरुषोत्तमदासके घरते महादेवजी बिदा होयकें आये तब वा ब्राह्मणनें महादेवजीको दर्शन पायौ तब वा ब्राह्मणनें महादेवजीसों पूछो जो कालि और आज हम दर्शन दुपहरलों नाहीं पायौ सो काहेते तब वा ब्राह्मणसों महादेवजीने कह्यौ जो हम कालि सेठ पुरुषोत्तम-दासके घर उत्सव देखन गए हे सो अबही सेठ पुरुषोत्तमदासके

घरते बिदा होयके आवतहों तब वा ब्राह्मणने कही जो सेठ पुरुषोत्तमदास कौन हैं तिनके घर तुम उत्सव देखनकौ जातहौ तब महादेवजीने कह्यौ जो बडे भगवद्भक्त हैं तब वा ब्राह्मणने कहो जो होहूंकौ भगवद्भक्त करो तब महादेवजीनें कह्यौ जो सेठ पुरुषोत्तमदासके पास तू जायके पास नाम ले आउ तब वा ब्राह्मणने कही जो तुमही मोकों नाम देउ तब महादेवजीने कही जो मैतो तोकों नाम देउंगो सही परि मेरो दियौ नाम तोको फलेगो नाहीं ताते सेठ पुरुषोत्तमदासके पास नामलै आउ वे तोकों नाम देयंगे तब वह ब्राह्मण सेठ पुरुषोत्तमदासके पास नाम लेनगयौ सो आयके भीतर खबर करवाई जो एक ब्राह्मण आयो है तब सेठ पुरुषोत्तमदासने कही जो बैठारो माथोखाली करन आयौ होयगो तब सेठ पुरुषोत्तमदास सेवासो पहुँचिकें बाहर आये तब वा ब्राह्मणने दंडौत कीनी तब सेठ पुरुषोत्तमदासने कही जो ऐसो अनुचित क्यों करतहो हम क्षत्री तुम ब्राह्मण ऐसे यों न घटे है तब वा ब्राह्मणने सेठ पुरुषोत्तमदाससों कही जो हमको नाम देउ तब सेठ पुरुषोत्तमदासने कह्यौ जो हूं तो नाम नाहीं देउंगो बहुरि ब्राह्मणने बहुत आग्रह कीनों परि पुरुषोत्तमदासनें नाम न दीनों तब वह ब्राह्मण महादेवजीके पास आयौ तब

कह्यौ जो सेठ पुरुषोत्तमदास नाम नाही देत तब महादेवजीने कह्यौ जो तू फेरिजा हमारो नाम लीजियौ जो मोंको श्रीमहादेवजीने पठायौ है तब वह ब्राह्मण फेरि सेठ पुरुषोत्तमदासके पास आयौ और कह्यौ जो मोकों महादेवजीने पठायौ है ताते मोकों नामदेउ तब सेठ पुरुषोत्तमदासने वा ब्राह्मणकों नाम दीयौ नाम सुनायके हाथ जोरिकें श्रीकृष्णस्मरन कह्यौ तब वा ब्राह्मणने कह्यौ जो अब मोंको प्रनाम क्यों करत हौ तब सेठ पुरुषोत्तमदासने कह्यौ जो अब तुम भगवदभक्त भये मेरे तुम बंदनीयहौ तुम्हारे और हमारे बंदनीय श्रीआचार्यजी महाप्रभू हैं मैंतौ श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपाते नाम देतेहौ पाछे वह ब्राह्मण श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकेपास अडेल आयौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास नामसमर्पण करवायौ पाछें कितनेक दिन रहके श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ग्रन्थ पढे ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

बहुरि एक समय सेठ पुरुषोत्तमदास बैठे मंदिर वस्त्र करते हुते इतनेहीमें गोपालदास बेटा श्रीठाकुरजीको सेन भोग सरायवेकों मन्दिरमें न्हायके आयो तब देखेंतो सेठ पुरुषोत्तदास बैठे बैठे मन्दिर वस्त्र करत हैं तब गोपालदासके मनमें आई जो अबतो सेठजी वृद्ध भए हैं ताते में सेवामें तत्पर होउतौ आछौं तब यह बात गोपालदासके मनकी सेठ

पुरुषोत्तमदासने जानी तब कह्यौ जो बेटा आगें आउ तब गोपालदास जायकें देखैतौ वर्ष वीस तथा पचीसकें बैठे हैं तब पुरुषोत्तमदासने कह्यौ जो बेटा यह भगवदीयनकी मनमें न लावनी भगवदीय सदा तरुन हैं पारि अवस्था होय ताको मान दीयौ चाहिये ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

बहुरि एक समय सेठ पुरुषोत्तमदास झाड खंडमें मदार मधुसूदन ठाकुर हैं सो पर्वत ऊपर मन्दिर है पर्वतको नाम मंदार पर्वत है ता ऊपरते मनुष्य गिरे तो चोट न लगे और अपने सब पाप कहि कामना करि गिरेतौ देह छूटे पाप दूर होंय और जो कामना करि होय सो दूसरे जन्ममें सिद्ध हो वह ऐसो स्थल है तहां एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू पधारे हुते तहां सेठ पुरुषोत्तमदास और एक ब्राह्मण श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको सेवक सो दोउजने मंदिर मधुसूदनजीके दर्शनकों पर्वत ऊपर चढे सों उहां जायके मधुसूदनजीके दर्शन कीनों पाछें रात्रि परिगई तातें उहांहीं सोय रहैं पाछें रात्रिकों एक सिद्ध आयौ वह जातिको ब्राह्मण हुतौ वा सेठ पुरुषोत्तमदासके साथके ब्राह्मणसों पूछौ जो तुम कोन हों तब वह बोल्यौ हम वैष्णवन हैं श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक हैं तब वा सिद्ध ब्राह्मणने कह्यौ जो मेरे पास एक

मणि है सो तुम लेजाउ तौ लेउ तब वा वैष्णवने कह्यौ जो यह मणि कौन काम आवत है तब सिद्ध ब्राह्मणने कही जो यह मणि ऐसी है जो माँगे सो देत है तब वा ब्राह्मणनें कही जो मैंतो विरक्तहौं में मणि लेकें कहा करूं परि मेरे साथ एक क्षत्री है सो वह गृहस्थ है सो वह सोवत है जो वाको देउ तो जगाऊं तब वा सिद्ध ब्राह्मणने कहा जो जगावो तब वा वैष्णवनें सेठ पुरुषोत्तमदासकौं जगायो और कही जो यह ब्राह्मण मणि देत है सो तुम लेउ तब सेठ पुरुषोत्त-मदासने कही जो यह मणि कौन काम आवत है तब वा मणिकौ प्रभाव कह्यौ तब सेठ पुरुषोत्तमदासने कह्यौ जो यह मणि हमारे कामकी नाहीं ताते हूंतो न लेउंगो तब सिद्ध ब्राह्मण फिर गयौ तब सेठ पुरुषोत्तमदासके संग ब्राह्मण हुतौ ताने सेठ पुरुषोत्तमदाससों कह्यौ जो तुमतो गृहस्थ हौ बहुत कुटुम्बी हो तुम्हारे माथे सेवा है तुमने मणि क्यों न लीनी तुमको तो मणि लेनो उचित हो तब सेठ पुरुषो-त्तमदासने कह्यौ जो अरे ब्राह्मण बावरे में श्रीठाकुरजीको तथा श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकौ आश्रय छोडिके कहा मणिको आश्रय करूं तेने मणि क्यों नलीनी तब वानें कह्यौ जो मेंतौ विरक्तहों मैं मणि लेके कहा करूं मोको जगदीस सेर चून देयगौ तब सेठ पुरुषोत्तमदासनें वा वैष्णवसों कह्यौ जो

तोकों जगदीस सेरचून देयगौ तो मोंको कहा जगदीस दश-सेर चून नदेयगो जगदीसकें काहु बातकी न्यूनता है ऐसे कहिकें दोऊ जनेनने वो मणि न लीनी वे सेठ पुरुषोत्तम-दास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हैं ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥

बहुरि एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू सेठ पुरुषोत्तम-दासके घर पधारे तब दामोदरदास हरिसानी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके साथ हैं सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने सेठ पुरुषो-त्तमदासके सेव्य श्रीठाकुरजी मदन मोहनजीकौ पंचामृत स्नान करवायौ और आप पाक करि श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यो भोग सराय अनोसर करि श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें आप भोजन कीयो तब दामोरदास हरि-सानीनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों पूछौ जो राज यह कहा तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो यह मेरी आज्ञातें नाम देव है तथापि मोको याकी इतनी मर्यादा राखी चाहिये सो वे सेठ पुरुषोत्तमदास श्रीआचार्यजी महा-प्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ताको पार नाहीं सो अब कहां तांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ ५ ॥ वैष्णव ॥ ९ ॥

पुरुषोत्तमदासकी बेटी रुक्मनीकी वार्ता

सो एक समय श्रीगुसांईजी काशीमें पधारे हुते तब तहां सूर्य ग्रहण आयौ तब श्रीगुसांईजी मनिकर्णिकाके स्नानको पधारे तब रुक्मनीहू श्रीमदन मोहनजीको स्नान करायकें आप मनिकर्णिका स्नानको गई श्रीगुसांईजी पधारे जानकें तब श्रीगुसांईजीसों वैष्णवननें कह्यौ जो महाराज सेठ पुरुषोत्तमदासकी बेटी रुक्मनी आई है तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जा रुक्मनी आगें आउ तब अपने पास बुलाय लीनी तब श्रीगुसांईजीनें पूछो जो तू कितनेदिन पाछें गंगास्नानकों आई है इब रुक्मनाने कह्यौ जा महाराज चौबीस वर्ष पर्य्यंत पाछें आईहों तब यह सुनिकें श्रीगुसांईजीको हदो भरिआयौ और कह्यौ जो ऐसी भगवदीय जिनको एक क्षणहूं अवकाश नाहीं है जो गंगास्नानको आवै श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये और रुक्मनीको देखिके श्रीगुसांईजी कहते जो याके श्रीठाकुरजी आरिण कब होयंगे ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

बहुरि क्षत्रीलोग सब कार्तिकमासमें गंगास्नान करते तब रुक्मनीने सेठ पुरुषोत्तमदाससों कह्यौ जो तुम आज्ञा करो तौ मैंहू कार्तिकस्नान करूं तब सेठ पुरुषोत्तमदासने कह्यौ जो भलेंई स्नान करि जो चाहिये सो लीजिये तब रुक्मनीने

कह्यौ जो खांड घृत दिवाय देउ मदा तौ घरमें है तब सेठ पुरुषोत्तमदासने खांड घृत दिवाय दियौ तब रुक्मनी पहर रात्रि पिछली रहै जब उठे सो नौतन सामग्री करिकें समय समय राजभोगलों श्रीमदनमोहनजीको समर्पि फिर उत्थापनसों सामग्री करे सो सेन भोगलों सपर्पि ऐसे कार्तिक मासम करै और बैशाखमें शीतल सामग्री करै श्रीठाकुरजीको आरोगावै सो प्रसाद वैष्णवनको लिवावै या भांतिसों करै सो एक दिन सेठ पुरुषोत्तमदासने रुक्मनीसों कही जो रुक्मनी स्नान कब करत है ताकों जात कबहूं देखियत नाहीं तू कार्तिक कोन वेर न्हाति है तब रुक्मनीनै कह्यौ ज़ो मोको स्नान सो कहा काम है मैंतो या भांतिसों करतहों तब यह सुनिकें सेठ पुरुषोत्तमदास बहुत प्रसन्न भए श्रीगुरुसांईजी आप श्रीमुखते सराहना करते रुक्मनी ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

बहुरि कितनेक दिनमें रुक्मनीकी देह आसक्ति भई तब रुक्मनीनें कह्यौ ज़ो अब यह देह छूटैतौ भलौ है श्रीठाकूरजीकी सेवा न होय आवे तो यहै देह कौन कामकी है तब कितेक दिन पाछें रुक्मनीकी देह छूटीसो एक वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों कही जो महाराज रुक्मनीने गंगा

पाई तब श्रीगुसांईजी श्रीमुखते कहे जो ऐसे मति कहौं जो रुक्मनीने गंगा पाई ऐसें कहो रुक्मनी गंगाने पाई वह रुक्मनी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही ताते इनकी वार्ता अनिर्वचनीयहै सो कहातांई लिखियै ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥ वैष्णव ॥ १० ॥

अथ पुरुषोत्तमदासको बेटा गोपालदासकी वार्ता

सो गोपालदाससों श्रीमदनमोहनजी सानुभाव हुते जो चाहियै सो मांगि लेते ऐसें सदैव कृपा करत बहुरि गोपालदास कीर्तन बहुत करते और गोपालदासकी देह आसक्ति भयी तब भगवद नामको उच्चारण करते तब श्रीमदनमोहनजी आप हुंकारी देते ऐसी कृपा करते श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ग्रन्थ सुबोधिनीजी श्रीभागवत निबंध और रहस्य ग्रंथसो सब पाठ करते भागवत लीलामें मग्न रहते सदैव लीलाको बिचार करते ऐसे करकें सर्व काल व्यतीत कीयो पाछें देह छूटी तब श्रीगुसांईजीनें सुनी जो गोपालदासकी देह छूटी है तब आप श्रीमुखते कही जो गोपालदासकी सराहना करी सो वे गोपालदास ऐसे भगवदीय हैं सो यह वार्ता सब सेठ पुरुषोत्तमदासके परिवारकी भई ताते

इनकी वार्ता कौ पार नहीं सो अब कांताई लिखियै ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ११ ॥

अथ रामदास सारस्वत ब्राह्मण ताकी वार्ता

सो वे रामदास श्रीठाकुरदासजीकी सेवा नीकी भांतिसों करते अपरसमें जल भरते बीडाहू अपरसमें राखते या प्रकारसों करते सो रामदासके पास द्रव्य बहुत हुतौ सो कितेक दिन पाछें वह द्रव्य खरच भयौ थोरोसो द्रव्य आय रह्यौं इब मनमें विचारी जो कछू आवत होय तो भलो है तब ता दिनसे वह द्रव्य तातीनको व्याजू दीनों तब व्याज बहुत आमन लाग्यौ लोभके लिये वातीनकौ व्यौपार कीयौ (पूरबदेशमें फटे वस्त्र बुनत हैं तिनसों ताती कहत है) तब रामदासजीके सेव्य श्रीठाकुरजी श्रीनवनीतप्रियाजीने कह्यौ रामदास तूतौ हमकौ तातीनपर राखत है तब रामदासजी यह बात सुनिके चौंकि उठे और कह्यौ जो महाराज मोसौ चूक परी तब रामदासजी यह तातीनपर गए और कह्यौ जो मेरो द्रव्य देउ तब उन तातीननें रामदासजीसों पूछौ जो यह कारन कहा है सो द्रव्य मांगत हौ तब रामदासजीनें कह्यौ जो में कहा-

करूं मोकोतो लरिका संग काम पऱ्यो है ताते लरिकाको मन राख्यौ चाहियै तब तातीनने कह्यौ जो हम द्रव्य इक ठोरो करत है तब कितेक दिन पाछें उन तातीनने द्रव्य दीयौ सो द्रव्य लेकें घर आए फेर वेसेही सेवा करन लागे सो सब द्रव्य निवट्यो तब बनियानकी दूकानते उचापति करन लागे तब ऋणि बहुत होगयो तब उचापति बनियाकी दूकानते दूरकीनी और बनियाकी दूकानते उचापति करन लागे परि वा बनियाकी हाट आगे होयकें निकसते नाहीं और गेल होयकें जाते तब एक दिन बनियाने रामदाससों कही जो भलौ तुम मेरी दूकानके आगे होयके नाहीं निकसत हो और उचापति नाहीं करत तौ मेरो लेखो करिके मेरो पैसा चुकाय देउ तगादो बहुत करडो कीयौ तब श्रीठाकुरजी रामदासजीको स्वरूप धरिकें बनियाकी हाट ऊपर गऐ और श्रीमुखते कही जो लेखौ लाउ पैसा चुकाय देउ तब वा बनियाने वही देखि लेखौ करिके पैसा चुकाय दीनों रुपैया एकसो अधिक दीयै श्रीठाकुरजी आप श्रीहस्तसों लिखि आये परि यह बात रामदासजीने न जानी तब एक दिन रामदासजीको बुलायवे वैष्णव आए तब उन वैष्णवनके पाछें २ रामदासजी गए सो रामदासजी वा बनियाकी दूकानके आगें होयके निकसे तब आनाकानी देके निकसे इतनेमें वा बनियाने

कही जो रामदासजी तुम मेरी हाटते उचापति नाहीं करत सो तौ मेरो अभाग्य है परि तुमारो मोपै अधिक द्रव्य है सो तो उठाय लेउ तब रामदासजीने कह्यौ जो उहांते फिर आवत हौं तब रामदासने मनमें बिचारौ जो मैतौ याकौ कछूदीयो नाहीं और यह कहत है जो तुम्हारौ अधिक द्रव्य है सो तो उठाय लेउ यह कारन कहा है परि जानियत है जो यह श्रीठाकुरजी औंरते काम भयौ है पाछे रामदासजी वैष्णवनके घरते आये तब वा बनियाकी हाटपै जायकें लेखो मांगो जो लेख्यौ लाउ तब वा बनियाने कह्यौ जो कहालेखौ देखौगे तब वा बनियाने वही दिखाई तब वा वहीमें रामदासजीने श्रीठाकुरजीके हस्ताक्षर देखे तब चुप करि रहै तब घर आय रामदासजीने स्त्रीसों कही जो हूंतो घरमें नाहीं रहूंगो चाकरी करूंगौ तब सिपाहगीरीको बिचार कीयौ तब घोडा मोल लीयौ सब हथियार बांधन लागे तब जल और बीडा अपरसमें लेत है सो अपरस छूटी बिना अपरसमें लेन लागे सो कितेक दिन पाछें रामदासजी अडेल आयै सो हथियार बांधेही जायकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शन कीने दंडवत कीनी तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें श्रीमुखतें धन्य २ कह्यौ जो रामदास तू धन्य है तब और वैष्णव पास बैठे हैं सो कहन लागे जो

महाराज अब याकों धन्य क्यों कहत हौ अब तौ यह अप-रसतासों नाहीं रहत है सिपाहीनमें चाकरी करत है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कही जो यह धन्य याते है श्रीठा-कुरजीकौ श्रम नाहीं करवावत याकी बराबर कोऊ धीरज-वंत नाहीं श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप ता समय गंगास्नानको पधारे तब मार्गमें एक खाड देख्यौ तब श्रीआचार्यजी महा-प्रभूननें कह्यौ जो यह खाड अजहू भर्यौ नाहीं सो इतनो कहतही वैष्णव सब खाडभरन लागे तब रामदासजीहू एक टोकरा लेकै खाड भरन लगे तब श्रीआचार्यजी महा-प्रभू स्नान करिके पधारे तब तांई खाड भर दीनों तब रामदासजीको देखिकें श्रीमहाप्रभूजी बहुत प्रसन्न भए ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

और रामदासजीकें कछू संतत न हुती तब स्त्रीने राम-दासजीसों कह्यौ जो तुम और विवाह करौ तौ तुम्हारें बालक होय तब रामदासजीने कह्यौ जो हमको तौ बाल-ककी इच्छा नाहीं तब स्त्रीने कह्यौ जो मोंको तौ बालककी इच्छा है तब रामदासजीने कह्यौ जो तोको बालककी इच्छा है तब तौ हमारे श्रीनवनीतप्रियाजीकी बालभावसों सेवा करि जैसे बालककूं खवाइयै प्याइयै खिलाइयै हित करियै तैसे तुम श्रीनवनीतप्रियाजीको लडावो तब तेरे बालक

होयगौ तब रामदासजीकी स्त्रीने श्रीनवनीतप्रियाजीकी बालभावसों सेवा करि सो या प्रकारसों सेवा करि जो बालक भयौ है सो वे रामदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ताकौ पार नाहीं सो इनकी वार्ता अब कहांताई लिखियै ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ वैष्णव ॥ १२ ॥

गदाधरदास सारस्वत ब्राह्मण कंडामें रहते तिनकी वार्ता

सो गदाधरदासके मांथे श्रीमदनमोहनजीकी सेवा हुती सो श्रीठाकुरजी बडे गौर हुते सो नित्य प्रति जैसो उनके जिजमान केसे आवतौ तैसो श्रीठाकुरजी समर्पते सो एक दिन जिजमान केसे कछू आयौ नाहीं तब जलही छानके समर्प्यौ परि मनमें बहुत खेद भयौ छातीमें अग्निसी उठी ऐसे करत रात्रि परगई तब एक जिजमान द्वारेपर आय पुकार्यो और कही जो किवाड खोलौ तब गदाधरदासने किवाड खोले तब वा जिजमाननें एक बागो और चार रुपैया और कछू सामग्री गदाधरदासको दीये और कह्यौ जो आज मेरे पिताको श्राद्धदिन हुतौ ताकी यह दक्षिणा लेउ तब गदाधरदासने लीनी सो बागो सामग्री घरमें धरके आप बाजा-

रमें गये सो एक हलवाई मिठाई आछी करत हुतो ताकी हाटपै गए तब जायकें वा हलवाईसों पूछी जो तेरे मिठाई आछी है तब हलवाईनें कही जो मिठाई जलेबी-अबही कीनी है यामेंते बेची नाहीं तब जलेबी तुलाय मोल देके घर आए तब गदाधरदास आयकें स्नान करि श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यो समयानुसार भोग सराय अनोसर करके पाछें वैष्णवनको बुलाय महाप्रसाद सबनको लिवायौ सो अति अलौकिक स्वाद भयो ऐसो जो कछू कह्यौ न जाय सो सब महाप्रसाद वैष्णवनकौ लिवायौ और आप भूखेही सोय रहै पाछें सवारे उठि सीधौ सामग्री लाए तब स्नान करि रसोई करी श्रीठाकुरजी सेवा शृंगार करि श्रीठाकुरजीको भोगसमर्प्यो भोग सराय वैष्णव फेर बुलाऐ जब वैष्णव प्रसाद लेवेको आयके बैठे तब पूछन लागे जो रात्रिको महाप्रसाद हमने लीनो सो बहुत स्वाद भयौ सो क्यों करि समर्प्यो तब गदाधरदासने सब प्रकार कह्यौ तब सब वैष्णव बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ जो गदाधरदासनें सत्य कह्यौ ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

बहुरि एक समय गदाधरदासनें सब वैष्णव महाप्रसादको बुलाए हुते परि साक साजन कछू न हुतौ तब गदाधरदासनें

कही जो ऐसो कोउ वैष्णव है सो साक ले आवे तब तिनमें एक वैष्णव वेणीदासको भाई माधोदाससों बडो विषयी हुतो ताते वेश्या घरमें राखी हुती तिनने कह्यो जो में ले आऊंगा गदाधर दासने कह्यो जो भले लेआवो तब माधोदास गयो सो बथुआकी भाजी ले आयौ सो माधोदासनेनीकीभांतिसों दीनी रसोईमें पाछे रसोई सिद्धि भई तब श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यो पाछें भोग सराय अनोसर करके वैष्णवनको महाप्रसाद लेन बैठाये परि वह भाजी अतिस्वाद भई तब गदाधरदासने माधोदासको आशिर्वाद दियौ जो तू हरिभक्त दृढ होयगो पाछें गदाधरदासके आशिर्वादते माधोदास भलो वैष्णव भयौ सो वे गदाधरदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हुते ताते इनकी वार्ताको पार नहीं ताते इनकी वार्ता कहांतांई लिखियै ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ वैष्णव ॥ १३ ॥

अथ वेणीदास माधोदास दोऊ भाई तिनकी वार्ता

सो बडे भाई वेणीदास छोटेभाई माधोदास सो माधोदास वही जो गदाधरदासके घर बथुवाकी भाजी ले आयौ हो सो माधोदास बड़ो विषयी हुतौ ताने घरमें वेश्या राखी हुती

तातें सब वैष्णव माधोदासकी निन्दा करते सो बात श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने सुनी जो माधोदास बडौ विषयी भयौ है घरमें वेश्या राखी है सो एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें माधोदाससों पूछौ जो क्यों रे माधोदास तेने घरमें वेश्या राखी हैं तब माधोदासनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यो जो महाराज मेरो मन आसक्त भयो है तासों राखी है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप चुप कर रहै सो तीन बेर आपने माधोदाससों पूछौ तब तीनों बेर माधोदासने योंही कह्यो जो महाराज मेरो मन वासों आसक्ति भयो है तासों राखी है तब वैष्णवननें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कही जो महाराज अबलोंतौ आपकी कानिही परि अब तौ तुम्हारे आगे कह्यौ तासों तुमने तौ कछू न कही तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने उन वैष्णवनसों कही जो वाकौ मन वासों आसक्त भयौ है सो श्रीठाकुरजीकों फेरते कितनी वार लागेगी और गदाधरदासनें वाकों आशीर्वाद दिया है जो तोकों दृढभक्ति होयगी सो यह माधोदास है तब कितेक दिन पाछें माधोदासकी बुद्धि श्रीठाकुरजीने फेरी तबतो वाने वेश्या दूर कीनी पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपाते माधोदास भलो वैष्णव भयौ ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

बहुर कितेक दिन पाछें एक माला मौतीनकी बहुत सुन्दर बहुत मौलकी बिकवेकों आई सो देखकै माधोदासने बडे भाई वेणीदाससों कह्यौ जो यह माला श्रीठाकुरजीके कंठ लायक है तब बडे भाई वेणीदासने कही जो यह मालाकी कहाहै हमारे पास जो है सो सब श्रीनवनीतप्रियाजीकी है ऐसें कहिकें बात टार दोनी तब माधोदासने कही जो आपने घरमें है सो सब ठाकुरजीको है तौ माला क्यों न लेउ तब बडे भाई वेणीदासने कही जो हम गृहस्थ है हमको विवाह-काज सब करनो है ऐसे क्यों बने तब छोटे भाई माधोदासने कही जो हूं तौ न्यारो होउंगो सोन्यारो भयो द्रव्य सब बांट लीनो सो द्रव्यकी वस्तु लेकै दक्षिण गयौ तब वस्तु सब बेंची तब व्यवहार करके द्रव्य बहुत उपज्यौ तब एक माला मोतीनकी पहिले मोलसे उत्तमोत्तम लीनी सोमाला लैके घरकों चले सो आवत वाटमें एक बडी नदी आई तब नावमें बैठे तब नवनीतप्रियाजी लाल छडी हाथमें लेकर आये और कह्यौ जो नाव डुबाऊं तब माधोदासने कह्यौ जो निजेछातः करिष्यति तब श्रीठाकुरजीने कही जो तू क्यों गयौ हौ तब माधोदासने कही जो महाराज मैं माला लेन गयौ हौ तब श्रीनवनीतप्रियाजीने कही जो हमारे क्या माला नहुती हमारे माला बहुतेरी हैं तब माधोदासने कह्यौ

जो तुम्हारे माला बहुतेरी हैं परि सेवककों तौ उपाय करनौं तब नाव डूबतेते रही जितने मनुष्य नावमें बैठे हुते सब हलेकल करन लागे और माधोदासको मन प्रसन्न हुतौ तब सबनके मनमें आई जो ए बडे महापुरुष हैं पाछें माधोदास उहांते घर आये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकौ दंडवत कीनी और हाथमें माला दीनी तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कही जो नाव डूबते ते कैसे रही तब माधोदासने सब समाचार कहे तब और बैष्णव पास बैठे हुते तिननें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कही जो वही माधोदास है जो श्रीमहाप्रभूनकी कृपातें श्रीठाकुरजीनें माधोदासको मन फेर्यो और भगवद्भाव उत्पन्न भयौ अन्याऊपर आसक्तिता हुतौ सो श्रीठाकुरजीके ऊपर भई सो माधौदास ऐसे भगवदीय हैं ताते इन वेणीदास माधोदासकी वार्ताको पार नाहीं सो इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ वैष्णव ॥ १४ ॥

अथ हरि वंशपाठकसारस्वत ब्राह्मण बनारसमें रहते तिनकी वार्ता

सो वे हरिवंशपाठक पटनामें गये हैं सो वहांके हाकिम सों बहुत मिलाप हुतो सो वह हाकिम अपने मनमें कहै जो ए मेरे पास कछू माँगै तो मैं इनको देउं परि कछू माँगै नहीं

यो करत डोल उत्सवके दिन द्वै रहै तब अपने सेव्य श्रीठाकुरजी हुते तिनने स्वप्नमें जताइ जो तू मोकों डोल न झुलावेगो तब हरिबंशपाठकनें मनमें बिचार्यौ जो अब कहा करूं तब हरिबंशपाठकहाकिम पास गयेसो जायकें कही जो आपके पास कछू मांगन आयौ हूं सो मोकों दीयौं चाहिये तब राजाने कही जो कहा चाहिये तब हरिबंशपाठकने कह्यौ जो मोको दिन द्वैमें बनारस पहुंचनो है तब हाकिमने कह्यौ जो भलो तब हाकिमने घोडा और मनुष्य साथ दीये पेडेमें डाक चोकी बनाई ऐसे करत अपने घर आये पाछें आप मन्दिरमें आयकें डोल सिद्धि कीयो डोल की सामग्री सब सिद्धि करकें पाछें ठाकुरजीको डोलमें बैठाये बहुत सुख भयौ सो थोरे दिन पाछै फिर पटना गये तब हाकिमनें कह्यौ जो तुमको ऐसी कहा जलदी हुती तब हरिबंशपाठकने कही जो कछू काम हुतो परि मनका बात कछू न कही सो वे हरिबंशपाठक श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता अनिर्वचनीय है सो कहांताईं लिखिये ॥ प्रसंग १ ॥ वै० १५ ॥

अथ गोविन्ददासभल्ला ताकीवार्ता

सो गोविंददास भल्लाकी गाठिमें द्रव्य बहुत हुतो सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक भये तब गोविंददासने

श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों पूछौं जौं महाराज मेरी गांठिमें द्रव्य है सो में कहा करूं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो श्रीठाकुरजीकी सेवा करि तब गोविंददासने कह्यौ जो महाराज सेवा कैसे करूं स्त्री अनुकूल नाहीं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो तु स्त्रीको त्याग करि तब गोविंददासने स्त्रीको त्याग कीयौ पाछें कही जो महाराज द्रव्यकौ कहा करूं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो अब द्रव्यको चार विभाग करि तब गोविंददासने द्रव्यके चार बाट कीये तब फेरि कह्यौ जो महाराज कहा आज्ञा है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो एक विभाग तो श्रीनाथजीको समर्पि और एक विभाग अपनी स्त्रीको दै और १ विभाग सेवाके लिये तू राखि तब गोविंददासने कही जो महाराज कछू आप अंगीकार करिये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो भलौ एक विभाग हमें दै तब सब विभाग जहाँके तहां दैकै अपने बाटको द्रव्य लेकै आपु महाबन आय रहै सो महाप्रसाद वैष्णवनको लिवावते वैष्णव न मिलेतो गायनको खवावते तामेंते आप रंचकहू न लेते आप न्यारी लीटी करि भोग समर्पिके लेवे ऐसी भांतिसों सेवा करते सो नव द्रव्य निबट्यौ तब श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवामें आय रह तब श्रीगोवर्द्धननाथ-

जीकी परिचारगी करते रसोईकी टहल सब करते दोऊवारके पात्र मांजते और रात्रिडेढ तथा सवापहर पाछली रहती तब उठते सो गागरि तहांते लेके चलते सो मथुरामें विश्रांत घाटपै स्नान करिकें श्रीयमुनाजलकी गागरि भरिकें चलते सो राजभोग पहिले आय पहुंचते बहूरा पात्र मांजि रसोई पोति अपनी सब सेवासों पहूंचकें नीचे आवते पाछि तिलक पोंछि माला उतार गांठि बांधके आसपासके गामनते कोरी भिक्षा मांगि लावते सो सेर चार पांचको आहार करते सो आहार माफिक जुरतो तब आवते तब आप पीस रोटी करि श्रीनाथजीकी ध्वजाके सन्मुख दिखाय तामें चरणोंदक मिलाय प्रसाद लेते ऐसे निर्वाह करते तब ऐसी भांति कर बहुत दिन बीते परि यह बात श्रीनाथजीको न भावे तब श्रीनाथजीने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कही जो तुम्हारो एक सेवक मोकों बहुत दुःख देतें है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू अडेलते चले सो आगरेमें अतएव तहांके वैष्णवसों श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने पूछी जो श्री-ठाकुरजी किनरुठाय हैं तब उन वैष्णवनने कही जो महाराज हमतो कछू समझत नाहीं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू मथुरा पधारे तब मथुराके वैष्णवनसों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पूछो जो श्रीठाकुरजी किन रुठाए हैं तब वहांके वैष्णवननें

कह्यौ जो महाराज हम तौ कछू समझत नाहीं तब श्रीआ-
चार्यजी महा प्रभू उहांते श्रीजीद्वार पधारे तब श्रीनाथजीके
दोऊ कपोल हाथनसों छुईके कह्यो जो बावा अनमने कैसे-
हो तब कही जो तुम्हारो सेवक मोकों बहुत खिजावत है
तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें सब सेवकनसों पूछो जो तुम
कहा कहा सेवा करतहो आर कहा प्रसाद लेतहो तब
सबनने अपनी २ सेवा कही और प्रसाद लेवेको प्रकार कह्यो
पाछें गोविंददाससों पूछो जो तू कहा सेवा करतहै जब जो सेवा
करत हुतो सो सब कही और प्रसाद लेवेको प्रकार कह्यौ
सो सब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने सुनी तब अपने
मनमें जानी जो इन रुठाये हैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें
गोविंददास भल्लासों कही जो तुम श्रीठाकुरजीकी रसोईमें
प्रसाद लेउ तब गोविंददासने कह्यौ देव ऐसे कैसे लेउ तब
श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो तू हमारी रसोईमें प्रसा-
दले तब गोविंददासने कह्यौ गुरू ऐसे कैसे लेउ तब श्रीआचा-
र्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो तू सेवा मतिकरै तब गोविंददा-
सक्षत्री अहंकारसों सेवा छोडिके मथुरा गए सो केसोराय-
जीकी सेवाको इजारौ पठानके पासते लीयौ तब सेवा करन
लाग्यौ सो एक वार श्रीकेसोरायजीकी सिज्या सिवारते

बनाइ सो सिज्या बहुत अद्भुत भई तब श्रीकेसोरायजी वा सिज्याके ऊपर पोढन लागे तब तैसीही निवार वा गामके हाकिमनें बनवाई परि वह निवार वैसी न भई तब वा कारीगरनें कही जो वह निवार तो श्रीठाकुरजीकी है तब हाकिमनें कही जो वह निवार में देखूंगो पाछें हाकिम श्रीठाकुरजीके दिवालेमें जायके सिज्या उपर चढि बैठ्यौ सो गोविंददासनें सुनी तब गोविंददासने आयके गुस्सेलेकें हाकिमकों गारीदीनी जो तू कौन है जो हमारे श्रीठाकुरजीकी सिज्या ऊपर बैठ्यौहै ऐसे वा हाकिमको ठौर मार्‍यौ तब हाकिमके मनुष्यनने गोविंददासको ठौर मार्‍यौ सो यह बात श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे काहू वैष्णवने जाय कही और कह्यौ जो ऐसी गति वैष्णवकों क्यों बूझिये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो याके परलोकमें तो कछू हानि नाहीं परि इनने मेरी आज्ञा न मानी तासों याकी देह या भांतिसों छूटी है यह गोविंददास पहिले जन्ममें श्रीनंदरायजीको भैंसा हुतो याने माटी पानी बहुत ढोयो सो वे गोविंदास भल्ला श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ताको पार नाहीं सो कहांताईं लिखिये ॥ प्र० ॥ १ ॥ वै० ॥ १६ ॥

अथ अम्माक्षत्राणी जो कडामें रहती तिनकी वार्ता

सो अम्माके दोय बेटा हुते सो दोऊ परम वैष्णव हुते आप वैष्णव हुती और वाके लरिका वासों अम्मा कहते और श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकीभांतिसों करती सो वाके सेव्य श्रीठाकुरजी श्रीबालकृष्णजी वासों अम्मा कहते सो कितेक दिनपाछें एकबेटा वाको मरगयो तब श्रीठाकुरजी रसोई करि श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यो समयानुसार भोग सराय पाछें रोवन लागी तब अम्माको रोवत देखिकें श्रीठाकुरजी खेद पावन लगे श्रीठाकुरजी कहे अम्मा तू रोवे मति पारि वह रोवतते रहै नाहीं ऐसे करत वाको दूसरोहू बेटा मरगयो तबतो बहुत रोवन लागो तब श्रीठाकुरजी वाकों रोवतेसों राखे और कहै अम्मा तू मतिरोवे तब अम्मा रोवतते रहै नाहीं तब श्रीठाकुरजीने श्रीगुसांईजीसों कह्यौ जो अम्मा रोवति है सो में बहुत खेद पावतहौं तब श्रीगुसांईजी अम्माके घर पधारे और कह्यौ जो अम्मा तू मतिरोवे श्रीठाकुरजी खेदपावत हैं तब रोवतते रही और अम्मा सेवाको सबसाज करिकें स्नान करिकें पाछें मंदिरमें जायकें दोऊ हाथनसों

सोधों लगायकें श्रीठाकुरजीकें लगावैया भांतिसों सेवा आछी तरह करती ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

बहुर एक दिन दूधको कटोरा श्रीठाकुरजीके आगे भरिराख्योहुत्तो ता समय श्रीगुसांईजी अम्माके घर पधारे मंदिरको टेरा सरकायके दर्शन करनलागे तब श्रीगुसांईजी देखें तो ठाकुरजी दूध पीते हैं तब श्रीगुसांईजी देखिकें पाछें फिर आये तब अम्माने कही जो बाबा पाछें क्यों फिर आये तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो श्रीठाकुरजी दूध पीवतहैं तब अम्माने कही जो श्रीठाकुरजी तो लरिका हैं तुमकहा जानत नाहीं तब श्रीगुसांईजी दर्शन करिकें पाछें फिरे और अम्मासों श्रीगुसांईजीनें कह्यौ जो यह दूध हमारे घर पठाय दीजियो तब अम्माने कह्यो जोराज आपही तो आरोगनवारे भावै तौ इहां आरोगौ भावै उहां आरोगौ पाछें श्रीगुसांईजी आपतौ घर पधारे तब अम्मानें वह दूध श्रीगुसांईजी आपतौ घर पठाय दीयौ सो अम्मासों श्रीठाकुरजी ऐसे सानुभाव हुते प्रत्यक्ष वारता करते जो वस्तु चाहिये सो मांगिलेते सो अम्मा श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही ताते इनकी वार्ताको पार नाहीं सो अब कहांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ वैष्णव ॥ १७ ॥

अथ गज्जनधावनक्षत्रीआगरेके वासी तिनकी वार्ता

सो गज्जन धावन श्रीनवनीतप्रियाजीकी सेवा नीकी भांतिसों करते श्रीठाकुरजी सानुभाव हुते गज्जनके साथ श्रीनवनीत प्रियाजी खेलते गज्जनको कबहूं गाय करते कबहूं बछरा करते तब गायको मुख अपने पीताम्बरसों पोंछते तब बछरा करते तब पकर राखते चलन न देते और जब घोरा करते तब पीठ उपर असवारी करते जब हाथी करते तब ग्रीवा ऊपर असवारी करते ऐसे करत गज्जनके घुटरु घिस गये ऐसी कृपा नवतीतप्रियाजी गज्जन धावनके ऊपर ऐसी करते भोगसामग्री जो चाहिये सो मांगलेते ऐसी कितनीक वार्ता है सो कहां तांई लिखिये और एकदिन श्रीनवनीतप्रियाजीने गज्जन धावनसों कही जो मोकों श्रीगुसांईजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके घर पधराय तासमय श्रीआचार्यजी महाप्रभू गोकुलमें हुते तहां गज्जन आयके श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यौ जो महाराज श्रीनवनीतप्रियाजीकी ऐसी आज्ञा भई है जो मोकूं श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास पधराय तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कही जो भलो पधराय तब गज्जनधावननें श्रीनवनीतप्रियाजी श्रीआचार्यजी

महाप्रभूनके मंदिरमें पधराये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने जैसौ प्रस्ताव बन्यौ तैसे पधराय भोग समर्प्यो पाछें रात्रिको आप बहुत सोधों लगायके श्रीनवनीतप्रियाजीको अपनी सिज्या ऊपर लै पोढे दूसरे दिन नई सिज्या करवाई ता ऊपर पोढे पारि वह सिज्या छोटी भई तब श्रीनवनीतप्रिया-जीने कह्यौ जो हूंतौ या सिज्या ऊपर न पोढूंगो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कही जो ऐसे कैसे बने तब श्रीन-वनीतप्रियाजीने कह्यौ जो कछू बाधक नाहीं है तब श्रीआ-चार्यजी महाप्रभूनने आप सोंधों लगायके पासही ले पोढे पाछें दूसरे दिन सिज्या बडी करवाई तापर पोढाए तब पोढे तापाछें थोडेसे दिन रहिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोकुलते अडेलकों पधारे तब गज्जनहू साथ गयौ गज्जनधावनबिना श्रीनवनीतप्रियाजी एक क्षणहूं न रहते ऐसे ही नवनीतप्रिया बिना गज्जन एक क्षण न रहते तब एक दिन श्रीनवनीतप्रियाजीके लिये श्रीअक्काजीने गज्जन-धानको दान लेने पठायो कह्यौ जो पान ले आवो तब गज्जन ऐसेतौ कहि न सक्यो जो श्रीनवनीतप्रियाजी मोसों हिले हैं सो मैं कैसें जाऊं तातें अनबोल्यो पान लेनको उठि चल्यौ सो थोरीसी दूरगयौ इतनेमें ज्वर चढिआयौ सो उहांहीं पडिरह्यौ और इहां श्रीअक्काजीनें श्रीनवनीतप्रियाको

भोग समर्प्यो तब अक्काजीसों नवनीतप्रियाजीने कह्यौ जो गज्जनको बुलावो मेरो गज्जन आवैगो तब भोजन करूंगो तब श्रीअक्काजीने मनुष्य दोय बुलावनकों पठाये तब वे मनुष्य देखें तौ गज्जन थोरीसी दूरपै परचौ है ज्वर चढि रह्यो है मनुष्य तहांते बुलाय लाये तब गज्जन आप स्नान करि मंदिरमें गयौ तब तत्तकाल ज्वर उतर गयौ तब गज्जनने श्रीनवनीतप्रियासों कह्यौ जो बाबा भोजन क्यों नाहीं करत अब भोजन करौ तब भोजन श्रीनिवनीतप्रियाजीने कीयौ गज्जनधावनसों श्रीनवनीतप्रिया- ऐसे सानुभाव हुते श्रीनवनीतप्रियाजीते एक क्षण न्यारौ भयौ जो तत्तकाल ज्वर चढि आयौ और जब निकट आयौ तब तत्तकाल ज्वर उतर गयौ ताते गज्जनधावन श्रीनवनीतप्रियाजीके सदा पास रहते सो वे गज्जनधावन श्रीआचार्यजी महा प्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वर्त्ताको पार नाहीं सो कहांतांई लिखिये प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ १८ ॥

अथ नारायणदास ब्रह्मचारी सारस्वत- ब्राह्मण महावनमें रहते तिनकी वार्ता

सो नारायणदासके सेव्य श्रीठाकुरजी श्रीगोकुल चन्द्र- माजी सो नारायणदास श्रीगोकुल चन्द्रमाजीकी नीकीभांति-

सों सेवा करते और गायनकों घास खवावते सो धोय पौछिकें खवावते ताको तात्पर्य यह जो श्रीठाकुरजी दूध अरोगत हैं जो मति दूधमें रजआवै ऐसे करते और श्री-आचार्यजी महाप्रभू जब श्रीगोकुल पधारते तब नित्य प्रातःकाल श्रीगोकुलमें महावन पधारते श्रीगोकुल चन्द्रमाजीकी सेवा करिवेको सो सेवा करि भोग समर्पिकें पाछें श्रीगोकुल पधारते और नारायणदास जहां हाथपांव धोवेको बरहेमें जातें जा ठोरते मांटी खोदते ता ठौर द्रव्य निकसतौ ताऊ पर माटी डारि उठि आवते परि द्रव्यको स्पर्श न करते सो नारायण ऐसे त्यगी हुते सो नारायण दास एकदिन सोवत हुतौ तहां खाटके आसपास द्रव्यके ढेर भये हुते तब नारायणदास देखे तौ खाटके आसपास द्रव्यके ढेर भये हैं तब नारयणदासनें भतीजीसों कही जो बेटी बेगि उठि घरमें विगार बहुत भयौ है बुहारिकें कूरौ सब बाहर डारि आउ तब नारायणदास तौ बरहेमें देह कृतको गये पाछें भतीजीने सोई कीयौ सब बुहारके कूडेकी नांई सब बुहार दीनौ जगै सब लीपडारी पाछे नारायणदास स्नानकरि मन्दिरमें गयै तब सेवा सिंगार सब करिकें श्रीठाकुर-जीके साम्हे देखे सो श्रीठाकुरजीनें नारायणदासको अति सुन्दर दर्शन दीनों तब अतिप्रसन्न श्रीठाकुर-

जीको देखकें नारायणदासने कह्यौ जो महाराज यह घटा काहेंको उनहीहै न जाने कहां बरसेगी पाछें आपही कह्यौ जो यह घटा श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकौं सरवस्व है वहां बरसेगी पाछें नारायणदास श्रीगोकुल चन्द्रमाजीकों राजभोग समर्पिकें बाहर आय बैठे तब हृदौ भरि आयौ जो श्रीठाकुरजी कौन भांतिसों आरोगत हैं ऐसो विचार मनमें लाए तब भतीजीने कही जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक जहां भोग समर्पित हैं सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कानिते अरोगत है सो तुमतौ श्रीआचार्यजी महानप्रभूनके सेवक परम कृपापात्र भगवदीय हों ताते तुम्हारो समर्प्यो क्यों न आरोगेंगे तुम सन्देह क्यों करत हौ तब नारायणदासनें कह्यौ जो बेटी आरोगें जब जानियै तब कोई वैष्णव अपने घर आय अचानक महाप्रसाद लेय तब जानियै जो श्रीठाकुरजी अरोगे होयगे वैष्णव ऊपर नारायण दासको ऐसो भाव हुतौ ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

बहुरि एकदिन नारायणदास श्रीगोकुल चन्द्रमाजीको श्रृंगार करि रसोईमें गये तहां श्रृंगार भोगको सिद्ध करके सरायवेंकों थार धरचौ इतनेमें एक वैष्णवनें नारायणदासके पास आयकें बधाई दीनी जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू गोकु-

लते पधारत हैं सो नारायणदास सुनतही ताती खीरको डब-रामें मेलि श्रीठाकुरजीको भोग समर्पि उतावले श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनको आये तब आयके श्रीआचार्यजी महा-प्रभूनके दर्शन करके दंडवत कीनी सो श्रीआचार्यजी महाप्र-भूनके चरणारबिन्द ऊपर माथो रहैं तब नारायणदासकौ माथौ पकरि आप श्रीहस्तसों उठायो और पूछो जो श्रीगोकुल चन्द्रमाजीके यहां कहा समय है तब नारायणदासने कही जो महाराज अबही सिंगारभोग समर्पिके आयौ हूं सो सुनिके श्रीआचार्यजी महाप्रभू तत्काल पधारे तब जातही स्नान करिकें मंदिरमें हाथ धोय आचमनकी झारी हाथ-में लेके भोग सरायवेको मन्दिरमें पधारे तब भीतर जायके देखेतो श्रीगोकुलचन्द्रमाजीके श्रीहस्त खीरमें भरे हैं और श्रीहस्तकमल खेंचिरहे हैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें श्रीगोकुलचन्द्रमाजीसों कही जो महाराज श्रीहस्तको क्यों खेंचि रहेहौ तब श्रीगोकुलचन्द्रमाजीने कही जो तुमको आये जानिके मोकों नारायणदास ताती खीर समर्पिकें तुमारे पास गयो सो खीर मेरे हातसो ताती लागी सो मेने थोरीसी चाटकें हाथ झटके सो सब मन्दिरमें छींट लागी हैं और मेरे हाथ और ओष्ट राते भये हैं सो श्रीगोकुलचंद्रमाजीके हाथ और ओष्ट अजहूं लाल हैं पाछे श्रीआचार्यजी महा-

प्रभूननें खीर पंखासों सीरीकरि भोग समर्पिके बाहर आये तब नारायणदाससों खीजे और कह्यो जो तेने श्रीठाकुरजीको ताती खीर समर्पि तब नारायणदासनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों बीनती कीनी जो में राजको पधारे जानि उतावलो राजपास आयो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कही जो आज पाछें ऐसो काम मति करियौ पाछें समय भयौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने भोग सरायो तब श्रीगोकुलचंद्रमाजीने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दोऊ श्रीहस्त पकरिकें कह्यो जो तुम खीर महाप्रसाद लेउ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो महाराज जातिव्यवहार की कठिन है तब श्रीगोकुलचंद्रमाजीने कह्यौ जो यह मेरी आज्ञा है तातें तुम कछू विचार मति करौ खीरको महाप्रसाद लेउ तब श्रीगोकुलचन्द्रमाजीने खीरको महाप्रसाद हो सो अपने आगेंही श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको लिवायौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने लीनो तादिनते अनसखडीमें होत हैं नारायणदासों श्रीगोकुलचंद्रमाजी ऐसी भांति सेवा करवावते वे नारायणदास ऐसे भगवदीय हैं तातें श्रीगोकुलचंद्रमाजी ऐसी कृपा करते ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

बहुरि कितनेकदिन पाछें नारायणदासकी देह थकी सो बहुत आशक्ति भई तब एकदिन श्रीगोलचन्द्रमाजीने नारायणदाससों कह्यौ जो नारायणदास तू कछू मांगि तब नारा-

यणदासने कही जो महाराज हूं यह मांगत हूं जो तुम श्रीगुसांईजीके घर पधार सेवा करवावौं नारायदासके मनमें यह जो श्रीठाकुरजी और कहूं सुख न मानेगे सेवा आछी भांतिसों न होयगी सो नारायणदासने अंतसमें श्रीठाकुरजीके पास यह मांग्यौ पाछें कितनेक दिनमें नारायणदासकी देह छूटी तब श्रीगोकुलचन्द्रमाजीने कितेक दिनताई कृष्णदासस्वामीके पास सेवा करवाई पाछें श्रीगुसांईजीके घर मथुरामें पधारे सो श्रीगुसांईजीने श्रीरघुनाथजीके माथे पधराय दीयै सो वे नारायणदास ब्रह्मचारी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वाता कहांताई लिखिये प्रसंग ॥ ३ ॥ वैष्णव ॥ १९ ॥

अथ एक क्षत्राणी महावनमें रहती तिनकी वार्ता

सो एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू पृथ्वीपारिक्रमा करत २ महावन पधारे सो वा क्षत्राणीकों चारों स्वरूप प्राप्त भए हैं सो चारों स्वरूप श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगैं आनिराखैं सो तिन चारों स्वरूपनके नाम एक तौ श्रीनवनीतप्रियाजी और एक श्रीगोकुलचन्द्रमाजी और एक श्रीललितत्रिभंगीजी और एक श्रीलाडलेजी ये चारों स्वरूप श्रीआ-

चार्यजी महाप्रभूनने चार वैष्णवनके माथे पधराय दीए सो या भांति श्रीगोकुलचन्द्रमाजीतो नारायणदास ब्रह्मचारीके माथे पधराये और श्रीलाडलेजी जीयदास क्षत्रीके माथे पधरायै और श्रीललितत्रितभंगीजी देवा क्षत्रीके माथे पधरायै और श्रीनवनीतप्रियाजी गज्जनधावनके माथे पधरायै या भांति चारों स्वरूप चार वैष्णवनके माथे पधराय दीयै तब चारों वैष्णवनसों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो यह मेरे सर्वस्व है सो स्वरूप तुम्हारे माथे पधरायै हैं सो इनकी सेवा नीकी भांतिसों करियौं और तुमसो जब सेवा न होय आवै तब हमारे घर पधराय जैयौ पाछें नवनीतप्रियाजीनेतो कछूकदिन गज्जनधावनके माथे सेवा करवाई पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके घर पधरायै सो सबतो गज्जनधावनकी वार्तामें लिख्यो है और श्रीगोकुलचन्द्रमाजीने कितेक दिनतांई नारायणदास ब्रह्मचारीके माथे सेवा करवाई पाछें कृष्णदासस्वामीकेपास सेवा करवाई पाछें श्रीगुसांईजीके घर पधारे पाछें श्रीगुसांईजीनें श्रीरघुनाथदासजीके माथे पधरायै सो प्रकार नारायणदास ब्रह्मचारीकी वार्तामें लिख्यौ है और श्रीलाडलेजीको प्रकार सब जीयदासजीकी वार्तामें लिख्यां है सो अब श्रीआचार्यजीके कुलमें बिराजत हैं सो ललित त्रिभंगीजी अंतर्ध्यान भए सो प्रकार देवाक्षत्री कपू-

रकी वार्तामें लिख्यौ है सो वह क्षत्राणी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही ताकी वार्ता कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ २० ॥

जीयदासक्षत्री सूरतिनकी वार्ता

सो जीयदासके माथे श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने श्रीलाडिलेजीकी सेवा दीनी सो जीयदासके पास श्रीलाडिलेजीने चार पहर सेवा करवाई सोजीयदासके चार बेटा हुते तिनमें पुरुषोत्तमदास छबीलदास इन दोऊ भाईनने कोई एक दिन सेवा कीनी पाछें दोऊ भाईनके संतति न भई तब इनके पाछें इनके मामा कृष्णदास चौपडा हुते तिनके माथे श्रीलाडलेजी पाधरे सो कितेक दिनताईं कृष्णदास चौपडोंसो सेवा करवाई सो भली भांतिसों सेवा कीनी सो एकसमय महामारी आई सोकृष्णदासके घरके सब कुटुम्बकी देह छूटी तब कृष्णदास अकेले रहे तब कृष्णदासके मित्र हरजी तथा मथुरामल्ल क्षत्री हुते सो कृष्णदास तहां आय रहे सो कितेक दिनताईं कृष्णदास और हरजी दोऊ मिलकें सेवा कीनी पाछें कृष्णदासकी देह छूटी तब हरजीभाईनें डेढ वर्षलों सेवा कीनी पाछें श्रीगुसांईजीके घर पधारे सो श्रीलाडलेजी अब बिराजत हैं सो वे जीयदास श्रीआचार्यजी

महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं सो उनकी वार्ताको पार नाहीं सो कहांतांई लिखियै ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैं० २१ ॥

अथ देवाक्षत्रीकपूर तिनकी वार्ता

सो देवाकपूरके माथे श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने श्रीललित त्रिभंगीजीकी सेवा पधराय दीनी सोदेवाकपूरकी जबलों देह रही तबलों सेवा कीनी तापाछें देवाकपूरकी स्त्रीकी देह छूटी ताको संस्कारकर आये तापाछे मन्दिर उघारके देखेंतो श्रीठाकुरजी नाहीं हैं सो जाने कहां अन्तरध्यान भए यातें यौं जानी परी जो देवाकपूरके चार बेटा हुते पर उनके पास सेवा न करवाई श्रीठाकुरजीतौ स्नेहके वश हैं सो भगवदिच्छा ऐसी ही भई ताते इनकी वार्ता देवाकपूर तथा देवाकपूरकीस्त्री श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांतांई लिखियै ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव २२ ॥

अथ दिनकरदाससेठ तिनकी वार्ता

सो दिनकरदासको कथाके ऊपर बहुत रुचि हुती सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप आडेलमें कथा कहते तहां

दिनकरदास नित्य सुनते सो एक दिन दिनकरदास रसोई करत हुते सो आटयौ सान्यो हुतो ऊपरा बराय दीने हैं लोटी कारि राखी हुती इतनेमें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक जलघरिया जो श्रीठाकुरजीको जल भरिवेकों आयौ तब दिनकरदासने पूछौ जो श्रीआचार्यजी महा प्रभू कहा करत हैं तब वा जलघरियानें कह्यौ जो पोथी खोली है अब कथा कहैंगे तब दिनकरदासने काचीही अंगाकरी लीनी सेकी नाहीं बेगि उठि वस्त्र पहरकें आयौ आयकें कथा सुनी श्रीआचार्यजी महाप्रभू कथा कह रहे हैं तब वा जलघरियाने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यौ जो महाराज दिनकरदासने काची अंगा करी लीनी सेकीहुं नाहीं तब दिनकरदाससों श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कही जो तू काची अंगा करी क्यों खाय आयौ है तब दिनकरदासने कही जो महाराज अंगा करी तौ नित्य लेउंगौ पारि यह अमृतकथा कब सुनूंगो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो अबते तू रसोई करि श्रीठाकुरजीको भोग समर्पि प्रसाद लेय पहुँचके जब आवैगो तब पोथी खोलूंगो तेरे आए विना कथा न कहैंगे आजते हमारी कथाको श्रोता तू तातें तू निश्चिंत होयकें आइयौ तब तादिनते दिनकरदास बेगिही रसोई करि भोग समर्पि प्रसाद लेके जब कथाके समय

आवते तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू पोथी खोलते सो वे दिनकरदास सेठ श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय है सो इनकी वार्ताको पार नाहीं ताते अब कहांताईं लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ २३ ॥

अथ मुकन्ददास कायस्थ तिनकी वार्ता

सो मुकुन्ददास आप कवि हुते सो कवित्त करते सो कवित्त बहुत कीये हैं श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके तथा श्रीगुसांईजीके तथा श्रीठाकुरजीके बहुत कवित्त कीये है और मुकन्दसागर एक ग्रन्थ कीयो सो एक समय मुकन्ददास उज्जैनके कारकुन होयके आए तब तहांके पंडित सब आयमिले तब पंडितननें मुकन्ददाससों कह्यौ जो तुम हमारे पास श्रीभागवत सुनोंतो सुनावें तब मुकन्ददासने कह्यौ जो तुम हमारौ भागवत जानत हौ तब उन पंडितनने कह्यौ तुमारौ कहा भागवत न्यारौ है त मुकन्ददासनें एक श्लोकको व्याख्यान कीयौ पाछें महीनालौ सुनायो परि आपकाहू पास कथा न सुनी कोई पंडित कदाचित व्याख्यान करतौ ताकों बहुत भांति दूषण देकें आवते जो काहेते सुबोधिनीमें बहुत प्रवेश हो मुकन्ददासकी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके चरणकमल पर दृढता हुती ताते सुबोधिनी स्फुर्दरूप हुती ऐसे

करत करत कितनेक दिनमें उज्जैनमें मुकन्ददासकी देह छूटी तब काहू वैष्णवनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे आय कही जो महाराज मुकन्ददासने अवंतिका पाई तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कही जोऐसे मति कहौ ताते ऐसे कह्यौ जो मुकन्ददासकों अवंतिकानेंपाये सो वे मुकन्ददास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ताकौ पार नाहीं सो कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥२४॥

अथ प्रभूदास जलोटा क्षत्री सीहनन्दकेवासी तिनकी वार्ता

सो प्रभूदासके सेव्य ठाकुर श्रीमदनमोहनजी सो राजनगर सिकन्दरपुरमें बैठे हैं सो जब श्रीआचार्यजी महाप्रभू मथुरा पधारे तब प्रभूदास साथ हैं तब एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप संध्यावन्दन करिकें स्नान करत हुते विश्रांतके ऊपर तहां दोचार वैष्णव और बैठे हैं तब तहां रूप सनातन कृष्णचैतन्यके सेवकनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों पूछौ जो यह वैष्णव कौनहै तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो ये हमारे सेवक हैं तब रूपसनातनने कह्यौ जो ऐसे दुर्लभ क्यौं रहत है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो में इनको बहुत बरजे जो तुम या मार्गमें मति परौ

पारि इन मेरो कह्यौ न मान्यौ ताको फल यह भोगत हैं परि रूपसनातन कछू समझे नाहीं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पर्शन करिकें रूप सनातनतो गए पाछें कितनेकदिनमें एक वैष्णव रूपसनातनके साथकौ श्रीजगन्नाथजीके दर्शनको गयौ तहां कृष्णचैतन्य मिले तब कृष्णचैतन्यने वा वैष्णवसों श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके कुशल समाचार पूछे और कह्यौ जो नीके है कहां मिले हुते कहा करत पाये हुते तब वा वैष्णवने कृष्णचैतन्यसों कह्यौ जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू मथुरा पधारे हुते ओर विश्रांतऊपर मिले हुते नीके हैं और श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनको रूपसनातनहूं गए हुते विश्रांतऊपरसो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों रूपसनातनने और वैष्णवनकी बात पूछी जो ये ऐसे दुर्लभ क्यौं रहत हैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कही प्रभूदासकी बात कही, जो मैं इनको बहुत बरजे पारि इन मेरो कह्यौ न मान्यो ताको फल ये भोगत हैं सो यह बात सुनिके कृष्णचैतन्यको मूर्च्छा आइ सो एक मुहूर्तलो मूर्च्छा रही पाछें सावधान भये तब फेरि पूछौ जो तुमने कहा बात कही तब वा वैष्णवनें फेरि कह्यौ श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो यामार्गमें मति परो तब कृष्णचैतन्यको फेरि मूर्च्छा आई सो दोय मुहूर्तलों रही पाछें फेरि सावधानभये ऐसे

तीनवार पूछी सो तीनोंवार मूर्छा आई चौथीवार फेरि वा वैष्णवसों पूछी जो कहा कही तब वाने कृष्ण चैतन्यसौं कही जो अब मोपै कही न जाय जो यह बात ऐसी है जो केवल विरही होय सो जाने रूपसनातन कहा जाने ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

और एकसमय प्रभूदासनें बेगी रसोई करी सो दारतौ काचीरही और अंगाकरी जरगई तब प्रभूदासके मनमें आई जो ऐसी सामग्री श्रीठाकुरजीकू कहा समर्पूं सो चरणोदक मेलिकें प्रसाद लीयो और श्रीठाकुरजी तो बाट देखतही रहे जो प्रभूदास भोग समर्पेगो और मैं आरोगूंगो और प्रभूदासनें तो बिगरी सामग्री जानिकें न समर्पी तब श्रीठाकुरजीने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कही जो आज मोको प्रभूदासने भोग समर्प्यो नाहीं मेने बाट देखी जो अब मोको प्रभूदास भोग समर्पेगो और मैं आरोगूंगो परि प्रभूदासने भोग नाहीं समर्प्यो तब उत्थापनके समय प्रभूदास दर्शनको आये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने प्रभूदाससों कह्यौ जो आज तेने श्रीठाकुरजीके बिना समर्पे प्रसाद लीयौ तब प्रभूदासनें सांची बात कही जो महाराज दारतौ काची रही और अंगाकरी जरगईताते ऐसी सामग्री जानि भोग समर्प्यो

नाहीं चरणोदक मेलि प्रसाद लीयोतब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो ऐसी रसोई क्यौंकरी श्रीठाकुरजीने तो बडी वारलों बाट देखी जो प्रभूदास भोग समर्पेगो औरमें आरोगूंगो ताते तेने ऐसी रसोई क्यों करी सावधान ह्वैके क्यों न करी पाछें सावधान ह्वैकें रसोंई करन लागे ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

और एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू व्रजमें पधारे हुते तब प्रभूदास साथ है तब एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें व्रजमें श्रीगोवर्द्धनके निकट स्थल भोग धरायो पाछें भोग सरायो तब प्रभूदाससों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो प्रसाद लेउ तब प्रभूदासने कह्यो जो मेने स्नान नाहीं कीनों तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें प्रभूदाससों कही जोतू देखि तब श्लोक करिकें दिखायो ॥

श्लोक-वृक्षेवृक्षेवेणुधारीपत्रेपत्रें चतुर्भुजः ।
यत्र वृन्दावनं तत्र लक्ष्यालक्ष्यकथा कुतः ॥ १ ॥
जलादिभी रजः पुण्यं रसोऽपि जलं वरम् ।
यत्र वृंदावनं तत्र स्नानास्नानकथा कुतः ॥ २ ॥

यह श्लोक पढिकें प्रभूदासको दिखायौ ब्रजको स्वरूप वृक्षवृक्षविषें वेणुधारी पत्र पत्रपविषै चतुर्भुज देखे या भांतिकों प्रभूदासको दर्शन करवायो ऐसो सादृश्य ब्रजको स्वरूप

दिखायौ पाछें प्रभूदासनें प्रसाद लीयौ दंडवत करिकें प्रभूदासके ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी ऐसी कृपा हुती सो आपते कृपा करिकें ब्रजको स्वरूप दिखायौ ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

और एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप मन्दिरमें हुते तब ऐसी मनमें आई जो श्रीठाकुरजीको भोग समर्पिये सो दहीको भोग समर्पियै ता समय प्रभूदासने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके अंतःकरनकी जानी तब प्रभूदास बाहिर गये तब गावमें जायकें एक अहीरी मिली तासों पूछौ जो तेरे दही है तब वा अहीरीने कह्यौ जो हां दही है तब प्रभूदासनें कह्यौ जो लाउ तब अहीरी दही ले आई तब प्रभूदासने कह्यौ याको मोलि कहि तब वा अहीरीने कहीजो तू मोकों कहा देयगो तब प्रभूदासने कह्यौ जो तू माँगेगी सो देउंगो तब वा अहीरीने कही जो एक टका तो दे और कहा मुक्ति देयगो तब प्रभूदासने कही जो यह तो टका ले और तोकों मुक्ति दीनी तब वा अहीरीने कही जो तू मोको लिखदे जो मुक्तिदीनी तब प्रभूदासने लिख दीनी और दही लेके घर आए सो दही भीतर दीयौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने वह दही भोग समर्प्यो सो श्रीठाकुरजी आरोगे सो वह दही अति स्वादभयौ पाछें श्रीगुसांईजी जब सांझके समय दर्शनकों आये तब यह बात श्रीआचार्यजी

महाप्रभूनसों कही जो महाराज प्रभूदासनें दहीके ऊपर मुक्ति दीनी सो लिखि आये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूजीने प्रभूदाससों पूछी जो प्रभूदास वह दही अति स्वाद भयो हुतौ सो तेने वाकों मोल कहा दीयो हुतौ तब प्रभूदासने कह्यौ जो महाराज वा अहीरीने एक टका औंर मुक्ति मांगी सो एकटका और मुक्तिदीनी तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो तेने कछू न दीनों तब प्रभूदासने कही जो महाराज हूं कहा करूं जो मोपे मांग्यौ हुतौ सो दीनो जो भक्ति मांगती तो भक्ति देतौ पाछें वा अहीरीकी सखीने कह्यौ जो तोकोतो ठग लीनी तब वा अहीरीने सखीसों कह्यौ जो तू कहा जाने ए बडे भगवद्भक्त हैं इनको बचन सत्य है तब कितनेक दिनमें वा अहीरीकी देह छूटी तभ यम दूत आए इतनेमें विष्णुदूतहूं आए सो आपुसमें झगरन लागे तब यमदूतन सो विष्णुदूतनने कही जो याको तो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक प्रभूदासने मुक्ति दीनी है सो कागद याकी साडीकी खूंटवे बंध्यौ है सो यह बात वा अहीरीके सगे सहोदरनने सुनी पारि आंखि न देखे पाछें वा अहीरीको विष्णुदूत ले जाने लगे तब वा अहीरीने विष्णुदूतनसो कह्यौ जो मेरी सखीको दर्शन देउ वाकों अविस्वास है पाछे विष्णुदूतनने वाको दर्शन दीनों तब वह कहन लागी जो मोहूको

लेजाउ तब विष्णुदूतनने कह्यौ जो हमारे हाथ कहा है हम तौ आज्ञाकारी हैं ताते तू प्रभूदाससों कहि तब वह सखी प्रभूदासके पास आई तब प्रभूदासने वाको श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास नाम दिवायौ तब वाहूको कार्य भयौ पाछें विष्णुदूत वा अहीरीको लेगये तब वाकी मुक्ति भई पाछें वा अहीरीके सगे कुटुम्बने वाकी साडीके खूंटते कागद खोलिकें देख्यो तब बांचिकें रोवनते रहे सो प्रभूदासको श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपाते ऐसी सामर्थ हुती सो वे प्रभूदास बडे भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥ वैष्णव ॥ २५ ॥

अथ प्रभूदासभाट सीहनन्दके तिनकी वार्ता

सो वे प्रभूदास भाट श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकीं भाँतिसों करते सो बहुत दिन सेवा करत बीतें पाछें वृद्धभयौ तब बहुत आशक्ति भये तब जानि यह देह दिन चार पांचमें छूटेगी तब सावधानता छूटी असावधान भए तब सगरे मिलकें प्रभूदासको प्रथोदक तीर्थ है तहां लेगये जब प्रथोदक आयौ तब सावधान भए आंखि खोलकें देखे तो प्रथोदक तीर्थ है तब प्रभूदासने कह्यौ जो मोकों इहां क्यों लाये

हौ तब सगरे जनेनने कह्यौ जो यह प्रथोदक तीर्थ है तुम्हारी अंत अवस्था देखिके लाये हैं तब प्रभूदासने कही जो मोको प्रथोदकसे कहा काम है में तो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको सेवक हूं मोकों प्रथोदक कहा कृतार्थ करेगो मोकों वरस १ लों इहां राखोगे तोऊ मेरी देह यहां न छूटेगी मोकों सीहनन्द ले चलौ जब अपने श्रीठाकुरजीके चरण देखूंगो तब देह छुटेगी तब दिन पांच सातलों राखें पारि दिन २ प्रभूदासको शरीर नीको भयौ सावधान भए तब फिर सीहनन्दले गये तब अपने सेव्य श्रीठाकुरजीको देखे दर्शन करिके दंडवत कीनी तब प्रभूदासने श्रीठाकुरजीसों कह्यो जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें तुमको मेरे मांथे पधराए हैं और येतौ बावरे लोग तुम्हारौ आश्रय छुडायकें मोकों तीर्थ आगे लेगये पारि श्रीआचार्यजी महाप्रभू ऐसी क्यों करे जो मेरी देह तीर्थपे छूटे पाछें श्रीठाकुरजीकी सेवा सिंगार करिकें बेगि २ भोग समर्प्यो भोग सराय अनोसर कीयो पाछे सबनते कह्यौ जो तुम बेगि बेगि प्रसाद लेउ ता पाछें मेरी देह छूटेगी तब सब प्रसाद ले चुके तब सबनसो प्रभूदासने जै श्रीकृष्ण कह्यौ और प्रभूदासने तत्काल देह छोड़ी पाछें सीहनंदमें एक कीरतचौधरी हुतो सो प्रभूदासकी निन्दा करन लागो और कह्यौ जो प्रभू-

दास मथोदिकते उलटो फिर आयो और सीहनन्दमें देह छोडी ऐसी निन्दा करतो सो एक दिन रात्रिकों सोयो हुतो तहां कोऊ चारि जने हाथमें मुगदर लेके आये सो कीरत-चौधरीको बहुत मारयो तब कीरत चौधरीनें कह्यो जो जो तुम मोकों क्यों मारत हो तब उनने कह्यो जो प्रभूदासकी निन्दा तू क्यों करत है तब कीरतचौधरीने कह्यो जो अब में निन्दा न करूंगो और बहुत मनुहार करी तब उन कह्यो जो तू फेरि निन्दा करेगो तो तोको याही भांतिसो मारेंगे तब कीरत चौधरीने कह्यो जा आवते निन्दा न करूंगो भक्ति करूंगो पाछें स्तुति करन लागे तब प्रभूदासकी बात चले तब कीरत चौधरी कहै जो वे बडे महापुरुष हैं तब और लोग कहन लागे जो पहले तो तुम प्रभूदासकी निन्दा करत हुते और अब स्तुति क्यों करत हो तब सबनकों कीरतचौधरीने अपने देहकी व्यवस्था दिखाई और कह्यो जो रात्रिकों कोऊ चारिजने आयके मार मार हाड चूरन कीयो ताते भगवदीयकी निन्दा सर्वथा न करनी और जो करे तो या लोकमें यही यही हाल होय और परलोकमें अघोर नरकमें जाय सो वे प्रभूदास भाट श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ २६ ॥

अथ पुरुषोत्तमदास आगरेमें राजघाट ऊपर रहतहुते तिनकी वार्ता

सो एक समय श्रीगुसांईजी आगरे पधारे हुते तब पुरुषोत्तमदासके घर उतरे तब पुरुषोत्तमदासकी स्त्री छिप रही तब पुरुषोत्तमदाससों श्रीगुसांईजीने पूछौ जो तेरी स्त्री कहां गई है तब पुरुषोत्तमदासने कही जो जनेउ टूटी होयगी पाछें श्रीगुसांईजी बेगिबेगि रसोई करि दार भात साक चार पांच करे तब रोटी बेलिवेकी बेरि पुरुषोत्तमदासकी स्त्री आई तब श्रीगुसांईजीने पूछौ जो अबलों तू कहां ही तब पुरुषोत्तमदासकी स्त्रीने कह्यौ जो राज कछु काम करत हुती पाछें पुरुषोत्तमदासकी स्त्रीने रोटी बेलि २ दीनी तब रसोई सिद्ध भई तब श्रीगुसांईजीने श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो पाछें समयानुसार भोग सराय पाछें वही थार कटोरा पडगी सब उन पात्रनमें श्रीगुसांईजीने कही जो यहतो श्रीठाकुरजीके पात्र हैं इनमें भोजन कैसे करें वाते हम इन पात्रनमें भोजन न करेंगे तब पुरुषोत्तमदास तथा उसकी स्त्रीने कह्यौ जो महाराजकी कृपाते कछू द्रव्य निवट्यौ नाहीं और पात्र नये मंगावेंगे आप इनमें भोजनकरियै तब श्रीगुसांईजीभोजन करनको बैठे तब पुरुषोत्तमदासकी स्त्री श्रीगुसांईजीके पास

बैठके पंखा करन लगी और कह्यौ जो महाराज और सामग्री आरोगो तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो मोकूं रुचेगी सो में आरोगूंगो तब पुरुषोत्तमदासनें कह्यौ जो महाराज श्रीनन्दरायजीके घर केंसे आरोगतहौ ऐसें कहिके स्त्रीपुरुष दोऊजने श्रीगुसांईजीकों बहुत सामग्री लिवाय सो तिनकें संकोचके लिये श्रीगुसांईजी कहै जो तुम कहोगे सो करेंगे तब भोजन कीये पाछें अपने सेव्य श्रीठाकुरजीकी सैयाऊपर बिछौंना बिछाय श्रीगुसांईजीको पोढाये पुरुषोत्तमदास चरण सेवा करन लागे स्त्री पंखा करनलागी पाछें घडीएक रहिकें श्रीगुसांईजीने दोउनसों कह्यौ जो अब तुम जायकें महाप्रसाद लेउ तब उन कह्यौ जो महाराज महाप्रसाद तो नित्य लेत है परि तुम्हारी सेवा कब करेंगे सो वे स्त्रीपुरुष दोऊजने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीयहैं ताते इनकी वार्ता अब कहां तांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ २७ ॥

अथ त्रिपुरदासकायस्थशेरगढके वासीहुते तिनकी वार्ता

सो त्रिपुरदासको श्रीआचार्यजी महाप्रभूनऊपर तथा श्रीगोवर्द्धननाथजीके विषे बहुत ममत हुतो जहां बैठते जहां

ठाढे होते तहां श्रीनाथजीको पीठ न देके बैठते पीठ देके ठाढे न होते सो त्रिपुरदास एक तुरककी चाकरी करते परगना बहुत कमायो जो कछू बस्तु आवती सो पहिले श्रीनाथजीको पहुंचावते और सालनसाक पहुंचावते ऐसे सदासर्वदा करते सो एकदिनवा तुरकने त्रिपुरदासकों बन्दीखानेमें दिये और कह्यो जो तेने मेरो द्रव्य बहुत खायौ है सो जब वह तुरक सोयौ तब कोऊ चारजने हाथमें मुगदर लेकें आये सो आयकें वा तुरकको खाटते औंधौ पटकि बहुत मारचौ तब वा तुरकने कह्यौ जो तुम मोकों क्यों मारतहो तब उनने कह्यौ जो तेने त्रिपुरदासकों बन्दीखानेमें क्यों दियौहै तब वह तुरक बहुतबिल बिलानों हाहाकारिके नाक भूमिमें घिसकें उनसों कहा जो मोकों तुम मारोमति मैं अबही त्रिपुरवासकों न छोडेत हों तब उन कह्यो जो त्रिपुरदासकों न छोडेगो तो हम याही भांतिसों नित्य मारेंगे ऐसे कह्यौ तब वे तो गये तब वा तुरकने आयकें अपने लोगनसों कह्यौ जो त्रिपुरदासको बन्दीखानेमंते अबही छोड- देउ तब मनुष्य त्रिपुरदासकों छोंडन गये तब त्रिपुरदासने उनसों कह्या जो अब वा रात्रि बहुत गई है ताते सबेरे छोडियों तब वे मनुष्य फिर आये और वा तुरकसों कह्यो जो साहिब त्रिपुरदास कहत हैं जो अब तो रात्रि बहुत

गई है सवारे छोडियो तब वा तुरकनें अपने मनुष्यसों कह्यो जो तुम अबही त्रिपुरदासको छोडलावो तब वे मनुष्य वेगही जायके त्रिपुरदासकों छोड लाए तब वा तुरकने त्रिपुरदाससों कह्यो जो तुम आपने घर जाऊ तब त्रिपुरदासने कह्यो जो अबतो रात्रि बहुत गई है सवारे जाउंगो तब वा तुरकने त्रिपुरदाससों कह्यो जो तू कहा काऊको जीव लेयगो ताते तू अबही इतनी बेर अपने घर जाऊ तब त्रिपुरदास अपने घर आये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

बहुर कितनेक दिन पाछें त्रिपुरदास वाही तुरकके साथ अटकगये पाछें एकदिन रसोईयाने त्रिपुरदाससों कह्यो जो चरणोदक महाप्रसाद निवट्यो है रंचकहू नाहीं तब त्रिपुरदासनें रसोईयासो कह्यो जो पांडे तेनें हमसो पहिले क्यों न कह्यो हम चरणोदक महाप्रसाद मंगाय देते अब कहा करियै तब रसोईया चुपकर रह्यो तब सवारे उठिकें त्रिपुरदास वा तुरकके दरबार जानलगे तब कह्यो जो पांडे रसोई करि श्रीठाकुरजीको भोग समर्पि प्रसाद लीजियो मेरी वाट मति देखियो मेरो आवनो न बनेगो और मनमें यह निश्चै कीयो जो जबलों यह देह चलेगी तबलों काम काज करूंगो और देह जब न चलेगी तब पड रहूंगो परि चरणोदक महाप्रसाद लीयै बिना जल पान न करूंगो

यह निरधार अपने मनमें कीयौ तब तुरकके दरबार गये तब रसोईयाने स्नानकरि रसोई करन लागौ तब आधी रसोई भई इतनेमें एक लरिका वर्षदसकौ तीनथैली लायौ सो एक थैलीमें तौ चरणामृत और एक थैलीमें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको चरणामृत और एक थैलीमें श्रीनाथजीको महाप्रसाद सो वे तीनो थैली रसोईयाको दीनौ और कह्यौ जो यह तीनो थैली त्रिपुरदासनें पठाई है सो थैली देकें वह लरिका तुरंतही चल्यौ गयो पाछें रसोई सिद्ध भई तब श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यो पाछें समयानुसार भोग सरायो तब रसोईयानें त्रिपुरदासको बुलायवेको मनुष्य पठायो पारि त्रिपुरदास आये नहीं तब दोय तीनवार मनुष्य बुलावेकौ पठायौ तब त्रिपुरदाने रसोईयासों कह्यो जो पांडे तुम मोकों काहैकों बुलावत हो में तौ चरणामृत महाप्रसाद लीयेविना जलपान न करूंगो तब रसोईयाने त्रिपुरदाससों कह्यौ जो चरणामृत महाप्रसादकी थैली तौ तुमनेंही पठाई है एक लरिका वर्ष दसकौ हुतौ सो तीन थैली देगयौ है तब त्रिपुरदासने कह्यौ जो वह लरिका कहां है मोकों दिखाय तब रसोईयानें कह्यौ जो वहकरिका तौ तुरंतही थैली देकै चल्यौ गयो तब त्रिपुरदासनें जान्यौ जोये श्रीठाकुरजीके काम हैं तब आपको धिक्कारकरन लाग्यौं जो में ऐसौ हट क्यों

कीयौ जो श्रीठाकुरजीकौ श्रम करनौ पड्यो सो आप धिक्कार बहुत करन लाग्यौ जो मैंने श्रीठाकुरजीकौ श्रम बहुत करवायौ पाछें स्नान करि चरणामृत महाप्रसाद लीयौ पाछें समर्प्यो महाप्रसाद लीयौ ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

बहुरि कितनेक दिनमें त्रिपुरदासकी चाकरी छूटी सो शीतकालके दिन आयै तब श्रीनाथजीको कबाय पठावै तौ कहांते पठावै इतनों समों घरमें नाहीं त्रिपुरदासकी कबाय हरवर्ष जाती सो श्रीनाथजी आप अंगीकार करते तब त्रिपुरदासनें कह्यौ जो अब कहा करियै तब एक द्वाति पीतरकी हुती सो बेची ताके दामनकी गजी मंगाई सो रंगाई ताकी कबाय बनवायकें श्रीनाथजीको पठाई सो रंगी देखिकें भंडारीनें भंडारमें डार दीनी तब कितनेक दिनमें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारे सो जब श्रीनाथजीको श्रृंगार करन लागे तब श्रीगुसांईजीसों श्रीनाथजीनें कह्यौ जो मोकों शीत बहुत लागत है तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो दूसरी अंगीठी लावो तब दूसरी अंगीठी लाए तोहू कही जो मोको शीत बहुत लागत है तब श्रीगुसांईजीनेगद्दलउढायो तबहू श्रीनाथजीने कह्यौ जो मोकों शीत लागत है तब श्रीगुसांईजीने तीसरी अंगीठी मंगाई तबहू कही जो मोकों शीत लागत है तब श्रीगुसांईजीने भंडारीको बुलायो और

वासों पूछी जो कोन कोन वैष्णवनकी कवाय आईहुती तब जाजा वैष्णवकी आईहुती ताता वैष्णवको नाम लीयौ तब श्रीगुसांईजीने कही जो त्रिपुरदासको कवाय नाहीं आई तब भंडारीने कह्यौ जो त्रिपुरदासकी एक रंगीन कवाय आई है सो भंडारमें पडी है तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जा रंगीन कवाय ले आवो तब भंडारी वह रंगीन कवाय ले आयौ तब श्रीगुसांईजी देखे तौ मेली मरगजीसी हो रही है तब वाकों झार पोंछिके तत्काल दरजी बुलायके फरगुल सिद्ध करवाई तब वह फरगुल श्रीनाथजीको उढाईतब श्रीनाथजीने कह्यौ जो अब मेरो शीत निर्वत भयो ऐसे श्रीनाथजी भक्तिके पक्षपात जो भक्तिभावकी वस्तुको या भांति अंगीकार करे सो वे त्रिपुरदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहांताई लिखियै ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥ वैष्णव ॥ २८ ॥

अथ पूरनमल्लक्षत्री तिनकी वार्ता

सो पूरनमल्लकी गांठिमें द्रव्य बहुत हुतौ सो पूरनमल्लकों श्रीनाथजीकी आज्ञा भई हुती जो तू मेरो मन्दिर समराउ तब पूरनमल्ल श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास आयौ और आयके कह्यौ महाराज मोकों श्रीनाथजीकी आज्ञा ऐसीभई है जो तू मेरो मन्दिर समराउ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने

कह्यौ जो मन्दिर बेग समरावो तब पूरनमल्लने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों नाम पायौ पाछें मन्दिर उठावन लाग्यौ सो द्रव्यहुतौ सो सब नींव खोदवेंमें लग्यौ जब सब द्रव्य निवट्यो पाछें पूरन मल्ल पूरब चाकरीको गयै तब राजसी लोगनने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों पूछे जो महाराज आज्ञा देउतौ हम मंदिर समरावे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें श्रीनाथ जीसों पूछौ जो महाराज येराजसी लोग मंदिर समरावन कहत है सो समरावें तब श्रीनाथजीनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यौ जो पूरनमल्ल आवेगो तब मन्दिर समरावेगौ तब राजसी लोगनसों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें नाहीं कीनी तब वे फिरगये तब कितेक दिनमें पूरनमल्ल पूरबते बहुत द्रव्य कमायके लायौ तब पूरनमल्लने कितनेक दिनमें मन्दिर समरायके सिद्ध करवायौ पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें आछौ मुहूर्त देखिके श्रीनाथजीके मंदिरमें पाट बैठाये तब पूरनमल्लने बहुत द्रव्य खरचौ ॥ प्रसंग १ ॥

बहुरि श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारे तब पूरनमल्ल श्रीनाथजीके दर्शनकौं आयौ सो अति आनन्दसों दर्शन कीयौ तब श्रीगुसांईजीनें कह्यौ जो पूरनमल्ल तेरे मनमें और कछू मनोरथहै सो राखैमति तब पूरनमल्लनें श्रीगुसांईजीसो कह्यौ जो महाराज मेरे मनमें एक मनोरथरह्यौ है

जो अति सुन्दर सुगन्धकौ अरगजा अपने हाथनसों में समरपूं तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा दीनी जो जा समर्पि तब पूरनमल्लनें अत्युत्तम सुगन्धिकौ अरगजाकारिकें श्रीनाथजीकौ समर्प्यों तब पूरनपल्लनें अपने मनमें अति आनन्द पायौ ता पाछें पूरनमल्ल श्रीनाथजीके पासते श्रीगुसांईजीके पास आयौ तब श्रीगुसांईजी पूरनमल्लके ऊपर बहुत प्रसन्न भयै तब श्रीगुसांईजी आप पौढेहै सो उपरना पूरनमल्लको उढायौ तब पूरनमल्लनें अति आनन्द पायौ पाछे श्रीगुसांईजीनें श्रीनाथजीकौ पंचामृतसौं स्नान करवायौ पाछे अंगवस्त्र करिकें सेवा श्रृंगार करिकें रसोई करि भोग समर्प्यों समयानुसार भोग सरायकें पाछें श्रीगुसांईजीनें श्रीनाथजीकौ प्रसादी गद्दल पूरनबल्लकौ उढायौ पाछें प्रतिवर्ष प्रसादी बद्दल श्रीगुसांईजी पूरनमल्लको देत सो वे पूरनमल्ल श्रीगुसांईजीकें तथा श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहांतांई लिखियै ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ वैष्णव ॥ २९ ॥

अथ यादवेन्द्रदास कुम्हार तिनकी वार्ता

सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू तथा श्रीगुसांईजी जब परदेशीकों पधारते तब यादवेन्द्रनाथ इनके साथ सामग्री

लेकै चलते हडवाई कनात बिनाबांसकी छोटी रावटी तथा एक दिनको सीधौ सामग्री इतनो बोझ लेके संग चलते और रसोईकी चाकरी सब करते रात्रिकौ पहरौ देते ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

बहुरि श्रीगुसांईजी गोकुलमें हुते तब रात्र पहर एक गई हुती तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो या विरियां मंदिरकी नीव खोदीजाय तौ मंदिर भलौ दृढ होय अब भलौ मुहूर्त है ऐसें कहिकें श्रीगुसांईजी तौ पौढे पाछे यादवेन्द्रदासनें एक पहरमें नींव खोदि सिद्धि कर‌राखी सो जब पीछली रात्रिको श्रीगुसांईजी पोढके उठे तब देखें तौ माटीनके ढेर पडेहैं तब पूछौ जो यह माटी कैसी है वैष्णवननें कह्यौ जो महाराज यादवेन्द्र दासने खोदीहै तब तब श्रीगुसांईजीने यादवेन्द्र दाससों पूछौ जो यह नीव तेने खोदी है तब यादवेन्द्रदासने कह्यौ जो महाराज रात्रिकों वावेर आपने आज्ञा करी हुती वाहींवेर खोदी है सो नीव ऐसी बडी खोदी जो महीना एकलों राजमजदूर दशपन्द्रह लगें तोहू भरी न जाय सो ऐसी सामर्थ्य यादवेन्द्रदासमें हुती ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

और यादवेन्द्रदासने श्रीनाथजीद्वारको कूआ अपनेही हाथनसो खोयो सो माटी निकसी ताकी ईट पकाई अपने

हाथनही कूआ चिन्यो परि जल खारी निकस्यौ तब याद-
वेन्द्रदास सोरोंगयौ श्रीगंगाजीमेंते जल लेकें अंजुली भरि २
के डारे और कहै जो वा कूंआको जल आपसों करो ऐसे
कहिके तर्पण कीयौ ऐसे करत जब जान्यौ जो जल मीठौ
भयौ तब श्रीगंगाजीमेते निकस्यौ पाछें श्रीनाथजीद्वार आये
तब वा कूंआको जल श्रीनाथजीकौ अंगीकार करवायौ सो
यादवेन्द्रदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके परम कृपापात्र भग-
वदीयहैं ताते इनकी वार्ता कहांतांई लिखियै ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥
वैष्णव ॥ ३० ॥

अथ गुसांईदास सारस्वत ब्राह्मण तिनकी वार्ता

सो एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको श्रीठाकुरजीको
स्वरूप प्राप्ति भयो सो स्वरूप गुसांईदासके माथे सेवाको
पधराय दीये और कही जो इनकी सेवा तू नीकी भांतिसों
करियौ सो गुसांईदास सेवा नीकी भांतिसों करन लागे सो
गुसांईदाससों श्रीठाकुरजी सानुभाव भए बोलन लागे पाछें
कितेक दिनमें एक वैष्णवसो गुसांईदासनें कही जो तुम इहां
रहौ तौ हमको सहायता होय हम तुम मिलिके सेवा करै परि

वह वैष्णव हौं न करै पाछें एक दिन श्रीठाकुरजीनें गुसांई-दास सों कह्यौ जो तू मोकों वा वैष्णवके मांथे पधराय पाछें वा वैष्णवसों गुसांईदासनें कह्यौ जो महाराज श्रीठाकुरजी आज्ञा तौ ऐसी भईहै जो तू मोकों वा वैष्णवके मांथे पधराय ताते भगवदिच्छा ऐसीही दीसतहै तब वा वैष्णवनें गुसांईदाससों कही जो तुम कहा करोगे तब गुसांईदासने कह्यौ जो हूंतौ बद्रिकाश्रम जाऊंगौ उहां मेरी देह छूटेगी तब वा वैष्णवने गुसांईदाससों कह्यौ जो तुम्हारी देह उहां न छूटै और तुम इहां फिर आवो तो मैं श्रीठाकुरजीको देउंगौ नाहीं तब गुसांईदासनें कह्यौ जो श्रीठाकुरजी ऐसी तौ न करेंगे और कदाचित करेंगे तो तुम्हारे द्वार पोरिया रहूंगौ श्रीठारजीके दर्शन कर्यौकरूंगौ तब वा वैष्णवनें श्रीठाकुरजी पधरायै सो नीकीभांतिसों सेवा करन लाग्यौ पाछें गुसांई-दासतों बद्रिकाश्रम गये सो बद्रिकाश्रममें उहां गुसांईदासकी देह छूटीकी खबर पाई तब वह वैष्णव सुख सों सेवा करन लाग्यौ तब वह वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपाते भलौ वैष्णव भयौ सो वे गुसांईदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांताईं लिखियै ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ३१ ॥

अथ माधोदासभट्टकाश्मीरकेवासी तिनकी वार्ता

सो माधोभट्ट प्रथम केशव भट्टके सेवक हुते सो केशवभट्ट श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास आये सो बहुतदिन रहे सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवकनमें जाय बैठते तब भगवद्वार्ता कहते सो प्रथम प्रसंग चलै तब माधोभट्टसों केशवभट्टनें कह्यौ जो तू मेरो संग छोडिके उहांके सेवकनमें क्यों जातहै वहां जायके हांसी ठठौरी करतहै तब माधोभट्टने केशवभट्टसों कह्यौ जो मोकों तुम्हारी संग तथा तुम्हारी कथाते उहां की हांसी आछी लागत है ताते हौ जातहौ तब केवशभट्टनें जान्यौ जो अब यह हमारे कामकौ नाहीं अब हमारे कामते गयौ पाछें केशवभट्टने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कही जो मैंने श्रीभागवत तुम पासते सुन्यौ पारि मोकों कछू बोध न भयौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो तुम मेरी बराबर बैठिके सुन्यौ और ज्ञातिकौ भाव राख्यौ ताते बोध न भयौ और माधोभट्टकी भागवतकी स्फुरति भई यह दैवीसृष्टीकौ प्रकार जाननौ तब श्रीभागवतकी कथा सम्पूर्ण भई तब केशवभट्टनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कही जो कछू गुरुदक्षिणा लेउ तब श्रीआचार्यजी

महाप्रभूननें कह्यौ जो हम कछू लेत नाहीं तब केशवभट्टने कह्यौ जो में तुमको एक सेवक समर्पितहों सो माधोभट्टजी आचार्यजी महाप्रभूनकों सोपें पाछें केशवभट्ट श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पासते बिदा होयकें अपने देशकों गयौ पाछें माधोभट्टने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास नाम पायौ पाछें समर्पण करवायौ ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

और जो गाममें माधौ भट्ट रहत हुतौ ता गाममें एक बड़ौ गृहस्थ रहत हुतौ ताके एक बेटा हुतौ सो मरगयौ तब वह गृहस्थ बहुत रोवन लाग्यौ विलाप करन लाग्यौ और कहन लाग्यौ जो कोऊ जाकों जिवावेगो तो मेंहू जीउंगो नाहीं तौ मेंहू मरूंगो ऐसे कहिकें बहुत शोक करे तब एक वैष्णव पेंडेमें जात हुतौ तब वा गृहस्थको विलाप करतो देखिकें वाने कह्यौ जो या गाममें माधौसारिके भगवदीय रहतहैं वे बडे भगवदीय महापुरुष हैं तिनके पास तू जा वें कृपा करेंगे तब तेरो लरिका जीवेगो तब वह गृहस्थ माधौभट्टके पास आयौ और बहुत विलाप करन लाग्यौ और माधौभट्टसों कह्यौ जो यह लरिका मेरो जीवेगो तो मेंहू जीऊंगो नातर मेंहू मरूंगो या भांतिसों बहुत विलाप करे और रोवे तब वा गृहस्थ देखिकें माधौभट्टको दया आई तब मनमें विचार करने लागे जो याकौ बेटा जीवेतो आछौ है यह गृहस्थ भलो है यह बहुत

विलाप करत है बहुत दुख पावत है यह विचारके माधौभट्टके मनमें बहुत खेद भयौ और कह्यौ जो याको दुःख दूर होय तौ भलो है पाछें माधौभट्ट मन्दिरमें जायके श्रीठाकुरजीसों बीनती कीनी एक श्लोक करिके श्रीठाकुरजीके आगें कह्यौ ॥

सोश्लोक--दयालोस्ते समर्थस्य दुःखायैव दयालुता॥
विश्वोद्धरणदक्षस्य सा तवैकस्य शोभते ॥१॥

यह श्लोक श्रीठाकुरजीने सुनिके कह्यौ जो यह कितनीक बात है जो तुमको दया आई तो वासों कहौ जो जा तेरो बेटा जीवेगो पाछें माधौदास श्रीठाकुरजीको बढायकें बाहर आये तब वा गृहस्थसों कह्यौ जो जा तेरो बेटा जीवेगौ परि वा गृहस्थकों विश्वास न परे मनमें विचारे जो हूं घर जाउंगो और जो कदाचित न जीयौ होय तौ कहा करूं मुखते तौ कछू कह्यौ न जाय परि मनमें विश्वास परे नाहीं इतनेंमें घरके लोग दौरिकें आय वासों कह्यौ जो तेरो बेटा जीयौ है ताकी बधाई देउ तब वह गृहस्थ माधौभट्टकौ दंडवत करिकें अपने घर आयौ पाछें बधैयाको बधाई दीनी और बहुत हर्षित भयौ पाछें माधौभट्टनें अपनें मनमें विचार कीयौ जो बहुत अनुचित कीयौ अब यह लोग याही भांतिसों नित्य दुःख देयंगे याते अब या गाममें रहिवेको काम नाहीं ऐसो विचारकें रात्रि जब आधी गई तब श्रीठा-

कुरजीकों जागाय संपुटमें पधरायकें तुरतही गाम छोडिकें चले सो अडेलमें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास आय रहै दया आये ते स्थल छूटो श्रीठाकुरजीको आधी रात्रिके समय भाजनो परौ तातें भगवदीयको जो काम करनौं सो बिचारके करनो बिना बिचारे सर्वथा नहीं करनौ ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

और श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीभागवतकी सुबोधिनी कहते सो माधौभट्ट बेगि २ लिखत जाते और जा ठौर न समझपरे ताठौर लेखिनी छोडिकें बैठि रहते तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू माधौभट्टकों समझायके अर्थ कहते जब माधौभट्ट समझकें आगे लिखते और श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे माधौभट्ट या भांतिसों बैठते सो पावदींसें ऐसी सावधानीसों रहते ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

और एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू परदेसकों पधारे तब माधौभट्ट साथ है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू पेडेमें एक गाममें उतरे तब रात्रि पहेर डेढ गई हुती तब माधौभट्ट उठिके लघुबाधाको गाममें आए तहां चोरननें तीर चलायौ सो माधौभट्टकें लाग्यौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको नाम लेत माधौभट्टनें देह छोडी तब इतनेमें श्रीआचार्यजी महा-

प्रभूनके साथके वैष्णव आय गये तब देखेंतो माधौभट्टकी देह छूटी है तब वैष्णवनके मनमें सन्देह भयौ जो माधौभट्ट सरिके वैष्णवकी ऐसी गति क्यों बूझियै तब साथके वैष्णवनने श्रीआचार्यजी महाप्रभूसों पूछौ जो महाराज यह बात कैसें होय जो माधोभट्टसरिके वैष्णवकी ऐसी गति क्यों बूझीये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें उन वैष्णवनसों कह्यौ जो माधौभट्टने तौ श्रीठाकुरजीके चरणार्विन्द चांपे सो उनको कछू कर्तव्यता रही नाहीं यह बडा भगवदीय हो पर इनसों एक भगवदपराध पऱ्यौ है तब वैष्णवनमें पूछी जो महाराज ऐसो कहा अपराध परयौ हौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यो जो यह पहिले अपने सेव्य श्रीठाकुरजीको सेया ऊपर फूल बिछावत हौ सो एक दिन बिना जाने फूलमें सुई रह गई सो माधाभट्टने नाहीं कीना सा वा सुईको श्रीठाकुरजीके अंगमें स्पर्श भयौ सो ता अपराधते ऐसें भयौ पारि याकी देह सावधानता सो छूटी है भगवन्नाम लेत छूटी ताते यह श्रीनाथजीके पासहै मेरी कानते श्रीनाथजी बुरी गति कबहू न करेंगे अपने पासही राखेंगे यह श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें अपने श्रीमुखसों कह्यौ ताते वैष्णवनकों श्रीठाकुरजी सेवा नीकी भांतिसों करनी बहुत सावधानी सो वे माधौदासभट्ट श्रीआ-

चार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय है ताते इनकी वाता कहांताई लिखियै ॥ प्रसंग ॥ वैष्णव ॥ ३२ ॥

अथ गोपालदास तिनकी वार्ता

सो गोपालदासनें मार्ग चलन बारेनकों अपने घरके पास विश्रामके लिये अस्थ कारि राख्यो हुता जा मार्गमें विश्राम करे ताको हेत यह जो कोई भगवद्भक्त आय रहै तासों भगवद्वार्ता करें ताका रन अस्थल कारि राख्यौ हुतौ सा वहां एक समय पद्मरावल उज्जेनके वासी सो द्वारका आवते है सो रात्रिको वा गांममें आय रहेसो गोपालदास सेवासों पहुंचिकें पद्मरावलके पास आये और पद्मरावलसों पूछों जो तुम कहांते आऐहो तब पद्मरावलने कह्यौ जो हम श्रीद्वारिकाते आए हैं तब गोपालदासनें श्रीरणछोडजीके कुशल समाचार पूछे तब उहांके समाचार पद्मरावलने गोपालदाससों कहे पाछें पद्मरावलकी जो बालपनेते अवस्था हुती सो बात चली जो पद्मरावल द्वारिकामें बहुत रहते श्रीरणछोडजीके दर्शन बहुत करते सो जब खरची निवडती तब अपने घर आवते सो पद्मरावलके जिजमान मावजी पटेल आजन कुनबी गांवके देसांई हुते सो पद्मरावल द्वारिकाजीते आवते तब मावजी पटेल खरची देते सो लेके जब पद्मरावल

द्वारिकाजीको जाते ऐसें वर्ष दिनमें तीन बार जाते पद्मरावलको श्रीरणछोडजीके विषै बहुत आसक्ति हुती सो श्रीरणछोडजीकी वार्ता पद्मरावलनें गोपालदासके आगे कहीं तब गोपालदासने अपने मनमें कही जो ऐसी इनको श्रीरणछोडजीके दर्शनमें आसक्ति है तैसी इनको श्रीमहाप्रभूनके विषै आसक्ति होय तौ इनको कार्य्य होय ताते इनसों कछू कहिये तब गोपालदासनें पद्मरावलसों पूछो जो तुमसों श्रीरणछोडजी बोलत हैं कछू कहत हैं कछू मांगत है तब पद्मरावलने कह्यौ जो मोसों तो कबहू कछू कहत नाहीं तब पद्मरावलने गोपालदाससों पूछो जो कहा श्रीरणछोडजी कहूसों बोलत हैं तब गोपालदासने कह्यौ जो हां २ बोलत हैं तब श्री आचार्यजी महाप्रभूनकी वार्ता कही जो तुमने एते दिन श्रीरणछोडजी सेए हैं श्रीरणछोडजी प्रगट भए हैं तब पद्मरावलने पूछौ जो वे कहां तब गोपालदासने कही जो वे अडेलमें हैं तब पद्मरावलने कही जो ऐसो दर्शन श्री श्रीरणछोडजीदेत हैं तैसो दर्शन श्रीआचार्यजी महाप्रभू देयंगे तब गोपालदासने कही जो हां २ देयंगे तब पद्मरावलके मनमें विश्वास आयौ जो यह बात सत्य वाही दिनते पद्मरावलको आतुरता भई जो कबमें जाऊं और कब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शन पाऊ सो रात्रकों वहांही रहे ता

पाछें सवारे गोपालदाससों बिदा होयके वहांते चलौ सो मार्गमें बिचार करत जाय जोमें कबजाऊं और कब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शन पाऊं ऐसे बिचार करत घर अपने उज्जैनमें आए परि चित उदासमें रह्यौ पाछें मावजीपटेलसे मिले तब मावजीपटेलने पूछौ जो गुरुजी अबकें तुम्हारो मन प्रसन्न देखियत नाहीं सो काहेते तब पद्मरावलने गोपालदाससो सुनी हुती सो बात कही जो श्रीरणछोडजी अडेलमें प्रगट भये सो मेरो मनोरथ दर्शन करवेको है सो जानौ हो कब जाऊंगो तब मावजीपटेलने कह्यौ जो तुम रणछोडजीके दर्शनको जातहो सो मोहूको अपने साथ लेचलौ तब पद्मरावलमें कह्यौ जो तुम राजसी लोग हो तुम्हारे साथ बहुत मनुष्य होयंगे और यह दर्शन तौ एकान्त स्थलको है ताते यह बात तो मोको भावत नाहीं तब मावजीपटेलनें कह्यौ जो हूंतौ सर्वथा तुम्हारे संग अकेलोही चलूंगो तब पद्मरावलनें कह्यौ जो भलौ तब यह समाचार अपनी स्त्रीसों कहै और कह्यौ जोमें तो पद्मरावलके संग अडेल दर्शनको जात हौं तब स्त्रीनें कह्यौ जो वहां कहा हैं तब मावजीपटेलनें कह्यौ जो वहां श्रीवल्लभाचार्यजी प्रगट भये हैं सो साक्षात् श्रीरणछोडजी प्रगट भये हैं और जैसो दर्शन श्रीरणछोडजी देत हैं तैसो दर्शन श्रीआचार्यजी महा-

प्रभू देत हैं सो यह बात सुनिकें मावजी पटेलकी स्त्रीके मनमें बहुत उत्साह भयौ और कह्यौ जो आपके संगमें हूंचलूंगी तब मावजीपटेलनें कह्यौ जो मेतो पावन चलूंगौ तू कैसें चलेगी तब स्त्रीने कही जो मेहूं पावन चलूंगी मेरे कछू लरिका तो है नाहीं तब फेरि मावजीपटेलने कह्यौ तौ हम तुम दोऊजने चले तौ घर कौनके भरोसें रहेगो स्त्रीनें कह्यौ जो मेरो घरतें कछू प्रयोजन नाहीं है हौं सर्वथा तुम्हारे साथ चलूंगी तब मावजीपटेलने अपने मनमें बिचारयो जो याको बहुत आतुरता भई दर्शनको बहुत मनोरथ है तब कह्यौ जो भलो तू हूं चल तब मावजीपटेलनें अपनो घर काहू भले मनुष्यके हवाले कर दीनों तब पम्मरावल मावजीपटेल तथा उसकी स्त्री बिर जो ये तीनों चले सो जब प्रयाग पहुंचे तब अडेलको दर्शन भयौ तब बहुत आतुरता भई जो श्रीआचार्यजी होंयकें चल्यौ जैथे ता समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीयमुनाजी ऊपर पधारे हुते सो सन्ध्यावन्दन करत हुते तहां सेवक दोय चार साथ हुते तब इन तीनोंनको श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको दर्शन भयौ तब तौ बहुतही आतुरता भई ता समय श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें इनकों देख्यो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें सेवकनसों कह्यौ जो यह नाव पार लेजाउ पम्मरावल श्रीरणछोडजीके सेवक आये हैं सो इन तीनोंनको

नावमें बैठारिकें बेगि ले आउ सो नाव लेकें वैष्णव पार आए तब उन वैष्णवननें कह्यौ जो पद्मरावल तीनों जनें होंय सो आवौ श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें नाव पठाइ है तब पद्मरावल और मावजी पटेल तथा उनकी स्त्री बिरजो इन तीनों जनेको नावमें बैठायकें ले आये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकों दर्शन भयौ सो जैसो गोपालदासने कह्यौ हुतौ तैसोई दर्शन भयो सो दर्शन करिकें मनमें बहुत प्रसन्न भये पाछें पद्मरावलने श्रीआचार्यजी महाप्रभू पास नाम पायौ सो नाम पायकें उठे तब पद्मरावलनें बीनती करिकें कह्यौ जो महाराज अंगीकार करियै तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें प्रसन्न होयकें कह्यौ जो तू कहा कहत है तब पद्मरावलनें कह्यौ जो मोकों गोपालदासनें कह्यौ है तासों निवेदन करिवाईयै और पद्मरावलनें बीनती करिकें कह्यौ जो महाराज मावजीपटेल और मावजी पटेलकी स्त्री बिरजो ये दोऊजने आपकी शरण आये हैं सो इनको नाम निवेदन करवाईयै तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कृपा करके नाम समर्पण करवायौ पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप भीतर पधारे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पद्मरावलसों कह्यौ जो तुममहाप्रसाद इहांई लीजियौ तब पद्मरावलने बीनती करिकें कह्यौ जो महाराज मोकों तुमनें श्रीरणछोडजीको दर्शन दीनों है सो स्वरूप आप कृपा

करिके आरोगोगे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको दर्शन भोजन करतमें पद्मरावलको श्रीरणछोडजीको दर्शन भयौ सो साक्षात् रणछोडजी भोजन करत हैं तब पद्मरावलकों दृढ विश्वास भयौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप भोजन करिके बिराजै तब महाप्रसादकी पातर पद्मरावलको कृपा करके दीनी पाछें पद्मरावलनें बीनती कीनी जो महाराज मोकों कहा आज्ञा है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने आज्ञा दीनी जो तुम श्रीठाकुरजीकी सेवा करौ तब पद्मरावलनें कह्यौ जो जैसो मेरो मन महाराजके स्वरूपमें लग्यौ है तैसो मन सेवामें लगे तौ सेवा करूं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ तुम श्रीठाकुरजीकी सेवा तौ करौ जो तुम्हारौ मनोरथ श्रीठाकुरजी सब पूरन करेंगे तब पद्मरावल श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों बिदा होयके अपनें देशको गये तब पद्मरावल अपने देशमें जायके श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लागे तब अपने सेव्य श्रीठाकुरजीकी सैया बनवाई सो सैया छोटी भई तब श्रीठाकुरजीनें कह्यौ जो सैयापै मोपै सोयो जाय नाहीं पाछें पद्मरावलनें दूसरी सैया बडी करवाई ताके ऊपर श्रीठाकुरजी पौढन लागे और श्रीठाकुरजी सानुभाव जनावन लागे और एक समय पद्मरावलकी स्त्रीने श्रीठाकुरजीकों भोग

समर्प्यो तामें ताती खीर समर्पी तब श्रीठाकुरजीने खीरमें श्रीहस्त मेलो तब खीर बहुत ताती लागी सो श्रीठाकुरजीनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यौ और श्रीहस्त कमल दिखायौ सो लाल परि गयौ तब पद्मरावल श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास बैठे हुते तब पद्मरावलसों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो तेरी स्त्रीनें श्रीठाकुरजीकों ताती खीर समर्पी सो श्रीठाकुरजीको ताती खीर न समर्पीये तब पद्मरावलने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यौ जो श्रीठाकुरजीने एक मुहूर्तलों सीरी क्यों न होने दीनी तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो श्रीठाकुरजीतो बालक हैं श्रीठाकुरजीकों भोग धरै पाछें विलंब न सहिसकें यातें जो भोग धरियै सो बहुत ताती न धरियै सो पद्मरावलकों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें ऐसी आज्ञा दीनी आज्ञा देकें श्रीठाकुरजीको ऐसो अनुभव जतायौ पाछें पद्मरावल अपने घर आये तब यह बात अपनी स्त्रीसों कही पाछें पद्मरावल बहुत सावधानीसों सेवा करन लागे श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपाते श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे जो चाहियै सो मांगिलेते अपनी सब बात कहते सो वे पद्मरावल गोपालदासके संगते ऐसे भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ३३ ॥

अथ पद्मरावल साचौरा ब्राह्मण उज्जै-नकेवासी तिनकी वार्ता

सो पद्मरावल अडेलमें आयके श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक भए सो गोपालदास वांसवाडाके तिनकी वार्तामें लिख्यौ है बिस्तार करिकें पाछें अपने देसको चलन लागे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों बीनती कीनी जो महाराज होंतो अति मूर्ख हों जड हौं कछू जानत नाहीं और मेरी जातिके ब्राह्मण महाकर्मजड हैं स्मार्त हैं सो मोकों दुख देत हैं श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें अपने चरणारबिंदको चन्दन और चरणमृत दीनो और कह्यौ जो तोकों सब सिद्धांत स्फुरेगो सो चरणामृत लीनों सो उतनेहीमें सब सिद्धांत स्फुर्द भयौ पाछै देश उज्जैनमें आए पाछें बडे २ ब्राह्मण प्रति वृति पूछन लागे तब जितनेनने पूछो तिनकूं प्रति उत्तर देकें सब बिदा-किये सो पद्मरावलकों श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपाते ऐसी विद्या स्फुर्द भई जो बडे २ पंडित जीतकें बिदा कीये वे पंडित प्रति उत्तर दे नसकै ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

और पद्मरावल द्वारिका श्रीरणछोडजीके दर्शनकों चले तब श्रीरणछोडजीनें स्वप्नमें कह्यौ जो राजनगरमें एक सेवक हमारो है ताके घर तु जैयौ और पाक उहांई करियो

तब पद्मरावलनें कह्यौ जो महाराज में तौ जानत नाहीं और बिना बुलाए में कोनके घर जाऊं तब श्रीरणछोडजीनें कह्यौ जो वह तोकों आपही बुलावनकों आवैगौ पाछें श्रीरणछोडजीनें अपने सेवकनसों कह्यौ जो पद्मरावल इहां आवैंगे सो उनकी सेवा तू नीकी भांतिसों करियौ और अपने घर पधराय पद्मरावलकों रसोई भली भांतिसों करवाइयो तब वा सेवकनें श्रीरणछोडजी सों कह्यो जो महाराज में उनकूं कैसे जानूंगो तब श्रीरणछोडजीनें कह्यौ जो वेतौ प्रसिद्ध हैं तू आपही ते जानेंगो तब कितनेक दिनमें पद्मरावल उहां आए सो वा गांमके बाहिर उतरे सो पद्मरावलके साथ विद्यार्थि एक हुतौ तासों पद्मरावलने कह्यौ जो तू गाममें जायकें कोरी भिक्षा मांग लाउ तब वह विद्यार्थी गांममें गयौ सो चार पांच ठौरतें कोरी भिक्षा मांग लायौ तब पद्मरावलने वा विद्यार्थीसों कह्यौ जो तू अन्न जाजा कैसे लायो है ताता कैसें उलटौ फेरि आउं तब वह विद्यार्थी जाजाकौ अन्न लायौ हो सो ताकौ फेरन लाग्यौ तब एकने कह्यौ जो तुम ले गयै हैं अब फेरन क्यौं आए हौ तब वा विद्यार्थीनें कह्यौ जो में कहा करूं हमारे बडे गुरू हैं तिनकी आज्ञा मानी चाहियै तब वा विद्यार्थीसों कह्यौ जो तुम्हारे गुरूकौ नाम कहा है तब वा विद्यार्थीने कह्यौ जो मेरे गुरूकौ नाम

पद्मरावल है तब वह श्रीरणछोडजीकौ सेवक विद्यार्थीके सात चलो आयो सो आयके पद्मरावलसों कह्यौ जो मेरे घर पधारौ तब पद्मरावलने कह्यौ जो हूंतौ काहुके घर जात नाहीं तब वानें कह्यो जो मोकों श्रीरणछोडजीने आज्ञा दीनी है जो तू पद्मरावलकों अपने घर पधराइयो सो रसोई भली भांतिसों करवाइयो तब पद्मरावलको अपने घर पधराय रसोई भली भांतिसों करवाई सो पद्मरावलनें रसोई कारि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो पाछें प्रसाद लीयौ और रात्रिकों उहांहीं सोय रहै तब सवारे पद्मरावल चलन लागै तब श्रीरणछोडजीकौ सेवक राखन लाग्यौ तब पद्मरावल रहे नाहीं ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

बहुर एक दिन आटौ बहुत मिल्यो और घृत थोरौ मिल्यो तब जितनी रोटी वा घृतमें चुपडी गई सो तो ऊपर धरी और कौरी हुती सो नीचै राखी तब श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यौ और कह्यौ जो महाराज बिनु चुपरि रोटी तो रहन दीजियो और चुपरी रोटी आरोगियो तब श्रीठाकुरजीनें तौ सबही रोटी आरोगी पाछें पद्मरावलसों कह्यो जो तेनें मेरे आगें काहेकूं धरी मेरे आगें जो तू धरैगो सो आरोगूंगौ पाछें महाप्रसाद लैनकौ बैठे तब रोटी बहुत अद्भुत

स्वाद भयी तब पद्मरावलनें कितनीक रोटी बची सो साथ बांधिलीनी सो नित्य जब पाक करि भोग समरपै पाछे प्रसाद लैनको बैठते तब रोटीमेते एक टूक मेलिलेते तब महाप्रसाद लेते पाछें कितनेक दिनमें द्वारका जाय पहुंचे तब श्रीरणछोडजीको दर्शन कियो दिन पांच सात रहिकें श्रीरणछोडजीसों बिदा होयके चले तब मार्गमें गोपालदास बांसवाडाके घर आये तब रात्रिकों उहांही रहै तब पद्मरावलनें गोपालदाससों कह्यौ जो तुम्हारी कृपाते मोकों श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको दर्शन भयौ और तुम्हारी कृपाते मोपै श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कृपा करी सो पद्मरावल श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥ वैष्णव ॥ ३४ ॥

अथ पुरुषोत्तमजोसी साचौरा ब्राह्मण तिनकी वार्ता

सो एक समय पुरुषोत्तम जोसी बनारसको चले सो मार्गमें उज्जैन आयौ सो उज्जैन आयके पूछो जो पद्मरावलके बेटा कहां रहत हैं सो पद्मरावलके बेटाचारि हुते सो तीन बेटा तौ इकठौरे हुते और बडे बेटा कृष्णभट्टसों न्यारे हुते सो पुरुषोत्तम जोसी जहां पद्मरावलके तीनों बेटा इकठौरे

हुते तिनके घर गये तिनने पुरुषोत्तमजोसीको थोरोसो अन्न दियौ सो कछु भूखे रहै तब मनमें कह्यौ जो पधरावलके बेटा ऐसे क्यों बूझिये वे तो सूधे ब्राह्मण है पाछें कृष्णभट्टनें सुनी जो पुरुषोत्तम जोसी आये हैं तब कृष्णभट्टनें पुरुषोत्तम जोसीकों अपनें घर पधराय तब भली भांतिसों प्रसाद लिवायो तब पुरुषोत्तम जोसी बहुत प्रसन्न भये दिन चार राखे तब पुरुषोत्तम जोसी चलन लागे तब कृष्णभट्टहूसाथ चलै सो मजल जाय उतरे तबरात्रिको जब कृष्णभट्ट सोये तब पुरुषोत्तमजोसीने अपनी स्त्रीसों पूछो जो कृष्ण भट्ट सोये तब स्त्रीने कही जो हाँ सोये तब पुरुषोत्तमजोसीनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी वार्ता कही पाछें कृष्णभट्टनें मनमें विचाऱ्यो जो पुरुषोत्तम जोसीनें मेरे आगे श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी वार्ता नहीं कही परि हों अब कछू चर्चा वार्ता चलाऊं सो जब श्रीगोकुल मजल पांच सात रह्यो तब कृष्णभट्टनें प्रसंग चलायो सो पुरुषोत्तमजोसी घोडापै हुते सो वे तो बिहूल भए तब कृष्णभट्टनें पुरुषोत्तम जोसीकी स्त्रीसों कह्यो जो एक ओरते तुम थामें रह्यो और एक ओर वे में थामत हों तब कृष्णभट्टनें वार्ता चलाई सो भगवद्वार्तामें पुरु षोत्तमजोसी तो बिहूल भये सो घोडेऊपर रह्यो न जाय तब दोऊ जनें आस पास थामें जाय ऐसे करत मजल आय

उतरे तब घोडा ऊपरते उतारन लागे तब पुरुषोत्तम जोसीनें कह्यौ जो मोमोकों तुम क्यौं उतारत हौ तब कृष्णभट्टनें कह्यौ जो मजलको मुकाम आय पहुंची है ताते उतारत हैं परि पुरुषोत्तमजोसीको मजल आयरेकी खबर नाहीं भगवद्वार्तामें रसाविष्ट भये सम्पूण दिवस भयौ परि प्रसाद लेवेहुकी कछू सुधि रही नाहीं ऐसे करत कितनेक दिनमें श्रीगोकुल आय पहुंचे तब पुरुषोत्तमजोसीने श्रीगुसांईजीको दशन कीनो और श्रीगुसांईजीसों पूछौ जो महाराज कृष्ण-भट्टके ऊपर ऐसों कृपा काहेतें भई है तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो याको चाचा हरिबंशजीको संग है ताते ऐसो भयो तब पुरुषोत्तमजोसीको गर्ब निवत भयो और अति प्रसन्न भये और कृष्णभट्टसों आप वार्ता पूछन लागे पाछे कितनेक दिन रहिके श्रीगुसांईजीसों बिदा होयके चले सो उज्जैन आये मार्गमें भगवद्वार्ता करत चले आये और दोऊ-जनें अति प्रसन्न भये सो वे पुरुषोत्तम जोसी श्रीआचार्य-जी महाप्रभूनके ऐसे कृपपात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ ३५ ॥

अथ जगन्नाथ जोसी तिनकी वार्ता

सो जगन्नाथ जोसीनें श्रीठाकुरजीको वागो पहराय सब सिंगार करिकें राजभोगकी थार आगे आन राख्यौ तब

जगन्नाथजोसीके मनमें आई जो ठाकुरजी वागे पहरेही अरोगत हैं ताते थार छूइ जायगो तब श्रीठाकुरजीनें जगन्नाथ जोसीके मनकी जानी तब थारमें लात मारिकें डार दीनों तब जगन्नाथजोसीनें और पाक बेगि बेगि करिकें थार परोसि श्रीठाकुरजीके आगें आन राख्यौ तब श्रीठाकुरजीके मनमें आई जो वैसेंहि फेरि लात मारकें डारदीनों तब फेरि दूसरी वेर पाक करिकें श्रीठाकुरजीके आगें आनि राख्यौ तबहू श्रीठाकुरजीनें लात मारकें डारि दीनों तब तीसरीवार पाक करन लागै तब जगन्नाथ जोसी बहुत श्रमित भये पाछें नीचौ माथौ करिकें विचार करन लागै जो कौन अपराधते श्रीठाकुरजी आरोगत नाहीं थार डारदेत हैं पाछें बहुत बीनती कीनी तब श्रीठाकुरजीने यह बात जताई जो तू थार छूइवेते डरपत हैं तौ तू हमारे आगें काहेकूं आनि राखत है इतनों वचन श्रीठाकुरजीकों सुनिकैं जगन्नाथजोसी चौंक उठे तब नाक भूमिमें घिस बहुत मनहार करिकें कह्यौ जो महाराज मेंतौ कछू जानत नाहीं अब मेरो अपराध क्षमा करियै पाछें श्रीठाकुरजी आरोगे परिमास दोयलों बोले नाहीं फेरी बहुत वीनती कीनी तब बोलन लागे ऐसे सरल भाव हुतो ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

और जगन्नाथ जोसी श्रीठाकुरजीकों भोग सपर्पिते तामें ताती खीर बहुत समर्पिते सो श्रीठाकुरजी वैसोही ताती खीर आरोगते सो कितनेक दिन पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभू गुजरात पधारे तब खिरालूमें जगन्नथजोसीके घर उतरे तब श्रीठाकुरजीको दर्शन कीयो तब देखे तो श्रीठाकुजीके ओष्ट राते हैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने श्रीठाकुरजीसों पूछो जो महाराज जिह्वा और ओष्ट राते क्यों हैं तब श्रीठाकुरजीने कह्यौ जो जगन्नाथजोसी मोकों ताती खीर बहुत समर्पत है सो तैसेही में आरोगत हो तब जगन्नाथजोसीसों श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो तू ताती खीर श्रीठाकुरजीको क्यों समर्पत है तब जगन्नाथजोसीने कह्यौ जो महाराज हमतो कछू जानत नाहीं जो ऐसी बात है हम तो जानत जो ताती खीर भली तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्या जो खीर सुहाती भली खीर तब बहुत ताती न समर्पिये होता पाछें जगनाथजोसी वैसोही करन लागे ॥ प्रसंग॥ ॥

और एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शन करिवेको जगनाथजोसी अडेलको चले तब मार्गमें अन्नकूटको दिन आयो तब एक सेवक साथ हुतो तासों कह्यौ जो चामदार घृत खांड और कछू आच्छी सामग्री मिलै सो सब ले आउ

तब वह सेवक गयो तब देखे तो गांवमें कछू नाहीं तब वह सेवक फिर आयो और कह्यौ जो इहां तो कछू मिलत नाहीं एक ज्वार मिलत हैं तब जगन्ननाथजोसीने कह्यौ जो भलें ज्वारही ले आउ तब गांममें जायके ज्वार लीनी तब आछी भांतिकूट फटक छानि बीन चुनिके ले आये पाछे जगन्नाथजोसीने वा ज्वारको ठोमर कीयो तब या सेवकने कह्यो जो भुसी निकसी है सो ताको टोकरामें करि ऊपर राख्यो जो ताकी बाफ सो जलदी होय आवेगो तब जगन्नाथने कह्यौ जो भले तब वह ठोमर खदखदान लाग्यो तब वह टोकरावामें गिरपर्यो सो सब इकठोरो मिलि गया पाछें भगवदिच्छा मानिके जैसौ तैसौ श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यो पाछै भोग सराय महाप्रसाद लीयो तब जोसी रात्रिको सोयो तब श्रीठाकुरजीने कह्यो जो मेरे पेटमें दुखत है तब जगन्नाथ जोसीने सुतिवा और सोंठ और अजवायण समर्पी पारि मनमें पश्चात्ताप बहुत भयो पाछे श्रीठाकुरजीने कह्यौ जो अब मेरे पेटमें सुख भयौ ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

बहुर एक समय जगन्नथा जोसी अपने सेव्य श्रीठाकुरजीको उत्थापन करिकें पास ठाढे हुते श्रीठाकुरजीकों मूंठा करत हुते ता समय एक रजपूत गरासिया आयो सो वो वैष्णव

हुतो सो आयकें वैष्णवनमें ठाढौ भयौ ता समय एक डोकरी फूलकी माला लेकें आई सो वह माला दूरते श्रीठाकुरजीके ऊपर वाने डारी तब जगन्नाथजोसीकों रिस चढी सो माल वैष्णवनके ऊपर डरी सो वह माला वैष्णवनके गलेमें जाय परी तब वा गरासिया रजपूतकों रिस आई तब गरासियानें अपने मनमें बिचारी जो देखो या जोसीनें माला वाकों दीनी और मोकों न दीनी परि भलो जो रजपूतको जायो जो या जोसीकों ठौर मारूं तब वह रजपूत तरवार हाथमें लैके नित्य तकत फिरे दाव पावे तौ घात करै तब जगन्नाथ जोसी एक दिन बहिर भूमिते आवत हुते तब वा रजपूतनें जगन्नाथजोसीके ऊपर पीछेंते तरवा चलाई तब श्रीठाकुरजीनें वह तरवार श्रीहस्तसों थामी और श्रीमुखसों कह्यो जो याकों मारे मति वह तब रहि गयो जब जगन्नाथजोसी फिरकें देखे तो श्रीठाकुरजी श्रमित भये पीछें ठाढे हैं तब जगन्नाथजोसीनें वा गरासियासों कह्यो जो फिटिरे पापी तेनें यह कहा कीयौ तब वह रजपूत तरवार डारिकें जगन्नाथके पावन पर्‍यौ और कहौ जो मेरे ऊपर कृपा करियौ अनुग्रह करियौ और जगन्नाथजोसीके पाँव हाथसों पकर रह्यौ तब जगन्नाथजोसी ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं तब वा रजपूतकों जगन्नाथजोसीनें नाम दीयौ निवेदन करवायौ तब वह भलो

वैष्णव दीन भयौ वैष्णवनके बीच ठाढो रह्यौ ताको फल सिद्ध भयौ वे जगन्नाथजोसी ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥ वैष्णव ॥ ३६ ॥

जगन्नाथजोसीकी माता तिनकी वार्ता

ताकैं द्वे बेटा हुते बडे बेटातौ नरहर जोसी और छोटे बेटा जगन्नाथजोसी खिरालूके वासी तिन दोउनसो मातानें कह्यौ जो तुम जायके श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास नाम पाइ आवौ और समर्पण करवाय आवौ और बेटानके हाथमें एक एक एक मुहर दीनी सो मोहर एक लाठीमें मेलिकें वे दोऊ भाई अडेलकौं चले सो कितनेक दिनमें कितनेक दिनमें अडेल जाय पहुंचे सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून अडेलमें हते नाहीं आप तो पुरुषोत्तम क्षेत्र श्रीजगन्नाथरायजीके दर्शनको पधारे हुते कछू जगन्नाथजोसी नरहर जोसीने विचार कीयो जो हम फिर चलेंगे तौ हमारी माता खीजेगी जा नाम समर्पण कीयै बिनु तुमक्यों आये ताते आपुन पुरुषोत्तम क्षेत्र चलैं यह अपने मनमें विचार करिके जगन्नाथ जोसी और नरहर जोसी ये दोऊ भाई पुरुषोत्तमक्षेत्रको चलै सो थोरे

दिनमें पुरुषोत्तम क्षेत्र जाय पहुंचे जायकें पूछौ जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप कहां रहतहैं तब एक वैष्णवनें घर बताय दीनो तहां यह दोऊ भाई गये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको दर्शन करिकै बैठे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पूछौ जो तुम्हारी माता नीकी है तब इनको बहुत आश्चर्य भयौ जो यह तो हमको पहचानत हैं और हमतौ कबहूं देखे नाहीं और श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें फिरि पूछौ जो श्रीठाकुरजीके दर्शन कर आये तब इन दोउनें कह्यौ जो महाराज नाहीं किये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें आज्ञा दीनी जो जायकें दर्शन कर आवौ तब यह दोऊ भाई दर्शनकों गये तहां देखें तौ श्रीआचार्यजी महाप्रभू जगन्नाथरायजीके पास ठाढे हैं तब इनको आश्चर्य भयौ जो यह कहा हमतौ इनकौ अबही घर देखि आये हुते तब मनमें फिर जानी जो दूसरी बाट होयगी तहां होयके आये होयंगे पारि मनमें सन्देह भयौ पाछें दर्शन करिकें आये तब देखेंतो श्रीआचार्यजी महाप्रभू बैठे हैं तब आयकें दंडौत करिकें बैठे तब दोऊ भाई विस्मय भये आपसमें मौहडो देखन लागे चकृत होय रहें तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पूछौ जो दर्शन करि आये और जो तुम्हारे मनमें सन्देह आयौ हुतौ सो निवर्त भयौ तब इन दोऊ भाईनें कह्यौ जो संदेह तौ निवर्त भयौ तब

श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो तुम्हारी मातानें भेट मौहर पठाई है सो लावौ तब लाठीमें ते मोहर काढिकें आगें राखी पाछें नाम निवेदन करवायो अपनों महात्म इन दोऊ भाईनको आपनें ऐसो दिखायौ सो स्वरूपाशक्ति भई तापाछें वहां कितनेक दिन रहिकें आज्ञा मांगिकें चले सो मार्गमें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके स्वरूपको विचार करत जाय ऐसे करत अपने घर आय पहुंचे तब मातासों सब समाचार कहे तब माता बहुत प्रसन्न भई पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपाते भले भगवदीय भए ताते इनकी वार्ता अब कहांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ३७ ॥

अथ नरहरजोसी जगन्नाथ जोसीके बड़े भाई तिनकी वार्ता

सो एक समय नरहरजोसी पुरुषोत्तम क्षेत्र श्रीजगन्नाथ-रायजीके दर्शनको चले सो तहां मजल जाय उतरे तब स्नान करिकें रसोई कारि श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यौ तब देखें तो एक बालक बरष दसकौ एक रूख ऊपरते उतरके आय ठाडो भयौ तब वा बालककों देखिकें नरहरजोसीको आश्चर्य भयौ जो यह लरिका कहांते आयौ तब वह लरिका नरहरजोसीके आगें हाथ पसारकें मांगन लाग्यौ तब नर-

हरजोसीनें अपने मनमें बिचारचौ जो यह सुन्दर लरिका मेरे आगें काहेकों हाथ पसारयो तब नरहर जोतीने द्वै रोटी घीसों चुपरकें तिनके ऊपर दारिधरिकें बालकके हाथमें दीनी तब वह बालक इमलीकें रूख ऊपर चढिगयौ पाछें फेरि नरहरिजोसी देखेंतौ वह बालक नाहीं तब दूसरे दिन मजल जाय उतरे स्नान करि श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यौ तब तैसेही वह बालक इमलीके रूख ऊपरते उतरकें आयौ और तैसेही हाथ पसारचौ तब नरहरजोसीको और संदेह भयौ जो कोऊ छलि वेकों आयौ होय तो कैसें देउ और जो भगवत्स्वरूप होय तौ महाप्रसादी महाप्रसाद कैसें देउ तब यह सन्देह करिकें वा बालककों कछू न दीनों तब वह बालक रूख ऊपर चढिगयौ पाछें नरहरजोसीनें महाप्रसाद लीयौ सो यह बात खिरालूमें जगन्नाथ जोसीसों श्रीठाकुरजीनें कही जो आजमें नरहरजोसीके पास गयौ हो तहां में हाथ पसारकें मांग्यौ परि मोकों कछू न दीयौ तब जगन्नाथ जोसीने वह दिन वह महीना वह सम्वत् वह वार लिख राख्यौ जो नरहरजोसी आवेंगे तब पूछेंगे तब कितनेक दिनपाछें नरहर जोसी अपने घर आये तब मातासों भाईसों मिले पाछें दूसरे दिन दोऊ भाई सेवामें न्हाए तब जगन्नाथजोसीने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके कुशल समाचार

पूछे जो नीके हैं पाछें जगन्नाथ जोसीनें नरहरजोसीसों कह्यौ जो अमुके सम्वतमें अमुक महीनामें अमुकी तिथिमें अमुके वार पटनातें आगें पेडेमें मजल उतरे तब रसोई करिकें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो तहां कोऊ बालक हाथ पसारत देख्यौ तब नरहरजोसीनें कह्यो जो एक दिन तौ मैं सुंदर बालक देखकें द्वै रोटी घीसों चुपरि ताऊपर दार धरिकें दीनी और दूसरे दिन तो मोकों संदेह भयो जो कोऊ कोऊ छलिवेकों आयौ होय तौ कैसें देउ ताते न दीनी तब जगन्नाथजोसीनें कह्यौ जो तुमनें बुरीकीनी जो न दीनी वेतौ श्रीठाकुरजी आप हुते और जब आपन दोऊ भाई श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनकों गये हुते तब हमारी मातानें मौहर भेट पठाई हुती सो आपन संदेह कारिराखी हुती तब आप श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने मांग लीनी ताते अपने मार्गमें श्रीआचार्यजी महाप्रभून बिना श्रीठाकुरजीविना संदेह न करनो अपने मार्गमें श्रीआचार्यजी महाप्रभू केवल प्रतापते उन बिना कछू न संभवे तब दोऊ भाईनके मनमें यह निश्चय भयौ ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

और एक समय नरहरजोसीको जिजिमान अलियान गांवमें रहतौ ताकौ नाम महीधरजी हुतौ तथा वाकी बहनकौ नाम फूलबाई हुतौ तिनसों नरहरजोसीनें कह्यौ जो

तुम श्रीगुसांईजीके पास नाम पावौ वैष्णव होउ तब उन कह्यौ जो भलें अवश्य तुम श्रीगुसांईजीकों पधरावो तब नरहरजोसी आगे आयकें श्रीगुसांईजीकों पधरायकें अलियानमें गये तब महीधरजी तथा फूलबासों कह्यौ जो श्रीगुसांईजी पधारे हैं तब दोऊ भाई बहन अत्यन्त प्रसन्न भये तब महीधरजीनें नरहरजोसीसों कह्यौ जो मैं श्रीगुसांईजीकौ खाली हाथन कैसें पधराऊं तब महीधरजीनें नरहरजोसीसों रुपैया मौहरनकी खीचरी करवायक न्यौछावर करिकें श्रीगुसांईजीकों अपने घरमें पधराय ता पाछें महीधरजी फूलबाई तथा सब गोपाल सब कुटुंबको श्रीगुसांईजीके पास नाम दिवायौ निवेदन करवायौ और भली भांतिसों श्रीगुसांईजीकी सेवा करिकें बिदा किये पाछें श्रीगुसांईजी द्वारिकाकों पधारे तब नरहरजोसी खिरालू अपने घर आये ता पाछें कितनेक दिनमें वा अलियान गांवमें आग लगी ता समय नरहरजोसी खिरालूके तालाबके ऊपरते नित्यकर्म करिके तुलसी फूलकी डारि तथा झारी हाथमें लैके घर आवत हुते तासमय नरहरजोसीके मनमें आई जो अलियान गांवमें आग लगी तब नरहरजोसी पैंडे ठाडे होयकें तुलसीदल बीचमें धरिकें झारीमेंते जल लैकें अंजुलीसों तुलसीदलके पास पानीकी धारा करिकें कुंडलियां

कीनी इतनेहीमें अलियानमें आग बुझी और महीधर-जीकी हवेली घर सब बच्यौ तापाछें कितनेक दिनमें नरहरजोसी अलियानमें गये तब फूलबाईनें नरहर जोसीसों कह्यौ जो यहां आगकौ उपद्रव बहुत भयौं है सो श्रीगुसांई-जीकी कृपाते अपने तौ कल्याण भयौ तब नरहरजोसीनें कह्यौ जो प्रभूनकी कृपाते सदा कल्याणही होय इतनों कहिकें नरहरजोसी खिरालू आये तब महाप्रसाद लीयौ पाछें दोऊ भाई एकान्त बैठे तब नरहरजोसीने जगन्नाथजोसीसों कह्यौ जो मैं एक दिन नित्यकर्म करिकें तालाबके ऊपरते आवत हुतौ तुलसीफूलकी डारी तथा झारी मेरे हाथमें हुती और अलियान गांवमें आग लगी सो बात कही तब नरहर-जोसीसों जगन्नाथजोसीने कह्यौ जो आपुनकों इतनों हट कीयौ न चाहियै जो श्रीठाकुरजीकों श्रम करवायौ यह अपने मार्गकी रीति नाहीं तब नरहरजोसीनें कह्यौ जो मैं तो हट नाहीं कीयौ परि मेरे मनमें ऐसी आई जो ये अबही वैष्णव भये हैं और आगि लगी ताते मैंने ऐसौ कीयौ तब दोऊ भाई हँसि मुसिक्याय चुपकारि रहै पाछें कह्यौं जो प्रभू बडे कौतुकी हैं इनकी कृपाते सब भलौ होय आपन हट न कीजै यह अपनो धर्म नाहीं ताते श्रीवल्लभराजकुमारकी अद्भुत लीला है सरण आवै तिनकों अतिही कल्याण होय सो वे

नरहरजोसी तथा जगन्नाथजोसी तथा इनकी माता ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं जो परमार्थके लिये ऐसे कीयौ ताते इनकी वार्ताकौ पार नाहीं सों अब कहांताई लिखिये ॥ प्रसङ्ग ॥ २ ॥ वै० ॥ ३८ ॥

अथराणाव्यास साचौरा ब्राह्मण गोधराके वासीकी वार्ता

सो जगन्नाथजोसीने प्रथम राणाव्यासपास नाम पायौ हुतौ फिर श्रीआचार्यजी महाप्रभूनपास नाम पायौ परि जगन्नाथजोसी राणाव्यासके पास बहुत रहते सो एकसमय राणाव्यास भगवदिच्छाते गोधराकी वेश्यानें इनसों सङ्ग कीयौ सो बात राजद्वारमें सुनी तब हाकिमके प्यादे राणाव्यासको लेनआये तब जगन्नाथजोसीने राणाव्यासकौ और गांममें करदीनों पाछें जगन्नाथजोसी तहां अकेले रहै और वे प्यादे आये हुते सो राणाव्यासको ढूंढन लागे तब जगन्नाथजोसीने कह्यौ जो राणाव्यास तौ इहां नाहीं चलौ हौं उत्तर देउंगौ तब जगन्नाथ जोसीको लायके हाकिमके आगें ठाडौ कीयौ तब हाकिमनें कह्यौ जो राणाव्यास कहां है उननें पराई स्त्रीसों अन्याव कीयौ है तातें वाकों लावौ और मैंतौ जगन्नाथजोसीकों नीकें जानतहौं जा जाको नाम जगन्नाथजोसी

सो कबहूं अन्याव करै यह तौ राणाव्यासनें अन्याव कीयौ है ताते उनको लाव तब जगन्नाथजोसीनें कह्यौ जो मेरी कही सुनो तौ में कहूं तब हाकिमनें कह्यौ जो कह्यौ तब जगन्नाथजी सीनें कह्यौ जो राणाव्यासनें अन्याव नाहीं कीया राणाव्यास ऐसे काम कबहूं न करै तब हाकिमनें कह्यौ जो क्यों जानिये तब जगन्नाथजोसीनें कह्यौ जो मेरी कही मानों तौ में कहूं जोराणाव्यासके बदलै जो जो कछू कह्यौ सो में करूं तब हाकिमनें एक पैयाको मुगदर मंगायौ सो अग्निमें मेलिकें तातो कीयौ तब जगन्नाथजोसी स्नान करिकें आयौ तब जगन्नाथजोसीनें ठाडौ होयकें कह्यौ जो राणाव्यासनें अन्याव कीयौ होय तौ मोकों अग्नि जरायकें भस्म करिडारियौ और नाहीं अन्याव कीयौ होय मुगदल शीतल होय जइयौ पाछें वह मुगदल अग्निमेंसे काढिकें दोऊ हाथनसों उठाय अपने गरेमें मल्यौ सो घडी एक लौं राख्यौ सब जने बोलै जो जोसी तू काढि तब जगन्नाथजोसीने कह्यौ जो हूं काढिकें कोनकें गरेमें डारूं तब हाकिमनें कह्यौ जो मेरे गरेमें डारौ पाछें जोसीनें भूमिमें डारदीनौं तब दीनों तब भूमि जरगई तब सबजने कहन लागे जो जगन्नाथजोसी तुम धन्य हौ तुम सांचे हौ तुमको तुम्हारे धनीको ऐसो सांच है यों कहिकें जगन्नाथजोसीकों समाधान

करिकें कह्यौ जोसी तुम कछू मांगौ मैं तेरे ऊपर प्रसन्न भयोहौं जो जोसीनें कह्यो जो इतनों मांगत हौं जो जानें यह चुगली करी है तासों कछू मति कहियौ तब यह सुनिके हाकिम तथा सबजने बहुत प्रसन्न भये पाछें जगन्नाथजोसी अपने घर आये वे ऐसे भगवदीय हैं जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपाते कहा न होय ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

और पहिले राणाव्यासनें माधौदास सारस्वतके पास नाम पायौ हुतौ पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक भये तब परम वैष्णव भये सो वे राणाव्यास सिद्धपुरमें रहते सो राणाव्यास सिद्धपुरमें रहते सो राणाव्यास और जगन्नाथजोसी सरस्वतीमें स्नान करत हुते ता समय एक रजपूतानी सती होयवेकों आई तब राणाव्यासके पास जगन्नाथजोसी हुतो तिननें पूछौ जो सती होत है ताको प्रकार कहा तब राणाव्यासनें कह्यो जो प्रेतके संग वृथा ऐसौ शरीर जरावत है जो राणाव्यासनें मूंड हिलायकें कह्यौ जो वह रजपूतानी सती होन आई हुती ताने देख्यौ तबवा रजपूतानीने साथ के मनुष्यनसों कह्यो जो हूंतौ न जरूंगी मोकों सत् नाहीं है ताते मेरी हत्या चढेगी ऐसें कहिकें बहुत हसि दीनी और जरी नाहीं तब वे लोग वा मृतकको जरायकें वा स्त्रीकों गांवके बाहिर झोंपरी करदीनी तब स्त्री उहां रही तापाछें राणाव्यास

न्हायवेकों आये तब वा स्त्रीनें राणाव्याससों आयके पूछी जो जो तुमनें मूंड हिलायके कहा बात कही ता बातके देखते हों न जरी ताते मों वह बात कहौ तब राणाव्यासनें कह्यौ जो हमतौ आपुसमें हंसत बात करत हुते तब स्त्रीनें कह्यौ जो हमसों काहेकों दुरावतहौ जो बात होय सौ कहौ और बहुत आग्रह कीयौ तब राणाव्यासनें कह्यौ जो हम आपसमें हंसत हुते जो यह ऐसी उत्तम देह पायकें नाहक प्रेतके साथ जरावत है या देहसों श्रीठाकुरजीकी सेवा न कीनी न भजन कीयौ ऐसी उत्तम देह धरिकें श्रीठाकुरजीकों न भज्यौ तब वा स्त्रीने राणाव्याससों कह्यौ जो हुंतो तुम्हारी शरण हों जो जा भांति यह देह श्रीठाकुरजीके काम आवै सो करो तब यह बात सुनिके राणाव्यासने कह्यौ जो अब तौ तोकों सूतक है सूतक उतरेगो तब होयगो तब स्त्री अपने स्थलको गइ पइ पारि वाको बहुत विरह उत्पन्न भयौ जो दिन प्रतिदिन आवै सो राणा व्यासको दर्शन कारि जाय ऐसे करत सूतक उतर्यौ तब सुद्ध होयके राणा व्यासके पास आइ तब राणा व्यासने कही जो तू सवारे आइयौ सो वास्त्रीने वादिन कछू खायो नाहीं पहले चना चबायके रहती सो वा दिन स्त्रीने जलपान हूं नहीं कीयो पाछे प्रातःकाल भयो तब राणाव्यासके आयवेको समो भयो तब आयके बैठि रही तब राणाव्यास आये और स्नान करिके

भगवत्स्मरण कीयौ तब वा स्त्रीसों कहौ जो तू स्नानकरिके बैठि रही पाछे राणा व्यासने आचार्यजी महाप्रभूनको ध्यान धरिके वाके कानमें नाम सुनायो तब नाम सुनतही स्त्रीको भगवद्भाव उत्पन्न भयौ तब वा स्त्रीने राणाव्याससों पूछौ जो अब में कहा करूं तब राणाव्यासनें कह्यौ जो अब भगवत्सेवा करौ तब वा स्त्रीने कह्यौ जो मेरी स्थित तौ तौ ऐसी हैं जो तुम कछू टहल देउ सो में करूं पाछें राणाव्यास उपरना परदनी धोयवेकों देते सो धोयकें सिद्ध करिकें पहुंचावती प्रसाद राणाव्यासके घर लेती ऐसें करत राणाव्यासके घरको कामकाज सब करनलागी पाछें भगवत्सेवाको सब काम काज करनलागी सो कितनेकदिन पाछें राणाव्यासके घर श्रीआचार्यजी महाप्रभू पधारे तब राणाव्यासनें वा स्त्रीकों श्रीआचार्यजीकी महाप्रभूनपास नाम निवेदन करवायौ तब वह स्त्री परम वैष्णव भई सो राणाव्यास आचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ वैष्णव ॥ ३९ ॥

अथ रामदाससारस्वत ब्राह्मण राजनगरमें रहते तिनकी वार्ता

सो रामदासजीके मांथे नटवर गोपालजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें और अपनी पादुकाजी सेवाके लियै पधराय

दीनी सो सेवा सदैव करै ऐसे कृपापात्र भगवदीय है सो रामदास विवाह करिकें पृथ्वीपारिक्रमाकों चले सो कितनेक दिनमें पृथ्वीपरिक्रमाकों करिकें अपने घर आये पारि रामदास स्त्रीकों अंगीकार न करते तब दिन द्वै तथा चारि रहिकें द्वारिकाकों चलै तब रामदासकी स्त्रीहू साथ चली पारि रामदास स्त्रीको साथ न आवन देहि ईंटनसों मारे पारिरामदासकी स्त्री तौ दूर तौ २ साथही भई और रामदासके दासकी पातरमें झूठन उबरे सो खाय नाही भूखी ही पारि रहै परंतु पतिके साथ २ ही रहे तब एक दिन श्रीरणछोडजीने रामदाससों कही जो तू अपनी स्त्रीको अंगीकार कर त्याग काहेकों करत है तब रामदासने कही जो मैं विरक्त हौं वेरागी हौं मेरौ स्त्रीसों कहा काम है तब श्रीरणछोडजीने कह्यौ जो तेनें बिहाह काहैकों कियौ जा तू श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको सेवक है तोका ऐसी निठुरता न चहियै जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको सेवक जानि कछू कहत नाहीं अब हों कहत हौं तू अपनी स्त्रीकों अंगीकार करि तब रामदासनें अपनी स्त्रीसों कह्यौ जो तू मेरे साथ चलीआउ तब मार्गमें रामदासके साथ जान लागी तब मजल जाय उतरे तब रामदासने अपनी स्त्रीसों कही जो तू वस्त्र साज लेकें डेरामें

बेठि रहियौ और में ऊपरा बीनि लाऊं पाछें आय स्नान करि रसोई करी श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यो भोग सराय पाछे प्रसाद लीयौ और स्त्रीकों प्रसाद दियौ सो कितनेक दिन मार्गमें चलै आये पाछे एक दिन श्रीरणछोडजीनें रामदासकों आज्ञा दीनी जो तू अपनी स्त्रीको नाम दे तब रामदासनें कह्यौ जो हूं नाम कैसें देउं तब श्रीरणछोडजीनें कह्यौ जो तू नाम दै मेरी आज्ञा है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको नाम ले श्रीरणछोडजीकी आज्ञाते स्त्रीको नाम दीयौ तब स्त्रीके हाथको महाप्रसाद लेन लाग्यौ पाछें कितनेक दिनमें श्रीआचार्यजी महाप्रभू राजनगर पधारे तब रामदासनें आयकें श्रीआचार्यजी महानप्रभूनके दर्शन कीये तब रामदासनें कह्यौ जो महाराज मेरी स्त्रीको नामसमर्पण करवाईयै तब आपने कह्यौ जो अबतौ तेने नाम दीयौ है फेरि कहा तब रामदानें कह्यौ जो महाराजमें तो श्रीरणछोडजीकी आज्ञा ते नाम दीयौ है और मोकों श्रीरणछोडजीकी आज्ञा है जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनपास नाम निवेदन करवाइयौ तब यह सुनिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें नाम निवेदन करवायौ पाछें घर आय गृहस्थाश्रम करन लागे वे रामदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं वाते इनकी वार्ता कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ४० ॥

गोविंददुबे साचोराब्राह्मणतिनकी वार्ता

सो गोविंददुबे श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकी भांतिसों करें पारि मनमें विग्रह हुतौ तब गोविंददुबेने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके बीनती पत्र लिख पठायौ जो महाराज मेरे मनमें विग्रह बहुत रहत है ताते मैं कहा करूं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने नवरत्न ग्रन्थ प्रगट कारि गोविंददुबेका लिख पठायौ और पत्रमें लिख्यौ जो या ग्रंथको पाठ तू नित्य करियौ सा तेरी विग्रहता सब मिट जायगी सो कृपापात्र आयौ तब गोविंददुबेकी सब विग्रहता मिट गई तब श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकी भांतिसों करन लागे प्रसंग ॥ १ ॥

और एक समय गोविंददुबे मीरांबाईके घर हुते तहां मीरांबाई सो भगवद्वार्ता करत अटके तव श्रीआचार्यजीने सुनी जो गोविंददुबे मीरांबाईके घर उतरे हैं सो अटके हैं तब श्रीगुसांईजीने एक श्लोक लिखि पठायो सो एक ब्रजवासीके हाथ पठायौ तब वह ब्रजवासी चल्यौ सो वहां जाय पहुंचौ ता समय गोविंददुबे संध्यावंदन करत हुते तब ब्रजवासीनें आयकें वह पत्र दीनो सो पत्र बांचिके गोविंददुबे तत्काल उठे तब मीरांबाईने बहुत समाधान कीयो पारि गोविंददुबेने फिर पाछें न देख्यौ ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

और एकसमय श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप द्वारिका पधारे तब गोविंददुबे और जगन्नाथजोसी और पांच सात वैष्णव हुते सो आपके साथ हैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों द्वारिकामें बीनती कीनी जो महाराज कछू कथा कहिये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने गोविंददुबेसों कह्यौ जो अबहीतो मोकों अवकाश नाहीं तब गोविंददुबेने बीनती कीनी जो जो महाराज थोरीसी कहिये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कथा कहिवेकों पोथी खोली तब इतनेमें गोविंददुबेसों श्रीरणछोडजी बातें करन लागे तब अपनें गोविंददुबेसों कह्यौ जो पोथी खुलायके बातें कोंनसों करत है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें फिर देख्यौ जो श्रीरणछोडजीसों बातें करत हैं तब आपने पोथी बांधी और फिर आप पोढे ॥ प्रसंग ॥३॥

और सब वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके थारकौ महाप्रसाद पावते तब एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें खवाससों कह्यो जो तुम इन वैष्णवनको महाप्रसाद मति देउ सो ता दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभू भोजन करिकें उठे हते सो उठतही खवासनें थार छूयके मांजि धरयो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके थारके महाप्रसाद न मिल्यो सो ता दिन सब वैष्णवननें उपवास करयौ तब श्रीरणछोडजीनें

श्रीआचार्यजो महाप्रभूनसों कह्यो जो तुम इन वैष्णवनको थार नित्य देतहौ तैसे इनकौ नित्य दीजियौ तब दूसरे दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें गोविंद दुबे और जगन्नाथ-जोसीसों कह्यो जो तुमनें कालि महाप्रसाद क्यों नहीं लीनौं भूखे काहेकों रहे तब गोविंददुबे और जगन्नाथजोसीनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों बीनती करिके कह्यो जो महाराज कालि आपके थारको महाप्रसाद न मिल्यो तब श्रीआ-चार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो तुमको आपने थारकौ महा-प्रसाद तौ न देतो परि तुम्हारी सिपारस बडी ठौरते भई है ताते अब देनौं परयो पाछें जो नित्य थारको महाप्रसाद देत हुते तैसेही देन लागे तब थे वैष्णव प्रसन्न होयकें रसोई करन लागे तब तहांताई श्रीआचार्यजी महाप्रभू द्वारिकामें बिराजे तहां जाय वैष्णव पास रहै पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीरणछोडजीसों बिदा होयकें अडेलकों पधारे तब सब वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके साथ आए सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकों अडेलमें पहुंचायके फेर अपने २ घर आये पाछें श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लागे सो वे गोविंददुबे श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांताईं लिखिये ॥ ४ ॥

वैष्णव ॥ ४१ ॥

अथ राजादुबे माधौदुबे दोऊ भाई साचोराब्राह्मण तिनकी वार्ता

सो ता गाममें दोऊ भाई साचोरा ब्राह्मण रहते सो एकको नाम हरिकृष्ण हुतौ और एकको नाम रामकृष्ण हुतौ सो बडो भाई रामकृष्ण पढ्यो बहुत हुतौ और छोटौ भाई मूरख हुतौ और वह बडो जो पढ्यो हुतौ सो गामके चोतरा ऊपर बैठके पटेलके आगें कथा कहतौ और छोटो भाई मूरख हुतौ सो खेतीकी रखवारी करतौ सब टहल करतौ सो वह बडौ भाई कछू काम गयो हुतौ दूसरे गाममें सो ता दिन इहांकी कथा रह गई पाछें एक दिन मेहकी वर्षा बहुत भई सो वह छोटौ भाई खेतते उठिकें घर आयौ तब भावजने कहौ जो तुम रोटी जैलेउ तब वा देवरने कह्यौ जो सीत बहुत लागत है और में बहुत भीज्यौ हूं ताते तू तातो परोसो तौ जेऊँ तब भावजने कह्यौ जोतू खाय तौ खा नातरमें जायकें सोय रहत हौ अब तु कहा गामके चोंतरा ऊपर बैठिके पटेलके आगें कथा कहेगोके दादाको गरास फेरेगो तादे खानों होय तौ खा नातर हूंतौ जायकें पडि रहूंगी और जैसो है तैसो खा नातर कहूं उठिजा तब वा देवरके मनमें बहुत दुःख लाग्यौ और अपने मनमें बिचा-

रह्यौ जोहूं या देशको त्याग करूं कहूं निकस जाऊं त
पाछें घरमें ते निकसके मनमें बिचार करन लाग्यौ जो
राजादुबे माधौदुबे बडे महापुरुष हैं ताते इनको नमस्कार
करिकें जाऊं पाछे तहां गयौ तब राजादुबे माधौदुबे दोऊ
भाइनको नमस्कार कीयौ और रोवन लागौ तब दुबेजीने
पूछौ जो तू कौन है पाछे देखिके पहिंचान्यौ तब वासों
कह्यौ जो तूतौ अमुकेको बेटा है हरिकृष्ण तेरो नाम है और
तू हमारी जातिको है सो तोको ऐसो कहा दुःख है तासो तू
रोवत है तब वाने कह्यौ जो मेरे दुःखको पार नाहीं तब
दुबेजीने कह्यौ जो तू अपनो दुःख कहि तोको कहा दुःख
है तब याने कह्यौ जो तुम मेरे दुःखको दूर करो तो कहूं
तुम बडे हौ महापुरुष हौ तब दुबेजीने कह्यौ जो श्रीठाकुरजी
बडे हैं वे सबको दुःख दूर करेंगे तू अपनो दुःख कहि तब
यानें सब समाचार कहे जो मोकों भावजने ऐसे २ वचन कहे हैं
सो मेरे हृदयमें खटकते हैं तातेमें तुम्हारे पास आयौ हूं सोमेरो दुःख
तुमसे दूर होयगो पाछे दुबेजीने वाका समाधान कीयौ समाधान
करिकें वाको महाप्रसाद लिवायौ पाछें रात्रिकों सोय रह्यो
तब प्रातःकाल भयो तब वासों दुबेजीने कह्यो जो तू स्नान
करिकें आयौ तब माधौदुबेसों राजा दुबेने कह्यौ जो अब

कहा करियै तुमही जानों तुम्हारी जीभ चली है जो तुम करोगे नांहीं तौ कैसें छूटोगे झाड लग्यौ है तब माधौदुबेनें कह्यौ जो अबतौ तुम्हारी शरण आयौ है तुम श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक हौ अबतौ याको कार्य्य कीयौ चाहिये तब पहिले तौ याकौ क्षौरकरवायौ पाछें स्नान करवायके मंदिरके द्वारके आगें बैठायौ तब माधौ दुबेनें राजादुबेसों कह्यौ जो अब याकों कहनों होय सो कहौ तब राजादुबेनें माधौदुबेसों कह्यौ जो तुम्हारो यह काम है मेरौ काम नाहीं तासे तुमहीं कहौ तब माधौदुबेने राजादुबेसों कह्यौ जो तुम बडे हैं ताते तुमहीं कहौ तब राजादुबेने माधौदुबेसों कह्यौ जो मेरी आज्ञा है ताते तुमहीं कहौ तब माधौदुबेने वाकूं उपदेश दीयौ अष्टाक्षर मंत्र कानमें कह्यौ पाछें वाकों अष्टोत्तरशत नामको जप करवायौ सो जप कीयौ सो एक २ माला जप कीयै पाछें संस्कृत बोलन लाग्यौ तब माधौदुबेने राजादुबेसों हँसकें कह्यौ जो अब आज्ञा होय तौ एक वार याको फेरि जप कर वाइये तब राजादुबेने माधौदुबे सों कह्यौ, कह्यौ जो अवश्य करवाईयै पाछें माधौदुबेने दूसरी बार जप करवायौ तब भगवत्स्वरूप स्फुर्द भयौ और पुराण इतिहासमें ज्ञान भयौ तब माधौदुबेनें

राजादुबेसों कह्यौ हंसिकें कह्यौ जो आज्ञा होय तौ अब फेरियाकें जप करवाईये तब राजादुबेने माधौदुबेसों कह्यौ जो अब यह इतनेहीको पात्र है अधिक समाय नाहीं और कह्यौ जो तुम कछू मनमें मति ताईयौ जो हमते भयौ है ताते यह कछू भयौ है सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपाते भयौ है हमारौ तुम्हारौ स्वरूप तौ वै जानत हैं पाछे वानें उहांई प्रसाद लियौ पाछें दुबेजीकी आज्ञा मांगिके अपने गांमके चौंतरा ऊपर जाय बैठो और कथा कहन लाग्यौ पहले बडो भाई कथा कहतौ सो वह गांव गयौ जानिके कोई न आवतौ सौ वा दिन कहूंते वाको सेवक आयौ ताने कथा कहत देख्यौ तब वाने गामके पटेलसों आय कह्यौ जो तुम कथा सुनिवेको क्यों न गए भट्टजी तौ कथा कहि रहे हैं तब पटेल आयके देखे तौ भट्टजी कथा कह रहे हैं तब पटेलनें कह्यौ जो भट्टजी अबतांई तुम कथा कहनेको नाहीं आय तब भट्टजीने कहयो जो पहिलें बडे भाई कथा कहते ताते मैं नाहीं आवतौ अब और गांम गये हैं ताते मैं कथा कहिवेकों अब आयौहूं तब वे भगवदिच्छाते भट्टजी भलीभांति कथा कहन लाग्यौ ताते सब कोऊ बहुत प्रसन्न भए और सब कोउ कहन लागे जो हमारौ बडौ भाग्य है

जो अबकें एसौ ब्राह्मण मिल्यो तब कितनेक दिनमें वह कथा सम्पूरण भई तब सबने मिलिकें भट्टजीकी पूजा करी और कह्यो जो अब तो तुमहीं कथा कहिवे करौ कथाकों आइयौ पाछें वह ब्राह्मण माधौदुबेके पास आयो आयकें वीनती करी जो तुमारी कृपाते मेने कही जो जाकी यह पूजा मिली है सो तुम लेउ यह सब द्रव्य तुमरौ है तुम मेरे गुरुहौ तब राजादुबे माधौदुबेने वासों कह्यौ जो हमारे और तुम्हारे गुरू श्रीआचार्यजी हैं तातें यह द्रव्य सब उनको है हमारौ यामें कछु नाहीं ताते यह द्रव्य सब अडेल पहुंचावनो तब वा ब्राह्मणने सब द्रव्य अडेल पहुंचायौ सो कितनेक दिन पाछें रामदास साचौरा ब्राह्मण और जगन्नाथजोसी ये वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनको अडेल जात हैं तिनके साथ वह द्रव्य अडेल पहुंचाय दीयौ तब कितनेक दिनमें वाकों बडो भाइ आयो वह गांम गयौ हुतौ सो आयौ तब याने राजादुबे माधौदुबेसों कह्यौ जो तुम आज्ञा देउ तौ मेरे पिताको ग्रास है सो फेरौं तब दुबेजीने कह्यौ जो अब कहा कछु संदेह है तू जा सब सिद्ध होयगो तब वह दुबेजीसों आज्ञा लेकें वा गांमको चल्यौ सो जाय पहुंच्यौ पाछें वा राजासों मिल्यौ आशीर्वाद दीयौ तब वह

रजपूत वा भट्टको देखिके बहुत प्रसन्न भयौ और कह्यौ जो हमारो बडौ भाग्य जो तुम कृपा करिके आये और कह्यौ तुम डेरा करो तब उन डेरा कीयौ पाछें रसोईकी सामग्री चलती करी पाछें सबजनें भट्टजीके पास आय बैठे तब भट्टजीने एक श्लोकको व्याख्यान कर्‍यौ तब वे सबजने बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ जो तुम पांच रात्र कृपा करिके रहो पाछें तुमारी बिदा करेंगे ऐसे कहिकें वेतौ अपने घरको गये पाछें रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो भोग सरायकें महाप्रसाद लीयो तब दूसरे दिन सब मिलिकें विचार करन लागें जो भट्टजीकी बिदा कब करिये और कहा करिये और यह ब्राह्मण बहुत योग्य है और बहुत दिनमें आयौहै तब उन सबनमें एक वृद्ध हुतौ तिनने कह्यौ जो याको सो मनतौ अन्न देउ और एक सत याकों मुद्रा देउ और याके पिताको ग्रास पुरातन भूमिहै सो एकसौ बीघा है सो याको लिखि देउ इतनों लिखि देउ जो हमहूं ब्राह्मणऋणते छूटे तब सबनने कह्यौ जो यह ठीक बात कहेहै सो याको कह्यौ सबनको करनो चाहिये पाछें सबने मिलकें चीठी लिखिदीनी और कह्यौ जो याकों अन्न सिद्ध है सो ले जाउ तब भट्टने कह्यौ जो यह सब अन्न

मेरे घर पहुंचाओ तब वा अन्नके गाडा भरदीनें और कह्यौ जो अपनेसाथ लिवाय लेजाउ और सबनें मिलकें वस्त्र दीनें और गाय और एक भैंस और सतमुद्रा इतनों याको दीयौ और कह्यौ जो तुम इतनों प्रतिवर्ष आयकें ले जायोकरो तब भट्टजी सबनसों बिदा होयकें अपने गांवको चले सो आय पहुंचे तब अपने द्वारेके आगे आय पुकारयौ और पुकार कह्यौ जो भाभी किवाड खोल हों पटेलके चौतरा ऊपर कथा कहिकें और पिताकौ ग्रास फेरिकें आयौ हों ताते अब द्वारि खोल तब भाभी खोलकें देखे तौ देवर सांचेही ठाढो है तब देखकें बडौ भाई उठि आयौ तब देखे तौ छोटे भाईके ऊपर भगवत तेज बिराजत है तब वह बडौ भाई डरप्यौ जो मति यह कछू मनमें बुरी लावे तब वह छोटा भाई भाभीके पांय लाग्यौ और कह्यो जो तुम्हारे बचनते मोको श्रीठाकुरजीकी कृपाते भई हैं तब वाके बडे भाईने कह्यौ जो मेतो राजादुबे माधौदुबेकों नमस्कार कीये-बिना जलपान न करूंगौ तब वाके बडे भाईने कह्यौ जो यह कहा तब छोटे भाईने कह्यौ जो यह भयौ हैं सो सब उनकी कृपाते भयौ है मोकों तो तुम नीके जानत हो जैसौ हो तैसौ तब बडे भाईने कह्यौ जो में तुम्हारेसाथ चलूंगो

तब दोऊ भाई राजादुबे माधौ दुबेके घर गये तब जायके बडे भाईनें उनको नमस्कार कीयौ और छोटेनें दंडोत करी तब राजदुबेनें माधौदुबेसों कह्यौ जो तुम्हारौ सेवक आयौ है और यह प्रसंग याके बडे भाईके आगे मति कहियौ तब दुबेजीने कह्यौ जावो बैठो तब वे दोउ भाइ बैठे ता पाछें दुबेजीसों छोटे भाईने सब वार्ता निवेदन करी तब दुबेजीने कह्यौ जो तेरे ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको हाथ हैं ताते ऐसौ क्यों न होय तब वाके बडे भाईने कह्यौ जो हमतो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शन नाहीं करे हमने तौ तुम देखे हौ और जैसे याके ऊपर कृपा करिकें याकों कृतार्थ कीयौ है जैसें मोकोंहूं कृपा करके कृतार्थ करौ तब वाकू हूं दुबेजीने कृतार्थ कीयौ नाम सुनायौ पाछें दोऊ भाइनकों महाप्रसादकी लिवायौ पाछें छोटे भाईने दुबेजीसों कह्यौ जो आज्ञा होय ता अन्न ये मुद्रा गाय भेंस कपडा उहां सों जो लायौ हों सो आपके मन्दिरमें आवै तब दुबेजीनें कह्यौ जो तुमतौ जानतही हौ जो या द्रव्यके धनी तो श्रीआचार्यजी महाप्रभू हैं तब वाने कह्यौ जो आपकी आज्ञा प्रमान तब दुबेजीने कह्यौ जो अन्न और गाय भैंस और सब द्रव्य इकठोरो करौ पाछें

दुबेजीसों दोऊ भाई बिदा होयके अपने घर आये तब सब द्रव्य हुतौ सो इकठोरो कीयौ पाछें दिन थौरे सेमें श्रीआचार्यजी महाप्रभूद्वारिका पधारे तब सिद्धपूरमें राणाव्यासके घर उतरे तब राजादुबे माधौदुबे और वह सब द्रव्य लेके श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनकों सिद्धापुरमें आये तब आयकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शन कीये पाछें इन दोऊ भाईनको श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास नाम निवेदन करवायौ और वह द्रव्य हुतौ सो सब भेट कीयौ तब दिन द्वै चार रहिके आप आगे पधारे तब राजादुबे माधौदुबे और वे दोऊभाई ब्राह्मण श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों बिदा होयकें अपने घर आये पाछें वे दोऊ भाई ब्राह्मण राजादुबे माधौदुबेके संगते बडे भगवदीय भए ताते संग करनो सों भगवदीयको करनों वे राजादुबे माधौदुबे ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ४२ ॥

अथ उत्तम श्लोकदास साचौरा ब्राह्मण तिनकी वार्ता

सो उत्तम श्लोकदास श्रीनाथजीके सेवकनकी रसोई करते और सबनकूं जाप परोसते ताते सब सेवक उत्तम श्लोकदा-

सकों महातारी कर बोलते सेवकनकों प्रीतसे परोसते ताते श्रीगुसांईजी इनके ऊपर बहुत प्रसन्न रहते वे उत्तम श्लोकदास श्रीआचार्यजी महा प्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये।प्रसंग ।१।वैष्णव॥४३॥

अथ ईश्वरदुबे साचौरा ब्राह्मण तिनकी वार्ता

सो ईश्वरदुबे श्रीनाथजीके सेवकनकी रसोई करते और उत्तम श्लोकदासहू श्रीनाथजीके सेवकनकी रसोई करते सो तब उत्तमश्लोकदासकी देह छूटी तब श्रीगुसांईजीनें ईश्वरदुबेको नाम उत्तमश्लोकदास राख्यौ सो वे श्रीनाथजीकी सेवकनकी रसोई करते सो अपनी गांठिते घृत मँगायके सबनके नेकते अधिक घृत परोसते ताते याहूसों सब सेवक महतारी कहके बोलते सो यह बात श्रीगुसांईजी ने सुनी सो सुनिके बहुत प्रसन्न भये तब ईश्वरदुबेसों श्रीगुसांईजीने पूछो जो तुम अपनी गांठिते द्रव्यका घृत मंगायके काहेको परोसत हो तब ईश्वरदुबेने कह्यौ जो महाराज इनको सेवामें श्रम बहुत होत है तब यह सुनकें श्रीगुसांई जी बहुत प्रसन्न भये और कहें जो याको सब सेवक ऊपर ऐसी बात सत्य है तब ईश्वरदुबेसों श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो

तू मांगिहो तेरे ऊपर बहुत प्रसन्न भयौ हों तब ईश्वरदूबेने प्रसन्न होयके कही जो महाराज मेरो मन तुम ऊपरते अप्रसन्न होय तब श्रीगुसांईजीसों वैष्णवनने कहौ जो महाराज याने यह कहा मांग्यो तब श्रीगुसांईजी सुनिके चुपकरि रहे तब श्रीगुसांईजीसुं हरिदासनें पूछो जो महाराज मेरे मनमें संदेह है जो उत्तमश्लोकदासनें यह कहा मांग्यो तब श्रीगुसांई-सुनिके चुपकरि रहे तब श्रीगुसांईजीसुं हरिदासनें पूछो जो महाराज मेरे मनमें सन्देह है जो उत्तम-श्लोकदासनें यह कहा मांग्यौ तब श्रीगुसांई-जीनें कह्यौ जो यह संदेह तो उनहीसों मिटैगो तब उन वैष्णवननें उत्तमश्लोकदाससों पूछौ जो तुमने श्रीगुसांईजी पास कहा मांग्यौ तब उत्तमश्लोकदासने कह्यो जो जब श्रीगुसांईजी मोपर प्रसन्न होयके कह्यौ जो हों तेरे ऊपर प्रसन्न भयौ हों ताते तू मांगि तब श्रीगुसांईजी मोकों प्यारे लागै तब मनमें विचार भयौ जो आज प्रभूजीकी प्रसन्नताते खरो प्यारो लागतहों और में सेवक हों और जो कदाचित् कोऊ अपराधते मन प्रसन्न होय जाय तब मेरो मन कहूं बिगरे ताते यह मांग्यो जो सदा निरन्तर तुमारे चरणार-विन्दपर मन रहे सो उनके दीएते रहे तब यह बात सुनिके

सब वैष्णव प्रसन्न भये तब विचारे जो सेवकको ऐसोई धर्म चाहिये पाछें श्रीगुसांईजी प्रसन्न होयके श्रीअंगकी सेवा-दीनी सो वे मुखिया भीतरिया भये वे उत्तमश्लोकदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परमकृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ताको पार नाहीं ताते इनकी वार्ता कहांताईं लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ४४ ॥

अथ वासुदेवदास छकडा सारस्वत ब्राह्मण सीहनंदके तिनकी वार्ता ।

सो एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके बडे पुत्र श्रीगो-पीनाथजीसों अडलते आगरे पधारे सो आगरेमें वैष्णवननें एक सौ एक मोहर भेंट कीनी पाछें आगरेते श्रीगोपीनाथजीनें आज्ञा करी जो कोई ऐसो वैष्णव हैं जो एक सौ एक मोहर हमारे घर पहुंचावे तब वासुदेवदासने कह्यौ जो महाराज मोहर मोकों देउ में महुंचाउंगो तब वे मौहर वासुदेवछकडाकों दीनी सो मौहर लायकें मेलिके गोला कीयौ सो गोलाकी पूजा करत मार्गमें चले गये सो दिन पांचमें अडेलजाय पहुंचे सो गांवके बाहर गोला फोरकें मोहर काढि पाछें श्रीगुसांईजीकों दीनो और श्रीगोपीनाथ-

जीको पत्र श्रीगुसांईजीकौ दीनी पाछें श्रीगुसांईजीने वह पत्र बांचिके मौहर गिन लीनी पाछें श्रीगुसांईजीनें वासुदेवदासकों महाप्रसाद लिवायौ पाछें वासुदेवदासने श्रीगुसांईजीसों बीनती कीनी जो महाराज पत्रको जबाब लिखियै जो और पत्रमें मौहरनकी पहुंच लिखियै जो हूंतौ सवारे जाउंगौ तब श्रीगुसांईजीनें वा पत्रकौ जबाब लिखिदीनों जो मौहर पहुंची ताकी पहुंच लिख पत्र बिड्यौ सो बीडक वासुदेवदासको दीनो पाछें वासुदेवदास सोय रहै तब रात्रि घडी एक रही तब वासुदेवदास उठिकें श्रीगुसांईजीके पास आयकें दंडोत करिकें अडेलते चले सो पांचदिनमें श्रीजीद्वार आये श्रीगुसांईजीको पत्र श्रीगोपीनाथजीको दीनौ दिन दशमें अडेलआये और गये सो पत्र बांचिक गोपीनाथजी बहुत प्रसन्नभये आर पूछौ जो वासुदेवदास मौहर कौन भांतिसों ले गये हुते तब वासुदेवदासनें कह्यौ जो महाराज मौहरनको गोला करकें वा गोलाकी पूजा करत ले गयौ तब श्रीगोपीनाथजीने कह्यौ जो या भांति कबहूं न राखियै जो स्वरूप करि मानियै ताकों या भांति कैसे करियै तब वासुदेवदासनें कह्यौ जो महाराज प्रतिष्ठा तौ न भई हुती ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

बहुर एक समय श्रीगुसांईजी श्रीमथुरामें बिराजत हुते सो एक समय श्रीगुसांईजी शृंगार करि सेवाते पहुंचिकें बाहर बैठकमें बिराजे सो बैठकमें बैठकें रूपचंदनंदाके पत्र लिख्यो तामें वसंतकी सामग्री मंगाई तब वासुदेव सौं कह्यौ जो तू इतनी सामग्री लेकें संध्याकों आईयो तब भंडारीको आज्ञा दीनी जो एक टोकरा याको प्रसादको देउ तब भंडारीनें सुको प्रसाद दीनों टोकरामें तब श्रीगुसांईजीनें वासुदेवदासकों आज्ञा दीनी जो तोकों पनही पहरेंकी कछू चिंता नाहीं पेडेमें प्रसाद खातो चल्यो जैयो तब वासुदेवदास सोई करत आये सो जब आगरे आय पहुंचे तबतांई प्रसाद खाय चुके तब झोरी झारीकें रूपचंदनंदाके घर गये तासमय रूप चंदनन्दा अपने घर प्रसाद ले चुक्यो हो चळूलेकें सीक करतहो सो वासुदेवदास पत्र लेकें आये तब रूपचंदनंदानें हाथ धोय पोंछिकें वह पत्र मांथे चढ़ायकें लीनों और भाईसों कह्यौ जो वासुदेवदास आये हैं सो घरमें कह्यौ ये भूखे होंयगे तब वासुदेवदासने कह्यौ जो मोकों तौ मथुरा जानों है तासों मोकों सखडी महाप्रसाद लेवेको अवकाश नाहीं ताते सामग्री लेदेउ तौ में जाऊं इहां तौ प्रसाद लेउंगो नाहीं तब रूपचंदनंदा वस्त्र पहरकें सामग्री लेन गये तब वासुदेवदास वहां गये

तब रूपचंदनंदानें छोटे भाई गोपालदाससों कह्यौ जो अपने घरमें जितनो प्रसाद होय सो तू लेके छारछू दरवाजे बैठियौ हम आवत हैं तब छोटे भाईने जितनों घरमें प्रसादहौ सौ सब लेकें छारछू दरवाजे आय बैठ्यौ और रूपचंदनंदा बाजारमें आयके सब सामग्री लीनी तब वासुदेवदासनें कह्यौ जो मेरो अगारौ घर तौ प्रसादी है तब सब सामग्री पिछली ओर कटिसों दृढ कर बांधी पाछें रूपचंदनंदा और वासुदेवदास छारछू दरवाजे आये तब देखें तौ छोटो भाई बैठो है प्रसाद लीये सो सब प्रसादसों वासुदेवदासकी झोरी भरी और विदा कीये आप दोऊ भाई घरको आए और आप वासुदेव मथुराको आये सो तीसरे पहर श्रीगुसांईजी स्नान करवेकों पधारे हुते ता समय वासुदेवदास सामग्री लेकें आय ठाडौ भयौ तब श्रीगुसांईजी उठिकें वासुदेवदासकी कटिते सामग्री खोलिलीनी और श्रीगुसांईजी वासुदेवदासके ऊपर बहुत प्रसन्न भये और आज्ञा दीनी जो तोको महाप्रसादकी सामग्री राखी है सो जायकें प्रसाद ले तब वासुदेवदास विश्रांत स्नान करिकें आयौ तब प्रसाद लीयौ सो वासुदेवदासकी क्षुधा बहुत हुतीमणदेढखातौ पारि जैसौ खातौ बहुत तैसेही बहुत पराक्रम हुतो मथुराते दोय पहरमें आगरे गये और आये ऐसे पराक्रमी हुते ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

बहुर नित्यप्रति श्रीगुसांईजी श्रीठाकुरजीकी सेवा करिकें बाहिरआयकें खवासासो कहते जो तू थेली पीढा लैकें विश्रांतजैयौ और आपदर्शनार्थ जन्मस्थान पधारते सो जन्मस्थान दर्शन करिके पाछें श्रीगुसांईजी विश्रांत स्नानको पधारते या भांतिसों श्रीगुसांईजी नित्य करते सो एकदिन मथुरिया चौबे सब मिलकें काजीकेपास जायकें चुगली करी जो तुम इनसों लागा बांधी करौ सो इनके सेवक आए हैं सो तुमको दोय चार हजार रुपैया देइंगें तब काजीमनुष्य दोयसौ हथियार बांधिकें जन्मस्थान आय ठाडौ भयौ इतनेमें श्रीगुसांईजी श्रीकेशोरायजीके दर्शनको पधारे तब दर्शन करिकें बाहर आए पाछें घोडाऊपर सवार भये तब काजीने कह्यौ जो अब तुम कहां जाउगे तब वासुदेवदासनें श्रीगुसांईजीसों बीनती कीनी जो महाराज मोकों बुरी नजर दीसत है तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो ये तेरो कहा करेंगे तोसों होय सों तू हू करि तब वासुदेवदास देखे तौ एकके हाथमें ढाल और गुरज देखी सो ताकें वासु-देवनें एक थपेड मारी सो थपेड लागतमात्र वह तो गिर-परचौ तब वाकी ढाल और गुरज लेकें वासुदेवदासके पीछें मनुष्य बीस पच्चीस हुते तब वे भाजिकें हवेलीमें बेठिकें

दरवाजौ देकें छिप रहै तब श्रीगुसांईजी घोराऊपर सवा-रभये और उनके दरवाजे होकर पधारे तब वासुदेवदासने श्रीगुसांईजीसों कह्यौ जो महाराज अब भले इकठौरे भये हैं जो आज्ञा होयतो इन सबनकों दरवाजौ तोरकें मारों तब श्रीगुसांईजीनें नाहीं कीनी और कह्यौ जो तेरो ये कहा लेत हैं पाछें श्रीगुसांईजी विश्रांत पधारे तब दूसरे दिन श्रीगुसांईजी स्नानको पधारे तब वह काजी अपने मनु-ष्यनकों साथ लेकें गरेमें पटुका देकें आयकें बीनती करी जो महाराज आज हम कन्हैया देखें और भीमहूं देखे जो प्रभूजीके प्रतापते सब डरे तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो यह ऐसो हुतो जो फिर यासों बोलते तो अकेलो यह सबनकों मारतो तुम सब ठोर रहते और याको मनमें तो बहुत आईहुती परि हमें तो ऐसी न करनीहुती पाछें काजीको समाधान करिकें घरको पठायो सो श्रीगुसांईजीकी कृपाते श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक ऐसे सामर्थवान हुते ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

और सीहनन्दमें उत्सव होतो तब वासुदेवदास कों बुलावते नाहीं तब एकसमय सीहनंदके वैष्णव मिलिकें श्रीगोकुल श्रीगुसांईजीके दर्शनको आये सो तिनके साथ

वासुदेवदासहूं आये तब वैष्णवननें श्रीगुसांईजीको दर्शन कीयौ पाछें उहां रहिकें कोई समय पायकें वासुदेवदासने श्रीगुसांईजीसों बीनती करकें कही जो महाराज ये वैष्णव मोकों सीहनन्दमें उत्सव होतहै तब बुलावत नाहीं तब श्रीगुसांईजी चुपकरिरहै तब पाछें उन वैष्णवनको जब डेराको बिदाकिये तब तिनमेंते चारपांच मुखिया रहैं सो तिनको श्रीगुसांईजीनें राखें और सब वैष्णवनको डेरा पठाये तब श्रीगुसांईजीनें उन वैष्णवनसों पूछी जो तुम वासुदेवदासको उत्सव कीर्तनमें क्यों नाहीं बुलावतेहो तब उन वैष्णवननें बीनती करिकें कही जो महाराज वासुदेवदासको बडे उत्सवमें क्यों नाहीं आवत हैं और छोटे उत्सवमें नाहीं बुलवत जो ये भूखे रहेंगे तो दोषलागे तब श्रीगुसांईजीने उनको आज्ञादीनी जो तुम बंधान बांधो जो सो वैष्णवनकों बुलावो तो पचास तौ और वैष्णवनको और पचासमें एक वासुदेवदासको बुलावो और जहां पचास बुलावो तो पच्चीस तो और वैष्णव बुलावो और पच्चीसमें एक वासुदेवको बुलावो और जहां पच्चीस बुलावो तहां तेरह तौ और वैष्णवनकों बुलावो और बारहमें एक वासुदेवदासको बुलावो ऐसे दशतांई श्रीगुसांईजीनें बंधान

बांध्यौ ऐसे पांचतांई बन्धान बांध्यौ ऐसे जितने बुलावने होय तितनें तौ और वैष्णव बुलावो और आधेनमें एक वासुदेवदासको बुलावो तब उन वैष्णवननें कह्यौ श्रीगुसांईजीसों जो महाराज भूखे रहेंगे तब श्रीगुसांईजीनें उन वैष्णवनसों कह्यौ जो दशतांई तुम आधेमें वासुदेवदासकों बुलावौ तामें चाहे सो होय ताको तुम कहा करोगे सो यह प्रकार मेने तुमको करदीनों है सो मेरी आज्ञाते तुमको कछू बाधा नाहीं जो तुम आधेमें वासुदेवदासकों खुशीसे बुलावौ पाछें भूखो रहे तौ तुमको कछू दोष नाहीं परि यह श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको सेवक है ताते बुलायेविना वासुदेवदासको तुम उत्सव मति करियो तब वैष्णवननें कही जो महाराजकी आज्ञा होयगी सोई करेंगे तब वे कोइक दिन श्रीगोकुल रहिकें पाछे सब वैष्णव सीहनन्दको गये तब वे वैष्णव सोई करन लागे श्रीगुसांईजी वासुदेवदासको श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको सेवक जानिके ऐसी कृपा करते सो वे वासुदेवदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥ वैष्णव ॥ ४५ ॥

अथ बाबा वेणुदास और कृष्णदास घघरिया तथा यादवदास ति॰ वा॰

सो वे बाबा वेणुदास हृदयके नेत्रनसों देखते सो बाबा वेणुदास और छोटे भाई कृष्णदास ये दोऊ भाई श्रीकेशोरायजीके आगे कीर्तन करते तहां यादवदास हूं कीर्तनमें साथ हुते तब कीर्तन करन लागे सो ये पद गावत हुते जी "देखरी नैनन गिरवर धरन सों" यह पद गावत कृष्ण-दासने अपनी देह छोडी तब यादवदासनें बाबा वेणुदाससों कह्यौ जो यह पद गावत कृष्णदासने अपना देह छोडी तब बाबा वेणुदासने कह्यौ जो हमतौ अपनी देह श्रीनाथजीद्वारमें छोड़ेंगे पाछे कृष्णदासको संस्कार श्रीकेशोरायजीके पाछें कीयो ता पाछें सूतक उतरचा तब शुद्ध होयके श्रीनाथजी द्वार चले सो कितनेक दिनमें श्रीनाथजीद्वार आय पहूंचे तब पर्वत ऊपर आयके बाबा वेणुदासने श्रीनाथजीके दर्शन कीये पाछें बाबा वेणुदासनें कीर्तन कीये तब श्रीनाथजीके कण्ठते फूलकी माला गिरि सो माला और एक बीडा राम-दास भीतरियाने बावा वेणुदासको दीनों सो बाबा वेणुदास मांथे चढ़ायकें लीनों तब रामदास भीतरियानें बावा वेणु-दाससों कह्यौ जा तुम्हारी बिदा श्रीनाथजीने कीनी तब

बावा वेणुदासने श्रीनाथजीको दंडोत कीनी पाछें नीचे उतरे सो आन्यौरकी ओर उतरे तब बावा वेणुदासने यादवदाससों कह्यौ जो हूं तो पर्वतते नीचे उतरिके अपनी देह छोडूंगो तू सावधान रहियौ और तू वेगो आइयौ ऐसे यादवदाससों कहिक बावा वेणुदास पर्वतते नीचे उतरके श्रीनाथजीको दंडौत कर तमात्र अपनी देह छोडी पाछें यादवदासने बावा वेणुदासको संस्कार कीयौ पाछें सूतक उतर्यो तब शुद्ध होयके यादवदास श्रीगुसांईजीके पास आये सो श्रीगुसांईजीको दर्शन कीयौ और दंडौत कीनी तब गुसांईजी यादवदासको परम भगवदीय जानकें मनमें विचारें जो कोई एक दिनमें यादवदासकी स्थितिहै ताके लिये श्रीगुसांइजी विचारें जो श्रीनाथजीकी सेवामें यादवदासको राखियै तौ आछो है तब श्रीगुसांईजीनें कह्यौ जो यादवदास तुम अकेले हो ताते अब श्रीनाथजीकी सेवा करो तब श्रीगुसांईजीकी आज्ञाते यादवदासनें श्रीनाथजीकी सेवा नीकी भांतिसों करी सो सेवासों पहुंचिकें यादवदास नीचे उतरे और नीकी भांतिसों सेवा करते सो कहूं बंगा-लेमें जायकें यादवदास लकडी परी होय सो इकठौरी करी पाछें जब जान्यौ जो लकडी सिद्ध भई तब श्रीनाथजी

पास आज्ञा मांगिके दंडौत करिके नीचे उतरे सो अग्नि लेकें जहां लकड़ी इकठौरी हुती तहां आप आए सो लकडीनको श्रीनाथजीकी ध्वजाके आगे चौतरा बनायौसो चौंतराके ऊपर आप पोढे जादिशाको ब्यार चलत हुती ता दिशाको अग्नि धरिकें ध्वजाको प्रनाम करिकें श्रीनाथको स्मरण करिकें यादवदासनें अपनी देह छोडी पाछें ब्यारते अग्नि जरि उठी सो जरिकें भस्म होगई यादवदासने अपने हाथनसों अपनो संस्कार कीयो तथा बावा वेणुदासको संस्कार कीयौ ताते यादवदासनें अपनौ यही विचार कीयौ जो सब सेवनको मेरौ संस्कार करिवेमें कष्ट होयगौ और सेवामें बिरोध होयगो ताते यादवदासनें अपनों संस्कार अपने हाथसों कीयौ और पहिलें बावा वेणुदासनें यादवदाससों कह्यौ हुतौ जो तू वेगी आइयौ बिलम्ब मति करियौ सो तो श्रीगुसांईजीने श्रीनाथजीकी सेवा सोपी ताते इतनेदिन विलंब भयौ पाछें दिन द्वै भये तब श्रीगुसांईजीनें पूछो जो यादवदास देखियत नाहीं सो कहां गयो है तब सेवकननें कह्यौ जो महाराज यादवदास कहूं बनमें लकडी इकठौरी करत हुते तब श्रीगुसांईजीने कही जो उहां जायकें देखौ तौ तब श्रीगुसांईजीके कहतमात्र वैष्णव जायकें देखें तौ उहां

कछू नाहीं राखकी ढेरी परी है तब वैष्णवननें श्रीगुसांई-जीसों आयकें कह्यौ जो महाराज उहां तौ कछू दीखत नाहीं राखकी ढेरी परी है तब श्रीगुसांईजी अपने श्रीमुखसों कह्यौ जो ऐसो भगवद्भक्त जो काहूंको दुःख न देतौ वे यादवदास श्रीमहाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय जो स्वइच्छासे अपनी देह छोडी सो सब ग्वालननें देख्यौ सो चक्रत होय रहे तातें बावा वेणुदास और कृष्णदास घघरिया और यादवदास बनिया ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं सो अब कहां तांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ४६ ॥

अथ जगतानन्द सारस्वत ब्राह्मण थानेश्वरकेवासी तिनकी वार्ता।

सो जगतानंद सरस्वती ऊपर कथा कहते तब समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू थानेश्वर पधारे सो जगतानन्द सरस्वती ऊपर कथा कहि रहै हुते सो तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभू जाय बिराजे तब जगतानन्द सरस्वतीनें एक श्लोकको व्याख्यान कीयौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो याको व्याख्यान भावतौ बहुत है तब जगतानंदनें कह्यौ जो श्लोकको अर्थ तौ कह्यौ जा श्रीशुकदेवजीनें

कह्यौ सो कह्यौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो श्रीशुकदेवजी लरिका है तब जगतानंदनें कह्यौ जो अधिकी व्याख्यान होय तौ तुमही आय कें कह्यौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो तू तौ व्यास आसन बैठ्यो है हम तेरो अतिक्रम क्यों कर कर तब इतनों सुनत मात्र जगतानंदचौकी छोडकें उठिठाडो भयौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने चौकीऊपर वस्त्र बिछायके पोथी धरी और फिर आप ताके नीचे बैठे और वा श्लोकको भाव फेरिकें वाको अर्थ कह्यौ सो व्याख्यान करत २ तीन पहर व्यतीत भये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो या श्लोकके व्याख्यान मास दोय तीनलों बीतेगो पारि अब तुम भूखे होउगे ताते अब तुम उठो तब जगतानंदनें कह्यौ जो महाराज आप तौ आपके भाव घटिवेके नाहीं तहां चाहो तहां-वांई कहो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पोथी बांधी तब जगतानंदनें साष्टांग दंडवत कीनी और कह्यौ जो महाराज मेरौ घर पावन करियै तुम तो साक्षात पूरन पुरुषोत्तम हौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो तू तो अन्यमार्गीय है हम तेरे घर कैसें पधारेंगे तब जगतानंद सरस्वती स्नान करिके आय ठाडो भयौ और बीनती करकें कह्यौ जो

महाराज मोकों कृपा करिकें नाम दीजिये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कृपा करिकें नाम दीयो तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभू वाके घर पधारे और जगतानंदके घर सेव्य ठाकुरजी हुते सो वे तुलसीमांझ बैठते तहां वे सदा एक लोटी श्रीठाकुरजीके ऊपर डारते हैं तब श्रीठाकुरजीकू श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने तुलसीमेंसों काढिके पंचामृतसों स्नान करवाय न्यारे बैठाये पाछें श्रृंगार करि राज भोग समर्प्यो पाछें जगतानंदकों सेवाकी विधि सिखाये और कह्यौ जो नित्य याही भांतिसों सेवा करियौं तब जगतानंद भले भगवदीय भये सो श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकी भांतिसों करन लागे सो वे जगतानंद श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ४७ ॥

अथ आनंददास विश्वंभरदास दोऊ भाई क्षत्री हुते तिनकी वार्ता ।

सो वे दो भाई अति कृपापात्र भगदीय हैं सो वे दोऊ भाई एकत्र बैठिकें भगवत्वार्ता करते तथा श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी वार्ता अहर्निश करते कबहूं वार्ता कहत छोटे भाईकों निद्रा आय जाती तब श्रीठाकुरजी हुंकारी

देते तब बडे भाई आनन्ददाससों तो भगवत्वार्ताके आवेश में जानते नाहीं जो हुंकारी कोन देत है जब वार्ता कहि चुकवे तब आनन्ददास विश्वंभरदाससों पूछते जो मैंने तोसुं वार्ता कहि सो तू समझ्यौ तब विश्वम्भरदासने कही जो मे तो इहांतांई सुनी पाछें मोका ता निद्रा आई हुता तब आनन्ददासने कही जो तू तो अबतांई हुंकारी देत हुता तब विश्वम्भरदासनें वासों कही जो मे तौ हुंकारी दीनी नाहीं तब आनन्ददासने कही जो श्रीठाकुरजीने हुं कारी दीनी होयगी तब दोऊ आनन्ददास विश्वंभरदास अपने मनमें बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ जो हमारो बडो भाग्य है श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपाते श्रीठाकुरजीने हुंकारी दीनी हमारा कहा सब वार्ता सुनी ताते वे दोऊ भाई आनन्ददास विश्वंभरदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगदीय हैं ताते इनकी वार्ता अब कहांतांई लिखिय ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ४८ ॥

अथ एक ब्राह्मणी हुती तिनकी वार्ता

सो ब्राह्मणीके माथे श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें श्रीबालकृष्णजीकी सेवा पधराई हुती सो वह ब्राह्मणी श्रीबालकृष्णजीकी सेवा करती पारि वह अपने घरमें निपट निकं-

चन हुती ताते श्रीठाकुरजीके आगे माटीको कुंजा भर राखती और रसोईमें माटीके पात्र और घर निपट संकीर्ण इतने हीमें सब रसोई मंदिर आचार हुते और नेत्रनसों थोरी दीसे वृद्ध भई ताते ऐसा सेवा करती सो और वैष्णव देखिके सेवा करतमें सो आपसमें सब चर्चा करन लागे जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने या ब्राह्मणीके माथे कहा जानिके सेवा पधराई है यह तो कछू समझत नाहीं ऐसे सब वैष्णव आपुसमें चर्चा वार्ता करन लागे सो एकदिन श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको कोस ऊपर गांव हुते तहां पधारे हुते पाछे तहां ते फिरे तब तहांते वा ब्राह्मणीके द्वारके आगे होयके निकसे तब साथके वैष्णव हुते तिननें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों वीनती कीनी जो महाराज आपने वा ब्राह्मणीके माथे श्रीबालकृष्णजीकी सेवा पधराई है ताको यह घर है सो याको घर पधारके देखिये याको घर याको आचार कैसो है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप असरण सरण अन्तर-यामी वा ब्राह्मणीके घर पधारे सो ता समें वह ब्राह्मणी रसोई करत हुती रोटी करिकें घीसों चुपरत जाय और श्रीठाकुरजी आप आरोगत जाय परि वाकों तो दीसत कछू नाहीं हाथसों टटोरे कहैं जो रोटी आगें दीसत नाहीं कहा मूस

बिलाई ले जात है ऐसे कहै और रोटी करत जाय और श्रीठाकुरजी आरोगत जाय सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू ठाडे ठाडे देखे पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें वा डोकरीसों कह्यौ जो अरी बाई तेरो बडौ भाग्य है जो तेरी करी रोटी श्रीठाकुरजी आप आरोगत हैं तब वह बाई श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको दंडोतकरि पाछें बोली जो महाराज में नाहीं जानी जो राज पधारे हैं मोकों तौ कछू दीसत नाहीं परि तुम्हारी कही श्रीठाकुरजी मान लेत हैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने वैष्णवनसों कह्यौ जो श्रीठाकुरजी तौ केवल स्नेहके वश है ताते मेरी कानसों श्रीठाकुरजी आरोगत हैं और उनकी भक्ति मान लेत हैं तब वैष्णव मुसिक्यायकें चुप करि रहे पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपने घर पधारे वा बाईके ऊपर बहुत प्रसन्न भये वह बाई श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी ऐसी परम कृपापात्र भगवदीय ही ताते इनकी वार्ताको पार नाहीं सो अब कहां तांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ४९ ॥

अथ एक क्षत्राणी तिनकी वार्ता

सो वह क्षत्राणी आप चरखा कातती सो सूतके पैसा दोय तीन आवते सो ताकी जो सामग्री आवती सो ले

आवती रसोई बालभोग करि श्रीठाकुरजीको भोग समर्पती ऐसे निर्वाह करती सो एक दिन ऐसो विचार कर्‍यौ जो सूतकाते तासो थोरो २ अधिक काते सो इकठोरो करत जाय सो टका दश बारहको भेलौ किलौ सो सूत बेचके टका दस बारह आये सो विनको घृत खांड ले आई सो घर आयकें मेदा छानी पाछें दूसरे दिन सबके लडुआ सिद्ध कीये और मनमें कही जो दिन दस बारहको सामग्री सिद्ध भई है सो दिन दश बारहको निश्चंत भईहों सो तादिन श्रीठाकुरजीको आरोगाई और बाकी सामग्री एक हांडीमें करकें मंदिरमें धरि राखी पाछें श्रीठाकुरजीको राजभोग समर्प्यौ भोग सराय आरती करकें आप महाप्रसाद लेकें चरखा काँतन लागी तब श्रीठाकुरजी आप सिंहासनसे उतरके साम-ग्रीकी हांडी लैके सिंहासन ऊपर आय बैठे सो हांडीमेंसे लडुवा काढिके आप आरोगन लागे तब मंदिरमें हांडी खटखटान लागी तब वा क्षत्राणीने कही जो कहा मूंसा बिलाई होय देखू तो सही कोन है तब वह क्षत्राणी कांतत हुती सो तहांते उठिके देखन गई मंदिरके किवाड खोलकें देखे तो श्रीठाकुरजी सिंहासन उपर हांडी लेकें बैठे हैं और वामेते लडुआ काढि काढिके आरोगत है तब वह क्षत्राणी देखके छाती कूटन लागी और कहन लागी जो यह सामग्री तो तुम्हारेही लिये

दिन दस बारहको करि राखी हुती यह तुमने कहा कीयौ जो आजही आरोगे तब श्रीठाकुरजीने ने कह्यौ जो कहा तु लेखो करिके आजही निवरी तेने आलसके लिये इक ठौरीकर राखी हुती सो कहा नित्य नई होती तब वह क्षत्राणी बोली जो महाराज मेरो अपराध क्षमा करो अबते नई सामग्री नित्य प्रति करिकें समर्पूंगी सो श्रीठाकुरजी याके लिये आरोगे जो दिन दस बारहको निश्चंत होती तो याकों आरत रहती नाहीं और जो नित्यकी नित्य सामग्री करे तौ याकों आरति रहै जो मोकों सामग्री करनी है ताते श्रीठाकुरजीने ऐसें करी ताते श्रीठाकुरजीकी सामग्री दिन वारिते अधिक न करनी और या क्षत्राणीने छाती कूटी जो श्रीठाकुरजी आरोगे ताके लिये कूटी श्रीठाकुरजी तो प्रसन्न होयकें आरोगे वाने छाती याके लिये नाहीं कूटी जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके मार्गकी तौ यह मर्यादा है जो श्रीठाकुरजीके आगे भोग धरियै सो आरोगे उठाय धरियै सो सामग्री हो सो न आरोगे तौ श्रीठाकुरजीनें आचार्यजी महाप्रभूनके मार्गकी मर्यादा छोडी तो कदाचित मोहूकों छोडें याके लिये वा क्षत्राणीने छाती कूटी तब श्रीठाकुरजीनें कही जो तू तौ आजही लेखौ करि निवरी नित्य नई कहा न होती तब याकों निश्चय भयौ जो मार्गकी मर्यादा तौ श्रीठाकुरजीनें

नाहीं छोडी हों दस बारह दिनकों निश्चंत होय बैठती ताके लिये श्रीठाकुरजी आरोगे ताते वह क्षत्राणी ऐसी परम भगवदीय ही तिनकों श्रीठाकुरजी सेवातै एक क्षणहूं स्वास्थ होन देते नाहीं सेवामें सदा आरति रहै सो कियौ वा क्षत्राणीसों श्रीठाकुरजी ऐसे सानुभाव हुते जो चाहियै सों मांगलेते ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही ताते इनकी वार्ताको पार नाहीं सो कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥५०॥

अथ सास गोरजा, बहू समराई दोऊ क्षत्राणी सीहनंदकेवासी ति० वार्ता

सो इनके माथे श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें श्रीदामोदरजीकी सेवा पधराई हुती सो इन सास बहुनते श्रीठाकुरजी बहुत सानुभाव हुते सो एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप थानेश्वर पधारे तब थानेश्वरहीमें रहै परि सीहनंद पधारते जो काहेते थानेश्वर और सीहनंदके बीच सरस्वती नदी है सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू सरस्वती उल्लंघन न करते काहेते जो आप आचार्य है ताते थानेश्वरहीमें रहते सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू थानेश्वर पधारे तब सासनें बहूसों कह्यौ जो में श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनको जातहों तू श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकी भांतिसों करियौ शृंगार करि

रसोई करिकें भोग समर्पियो इतनों बहूसों सास कहिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनको गई तब वह न्हायके सेवा करन लागी जब पाक सिद्ध भयौ तब श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यो तब समयानुसार भोग सरावन गई तब देखे तौ सामग्री सब यथास्थिति ज्योंकि त्यों है तब बहूनें बीनती कीनी जो महाराज मैंतौ जानत कछू नाहीं और सासनें तो मोसों कह्यौ नाहीं और तुम आरोगत नाहीं सो काहेते अबहू कहा करूं ऐसे बहुत बिलबिलायके खेद करन लागी जो मोसों कछू चूक परि होयगी रसोई आछी न भई होयगी तथा पात्र मांजितेमें शुद्ध न भये होंयगे कछू तो भयो होयगो जो श्रीठाकुरजी आरोगत नाहीं पाछें भोग सराय पात्र मांजे आछी भांतिसों धोय पोंछके फेरि रसोई करी दूसरीबार जब पाक सिद्ध भयौ तब श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यों और मनमें कहतजाय जो मेते कछू चूक परि होयगी हों तौ कछू जानत नाही कहा भयौ ताते श्रीठाकुरजी आरोगे न होंयगे अब आछी भांतिसों पात्र मांजिकें रसोई करी है सो अब श्रीठाकुरजी आरोगेंगे सो जब समय भयौ तब दूसरीबेर भोग सरावनगई तब देखेतौ श्रीठाकुरजीके आगे सामग्री यथास्थित है तब फेर बिलबिलावै रोवै और बीनती करे और कहै जो महाराज हों कछू जानत नाहीं सो तुम

क्यों नाहीं आरोगत और अपनें मनमें विचार करती जाय जो मोकों रसोई करनों आवत नाहीं के मेरी देहको कछू दोष है ऐसे विचार करत जाय और भोग सरावतजाय और छातीभर आवै और कहे मेरौ कोन अपराध हौयगौ जो श्रीठाकुरजी आरोगत नाहीं पाछें फेरि जब पात्र आछी भांतिसोंमांजिकें तीसरीवार भोग समर्प्यों समय भयौ तब भोग सरावन गई तब फेरीसामग्री यथास्थिति है तब तो महाखेद भयौ जो अबहू कहा करूं श्रीठाकुरजी भूखे रहेंगे सासनेंतौ मोसों कछु कह्यौ नाहीं ऐसे कहे तब मूर्च्छा खायकें श्रीठाकुरजीके आगे भूमिमें गिरपरी और बहुत दुःख करन लागी श्रमित बहुत भईताते वाको तनक निद्राहु आई सवारेसों जलहू नाहीं लीनों सो कंठ जूदो सूखे अतिव्याकुल ह्वैकै परी तब श्रीठाकुरजीते वाकौ बहुत दुःख सह्यौ न गयौ तब सिंहासनते नीचें उतरिकें श्रीठाकुरजीनें वासों कह्यौ जो तू काहेकों खेद करत है हों तीन्योवेर आरोगोहूं तू कछू संदेह मति करे तब याने कह्यौ जो में केसे जानूं तब श्रीठाकुरजीने कह्यौ जो तू भूखीहै कछू खायले तब कह्यौ जो हूं तो न खाऊँगी जब आपको आरोगत देखूंगी तब लेउंगी तब श्रीदामोदरजीनें कह्यौ परि यहतौ मानेनाहा तब आप जलकी झारी लेकें आए और कह्यौ

अरी तेरौ गरौ सूखो जात है तू तनक जलपान तौ ले तब श्रीठाकुरजीने अपने श्रीहस्तसों वाके मुखमें जल चुवायौ तब कह्यौ जो सवारे तू देखेगी तौ मैं आरोगूंगो तब उठिकें सखडी महाप्रसाद सब गायनको लिवायौ रसोईकी सामग्री सब सिद्ध कररार्खी रात्रिकों उत्साहसों सोयरही पाछें प्रातःकाल उठिकें नित्यकर्म तथा स्नान करि तथा रसोई करि तब पाक सिद्ध भयौ तब श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यौ तब टेरा सरकावन लागी तब श्रीदामोदरजी बोले जो अब तू टेरा काहेको सरकावत है अब तू देखि मैं आरोगतहों और सब सामग्री यथा स्थिति रहेगी तब समराई तहां ठाडीभई और श्रीठाकुरजी भोजन करत देखे तब श्रीठाकुरजी आप भोजन किये पाछें सब सामग्री थारमें ज्योंकी त्यों यथास्थित रही तब श्रीठाकुरजीने कही जो याही भांतिसों तू नित्य जान लीजियौ तब समराईनें कही जा हूं तौ देखूं तबही मानूं ता पाछें नित्य भोग धरे तब श्रीठाकुरजीको भोजन करत देखे तब श्रीठाकुरजीहूं समराईके देखत भोजन करैं जो चाहे सो मांगिलेय पाछें हांसादिक करैं पाछें वाको सब रसको अनुभव करवायौ सो समराई सकल रसको अनुभव करनलागी तब यह बात श्रीदामोदरजीने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें समराईकी सास गोरजासों कहीजो

श्रीठाकुरजी कछू सानुभाव जतावत है तब गोरजातो कछू बोली नाहीं पाछें गोरजा श्रीमहाप्रभूनसों बिदा होयकें सीहनंद अपने घर आई तब दूसरे दिन सासनें सेवाकरि रसोई करके आपने श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यों जब भोग सर्यो तबहुं चौकी उठि जो श्रीठाकुरजी आरोगे नाहीं तब सासने कह्यौ जो सुनि बहू श्रीठाकुरजी तौ लरिकाहैं ताते तोहीसों हिले होयंगे ताते रसोई तु वेगि कर तब बहूने रसोई करि भोग समर्प्यो तब श्रीठाकुरजीनें कह्यौ जो मेंतौ अबही आरोगोहों तब बहूने कही जों हूतौ देखूं तब मानू तब भोग समर्पिकें कह्यौ जो महाराज आरोगो तब समराईके देखत श्रीठाकुरजी आरोगे सो जब सास रसोई करे तब बहूको बुलावे जो थार ले जाउ सो वो थार ले जायके आरोगावे ऐसे नित्य प्रति करै सो यह बात श्रीठाकुरजीनें श्रीमहाप्रभूनसों कही पाछें बहु श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनको थानेश्वर गई तब आयके श्रीआचार्यजी महाप्रभुको दर्शन कीयो ता समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू पाक करत हुते तब समराई रोटी बेलनको बेठी तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनें बहूसों कह्यौ जो तेरी सब बात हमसों श्रीठाकुरजीनें कही है जो हमको समराई भली भांतिसों सुख देत है तब समराई मुसक्याय रही और कह्यौ जो इतनी हू बात

श्रीठाकुरजीके पेटमें नाहिं ठहरी तो कहा करिये पाछें कह्यौ जो महाराज लरिकाकी कहा पूछत हौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू सुनके बहुत प्रसन्न भये और आप श्रीमुखसों कहन लागे जो देखो इनसों कैसो सम्बंध है श्रीठाकुरजीको और कहै जो या बहूके ऊपर बहुत कृपा है और बहू सालन करती सो नीकी भांतिसों करती सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनें कह्यौ जो नित्य सालन क्यों नाहीं करत तब बहू बोली जो लरिकाके मनमें आवै सों करियै तब यह सुनकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भयै याकी सास गोरजा बहुत उत्तम सामग्री करती ताते श्रीठाकुरजीको बहुत प्रिय लागती ताते इन सास बहुनके ऊपर बहुत प्रसन्न रहते ताते इन सास बहूनकों दर्शन देवेकों श्रीमहाप्रभूजी तथा देखिवेके निमित्त प्रतिवर्ष आप थानेश्वर पधारते तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहेते जो कहा करिय सो सरस्वती उल्लंघनी नाहीं नातर इनको सीहनंदमें दर्शन देतौ सो वे सास बहू ऐसी परम कृपापात्र भगवदीय ही ताते इनकी वार्ता कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ वैष्णव ॥ ५१ ॥

अथ कृष्णादासी रुक्मनी बहूजीकी-दासी हुती तिनकी वार्ता ।

सो कृष्णादासी अडेलमें श्रीरुक्मनी बहूजीकी खवासी

करती सो एक समय रुक्मनी बहूजीके गर्भ रह्यौ हौ तब कृष्णादासीनें कह्यौ जो अबके बेटो होयगौ तिनको नाम श्रीगोकुलनाथजी धरूंगी सो गर्भके दिन सम्पूर्ण भये तब रुक्मनीजी बहूके पेटमें विथा भई तब कृष्णादासीनें जायकें जोतीषीसों पूछौ जो अब मुहूर्त केसो है तब वा जोतषीनें दिननीको न कह्यौ तब कृष्णादासी फिरि आयके श्रीरुक्मनी बहूजीके पेटपै हाथ फेर्‍यौ और कह्यौ जो महाराज अब तौ मति पधारौ आजकौ दिन नीको नाहीं तब पेटकी व्याधि सब दूर भई पाछे दिन दोय तीन बीते तब कृष्णादासीने बिचार्‍यो अब फेरि पूछियै जो आज दिन केसो है तब कृष्णादासीनें फेरि जायके पूछौ जो आज दिन केसो है तब वा जोतषीने कह्यो जो आज दिन बहुत नीको है तब कृष्णदासीने आयकें श्रीरुक्मनी बहूजीसों वीनती करके कह्यौ जो महाराज अब पोढिये अब बालक प्रगट होय तौ भलो है तब बहूजी महाराज पोढी तब कृष्णदासीने बहूजी महाराजके पेटपै हाथ फेर्‍यौ औ कह्यौ जो महाराज अब पधारियै तब श्रीगुंसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारे हुते तब पेटमें व्यथा भई और बालकको जन्म भयौ तब ता समय कृष्णादासीने श्रीगोकुलनाथजी नाम धर्‍यौ ता पाछें श्रीगुसाईंजीकौ वधेया पठायौ तब श्रीगुसाईंजी महा-

राज अडेलकों पधारे तब नामकरण कीयो तब श्रीवल्लभ नाम धर्‍यौ पारि कृष्णदासीकी कानिते श्रीगोकुलनाथजी नाम राख्यौ ऐसी कृष्णादासीके ऊपर कृपा थी जो जाके ते दोऊ नाम प्रसिद्ध भये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

पाछें श्रीघनश्यामजीको जन्म भयौ तब नामकरण बिचारण लागे तब श्रीवल्लभजीने कह्यौ जो श्रीगोकुलनाथजी नामधर्‍यौ तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो यह नाम तौ तिहारो है तब दोऊ नाम प्रमाण कायै सो श्रीवल्लभ कुलके विषे सब कोऊ श्रीवल्लभ नाम कहत हैं और सब जगतमें श्रीगोकुलनाथजी प्रसिद्ध भये और जन्मपत्रमें श्रीकृष्ण है सो गोप्य राख्यौ श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो यह नाम गोप्य रहै ताते कृष्णादासी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी ऐसी कृपापात्र भगवदीयही सो इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये प्रसंग ॥२॥ वैष्णव ॥ ५२ ॥

अथ बूलामिश्र पंडित तिनकी वार्ता

सो बूलामिश्र एक कपूर छत्रीके प्रोहित हुते ताकी स्त्रीके संतति न हुती तब वानें दूसरौ विवाह कियौ तब ताहू स्त्रीके संतति न भइ तब बहूने वा क्षत्रीसों कह्यौ जो तुम हरिवंश पुराण सुनो तब तुम्हारे संतति होयगी तब वा क्षत्रीने जायके बूलामिश्रसों प्रार्थना करी जो तुम मोकों हरि-

वंश पुराण सुनावौ तब बूलामिश्रने कह्यौ जो अबतो मोकों अवकाश नाहीं जब अवकाश होयगो तब तुम्हारे घर जायकें सुनाऊंगौ तब वह क्षत्री अपने घर आयौ जब एक महीना बीत्यौ तब एक दिन अचानक बूलामिश्र वा क्षत्रीके घर पधारे तब बूलामिश्रको वा क्षत्रीने बहुत आदर सन्मान कीयौ तब बूलामिश्रने कह्यौ जो तुम दोऊ स्त्रीपुरुष स्नान करिकें आय बैठौ तब दोऊ स्त्रीपुरुष स्नान करिकें आय बैठे तब बूलामिश्रने देह शुद्ध होवेक लीये एक दान करवायौ पाछें हरिवंश पुराणको एक श्लोक अन्तको सुनायौ ॥

सो श्लोक ॥ इदं मया ते हरिकीर्तनं महच्छ्रीकृष्णमाहात्म्य
मपारमद्भुतम् ॥ शृण्वन्पठन्नाशु समाप्नुयात्फलं
यच्चापि लोकेषु सुदुर्लभं महत् ॥ १ ॥

यह हरिवंश पुराणके अन्तको श्लोक सो बूलामिश्रने वा क्षत्रीको सुनायौ और आशीर्वाद दीयौ और मंत्राक्षत पढिकें वा क्षत्रीकी बडी स्त्रीकी गोदमें दीए तब वा क्षत्रीने कह्यौ जो यह मिश्रजी तुमनें कहा कियौ यह तौ स्त्री धर्म हूं नाहीं होत है तब बूलामिश्रनें कह्यौ जो श्रीठाकुरजी सर्व सामर्थ्यवान है जो देनहार होंयंगे तो याहीको पुत्र देयंगे अब तौ मेने याकों अक्षत दीये सो तो दीये तब इतनों कहिकें बूलामिश्र अपने घरकों चलन लागे तब वा स्त्रीनें बहुत

बीनती कीनी जो मोकों सम्पूर्ण हरिवंश पुराण सुनावौ तब बूलामिश्रने कह्यौ जो तोकों श्रीठाकुरजी सम्पूर्ण फल एकही श्लोकमें देयंगे ऐसे कहिकै बूलामिश्र तौ अपने घरको आये पाछें वा बडी स्त्रीको ऋतु आई पाछें गर्भवंत भई तब कितनेक दिनमें वाकें पुत्र भयौ वे बूलामिश्र श्रीमहाप्रभूनके ऐसे भगवदीय हैं तिनके अनुग्रह हते वाके पुत्र भयो हरिवंश पुराणकौ एक श्लोक सुनेते सम्पूर्ण सुनेको फल भयो ताते बूलामिश्र ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ५३ ॥

अथ मीरांबाई के पुरोहित रामदास तिनकी वार्ता ।

सो एक दिन मीरां बाईके श्रीठाकुरजोके आगें रामदा-जी कीर्तन करते हुते सो रामदासजी श्रीआचार्यजी महाप्र-भूनके पद गावत हुते तब मीरांबाई बोली जो दूसरो पद श्रीठाकुरजीको गावो तब रामदासजीने कह्यौ मीरांबाई सो जो अरेदारी रांड यह कोनको पद है नह कहा तेरे खसमको मूंड है जो जा आजते तेरा मूंहडौ कबहूं न देखूंगौ तब सब कुटुंम्बको लेकें रामदासजी उठि चले तब मिरांबाईने बहुतेरो कह्यौ पारि रामदासजी रहे नाहीं पाछें फिरके वाको

मुख न देख्यो ऐसे अपने प्रभूनसों अनुरुक्त हुते सो वा दिनते मीराबाईको मुख न देख्यौ वाकी वृत्ति छोड़ दीनी फेरिवाके गांवके आगे होयकें निकसे नाहीं मीरांबाईने बहुत बुलाए परि वे रामदासजी आये नाहीं तब घर बैठे भेंट पठाई सोई फेरि दीनी और कह्यौ रांड तेरो श्रीआचार्यजी महाप्रभून ऊपर समत्व नाहीं जो हमको तेरी वृत्ति कहा करनी है हमारे तौ श्रीआचार्यजी महाप्रभू सर्वस्व हैं हमतो उनके हैं उन बिना हमारे सर्वस्व त्याग करनों उनके चरणार्बिंदको आश्रय राखनों ऐसी वृत्ति बहु तेरी होयगी वे रामदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांताईं लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ५४ ॥

अथ रामदास चौहान तिनकी वार्ता ।

सो रामदास चौहान श्री गोवर्द्धनकी कंदरामें रहते सो प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीनाथजीद्वार पधारे तब श्रीगोवर्द्धननाथजीको पाट बेठाये तबरामदासजी गोवर्द्धनकी कंदरामेंसू बाहिर आये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने रामदासजी सों कह्यौ जो रामदास श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा सावधनीसों करियौ तब रामदासजीनें वहां एक मंदिर छोटौसों ईंटनको बनवायौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें वा मंदिरमें श्रीनाथ-

जीको पधराये सो पहिले श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगोवर्द्धनपर्वत ऊपर बिराजते सो ब्रजवासी लोगनने एक फूंसकी छति कर राखि हुती ता छतिमें बैठते और कबहूं २ दूध दही ब्रजवासी समर्पते देवदमन यह नाम कहते सो दूध दही माखन सब आरोगते तथा श्रीगोपापालललजी यह नाम कहते सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें श्रीगोवर्द्धन-नाथजीको मंदिरमें पधराये पाछे श्रीनाथजी नाम प्रगट कीयौ तबते सब कोऊ श्रीनाथजी कहन लागे वे रामदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ताको पार नाहीं सो अब कहां तोंई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ५५ ॥

अथ रामानंद पंडित सारस्वतब्राह्मण तिनकी वार्ता ।

सो एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू थानेश्वर पधारे तहां रामानंद पंडितके घर पधारे सो रात्रिको उहां पोढे हुते सो जब पिछली रात्रि भई तब रामानंद पंडितने अपनी स्त्रीसों कह्यौ जो वेगि उठि गोबर और ले चौकाको चाहि-येगो नातरि सबारे ये वैष्णव उठेंगे सो ले जायंगे तब यह बात श्रीआचार्यजी महाप्रभू हाथ पांव धोयवेको उठे हुते तब

अति क्रोधवंत भये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें रामानंद पंडितको बुलायौ तब आपने गडुआमेंते जल लेके वाके हाथमें मेलिकें मंत्र पढिके वा जलको वा ऊपर छिरको और अपने श्रीमुखसों कह्यौ जो में तेरो त्याग कीयौ तेने मेरे सेवकनसों यौं कह्यौ जो तू वेगि उठि गोबर औरले नातर वैष्णव उठेंगे तो लेजायंगे तो तू रसोईको सामान कहांते करेगौ ऐसो कहिकें तहांते उठि चले क्षण एक रहे नाहीं सो थानेश्वरते एक गांव ता ऊपर महीतीर्थ है सो तहां आये फिर वहां आपने स्नान कीयौ सो जब श्रीआचार्यजी महाप्रभू रामानंद पंडितके घरते चलन लागे तब थानेश्वरके वैष्णवनें बहुत बीनती कीनी परि श्रीआचार्यजी महाप्रभू रहे नाहीं और कह्यौ जो में यहां रहिकें जलपान न करूंगौ ता पाछें काहूनें रामानंद पंडित पास नाम पायौ हौ तिनसों श्रीगुसांईजी गंगोज्व कहते तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू थानेश्वर पधारे पाछें रामानंदकी अवस्था बिकल भई तब बाजारमें जो वस्तु देखतो सो खातो कछू मर्यादा नाहीं परि इतनी मर्यादा तो करै जो खाय सो समर्पिके खाय यों कहै जो श्रीगोवर्द्धननाथजी तुम आरोगियों इतनों कहिकें मुखमें मेले सो एक दिन हलवाईकी दुकानपै जलेबीबहुत आछी देखी जलेबी वामेते लेकें कह्यौ जो श्रीनाथजी तुम

आरोगियौ ऐसे कहिकें खाई ता समय श्रीनाथजीनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यो जो आज तो हमने जलेबी बहुत आछी आरोगी है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो कौने समर्पि है तब श्रीनाथजीने कह्यौ जो तुम्हारे सेवक रामानंदने समर्पि है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो महाराज मे तौ वाकौ त्याग कीयौ तुम वाके यहां क्यों आरोगे हौ तब श्रीनाथजीनें कह्यौ जो तुम मोकों काहेको सोंपति हौ हम तुम्हारी कानिते अंगीकार करत हैं तुम हमको जाको सोंपत हौ ताको तुम त्याग करत हो परि हम तुम्हारे सोंपेकों नाहीं छोडत है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू चुपकरि रहै तब यह बात श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने दामोदरदास हरसानीसों कही तब दामोदरदास हरसानीने बीनती कीनी जो महाराज आप याको अंगीकार कब करोगे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें दामोदरदाससों कह्यौ जो यासों अब वैष्णवको अपराध पडेगो तो हम याकों लक्षजन्म पाछें अंगीकार करेंगे श्रीनाथाजीने अंगीकार कीयौ तौहै परि इतनों अंतराय भयौ तातें वैष्णवसों बोलनों सो विचारके बोलनों बिना बिचारें सर्वथा न बोलनों ऐसे वैष्णवको रहनों ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ५६ ॥

अथ विष्णुदास छीपी तिनकी वार्ता

सो विष्णुदास वृद्ध भये तब श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीकी बैठकके द्वारेकी द्वारपालकी करते और कोई पंडित आवतौ तासौं विष्णुदास पूछते जो तुम क्यों आए हो और कहां जात हौ तब उन पंडितननें कह्यौ जो हम श्रीगुसांईजीके पास वाद करन आए हैं तब विष्णुदासनें उन पंडितनसों कह्यौ जो तुम मोसों वाद कर लेउ तब विष्णुदास उन पंडितनसों वाद करकें निरुत्तर करदेते व्याकरण शास्त्र पुराण इतिहास सब शास्त्रनके बचन लेके निरुत्तर कर देते तब वे पंडित अपने मनमें समाधान करिकें पाछें फिर जाते और वे कहते अपने मनमें जो जिनके द्वारपालक ऐसे हैं तो तिनके धनीकी कहा बात होयगी सो श्रीगुसांईजीलों काहू पंडितकों न जान देते द्वारहोते पंडित निरुत्तर होयकें फिर जाते तब एकदिन श्रीगुसांईजीनें कह्यौ जो कोई पंडित अब वाद करनकों नाहीं आवत सो काहेते तब वैष्णवननें कह्यौ जो महाराज उन पंडितकों विष्णुदास निरुत्तर कर देते हैं ताते पंडित अपने मनमें समाधान करिके फिर जाते हैं तब श्रीगुसांईजी श्रीमुखसों कह्यौ जो विष्णुदास तुमको तौ श्रीमहाप्रभूनकी कृपाते ऐसी सामर्थ है जो तुम पंडितनको जीतकें निरुत्तर कर देत हो परि उन

ब्राह्मणोंको अति श्रम होत है ताते अब जोकोई पंडित वाद करनको आवै ताकों हमारे पास आवन दीजो तब उन पंडितनकों जान देते विष्णुदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं उनको ऐसी सामर्थ हुती जो जो पंडितनकों निरुत्तर करि दूषण करते ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

और एक भट्ट हुतौ सो श्रीगुसांईजीसों कहतौ जो तुम्हारे सेवकनको में जिमाऊंगो तब श्रीगुसांईजी चुपकर रहते सो वा श्रीगुसांईजीको सुसर हुतौ श्रीघनश्यामजीको नाना हुतौ सो एक दिन वा भट्टने श्रीगुसांईजी को न्यौत्यो तब श्रीगुसांईजी उनके घर भोजनको पधारे तब तहां विष्णुदास जलपानको गडुआलेकें साथ गये तब श्रीगुसांईजी भोजन करिकें उठे तब श्रीगुसांईजीकों विष्णुदासने शुद्ध आचमन करवायो पाछें श्रीगुसांईजी मंदिरमें पधारे तब विष्णुदासको श्रीगुसांईजीने आज्ञा दीनी जो तुम प्रसाद लेके बेगि आइयौ सो जा थारमें श्रीगुसांईजीने भोजन कीए हुते ता थारमेंते प्रसाद अपनी पातरमें धरिकें थार धोय धर्‍यौ पाछें आप प्रसाद लेवेको बैठे तब भट्टजी और सामग्री लेकें आये तब विष्णुदासनें कह्यौ जो मोकों नाहीं चहियत तब भट्टजीनें कह्यौ जो झूठन काहेको लेतहौ नीकी सामग्री लेउ तब विष्णुदासनें कह्यौ जो मोकों नाहीं चहियत मेरी पातरमें डारोगे तौ मेरी पातर छूय जायगी

तब भट्टजी अति क्रोधवंत भये पाछें उन भट्टजीने श्रीगुसांईजीसों कह्यौ जो तुम्हारे शूद्रनें मोसों ऐसे कह्यो जो मेरी पातरमें मतिडारो और डारोगे तो मेरी पातर छूय जायगी तब श्रीगुसांईजी चुप करिरहै पाछें श्रीगुसांईजी मुसिक्यायके भट्टजीसों कह्यौ जो तुम हमारे सेवकनकों जिमावन कहत हुते सो तुमसों हमारो एक शूद्र न जिमायो गयौ और सेवकनको कैसे जिमाओगे तब भट्टजी मुसक्यायकें चुपकरिरहै सो वे विष्णुदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ताको पार नाहीं सो कहांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ वैष्णव ॥ ५७ ॥

अथ जीवनदासक्षत्रीकपूर सीहनंदकेवासी तिनकी वार्ता

सो एक समय सीहनंदके सब वैष्णव मिलिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनको अडेल आवत हुते सो मार्गमें एक दिन मजल जाय उतरे तहां सब वैष्णव अपने २ चौका देत हुते ता समय मेह चढि आयौ तब वैष्णवननें कह्यौ जो वर्षा आई ऐसो कार्य भयौ तब जीवनदास बोले तुम चिंता मति करो तब जीवनदासने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको नाम लेके मेहको आन दीनी जो तोको श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी

आनि है जो तू बरषे मति तब वह मेह रहगयौ पाछें सब वैष्णवने भोग समर्पि महाप्रसाद लीनौ तहां रात्रिको सोये ता पाछें सब वैष्णव अडेल आये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकौ दर्शन कीयौ पाछें यह बात सबनने श्रीगुसांईजीसों कही जो महाराज एक दिन सब हम वैष्णव पाक करत हुते ता समय मेहचढि आयौ तब जीवनदासने आपकी आनि देके ऐसे कहिकें मेहको बरजो तब यह सुनिकें जीवनदाससों श्रीआ-चार्यजी महाप्रभूननें पूछौ और कह्यौ जो क्योंरे हमारी तेने आनि दीनी और कदाचित वर्षा होती तो तू कहा करतो ? तब जीवनदासने कह्यौ जो महाराज वह कोन है जो आपकी आनि दीये उपरांत बरषे यह इन्द्रकी कहां सामर्थ है तब यह बात जीवनदासकी सुनिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू मुसिक्यायकें चुपकरि रहे तब उन जीवनदासपै श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी ऐसी कृपा हुती उन जीवनदासकों श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके स्वरूपकौ ऐसो ज्ञान हुतौ सो आनि देकें मेह बरजो तिनकी कहा कहिये तब वैष्णवनने कह्यौ ये बडे भगवदीय हैं वे जीवनदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता अब कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ वैष्णव ॥ ५८ ॥

अथ भगवान्दास सारस्वतब्राह्मण ति०

सो उन भगवानदासनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी सेवा नीकी भांतिसों कीनी तब श्रीआचार्यजी आप भगवानदासके ऊपर बहुत प्रसन्न भये तब भगवानदासको श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने आप कृपा करिकें अपनी श्रीपादुकाजीकी सेवा दीनी जो तू इनकी सेवा नीकी भांतिसों करियौ तब भगवानदास श्रीपादुकाजीकी सेवा नीकी भांतिसों ऐसी भांतिसों सेवा करते जो श्रीठाकुरजी इनसों सानुभाव हुते बातें करते सो एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू भगवानदासके घर पधारे सो जा ठौर श्रीआचार्यजी महाप्रभू विराजतहैं ता ठौर नित्य उठिकें सवारें भगवानदास दंडौत करते सो याते वा ठौरपर कोऊ पाव न धरतौ ऐसौ उनकी भावहौ सो वे भगवानदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांतांइ लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ५९ ॥

अथ भगवानदास श्रीनाथजीके भीतरिया तिनकी वार्ता ।

सो एकसमय श्रीनाथजीके बालभोगकी सामाग्री करत भगवानदाससों कछू सामग्री दाझी तब श्रीगुसांईजी भगवान-

दासकों सेवाते भिन्न बैठारे सो भगवानदास गोविंदकुंड ऊपर आय अच्युतदासके पास आय बैठे पाछें श्रीगुसांईजी स्नान करिवेको गोविंदकुंड ऊपर पधारे और भगवानदासतौं पूंछरीकी और अच्युतदासके पास हुते सो भगवानदासने सब समाचार कहे पाछे जब श्रीगुसांईजी गोविंदकुंड स्नान करिकें अच्युतदासको दर्शन देन पधारे तब श्रीगुसांईजीके दर्शन करिके अच्युतदासकी आंखनमेसूं आंसूनको प्रवाह चल्यौ सो देखकें अच्युतदासको श्रीगुसांईजीनें अच्युत दाससों पूछौ जो अच्युतदास तुमको ऐसो दुःख कहा है तब अच्युतदासने श्रीगुसांजीसों कह्यौ जो महाराज श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको तौ श्रीनाथजीने आज्ञा दीनी है जो तुम जीवनको ब्रह्म सम्बन्ध करावो सो साठलाख जीवनको तुमद्वारा अंगीकार करनो है और श्रीआचार्यजी महाप्रभूने तो तुमतो सोंपे है और तुम जीवनको अपराधहीते भरयो है और जीवनकों अंगीकार कैसें होयगो तब श्रीगुसांईजी यह बात सुनिकें आप भगवानदासको हाथ पकरिके श्रीगोवर्द्धन ऊपर लेचढे और श्रीगोवर्धननाथकी सेवा जा रितिसों करते ता रीतिसों सेवा करनकी आज्ञा दीनी और कही जो अबते सावधानीसों सेवा करियौ और सामग्री आछी भांतिसों करियौ तब भगवानदासने

ता समय श्रीगुसांईजीके आगे नयौ पद करिकें गयौ सो पद ॥ राग सारंग "श्रीविट्ठलेशचरण कमल" ॥ सो यह पद गायौ सो सुनिकें श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये पाछें भगवानदास सावधानीसों सेवा करन लागे ताते भगवानदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं सो इनकी वार्ता अब कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६० ॥

अथ अच्युतदास सनाढ्य ब्राह्मण तिनकी वार्ता

सो वे अच्युतदास मानसीगंगाऊपर रहते तहांचक्रतीर्थ है तहां रहते सो नित्यश्रृंगारके समय श्रीनाथके दर्शनको आवते सो दर्शन करिकें अपने स्थलको आवते सो उन अच्युतदासजीनें श्रीनाथजीकी तीन परिक्रमा दंडौती करीहुती तब श्रीगुसांईजी अच्युतदासके ऊपर बहुत प्रसन्न भये औंर श्रीगुसांईजी अपने श्रीमुखसों कहते जो अच्युतदास बडे भगवदीय हैं औंर बडे महापुरुष हैं सो वे अच्युतदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके तथा श्रीगुसांईजीके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांताई लिखिये॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६१ ॥

अथ अच्युतदास गौडब्राह्मण तिनकी वार्ता

सो वे अच्युतदास बडे भगवदीय हैं और श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने इनके माथे श्रीमदनमोहनजीकी सेवा पधराईहुती आपको पाट बैठारेहुते सो अच्युतदास श्रीमदनमोहनजीकी सेवा नीकी भांतिसों करते तब श्रीमदनमोहनजी आप अच्यु तदाससों सानुभाव हुते बातें करते और अच्युतदास ऊपर श्रीठाकुरजी ऐसे कृपा करते और एक दिन अच्युतदास श्रीनाथजीके दर्शनको आवत हुते तब श्रीगोवर्द्धननाथजीकी एक दंडौती परिक्रमा करते ऐसे भगवदीय है और जब श्रीगुसांईजीके पास आवते तब श्रीगुसांईजी अच्युनेदासकों दंडौत न करन देते और कहते जो ऐसे श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनको दंडवत न करन दीजियै पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने लौकिक लीला आसुरव्यामोहलीला दिखाई तब अच्युतदासनें श्रीमदनमोहनजीकौ श्रीआचार्यजो महाप्रभूनके घर पधारे आप श्रीबद्रीनाथजीके दर्शनको उठि गये तब उहां जायके श्रीबद्रीनाथजीके दर्शन करिकें अन्नजलको त्याग करिके अपनी देह छोडी पाछें श्रीमदनमोहनजीको कह्यौ गोपीना-

थजीने श्रीगोवर्द्धननाथजीके पास पधराये वे अच्युतदास श्रीआचार्यजी महानप्रभूनके ऐसे भगवदीय है जिन श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको स्वरूप साक्षात् करिजान्यौ और उनकी श्रीमहाप्रभूनके ऊपर बडी आसक्तिहुती जो परोक्ष भये पाछें अन्नजलको त्याग कीयो तब देह छोडी भक्तिमार्गको स्वरूपके बल विरहासक्ति है सो वे अच्युतदास ऐसे भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६२ ॥

अथ अच्युतदास सारस्वत-ब्राह्मण तिनकी वा०

सो एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके संग अच्युतदासने पृथ्वीपरिक्रमा दीनीहुती सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें अच्युतदासको अपनी पादुकाजीकी सेवा दीनी सो अच्युतदासने अति उत्तमरीतिसों श्रीपादुकाजीकी सेवा कीनी ताते श्रीआचार्यजी महाप्रभू अच्युतदासको नित्य दर्शन देते और जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें संन्यास ग्रहण कीयो सो केवल उनके भावार्थ कीयौ तब एक वैष्णवसों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो एक डौंगी काशीको भाडेकर लाउ तब वह वैष्णव डौंगी भाडे कर लाये ताके ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभू चढिकें बनारस पधारे तहां संन्यास डेढ महीनातांई

राख्यौ तब वह वैष्णव जो काशीमें गयौ हौ सो काशीते कडामें आयौ तब अच्युतदास तथा सब वैष्णवनसों कह्यौ जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूने संन्यास ग्रहण कीयौ फेरि काशी पधारे सो उहां डेढ महीना तांई रहे पाछे आसुरव्यामोहलीला दिखाई तब अच्युतदासनें वा वैष्णवसों कह्यौ जो तोको भ्रम भयौ होयगो तब वा वैष्णवने कह्यौ जो में श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके साथ हुतौ सो काशीते देखिकें अबही हौं आयो हौं तबअच्युतदासने कह्यौ जो ऐसी कबहू न करे जो जीवनको आसुरव्यामोहलीला दिखावत हैं तब अच्युतदासनें मंदिरके किवाड खोलिकें वा वैष्णवको श्रीआ-चार्यजी महाप्रभूनके दर्शन करवाये तब देखे तो श्रीआचार्यजी महाप्रभू बिराजे हैं और पोथी देखत हैं तब वा वैष्णवनें दंडौत कीनी तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनें कह्यौ तुम कछू संदेह मति करौ यह प्रागट्य लौकिकरीतिसों देह धरेको लीला है और सिंहासन बैठकें अलौकिक लीला नित्य है ताते यह लीला अब दश अवतार प्रगट हैं ताते तहां आये हैं ताते संदेह न करनों यह आसुर व्यामोहलीला है सो श्रीगुसांईजी सर्वोत्तममें लिखे है जो “ प्राकृतानुकृत व्याज मोहिता सुरमानुषः ” मनुष्य देह धरे ताकी यह लीला है सो अच्युतदास ऐसे स्वरूप नेष्टाके जिनको श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके स्वरूपकौ

ऐसो दृढ विश्वास है वे अच्युतदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६३ ॥

अथ नारायणदास अम्बालेके वासी हुते तिनकी वार्ता ।

सो वे नारायणदास देशाधिपतीके चाकर हुते तिनको राजद्वारकों काम बहुत हुतो ताते श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनकों आय सकते नाहीं परि अंतःकरनमें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनकी आतुरता बहुत जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनको कब जाऊंगो परि आय सकते नाहीं ताते नारायणदासनें एक चाकर राख्यो ताको महीना रुपैया चारिको कीनों और वासों कह्यो जो तेरो यह काम है जो मोकों छिन २ में सुरत दिवायो करि जो भैयाजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनकों कब चलोगे यह कहिकें सुनाऊ जो हमको श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनकी सुधि रहै सो वह चाकर योंहीं कह्यौं करे तब नारायणदास अपने कार्यमें बैठे तब आगे आयकें ठाडो होयकें एक घडी उपरांत कहै जो भैयाजू श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनकों कब जाउंगे ऐसेही नित्य प्रति कहै और नारायणदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको भेंट बहुत पठावतें नारायणदास ऐसे भगवदीय

हैं सो उनको चित्त सदा श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके चरणारविन्दसे रहतौ ताते श्रीआचार्यजी महाप्रभू बहुतहीं प्रसन्न रहते वे नारायणदास ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांताईं लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥६४॥

अथ नारायणदास भट्ट मथुरामें रहते तिनकी ।

सो नारायणदासको श्रीमदनमोहनजीनें आज्ञा दीनी हुती जो बृन्दावनमें अमुकी ठोर हों सो वहांसों काढिकें मोंकों बाहिर पधराऊ तब नारायणदास जायकें श्रीमदन मोहन जीकों बाहिंर पधरायके पाछे जब श्रीगोपीनाथजीने श्रीमदनमोहनजीकों पाट सिंहासन बैठारे तब कितनेक दिनताईं नारायणदासनें सेवा कीनी तब उनके पाछें उनको कोऊ न हुतौ ताते बंगाली गोडीया सेवा करन लागे श्रीगोपीनाथजीनें पाट बैठारे ताते सब कोऊ दर्शनको जात है वे नारायणदास ऐसे भगवदीय है तिनको श्रीमदनमोहनजीनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको सेवक जानिकें नारायणदासके उपर कृपा कीनी ताते वे नारायणदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहां ताईं लिखिये प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६५ ॥

अथ नारायणदास चौहान ठट्ठेके वासी तिनकी वार्ता

सो नारायणदास ठट्ठेके पादशाहके दीवान कुल्लकुल्लां हुते जो नारायणदास दीवान करे सों होय पाछें कितनेक दिनमें वह पादशाह नारायणदासके ऊपर कोप्यौ तब नारायणदासको पकर्यौ तब बहुत मार्यौ और बन्दीखानेमें दे दीयौ पाछें पचास लाख रुपया वाके माथे दंडको कीयौ सो दिन प्रति पांच हजार भरनौ और जा दिन रुपैया न भरे ता दिन नारायणदासके पांचसौ कौरडा मारने पादसाहने ऐसों बंधान कीयो तब एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक दोऊ भाई ब्राह्मण तिननें अपने मनमें विचार कीयौ जो ठट्ठेमें नारायणदास दीवान है सो हम उनके पास चले हमकों अपनी कन्याको विवाह करनो है ताते जो वे कछू देय तो कन्याको विवाह करै सो ऐसो विचारकें वे दोऊ भाई अपने घरते ठट्ठेको चले सो ठट्ठेमें जायकें पहुंचे तब वहां जायकें सुन्यौ जो नारायणदास तो बंदीखानेमें पर्यौ है तब वह दोऊ भाई अपने मनमें विचार करन लागे जो अब कहा करियै ऐसो विचार इन दोऊ भाईननें कीयौ जो अब यहांसों चलियै तब प्रातःकाल यह बात नारायणदासनें सुनी जो-

वे दोऊ भाई श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक गांवमें आये हैं सो उनने सुनी जो नारायणदासतौ बंदीखानेंमें पर्‌यौ है ताते अब यहांसे प्रातःकाल चलेंगे तब नारायणदासनें उनके पास मनुष्य पठायौ और कहवाय पठाई जो तुम आये सो मेरो बडो भाग्य है मेरे पास तुम प्रातःकाल होयकें दर्शन अपने मोकों देकें जैयौ तब वे दोऊ भाई प्रातःकाल उठि देहकृतिकरि तिलक मुद्रा करि नित्यकर्मसों पहुंचकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको चरणामृत और महाप्रसाद लेकें जहां नारायणदास बंदीखानेमें हुते तहां दोऊ भाई नारायण दासके पास जाय मिले तब नारायणदासने उनको देखिकें परम आनंद भयौ और बहुत प्रसन्न भये तब उन दोऊ भाईननें चरणामृत और महाप्रसाद नारायण दासको दीनों तब नारायणदासने लीनों और कह्यौ जो मोकों बंदीखानेमें वैष्णवनको दर्शन भयौ तब नारायणदासने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके कुशल समाचार पूछे पाछें भगवद्वार्ताके प्रसंग करनलागे इतनेमें नारायणदासके घरतें पांच-हजार रुपैयानकी थैली आई सो द्वारपालने थैलीके उपर मौहरछाप करिकें नारायणदासके पास पठाई तब नारायण दासने वे पांचों थैली उन दोऊ भाईनको सोंपि दीनी और दंडौत कीनी और कह्यौ जो अब तुम बेगि पधारौ और

श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको मेरी दंडोत करियो और तुम अपनी कन्याको विवाह या द्रव्यते भली भातिसों करियों तब वे दोऊ भाई ब्राह्मण नारायणदासतें विदा होयकें चले तब इतनेंमें पादसाह बोल्यौ जो पाचौ थैली नारायणदास वारी लावौ तब दरबान बोल्यौ जो पाचौ थैलीन ऊपर मौहर छाप करि नित्य नारायणदासके पास पठावत है त्योंही पठाई हैं तब पादसाह बोल्यौ जो खजानचीको बुलावो तब मनुष्य जायके खुजानचीको बुलाय लाये तब खजानची सों पूछौ जो क्यौंरे तेरेपास नारायणदासके पासते पांच थैली आई हैं तब खजानचीनें कही जो साहब मेरे पास तौ नाहीं आई तब पादसाहको बहुत क्रोध भयौ और कह्यौ जो नारायणदासकौ बुलावौ तब नारायणदासको बंदीखानेमें ते बुलाये सो बुलायके पात्साहके पास ठाडौ कीयौ तब नारायणदास ते पात्साहनें पूछौ जो नारायणदास आज थैली क्यों नाहीं आई पाछे थोडोसौं गाढो कोरडा करिके कोरडावारो बुलायौ और पात्साहनें पांचसो कोरडाको हुकम दीयौ और पात्साह बोल्यौ जो नारायणदास सांच कहि जो आज थैली क्यों नाहीं आई द्वारपालनें तौ मुहुर छाप करिकें तेरे हवाले कीनी और तेने यह कहा कीयौ तू सांच कहि नाहीं तो कोरडा लागत हैं तब नारायणदास

सलाम करिके बोल्यौ जो हजरत आज मेरे गुरू भाई आये हुते सो वे पांचौ थेली उनको दीनी और मेने अपने मनमें कह्यौ जो में आज मार खाय रहूंगो पारि यह घडी कहां हैं तब पात्साह चुप करि रह्यौ पाछें एक घडी बिचारिकें कह्यौ जो श्याबास तू अपने गुरुके मार्गमें ऐसे सांचौ हैं सो मे तेरे ऊपर बहुत प्रसन्न तब पात्साहनें वाही समय बेडी कटवाइके वाही समय घोडा तथा सिरोपाउ मंगायकें नारायणदासको पहरायौ घोडा दीयौ और निवाज्यौ तब फेरिके अपनौं कुल्लकुल्लांको दीवान राख्यौ जैसो पहिले हुतौ तैसेही कीयौ काम सब सोंप्यौ और नारायणदासके माथे दंड कीयौ हुतौ सो सब माफ करिके सिरो पाव पहरायके कह्यौ जो जा घर होय आउ सो सिरो पाव पहिरकें घोडा ऊपर चढिकें नारायनदास घरको गये सो वे दोऊ भाई वैष्णव गांममेंही हुते सो वे दोऊ भाई वैष्णव सुनिकें नारायणदाससों मिलिवेको आये तब नारायणदास उनसों मिले भेटे और कह्यौ जो मेरे गुरूके सेवक आये तौ में छूटौ तब उन वैष्णवनने कह्यौ जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपाते क्यों न छूटे तब नारायणदासनें ६ हजार मोहरकी एक थेली वैष्णवनके हाथ श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकौ भेट पठाई पाछें वे दोऊ भाई

उहांसो चले सो कितनेक दिनमें श्रीगोकुल आये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोकुलमें हुते सो उन दोऊ भाई वैष्णवनने आयकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको दर्शन कीयौ और नारायणदासकी हजार मोहरनकी थैली आगे राखी तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें नारायणदासके कुशल समाचार पूछे तब उन वैष्णवनने सब समाचार कहै तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपने श्रीमुखसों कहैं जो जाको वैष्णव ऊपर ऐसो दृढ स्नेह हैं ताको कष्ट क्यों रहै पाछें वे वैष्णव ब्राह्मण श्रीआचार्यजी महाप्रभुनते बिदा होयके अपने घरको गये सो बेटीको विवाह आच्छी भांतिसो कीयो और पहले उनको नाम नरिया हुतौ सो सेवक भये पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें नारायणदास नाम धऱ्यौ जाको ऐसो मन होय तापै श्रीठाकुरजी ऐसी कृपा करें प्रभूजीको नाम भक्तवत्सल है सो अपनेको थोरेहीमें कृपा करत हैं सो वे नारायणदास ऐसे कृपापात्र हुते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६६ ॥

अथ एक क्षत्राणि अकेली सीहनन्दमें रहती तिनकी वार्ता

सो वा क्षत्राणिके श्रीनवनीतप्रियाजी बिराजे हैं श्रीठाकुरजी

सानुभाव हैं सो वह बाई अकिंचनसेवा जब कारिपहुंचे तब सूतकाते तामें जो कुछ बढती आवे तासों निर्वाह करे सो घरके द्वारे काछिन तरकारी बेचन आवै तब श्रीठाकुरजी मंदिरमेंतै पुकारके कहैं अरी अमुकी तरकारी बिकने आई है तू ले ऐसे श्रीठाकुरजी कहैं तब वह क्षत्राणी सब भांतिकी तरकारी लेहि सो केतिकतौ कच्ची समर्प्यें केतिक रसोईमें छौंकिकें समर्प्यें और कबहू काछिनको शब्द श्रीठाकुरजी न सुने और बहू काछिन आगे निकसजाय तब वह बाई सामग्री कछूले न सके तब श्रीठाकुरजी वासों बहुत रारिकरें जैसे लौकिक लरिका रारकरे तैसे श्रीठाकुरजी वा क्षत्राणीसों झगरोकरें और एक दिन कछू पकवान बालभोगको होय न आयो तब रोटी घीसों चुपरिकें रात्रिकेलियै ढांकिराखी सो जब रात्रि आधी भई तब श्रीठाकुरजी बोले वा क्षत्राणी बाईको जगाई और कही जो हों भूखोहों तब वा बाईनें कह्यौ जो लालजी पकवानतौ कंछू नाहीं है और रोटी घृतसो चुपरी धरी है तब श्रीठाकुरजी कहै जो भलो रोटी-हीलाउ तब वा बाईने रोटी आगे आनि राखी तब श्रीठाकुर जीनें बाईसो कह्यौ जो तु मोकौं रोटीकी तुतुरीकरकें दे तब वह बाई श्रीठाकुरजीकें हस्तमें देत जाय तब अपने श्रीह-स्तमें लेकें कतारे २ कें आरोगतजाय पाछें जब जलपान

करिकें पोढें परि क्षत्राणीकें मनमें क्षोभ भयो बहुत सो और कह्यौ जो सवारे लायके पकवान कर धरोंगी जो रात्रिकों श्रीठाकुरजीने फीकी अकेली रोटी आरोगी पाछें दुसरे दिन पकवान करिधरयौ तब रात्रिकौ श्रीठाकुरजीनें मांग्यौ तब पकवानलेकें आगें धरयौ तब श्रीठाकुरजी आरोगे तब कह्यौ जो अमुकी तेने पकवान तौ धरयौ परिमोकों पकवान बीच रोटीकी तुतरी अति अद्भुतस्वादलगी तब वा क्षत्राणीने कह्यौ जो महाराज में कहाकरूं मेरे कोई कमावन वारौतौ है नाहीं मैं तों अकेलीहों मोतेतो कबहूं कछू होय आवत नाहीं तब श्रीठाकुरजीनें वा क्षत्राणीसों कहौ जो तू नित्य पकवान काहेको करत है तू मोकों रोटी चुपरिकें धरिराख्योकरि मोको तेरी रोटी बहुत रुचित है ताते तू संकोच मतिकरै हमकों तौ तेरी रोटीचुपरी बहुत स्वाद लागत है पाछें वह रोटी करि राखती सो श्रीठाकुरजी आरोगते वह क्षत्राणी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी ऐसी कृपापात्र भगवदीयही ताते इनकी वार्ताको पार नाहीं सो अब कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६७ ॥

अथ दामोदरदास कायस्थ सेरगढके वासी तिनकी वार्ता

सो तिनको सेव्य ठाकुर श्रीकपूररायजीसो बहुत गौरस्व-

रूप हुतौ तिनके पास श्रीनवनीतप्रियाजी बैठिते सो एक समय दामोदरदासकी स्त्री वीरबाई ताके गर्भ रह्यौ पाछें प्रसूत भई सो पुत्रजन्म भयौ सो घरकी बहू बेटी सब प्रसूतके कामकाज करन लागी सो श्रीठाकुरजीकी सेवामें विलम्ब भयौ वीरबाई प्रसूतकमेंते बहुत कहै जो कोऊ सेवामें न्हाय श्रीठाकुरजीकी सेवामें अबेर होत है पारि कोई नाहीं न्हाय तब श्रीठाकुरजीनें वीरबाई सों कह्यो जो तू स्नान करिके सेवा क्यों नाहीं करत है तब वीरबाई प्रसूतकमें ते उठिके श्रीठाकुरजीसों कह्यो जो महाराज मेरी तो यह व्यवस्था है मोकों तो सेवामें आवनों नाहीं प्रसूतिकामेंहू अपरस छूइ जायगो तब श्रीठाकुरजी महाराज वीर बाईसो कह्यौ जो मोकों तौ सेवामें विलम्ब होय है मोको इतनी अबार भईहै और कोऊ न्हात नाहीं ताते तूही न्हाउ तब वह वीरबाई श्रीठाकुरजीके आग्रहते उठिके प्रसूत काममेंते न्हायके कछू देकें श्रीठाकुरजीकी सेवा करिकें पाछें भोग समर्प्यो पाछें समयानुसार भोग सरायकें अनोसर करिकें आय भोजन करिकें खाटमें सोय रही श्रीठाकुरजीकी आज्ञासों सेवा कीनी सो ऐसें चालीस दिनतांई नित्य करती तब श्रीठाकुरजीनें कह्यो जो तेनें मेरी आज्ञा हू मानी और वेदमार्गकी रीति हू राखी ताते श्रीठाकुरजी बहुत प्रसन्न भये तब चालीस दिन बीते तब शुद्ध स्नान करिकें

सेवा करन लागी पहले पत्र वस्त्र सब अपरस दूरकीने और दूसरे सब नये मँगवाये पाछें भलीभांतिसों सेवा करन लागी ताते वह वीरबाई श्री आचार्यजी महाप्रभूनकी ऐसी कृपापात्र भगवद्वदीय ही ताते इनकी वार्ता अब कहांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६८ ॥

अथ स्त्री पुरुष दोउ क्षत्रीहुते तिनकी वार्ता

सो वे स्त्रीपुरुष दोऊजने सीहनंदमें आय रहै सो वह घर निपट छोटो हुतो तते श्रीठाकुरजी ता समय बैठते सो आधी कोठरीमें तो रसोई करते और आधीमें रहते और सैयाको ठौर न हुती ताते एक बांसको मेडा कर राख्यो हुतो ताके ऊपर श्रीठाकुरजी पोढते आप स्त्रीपुरुष दोऊ जने रात्रकों आंगनमें सोय रहते ऐसे करत तब तब चातुर मासके दिन आये तब मेह बरषतो तोऊ वे आंगनमें सोय रहते परिभीतर न सोवते तब श्रीठाकुरजी भीतरसों बोलते जो अरे अमुकीहो तुम भीजत क्योंहो भीतर क्यों नाहीं सोवतहो बाहीर काहेको पोढे भीजतहो ताते तुम भीतर आवो और हमतो ऊंचे मेडापर हैं तुमनीचे क्यों नाहीं सोवतहो तब वा क्षत्राणीनें कह्यो जो महाराज तुमतो ऊंचा मेडा ऊपर पौढतहो में नीचे कैसें सोऊं तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होयके कहै जो कछू बाधक नाहीं तुम

कछू संकोच मति करौ हम तुम ते प्रसन्न होयकें कहत है ताते तुम भीतर खुशीसों सोय रहौ पाछें तब वे दोऊ जने भीतर सोवन लागे परि ऐसी भांतिसों सोवते मति कहूं स्वासवाजै ऐसे सावधानीसों सो वे स्त्रीपुरुष श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीयहै ताते इनकी वर्ता कहांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६९ ॥

अथ सुतार कारीगर अडेलमें रहते तिं०

सो उन सूतार ऊपर श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत कृपा करते वा सूतारके ऐसौ नेम हुतौ जो श्रीआचार्यजी महान-प्रभूनके दर्शनविना एक दिन न रहतौ ताते वह सूतार सब घरको कामकाज छोडिकेंनित्य श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनको आवतौ तब घरके मनुष्य दुःख बहुत पावते ताके लियै श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप वा सूतारके घर पधारते वासों श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत वार्ता करते और श्रीआ-चार्यजी महाप्रभूकी माता इलंमागारूजी सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी माता खीजती और कहै जो तुम ऐसे अनुचित क्यौं करत हौ ऐसे उचित नाहीं ऐसे करिकें इलंमागारूजी बहुत रिस करतीपरि श्रीआचार्यजी महाप्रभू चौथे पांचवें दिन तौ पधारते ऐसी कृपा श्रीआचार्यजी महाप्रभू वा सूतारके ऊपर

करते सो वह सुतार श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको ऐसे कृपापात्र भगवदीय हो ताते इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ७० ॥

अथ एक क्षत्री हुते ताकी वार्ता

सो वा क्षत्रीसों अन्य मार्गीयको स्नेह हुतो सो एक दिन वह क्षत्री अन्यमार्गीयके घर गयो तब वा क्षत्रीसों कह्यो जो तुम आज यहांही पाक करियों तब वाके आग्रहते वा क्षत्री वैष्णवनें पाक वहांहो कीयो तब पाक करिकें वा अन्यमार्गीय ठाकुरके आगें श्रीनाथजीको नाम लेकें भोग समर्प्यो पाछें समयानुसार भोग सराय वाको प्रसाद दीयो पाछें आपने लियो पाछें उहांही विश्राम कीयो सो निद्रा वसभये तब वा अन्यमार्गीयके सेव्य स्वरूपपनें स्वप्नमें कह्यो जो आजतो हम भूखे रहै तब वा अन्यमार्गीनें कह्यो जो तुमकों तो वा वैष्णवनें पाक भोग समर्प्यो हो और तुम भूखे कैसे रहिगये तब उनके सेव्य श्रीठाकुरजीसे कह्यो जो वह तो श्रीनाथ-जी आप आरोगे है हमको तो श्रीनाथजीने उहांते दूरकीयो तब वह अन्यमार्गीयको मित्रसोयो हो ताको जगायो तब सब समाचार कहे तब वा क्षत्रीनें कह्यो जों में तोसो केती-कवार कह्यो जो तू श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको सेवक होय

सो याहीके ि ै हमारे प्रभूजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको कृपाते सेवकके ह.,को आरोगत है पीछे वह अन्यमार्गीय सब कुटुंब सहित श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी शरण आये सब समेत सेवक भयौ पाछें वाके स्वरूपको श्रीआचार्यजी महाप्रभुननें पंचामृतसो स्नान करवायौ पाछें पाट बैठारे तब पाछे भोग स. ों समयानुसार भोग सरायके सब वैष्णवको बुलाय महाप्रसाद लिवायौ पाछें वह अन्यमार्गीय श्रीठाकुर-जीकी सेवा भली भांतिसों करन लग्यौ पाछें वह क्षत्री भलौ वैष्णव भगवदीय भ ौ वा क्षत्री वैष्णवके संगते भलौ भगव-दीय भयौ ताते संग करनों तौ वैष्णवको करनौ भगवदीयको करनो वह क्षत्री वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको ऐसौ कृपापात्र भगवदीय हौ ताते इनकी वार्ता कहांताई लि-खिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ७१ ॥

लघुपुरुषोत्तमदास क्षत्री ति० वार्ता

सो वे लघुपुरुषोत्तमदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको तथा श्रीनाथजीको एक सार जानते श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको स्वरूप साक्षात् पुरुषोत्तम करि जानते लघु पुरुषोत्तमदासकी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऊपर बड़ी आसक्ति हुती ताते श्रीमहाप्रभूजी लघुपुरुषोत्तमदासके ऊपर बहुत प्रसन्न रहते

लघुपुरुषोत्तमदास दूसरो स्वरूप जानते नाहीं श्रीठाकुरजीको तथा श्रीमहाप्रभूजीको एक जानते वे लघुपुरुषोत्तमदास ऐसे कृपापात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ७२ ॥

अथ कविराजभाट तिनकी वार्ता

सो वे कविराजभाट ब्राह्मण हुते सो तीन भाई हुते सो तीनों भाई श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं उनको समर्पण करवायौ पाछें श्रीनाथजी सन्निधान बहुत कवित्त पढे नये २ कवित्त करिकें श्रीनाथजीके सन्निधान कवित्त सुनावते पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके कवित्त बहुत प्रसन्न कीये ताते श्रीआचार्यजी महाप्रभू कविराज भाटके ऊपर बहुत प्रसन्न रहते सो वे कविराजभाट श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता अब कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ७३ ॥

गोपाल्दास ठोराके वासी ति० वार्ता

सो गोपालदासके कीये छंद बहुत हैं सो गोपालदासकी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऊपर बहुत आसक्ति हुती सो

एक समय गोप॰ ॰स अडेल आय सो दूसरे दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको जन्मोत्सव हुतो सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू मार्कंडेय पूजाको बैठे हुते ता समय गोपालदासने एक नयौ छन्द करिके गायौ ॥ सोपद ॥ रागबिलावल ॥ माधौमास भ॰ बैसाख श्रीवल्लभहारि जन्म लियौ ॥ यह सुनिकें श्रीआ॰ ॰र्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये पाछें गोपालदासनें बहुत छन्द कीये सो वे गोपालदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांतांई लि॰ ॰ ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ७४ ॥

जनार्दनदास चौपडा क्षत्री ति॰ वार्ता ।

एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीनाथजीद्वार पधारे हुते पाछें श्रीगोकुल आये तब जनादनदासनें श्रीमहाप्रभूको दर्शन कीयौ तब कह्यौ जो ये साक्षात् पूरण पुरुषोत्तम हैं ईश्वर हैं तब जनार्दनदासनें बीनती कीनी जो महाराज मोकों शरण लीजियै तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने जनार्दनदासको आज्ञा दीनी जो स्नान करकें आऊ तब जनार्दनदास स्नान करिकें आयौ और दंडवत कीनी और बीनती कीनी जो महाराज मोकों नाम समर्पण करवाईयौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें श्रीनाथजीके सन्निधान

जनार्दनदासको समर्पण करवायौ पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपाते जनार्दनदास भलौ वैष्णव भयौ सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू जनार्दनदासके ऊपर बहुत कृपा करते वे जानार्दनदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय है सो इनकी वार्ता कहांताई लिखियै ॥ प्र० ॥ १ ॥ वै० ॥ ७५ ॥

गडुस्वामी सनाढय ब्राह्मण ति० वार्ता

सो वे गडुस्वामी आप स्वामी कहावते सो एक समय आचार्यजी महाप्रभू वृन्दावनमें पधारे हुते तब गडुस्वामीको आज्ञा भई श्रीठाकुरजीने कृपा करकें रात्रिको स्वप्नमें जनायौ जो सवारे श्रीआचार्यजी महाप्रभू इहां पधारेंगे सो तू इनकी शरण जैयौ तू सेवक हूजियो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप सवारे पधारे तब गडुस्वामी स्नान करिकें जहां श्रीआचार्यजी पधारे हुते वहां गये तब गडुस्वामीनें दंडौत कीनी और बीनती करिकें यह कह्यौ जो महाराज मोकों शरण लीजिये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू मुसिक्यायकें कहै जो तुमतौ आप स्वामी हौ तुमको सेवक कैसे करिये तब गडुस्वामीनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों बीनती कीनी जो महाराज मोको भगवद् आज्ञा भई है जो तू श्रीआचार्यजी

महाप्रभूनकी शरण जैयौ ताते महाराज मोकों शरण लिजियै तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें गडुस्वामीको नाम दीयौ पाछें निवेदन करवायौ ता पाछें जो गडुस्वामीनें जो सेवक कीये हुते तिन सबनको श्रीआचार्यजी महाप्रभून पास नाम दिवायौ पाछें वे गडुस्वामी बडे भगवदीय भय श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप गडुस्वामीके ऊपर बहुत प्रसन्न रहते सो वे गडुस्वामी ऐसे भगवदीय है ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥७६॥

अथ कन्हैयासाल क्षत्री तिनकी वार्ता

सो उन कन्हैयासाल क्षत्रीके ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न रहते बडी कृपा करते श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें आप कृपा करिकें अपने ग्रन्थ कन्हैया सालको पढाये सोइ ग्रन्थ कन्हैयासालके पासते श्रीगुसांईजीने पढे सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपा ते सब स्फुर्द रूपभये सो वे कन्हैयासाल क्षत्री श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परमकृपापात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ७७ ॥

अथ नरहरदासगोडिया तिनकी वार्ता

सो एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें नरहर दासके घर श्रीमदनमोहनजी पाटबैठारेहुते सो श्रीमदनमोहनजीकी

सेवा नरहरदासनें नीकी भांतिसों कीनी पाछें शरीर जब परचौ तब सेवा न होय आई तब नरहरदासनें श्रीठाकुरजी श्रीगुसांईजीके घरपधराय सो श्रीगुसांईजी श्रीरघुनाथजीके पधरायै सो श्रीगोकुलचंद्रमाजीके पास जुदे बैठते हैं न्यारे सिंघासन ऊपर बिराजते सो श्रीगुसांईजी नरहर दासके ऊपर बहुत प्रसन्न भये वे ऐसे भगवदीय है और नरहरदासनें अपनें मनमें विचारीजो श्रीठाकुरजी कबहू न सुख पावेंगे श्रीगुसांईजीके घर सुखपावेंगे सो वे नरहरदास श्रीगुसांईजीके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय है सो ताते इनकी वार्ता कहां-तांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ७८ ॥

अब बादरायणदास तिनकी वार्ता

सो बादरायणदास और उनकी स्त्री मोरबीमें रहते सो बादरायणदासको पहिलोनाम बादा हुतौ सो एक समय आछे भट्ट द्वारका श्रीरणछोडजीके दर्शनको जातहुते सो मोरबीमें रात्रिको वसे सो बादरायणदासनें उनको राखे तब बादरायणदासनें उन पास नाम पायौ पाछे आछे भट्टकेपास श्रीभागवत श्रवण कीयौ तब श्रीभागवत सम्पूर्ण करिकें बाद-रायणदासते विदाहोयकें पाछें भट्ट द्वारिका श्रीरणछोडजीके दरशनको गये तब कितनेक दिन पाछें श्रीआचार्यजी महा-प्रभू आप द्वारिका श्रीरणछोडजीकें दरशनको पधारे हुते तब

मोरबीमें उतरे सो बादरायणदास और उनकी स्त्री दोऊ जने-
नें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास फेरिके नाम पायौ पाछें
समर्पण करवायौ पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभू मोरबीमें दिन द्वै
रहै तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभू आप श्रीरणछोडजीके दर्श-
नको पधारे तब बादरायणदास और उनकी स्त्री श्रीआचा-
र्यजी महाप्रभूनके संग गये तब दोऊ स्त्री पुरुष श्रीआचार्यजी
महाप्रभूनकी सेवामें रहै सो उन दोऊननें ऐसी सेवा कीनी
जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू उनके ऊपर बहुत प्रसन्न भये तब
याको नाम पहले बाद हुतौ सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें
याको नाम बादरायणदास धर्यौ ता पाछें श्रीआचार्यजी
महाप्रभू द्वारिकासों चले तब ये दोऊ जनें श्रीआचार्यजी
महाप्रभूनके साथ गये सो मोरबीलों साथ आये पाछें श्रीआचा-
र्यजी महाप्रभूनते आज्ञा मांगकें मोरबीमें रहै पाछें श्रीआचार्यजी
महाप्रभू आप श्रीगोकुल पधारे वे बादरायणदास श्रीआचार्यजी
महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीयहै ताते इनकी वार्ता
कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ७९ ॥

सद्दूपांडेमानिकचंदपांडे इनकी स्त्री तथा नरोबेटी आन्योरमें रहते ति० वा०

सो जब श्रीआचार्यजी महाप्रभू पृथ्वीपरिक्रमा करत
झारखंडमें पधारे तब श्रीनाथजीने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों

कह्यौ जो तुम मेरी सेवाको चलावौ ब्रजमें श्रीगोवर्द्धन पर्वत है तहां हम तीन दमन है (देवदमन, नागदमन, इन्द्रदमन,) तिनके मध्यमें हम देवदमन हैं सो देवदमन मेरो नाम है सद्दूपांडेको बडोभाई मानकचंदपांडे है तहां हम प्रगट भये है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू परिक्रमा झारखंडमें राखिकें ब्रजको पाउधारे सो सेवक हूं पांचसात साथ है दामोदरदास हरसानी कृष्णदासमेघन रामदासजी माधोदास प्रभृत इत्यादिक श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक सब आन्यौरमें आये सो मध्याह्न समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप सद्दूपांडेके घर पावधारे सो एक बडो चौतरा सद्दूपांडेके घरके द्वारें हुतौ ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभू विराजे तब सद्दूपांडेनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यौ जो स्वामी कछू खाऊगे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो हम तौ कछू न खायंगे तब कृष्णदास मेघनने कह्यौ जो येतो अपने सेवकके हाथको लेत है विना सेवक तो मैं काहूके हाथको लेत नाहीं इतनेमें श्रीगोवर्द्धन पर्वतते श्रीनाथजी पुकारे जो नरो मेरो दूध लाउ तब नरोने कह्यौ जो महाराज आज तौ हमारे पाउन आये हैं वाते दूध नाहीं तब श्रीनाथजीने कही जो तेरे पाउने आये हैं सों तो भली भई हम कहा करैं पारि मेरौ दूध तौ लाउ तब नरो बोली जो वारीलाल लाई तब नरौ कटोरा

भरि ले गई श्रीनाथजीको प्यायौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें दामोदरदाससौ पूछौ जो दमलातें कछू सुन्यौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों दामोदरदासनें कह्यौ जो महाराज यह शब्द और झारखंडको शब्द एक मिलते है सो ऐसो जान्यौ परत है जो यहांई प्रगटे हैं सवारे चलेंगे तब इतनेमें नरो दूध प्यायकें आई तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें नरोसौ पूछौ जो कहां गई हुती और कहा लेगई हुती तब नरो बोली जो राज देवदमनको दूध प्याय आयी हों तब नरोपे माँग्यौ जो यामें दूध है तब नरोने कह्यौ जो रंचक है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनें कह्यौ जो यामेंते बच्यौ है सो हमको दें तब नरौ बोली जो महाराज घरमें बहुत दूध है तब सद्दूपांडेने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों बीनती कीनी जो महाराज हमहारे आपजीते अब हमको नाम दीजियै तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके मानिकचन्द तथा सद्दूपांडे तथा इनकां स्त्री तथा नरो ये सब सेवक भये उनके ऊपर आपने हाथ फेरौ और नाम दीयौ ता पाछें वह दूध लीयौ पाछें उनकेहू घरकौ दूध दही अंगीकार करचौ सो वे भले भगवदीय हैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने सद्दूपांडेसों पूछौ जो कहौ यहां ऊपर देवदमन प्रगट भये हैं

सो कोन भांतिसो प्रगट भये है तिनको प्रागट्य तुम हमसों कहौ सो श्रीआचार्यजी तो साक्षात् ईश्वर हैं आपही करत हैं और आपही पूछत हैं सो काहेने जो आप जीवके ऊपर कृपा करिवेके लीये तब सद्दूपांडेने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों कह्यौ जो महाराज एक हमारे गांमकौ ग्वाल हुतौ सो सब गांमकी गायनकौ चरावतौ सो सब प्रकार सद्दूपांडेनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगें कह्यौ सो सब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने सुन्यौ सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू तौ आप पूरण पुरुषोत्तम हैं आपही करत हैं सो वे सद्दूपांडे तथा मानिकचंद पांडे और सब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं जिनके पासते श्रीआचार्यजी महाप्रभू तथा श्रीनाथजी जो चाहिये जो सो मांगि लेते और आप जिनके घर पधारते ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

और एक दिन श्रीनाथजी इनके घर दूध पीवेको सोनेको कटोरा ले आये तब श्रीनाथजीनें नरोसो कह्यौ जो दूधलाउ तब नरोतौ वा कटोरामें दूध डारत जाय और श्रीनाथजी आप आरोगत जाय सो दूध पीके श्रीनाथजी आप तौ पधारे और कटोरा वहांही भूलि आये तब सवारे भये पाछें मंगलआरतीके समय भीतरियानें देखो तौ मंदिरमें कटोरा नाहीं तब इतनेमें नरो कटोरा ले आई और

कह्यो जो यह कटोरा लेउ रात्रिको लरिका भूलि आयौ है तब सबजने बहुत प्रसन्न भये वह नरो ऐसी भगवदीय है ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

और एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों श्रीनाथजीने कह्यौ जो मोकों गाय मंगाय देउ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने दामोदरदास हरसानी सों कह्या जो श्रीनाथजीने गायनके लिये आज्ञा दीनीहै सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें अपने हस्तको छल्ला सुवर्णको दीनौ और दामोदरदास हरसानीसों कह्यौ याके दामनकी गाय ले आवो तब दामोदरदासने वह छल्लासद्दूपांडेको दीनों और कह्यौ जो याको वेचिकें याके दामनकी गाय ले देउ श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने गाय मँगाई है तब सदूपांडेने कह्यौ जो श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप गायनको कहा करेंगे तब दामोदरदासने कहौ जो श्रीनाथजीने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों गाय मँगाई है ताके लिये उनने कही है तब सद्दूपांडेने कही जो मेरे यहां गाय है सोकोनकीहै वहतो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी है जोचाहियै सोलीजिये तब दामोदरदासनेकही जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी ऐसी ही आज्ञा है ताते याको बेचिके गाय ले देउ तब सद्दूपांडेनें वह छल्ला बेचिके ताकी गाय दौ ले दीनी सो दोऊ गाय श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें श्रीनाथजीको समर्पि पाछें

दस गाय सद्दूपांडेनें श्रीनाथजीकी भेटकीनी पाछें सब वैष्णवनकों खबर भई जो श्रीनाथजीनें गायके लिये श्रीआचार्यजी महप्रभूनसों आज्ञाकरी है सो वैष्णवननें गाय पठाई काहूनेदोय काहूने चारि काहूनेंदश पठाई ऐसेकरत दोयसेके आसरे गायभेलीभई सो श्रीनाथजीकों गाय बहुत प्रिय हैं तबते श्रीनाथजीको नाम गोपाल श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें धऱ्यो है तब श्रीगुसांईजीनें गोपालनामते गोपालपुर गांव बसायौ ताहीते सूरदासजीनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके प्रगट-गोपाल नामकीये है प्रथम गाय सुरगायो सोवे सद्दूपांडे तथा नरौ सबकोउ श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकें ऐसे कृपापात्र भगवदीय है सो इनकी वार्ताको पार नाहीं ताते इनकी वार्ता अब कहां ताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥ वैष्णव ॥ ८० ॥

अथ नरहरदास संन्यासी तिनकी वार्ता

सोएक बेनाकोठारीहुतो ताने प्रथम नरहरदास संन्यासीकेपास नामपायौ हुतौ सोएकसमय श्रीआचार्यजी महाप्रभून तबद्वारिका पधारेहुते तब नरहरदास संन्यासी बेनाकोठारी श्रीआचार्यजी महाप्रभूके साथहुते सो द्वारिकागये तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप नरहरदास संन्यासीकेउपर बहुत

प्रसन्न भये तब नहरदास संन्यासीनें बीनतीकीनी जो महाराज मेरे ऊपर कृपाकरियै तौमें प्रार्थना करतहों तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू मुसिक्यायके चुपकारि रहै पाछें कहैं जो कहा प्रार्थना करत है तब नरहरदास संन्यासीनें कह्यौ जो महाराज वेना कोठारीको शरणलीजियै तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कृपाकरिकें नामदीयौ समर्पणकरवायौ पाछ वे नरहरदास संन्यासीके ऊपर बहुत प्रसन्न भये सो वे नरहरदास संन्यासी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ वै० ८१ ॥

अथ गोपालदास जटाधारी श्रीनाथजीकी खवासी करत हुते तिनकी वार्ता

सो श्रीनाथजी उनसों सानुभाव. हुते और गरमीके दिनमें श्रीनाथजीको भोग आवतौ तब गोपालदास आप नेत्र मूंदके पंखाकरते तब रात्रिको श्रीनाथजी जगमोहनमें पोढते तहां गोपालदास ठाडे होयकें आंखमूंदिके पंख।करते चारपहरठाडेरहते परिदेह आलस कछू बाधा न करतौ रात्रिकेविषै श्रीठाकुरजीके श्रीस्वामीजीके वचन सुनतौ तब आप कहते जो गोपालदास आंखखोलदेउ तेरौ परदाके सो तब गोपालदास कहते जो महाराज मोको श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी

आज्ञा नाहीं तातेमें क्यों कर खोलूं तब कबहूं श्रीनाथजी अपने श्रीहस्तसों गोपालदासके मुखमें मेलते ऐसी कृपा केरते तब ऐसे करत कितनेक दिन बीते तब एक दिन गोपालदासने बीनती करिकें कही जो महाराज मोकौं पृथ्वी परिक्रमा करिवेकी आज्ञा दीजियै मेरौ मनोरथ पृथ्वीपरिक्रमा करिवेको है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कहौ जो अवश्य करियै पाछें गोपालदास आज्ञा मांगिकें पृथ्वीपरिक्रमाको गयै तब और वैष्णवननें कह्यौ जो महाराज ऐसे कृपापात्रको ऐसौ मन क्यों कर होय तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो यह गयौ तो है परि जाय सकैगौ नाहीं मजल दोय चारि जायगौ तब याको बिरह होयगौ ता बिरहकरिकें याकी देह छूटेगी तब सब वैष्णवननें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों बीनती कीनी जो महराज इनकी देह या भांति क्यों पडे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो महदअपराध इन श्रीठाकुरजीसों बिगाडौ ताको नाम महदअपराध कहियै इनसों एक महद अपराध पड्यो है तासों इनकी यहगति भई तब सब वैष्णवननें पूछो जो महाराज इनकी देह या भांतिसो पडेतौ सही परि महदअपराधकाहेसों कहियुत है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कही जो यह गोपालदास पहिलें श्रीनाथजीकें

बागकी रखवारी करतौ सो एक श्रीठाकुरजीको सेवक ब्राह्मणको लरिका हुतौ सो रात्रिकों वा बागमेंते फूल चुरायकें लेजातौ सो एक दिन गोपालदासनें वाको पकर्‍यो सो वह भाज्यो सो वह अपने मंदिरमें दुबक्यौ सो गोपालदासनें जायकें वाके मुक्कीकी मारी सो बात अब श्रीठाकुरजीको वह बात सुधि आई जो याकों महदअपराध पर्‍यौ है ताते पृथ्वीपरिक्रमाकी इच्छा भईहै सो गोपालदास पांच-चारि मजल गयौ पाछ बिरह भयौ सो बिरहकरिकें गोपालदासनें देह छोडी तब यह बात श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें सुनी तब अपनें श्रीमुखते कहैं जोगोपालदासके परलोकमें तौ हानि नाहीं जो यह श्रीनाथजीके चरणन पास पहुंचौ ताते भगवदीयको बिगाड करेतौ याभांतिसों होय भगवदीयके बिगाडे ते गोपालदासकी यह गति भई वे गोपालदास श्री-आचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदींयहै ताते इनकी वार्ता अब कांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ८२ ॥

अथ कृष्णदास ब्राह्मण तिनकी वार्ता

सो वह कृष्णदास वा गाममें रहते परि अकिंचन रहते सो एक समय वैष्णव दस पन्द्रह मिलकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको दर्शनको अडेलकों जातहुते सो जा गांवमें कृष्णदास रहते ता गांवमें आये सो कृष्णदासके घर आये तब

कृष्णदासतो घर हुते नाहीं कछू कार्यार्थके लियै कोस तीन ऊपर गये हुते और कृष्णदासकी स्त्री घर हुती तब वा स्त्रीनें उन वैष्णवनकौ साष्टांग दंडवत कीनी श्रीकृष्णस्मरण कहि बहुत आदर सनमान करिकें अपने घरमें बैठारे पाछें मनमें बिचारें जो अब कहा करियै तब सुधिआई जोवह बनिया नित्य टोक्यो करतहै जो तू मोसों मिलि तू मांगेगी सो आज वासों सीधोसामग्री लाऊं ऐसे बिचारिकें स्त्रीचली सो वा बनियाकी हाटपै गई तब वा बनियाने टोकी तब वा बनियासों स्त्रीने कही जो मैं तोसों कालि मिलूंगी तू मोकों आज सौदा चहियतहै सो दे तब वा बनियाने कह्यौ जो तू मोसों कौल करेतो में मानूं तब वा स्त्रीने वासौ कौलकरि दीनों तब वा स्त्रीको सीधोसामग्री चहियत हुतों सो दीनों तब लेकें घर आई तब घर आयकें रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोगसमर्प्यो समयानुसार भोगसराय अनोसरि करिके पाछें वैष्णवनको महाप्रसाद लिवायौ तब वैष्णवनने महाप्रसाद भलीभांतिसों लीनों पाछें कृष्णदास घर आये तब वैष्णवनसों मिले दंडवत करिकें भीतरगये तब स्त्रीसो कह्यौ जो कहा खबरि है वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवाईयै तब स्त्रीने कह्यौ जो प्रसादतो लिवायो है तब कृष्णदासनें कह्यौ जो सीधोसामग्री कहांतेलाई कहा प्रकारकीयो तब जो प्रकारकी-

यौहुतौ सो सब कह्यौ और कह्यौ जो यह बनिया मोसों नित्य टोकाकरतौ जो तू मोसो एक दिन मिलि तू कहेगी सो देउंगो तब आजवासों कोलकरार करिकें सीधोसामग्री लाइहों तब कृष्णदास वा स्त्रीके ऊपर बहुत प्रसन्नभये पाछें स्त्रीपुरुष दोऊजनेनने सीरो महाप्रसादलीयौ पाछें कृष्णदास वैष्णवनकेपास आयबैठे सबरी रात्रि भगवद्वार्ता करतवीती जब सवारोभयौ तब सब वैष्णव बिदा होयके चले तब कृष्णदास थोरीसी दूर पहुंचावन गयौ पाछें आप घर आय स्नानकरि श्रीठाकुरजीकी सेवा करिकें यावृतकोगये पाछें वा स्त्रीने रसोईकरि श्रीठाकुरजीको भोगसमर्प्यो भोगसराय अनो-सरकरी महाप्रसाद टांकिधरयौ तब कृष्णदास घरि सांझको आये तब वही सीरो महाप्रसाद दोऊजनेनने लीयौ तब कृष्णदासने अपनी स्त्रीसो कही जो तुमने कालि वा बनि-यासों कौलकीयौहुतो सो वह बनिया पेडों देखत होयगा ताते वाका कौलपूरौ करिये तौ भलौहै तब वह स्त्री उवटनोंकरि न्हायके स्त्रीजनके श्रृंगारहोत हैं सो सबकरिकें वह स्त्रीचली सो वरषाके दिन हुते सो मेहवरषागयौ हुतौ सो मार्गमें कींच भईहुती ताके लिये कृष्णदासनें अपनी स्त्रीसों कही जोतू मेरे कांधेपै बैठले मैं पहुंचाय आऊ मार्गमें कीचि बहुतभईहै तेरे-पाय कीचमें भरिजायंगे सो वह बनिया देखिकें तेरौ अना-

दर करेगो तब वा स्त्रीको अपने कांधेपर चढायकें लेचले सो वा बनियाकी हाटकेआगै उतारदीनी तब वा स्त्रीनें वा बनियाकों हैलापारकेंकहो जो किवाड खोलि तब वा बनियाने कीवाडखोलिदीने और वा स्त्रीको भीतरलीनी तब वह बनिया पायधोयवेको पानी ले आये और कह्यौ जो पायाधोय तब स्त्रीने कह्यौ जो मेरेपाय कीचसो भरेनाहीं तब वा बनियाने कह्यौ जो मार्गमें तो कीचबहुतभईहै और तेरेपाय कोरेकेसेरहै तब वा स्त्रीनेकह्यौ जो तू पूछिके कहाकरेगो तू तेरो काम करि तब वा बनियाने कह्यौ जो यहतो बातकहीचाहिये तब वा स्त्रीने कह्यौ जो मेरो भरतार मोको कांधे ऊपर चढायक लायौहो तब यह बात सुनिकें वा बनियाको बडो आश्चर्य भयो और सब वृत्तांन्त हो सो पूछो जो यह कहा कारनहै सो सब मेरे आगें कहि तब वा स्त्रीने जो प्रकारभयोहो सो सब कह्यौ सो वह सुनके बनिया अपने मनमें धृकारकरन लाग्यौ और कहो जा धन्य जन्म तुम्हारौ जो जिनको ऐसो मन साच्यौहै और धृकारजन्ममेरोहै तब दोऊ हाथ जोरिकें दंडौत कीनी और कह्यौ जो मेरो अपराध क्षमा करिये और मेरे उपर कृपा राखिये मेरी तुम बहनहो ऐसे कहि वा बनियानें स्त्रीको कपडा पहरायके वाके घर पहुंचायदीनी और कृष्णदाससों वा बनियाने बहुत वीनती कीनी जा तुम मेरो अपराध क्षमा करो यह मेरी

बहन है और तुम मेरे पूज्यहौ तब कृष्णदासने कही जो तेरो कहा अपराध हैं तू संकोचमति कर फेरि वह बनिया कितनेकदिन पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको सेवक भयौ नाम समरपण कीयौ तब वा बनियाको नाम श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें ज्ञानचंद धरयौ पाछें वह बनिया बडौ भगवदी-यभयौ सो कृष्णदासके संगते भयौ ताते संगकरनोंतौ भग-वदीयको करनौ जासों भगवद्भक्ती उत्पन्नहोय पाछें वह बनिया सदा कृष्णदाससों नमत रहतौ उनकी स्त्रीसों बहन कहतौ सो ऐसो सम्बंध राखतौ सो वे कृष्णदास श्रीआचा-र्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्रभगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांताईं लिखियै ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ८३ ॥

संतदास चौपडा क्षत्री आगरेके ति०

सो वे संतदास पहिले बहुत संपतवान हुते व्यौपार बहुत हुतो लाखनको व्यौपार करते सो द्रव्य सब व्यौपारहीमें खोयौ पाछें सेऊंके बजारमें कौडी बेचन लागे टका २४ की पूंजी हुती सो जबतांई उहां बैठे रहते कोडीनकी ढेरी पैसानकी कररिराखते सों गाहक पैसा धरकें कोडीनकी ढेरी लजाते और संतदास आपपोथी बांचते मार्गमें काहूसों बोलते नाहीं भगवत रसमें छिके रहते और जो कोऊ भगवत्भक्ति आवतौ तासों बडे भगवद्वार्ता करिके औरसों

संभाषण न करते रसोईको टका एकलगावते और धेलाकी चवेनी आनि राखते सो रात्रिकों वैष्णव आयकें बैठते भगवद्वार्ता कीर्तन करते सो सब चवेनी महा प्रसाद बांटि देते सो वैष्णव लेके उठिते ऐसे ढाई पैसामें निर्वाह करते ऐसे करत कितनेक दिनबीते तब नारायणदास गौडदेसकेनें सुनी जो संतदासके द्रव्यकौ बहुतसंकोच है ताते नारायण-दासनें संतदासकौ पत्रलिख्यौ और एक मौहरनकी थैली-पठाई सोहुंडी कासंदलेकें आयौ तब संतदासको पत्रदीनों तब वह पत्र संतदासनें बांच्यौ और तामें हुंडी ही सो बांची तब हुंडी ही सो तौ श्रीगुसांईजीकें पास पठाई और एकटका कासदकोंदीनों और संतदासनें नारायणदासको पत्र लिख्यौ तामें लिख्यौ जो तुमनें हुंडी पठाईही सो तौ अडेल श्रीगुसां-ईजीको पठायदीनी और तुम्हारी प्रभूतामें हमारे एक दिनकी रसोईनभई तादिनकीकमाई कासदकोदीनी जब हुंडीपहुंची तब भंडारीनें श्रीगुसांईजीकों बचाई सो एक सौ मौहरनकी है सो नारायणदासनें गौडदेसते संतदासकों पठाई सो संतदासनें यहां पठाई है तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जोसंतदासतौ श्रीआ-चार्यजी महाप्रभूनके बडेही कृपापात्र भगवदीय है ताते वैष्णवकोद्रव्य काहेकौ राखेंगे ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

बहुर कितनेक दिनपाछें श्रीगुसांईजीनें श्रीगोकुल वास

कीयौ तब संतदास उत्सवके दिन आगरेते दरशनको आवते और श्रीगुसांईजी आप आगरे पधारते तब संतदासकेघर विना बुलाए पधारते आप श्रीगुसांईजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवकजानि ऐसी कृपा करते तब कितनेक दिन पाछें संतदासकी देहथकी तब श्रीगोकुलते चापाभाईकों बुलायौ सो चापाभाई श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मानिकें आगरे आये तब संतदासनें चापाभाईसों कह्यौ जो यह घर तुम्हारौ है जानो तो कोई एक दिन स्त्रीको रहन दीजियौ और जानोतों गहने घर दीजियौ अथवा बेचकें दामले जाउ ऐसे कहिकें घरके पत्र खत चापाभाईको सोंप दीनों तब चापाभाई खत पत्र लेकें श्रीगोकुल आये तब श्रीगुसांईजीसों सब समाचार कहै पाछें संतदास बहुत आसक्ति भये तब वैष्णव सब आयजुरे तब संतदाससों कह्यौ जो तुम कह्यौ तो रेणुका स्थल अथवा मथुरा जहां कहौं तहां लेचले तब संतदासनें कह्यौ जो मोकों कहारेणुकास्थल कृतार्थ करेगो तब वैष्णवनने कह्यो जो श्रीगोकुल लेजाय तब संतदासनें कह्यौ जो श्रीगोकुलजायके कहा राख झडाऊँगौ ऐसे कहिकें आगरेहीमें देह छोडी पाछें वैष्णवननें कृत्य उहांही कीयौ पाछे यह बात वैष्णवननें श्रीगुसांईजीके आगे कही तब श्रीगुसांईजी अपने श्रीमु-

खते कहैं जो वे संतदास ऐसे भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांतांई लिये ॥ प्र० ॥ २ ॥ वै ॥ ८४ ॥

अथ सुन्दरदास तिनकी वार्ता

सो सुन्दरदास श्रीजगन्नाथरायजीके दश कोस परे एक गांवमें रहते तहां कृष्ण चैतन्यको सेवक माधौदास सो उहां-रहतौ सो सुंदरदासके और माधौ दासके परस्पर स्नेह बहुत हुतौ सो सुन्दरदास जब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी सराहना करतौ तब माधौदास कहतौ जो मेरे जो कछू है सो सब कृष्ण चैतन्यकौ है सो जहां एक समय श्रीआचार्यजी महा-प्रभू पाउधारे हुते तब सुंदरदासनें अपने घर पधरायै तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें उहां रसोई करिकें श्रीठाकुरजीको भोगसमर्प्यो पाछें भोग सरायौ तब माधौदासने थार आवत देख्यौ तापाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू आपतौ भोजनकरिकें पोढे तब माधौदासने सुन्दरदासते कही जो तेरे गुरूके हाथते श्रीठाकुरजी आरोगे नाहीं औरमें श्रीठाकुरजीको आरोगावत हों सो तो एकहू ग्रास रहत नाहीं तब सुंदरदासनें श्रीआचा-र्यजी महाप्रभूनसों कही तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें माधौ दासको बुलायकें पूछौ तब माधौदासने जो वृतान्त हुतौ सो सब कह्यौ जो काल हम तेरे घर आवेंगे सो देखेंगे मेरे आगें श्रीठाकुरजी आरोगेंगे तब जानूंगो तब दूसरे दिन

श्रीआचार्यजी महाप्रभू माधौदासके घर पधारे और कह्यौ जो अब थार श्रीठाकुरजीके आगें आन राखि तब माधौदास थार ले गयौ श्रीठाकुरजीके आगें भोग धर्‍यौ फिर बाहर आयौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू मंदिरके द्वार ऊपर बैठे रहैं सो वहां एक प्रेत नित्य आयकें श्रीठाकुरजीके आगेंते खाय यातौ सो वह प्रेत वाहू दिन आयौ तब देखेतौ श्रीआचार्यजी महाप्रभू बिराजें है तब वह प्रेत खिस्यानौं और कह्यौ जो राज अबहूं भूखौ रहूंगौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो तेने अब तांई खायो सोतौ खायौ पारि अब न खान पावेगौ ताते अब इहांसों जा तब वह प्रेत फिर गयौ तब माधौदास भोग सरावन गयौ तब देखेंतो थार ज्योंका त्यों भरचौ है तब माधौदासने कह्यौ जो तुम्हारे आगें मेरे श्रीठाकुरजी आरोगे नाहीं ऐसे सामान्य बचन बहुत बोले पारि श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप चुप कारि रहै कछू बोले नाहीं तब माधौदास रात्रिको सोयौ तब श्रीठाकुरजीके अनुचर आये सो बहुत मारचो और खाटते औधौं पटक मारचौ तब माधौदासने उनसौं कह्यौ जो तुम मोकों काहेको मारतहौं तब जगन्नाथरायजीने कह्यौ जोतू श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों ऐसौ सामान्य बचन क्यों बोल्यौ में तेरे इहां कब आरोगतहों जो तू भोग धरतौ सो तौ प्रेत खाय जातौ हौ आज श्रीआचार्यजी महा-

प्रभूभी और ऊपर बैठे हुते ताते न खाय सक्यौ तू उनसों क्यौं बुरो बोल्यौ वेतौ मेरौ स्वरूप हैं तब माधौदासने उनसों कह्यौ जो में सवारें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों अपराध क्षमा करवाय आउंगौ मेंने ऐसे न जान्यौ तब माधौदास प्रातःकाल उठिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास आयौ और साष्टांग दंडवत कीनी और बीनती करकें कह्यौ जो महाराज मेरौ अपराध क्षमा करिये सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आपतौ परमदयाल हैं तब प्रसन्न होयके कहैं जो तेरौ कहा अपराध है हम तेरे ऊपर बहुत प्रसन्न हैं तब माधौदासने बीनती कीनी जो महाराज मेरे घर पावधारौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू माधौदासके घर पावधारे और प्रसन्न होयकें माधौदासको नाम सुनायौ तापाछें माधौदासकों निवेदन करवायौ पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें माधौदासके ठाकुरकों पंचामृतसे स्नान करवायौ तापाछें श्रीठाकुरजीकों सिंगारकरिकें सिंहासन पाट बैठारे पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पाककरिकें भोग समर्प्यो तब समयानुसार भोग सराय अनोसरि करिकें पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें माधौदाससों कह्यौ जो तू वैष्णवनकों बुलायलावों तब माधौदासनें कह्यौ जो महाराज पांच सात वैष्णव बुलायलावों तब आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो पांच सातकी कहा है जितनें तेरे मनमें आवै तितनेबुलाय

लाउ तब माधौदासनें श्रीमहाप्रभूजीसों कह्यौ जो महाराज प्रसादतौ थोरो है और वैष्णव बहुत आवेंगे तो कैसें होयगी तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो माधौदाससोंके जो अर तेरी अक्कल मारीगई है प्रसाद कबंहू न घटे तेरे या गांवमें जितने वैष्णव होय तिन सबको बुलायलाउ पाछें जितने वैष्णव हैं तिन सबको बुलायलायौ तब सबकों महाप्रसाद लिवायौ तोहू वह थार भरयो रह्यौ तब माधौदाससों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो वैष्णवकें विषे विश्वास चाहिये जो भगवत् प्रसाद सदा अटूट रहै या भांतिसों माधौदासकों श्रीमहाप्रभूजीनें अंगीकार कर्यौ सो सुंदरदासके संगते भयौ ताते संग करनो तो भगवदीयको करनों सो वे सुंदरदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय है ताते इनकी बर्ता कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ८५ ॥

मावजीपटैल तथा इनकीस्त्री बिरजौ ति०

सो वे मावजी पटेल तथा इनकी स्त्री बिरजौ बरस दिनमें दोय बेर श्रीगोकुल आवते श्रीनाथजीके दर्शनकौ तथा श्रीगुसांईजीके दर्शनको आवते सो श्रीगुसांईजी इनके ऊपर बहुत प्रसन्न रहते बहुतकृपाकरते पाछें उनको कृष्ण-

ट्टको संगभयौ तब विरजोनें कृष्णभट्टसों कह्यो जो तुम हमारे माथे सेवापधारावोतौ भलौ है तब कृष्णभट्टनें महाराज गुसांईजीसों बीनती करिकें कह्यौ और उनके माथे सेवा पधराई सो श्रीगुसांईजीने श्रीठाकुरजीको पाट बैठारचौ तो स्नेहपूर्वक सेवा करते सामग्री भली भांतिसों करते श्रीमहाप्रभूजीके सेवक दश कोस पर रहते तिनको प्रसाद लिवावते ऐसे भली भांतीसों सेवा करी कृष्णभट्टआदिदेकें करी ॥प्रसंग॥ १॥

और एक समय वैष्णव सब प्रसाद लेनकौ उत्सवके दिन बैठे हुते तब बिरजोनें वैष्णवनको अनसखडी महाप्रसाद परोस्यो तब बिरजोनें कृष्णभट्टसों बीनती कीनी जो मोकों ऐसौ मनोरथ है जो सब वैष्णवमंडली बैठी होय और मैं सखडी महाप्रसाद सबनको लिवाऊं तब कृष्णभट्टनें कह्यौ जो यह मनोरथ है सो तो भक्ति भावसों होय परि यह द्रव्यसाध्य है तब बिरजोनें पूछौ जो द्रव्यसाध्य सो कहा ताकौ अर्थ मोकों समझायके कहौ तब कृष्णभट्टने कह्यो जो यह वैष्णवमंडली लेकें श्रीगोकुल श्रीगुसांईजीके पास जैये पाछें श्रीगुसांईजी आज्ञा देय सो करियै जो श्रीगुसांईजीआज्ञा देय तौ सखडी महाप्रसाद लीयौ जाय ताते यह द्रव्य साध्य है जो मार्गमें सब खरच करियै और वैष्णवनकी आज्ञा लेनौ तब बिरजोनें मावजी पटैलते कह्यौ मोकों यह मनोरथ है सो

मनोरथ कियौ चाहिये तब मावजीपटैलने कह्यौ जो मेरे पास दो लक्षमुद्रा हैं इनसों काम होयतौ भलेंइ करियै तब कृष्णभट्ट कह्यौ जो इनसों काम अवश्य होयगो आपन श्रीगुसांईजी पास चलें तब श्रीगुसांईजी आज्ञा देय सो करियै सो मावजीकी गांठमें द्रव्य बहुतौ हुतौ सो सब लेकें उज्जेन आये पाछें कृष्णभट्टनें वैष्णव सब इकठौरे करिकें श्रीगोकुल श्रीगुसांईजीके दरशनको आये पाछें श्रीगोकुल आयकें श्रीगुसांईजीके दर्शन कीये पाछें कृष्णभट्टनें श्रीगुसांईजीसों बीनती कीनी जो महाराज बिरजोको ऐसो मनोरथ है जो सखडी महाप्रसाद मेरे हाथसों सब वैष्णवनकी मंडली बैठी होय तिनकों में परोसों तब श्रीगुसांईजीने कही जो यह मनोरथतौ पुरुषोत्तम क्षेत्र बिना न होय तब सब वैष्णवनकी मंडलीलेकें बिरजो चली श्रीनाथरायजीकूं सो कितनेक दिनमें जाय पहुंजी तब श्रीजगन्नाथजीके दर्शन कीये पाछें जो मनोरथ हुतौ सो सब नानाप्रकारकी सामग्री करवायकें श्रीजगन्नाथजीकों भोग समर्प्यो पाछें वह प्रसाद सखडी अन सखडी सब वैष्णवनकों बिरजोनें अपने हाथसों परोसिकें लिवायो बिरजोनें अपनो सब मनोरथ पूरन कीयो पाछें बिरजो

उहां कछूकदिन रहिकें सब वैष्णवनसहित श्रीगोकुल आई तब श्रीगुसांईजीको दर्शनकीयौ दंडवत कीनी तापाछें जो बातकरी सो सब श्रीगुसांईजीके आगेंकही पाछें और जो द्रव्य बच्यौ सो सब गुसांईजीकी भेंट कीनों तब श्रीगुसांईजी बिरजौको भाव देखिकें वाके ऊपर बहुत प्रसन्न भये पाछें सब वैष्णवनको महाप्रसाद लिवायौ तब श्रीगुसांईजीनें आप प्रसाद लीयौ तापाछें बिरजौ तथा सब वैष्णव श्रीगुसांईजीके साथ श्रीनाथजीद्वार आये तब श्रीनाथजीके दर्शन कीये तब बिरजो तथा श्रीगुसांईजी सब वैष्णवन-सहित श्रीनाथजीते बिदा होयके अपने देशको गये वह बिरजो ऐसी भगवदीयही ॥ प्र० ॥ २ ॥

और बिरजौ वरस दिनमें दोय बेर श्रीगोकुल आवती तब एक गाडातौ गुडको भरलावती और एक गाडा घृतको भरलावती सो एक महीनालों रहती तामें पंद्रह दिनतौ श्रीगोकुल रहती और पंद्रहदिन श्रीनाथजी द्वार रहती या भांतिसों बिरजौ रहती तब सामग्री करिकें भोगसमर्पि भोगसरायकें सब ढांकिधरे जब गायनके ग्वाल आवते तब महाप्रसाद दूध अंगीकार करते और खिरकमें लिलावती ओर आवती जब दोऊ पधरावनी करती सो वह बिरजौ ऐसी भगवदीयही सो पद्मरावलके संगते ताते संगकरनों तौ

भगवदीयकौ करनोंसो इनकी वार्ताको पार नाहीं ताते अब कहांताई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥ वैष्णव ॥ ८६ ॥

गोपालदास नरोडामें रहते ति॰ वार्ता

सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने उनकों आज्ञा दीनी हुती जो तुम सबनकों नाम दीजिये ताते वे गोपालदास नामदेते सो एक समय श्रीआचार्यजी नरोडामें पधारेहुते तब गोपालदासतौ घर नहुते गोपालदासके बेटा घर गोपालदास कहूं या वृत्तिको गए हुते तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने गोपालदासके बेटानसों पूछों जो गोपालदास कहां गये हैं तब गोपालदासके बेटानने कह्यौ जो कछू श्रीठाकुरजीके कामकौं गयो है तब यह सुनिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकौ मन अप्रसन्न भयौ जा गोपालदासके बेटा ऐसे कसे बोलत हैं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो यह कैसे वैष्णव है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो यहां रहनों उचित नाहीं है तब फिर अपने मनमें बिचार की गोपालदासको तौ आवन दीजिये वह कैसे बोलत हैं तब पाछें संध्यासमय गोपालदास आये तब गोपालदासनें संध्यासमय श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकौ दर्शन कीयौ तब गोपालदाससों श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने पूछौ गोपालदास तुम कहां गये हुते तब गोपालदानें कही जो महाराज पेटलाग्यो है

ताते यावृत्तिकों गयो हुतो तब यह सुनिकें गोपालदासके ऊपर बहुत प्रसन्न भये और आप श्रीमुखसों कहै जो यह वैष्णवको लक्षण है जो या वृत्तिमें श्रीठाकुरजीको नाम न लेय ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

और एक समय गोपालदास श्रीनाथजीके दर्शनकों आय सो साथ एक सेवक हुतौ तहां ज्वर चढि आयो सो लंघन द्वैचारि कीये तब रात्रिको गोपालदासको प्यास लागी सो वा सेवकके पास जल मांग्यौ सो सेवकतौ सोयौ हुतौ सेवकने तौ सुनी न हुती तब श्रीठाकुरजी जलपानकी झारी लेके आयै सो गोपालदासकों जल पिवायौ और वह झारी उहांही धरि आयै श्रीनाथजीको हृदय अति कोमल है ताते भक्तिकी आरती सहिनसकें ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

और एक समय गोपालदासनें चोपराबिरह करिकें गायौ ॥ सोचोपरावेकी ॥ "सिखंडी श्याम घनसखी कंठ मनोहरहार ॥ धन्य दिन जेनों देखसूं नयनन नन्दकुमार" ॥ १ ॥ ऐसे चौपरा बहुत कीये ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

और एक समय श्रीगुसांईजी आप नरोडामें पधारे तब बाहिर डेराकीये हुते पाछें जब गोपालदास उत्थापनके समय श्रीगुसांईजीके दर्शनकों आये तब द्वै वैष्णवनने कह्यौ जो हमकों श्रीगुसांईजीके पासनाम दिवावौ तब गोपा-

लदासने कह्यौ जो हम नाम देते हैं सो नाम श्रीगुसांईजी देते हैं ताते तुमकों घर चलिकें नाम देयंगे परि उन वैष्णवनको मन श्रीगुसांईजी पास नाम पायवेको सो तीनवेर उन वैष्णवनने कह्यौ सो तीनोंवार गोपालदासने वैसेही कह्यौ जो तुमकों घर चलिकें नाम देयंगे सो यह बात श्रीगुसांईजीने अपने काननते सुनी पाछें उन वैष्णवनसों श्रीगुसांईजीने कही जो तुम कहा कहत हो तब उन वैष्णवने कह्यौ जो महाराज हमकौ नाम दीजिये तब श्रीगुसांईजीनें उनको नाम सुनायो उनको कृतार्थ करे पाछें गोपालदाससों श्रीगुसांईजीयों कहैं जो गोपालदासतुम्हारो अंगीकार श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कीयो है सो तो दृढभयौ है परि जिननें तुम्हारे पास नाम पायो है सो तौ हमारे कबहूं न होयंगे सो श्रीगुसांईजीने क्षोभ करिकें गोपालदाससों कह्यौ पाछें गोपालदासनें जितनेनको नाम दीयौ हुतौ तिन सबनकों फिर सबनको गुसांईजीके पास नाम दिवायौ तब वे सब कृतार्थ भये तिनसों श्रीगुसांईजी गंगोज्व कहते उन गोपालदासकों सामित्वआयौ ताते इन जीवनकों अकाज भयो ताते वे गोपाल्दास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परमकृपापात्र भगवदीय हैं सो इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ वैष्णव ॥ ८७ ॥

सूरदासजी गऊघाटऊपर रहते ति० वा०

सो एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू अडेलते ब्रजकों पाँवधारे सो कितनेक दिनमें गऊघाट आये सो गऊघाट आगरे और मथुराके बीचोंबीच है तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभू पावधारे सो गऊघाट ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभू उतरे तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप स्नानकरिकें संध्यावंदन करिकें पाक करनको बैठे और श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको समाज बहुत हुतौ और सेवकहू अपने अपने श्रीठाकुरजीको रसोई करन लागे सो गऊघाट ऊपर सूरदासजीको स्थल हुतौ सो सूरदासजी स्वामी है आप सेवक करते सूरदासजी भगवदीय हैं गान बहुत आछौ करते ताते बहुत लोग सूरदासजीके सेवक भये हुते सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू गऊघाट ऊपर उतरें सो सूरदासजीके सेवक देखिके सूरदासजीसों जाय कहा जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप पधारे हैं जिनने दक्षिणमें दिग्विजयकीयो है तब पंडितनको जीते हैं भक्तिमार्ग स्थापन कीयो है सो श्रीवल्लभाचार्य यहां पधारे हैं तब सूरदासजीनें अपने सेवकसों कह्यौ जो तू जायके दूर बैठि जब आप भोजनकरिकें बिराजे तब खबरि करियो हम श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनको जायंगे सो वह तनक दूर जाय बैठो तब श्रीआचार्यजी

महाप्रभू आप पाककरत हुते सो पाक सिद्ध भयौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यौ पाछें समयानुसार भोगसराय अनोसरिकरिकें महाप्रसाद लेकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू गादी ऊपर बिराजे तहां सब सेवकहू पहुँचिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकें आसपास आय बैठे तब वह सूरदासजीको सेवक आये सो सूरदासजीसों कही जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू बिराजे हैं तब सूरदासजी अपने स्थलते आयकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शनकों आये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो सूरआवों बैठो तब सूरदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको दर्शनकरिकें आगें आय बैठे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कही जो सूर कछू भगवद्यश वर्णन करौ तब सूरदासजीने कही जो आज्ञा सो सूरदासजीनें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगें एक पद गायौ ॥ सो पद–

राग धनाश्री–हौंहरि सब पतितनको नायक ॥ को करिसके बराबर मेरी इतने मानकों लायक ॥ १ ॥ जो तुम अजामेलिसों कीनी जो पाती लिखपाऊं ॥ होय विश्वास भलौ जिय अपनें और पतित बुलाऊं ॥ २ ॥ सिमिटे जहां तहांते सब कोऊ आयजुरे इक ठौर ॥ अबके इतनें आनि मिलाऊं बेर दूसरी और ॥ ३ ॥ होडाहोडी

करिकरे पापभरी पेट ॥ सबद्दिन ले पायन तरिपरिहों यही हमारी भेंट ॥ ४ ॥ ऐसी कितनीक बनाऊं प्रानपति सुमरन है भयौ आडौ ॥ अबकी वेर निवार लेउ प्रभू सूर पतितकों ठाडौ ॥ ५ ॥ और पद गायौ–

राग धनाश्री–प्रभूमें सब पतितनकोटीकौ ॥ और पतित सब द्यौसचारिकें मैं तौ जन्मतहीकौ ॥ १ ॥ बधिक अजामिलि गनिका त्यारी और पूतनाहीकौ ॥ मोहि छांडि तुम और उधारे मिटै शूलकेसें जीका ॥ २ ॥ कोउ न समरथ सेव करनका खेचि कहतहों लीकौ ॥ मरियतलाज सूरपति तनमें कहत सबनमें नीकौ ॥ ३ ॥

ऐसौ पद श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगें सूरदासजीनेगायौ सो सुनिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो सूरहैकें ऐसो घिघियात काहेको है कछू भगवल्लीला वर्णन करि तब सूरदासनें कह्यौ जो महाराज हौंतो समझत नहीं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो जा स्नान करिआउ हम तोकों समझावेंगे तब सूरदासजी स्नान करि आये तब श्रीमहाप्रभूजीनें प्रथम सूरदासजीकों नाम सुनायौ पाछें समर्पण करवायौ और फिर दशमस्कंधकी अनुक्रमणिका कही सो ताते सब दोष दूर भये ताते सूरदासजीको नवधाभक्ति सिद्ध भयी तब

सूरदासजीनें भगवल्लीला वर्णन करी अनुक्रमणिकाते संपूर्ण-लीला फुरी सो क्यों जानिये सो दशमस्कंधकी सुबोधिनीमें मंगलाचरणकौ प्रथम कारिका कीये हैं सो यह श्लोक सूर-दासजीनें कह्यौ ॥ सो श्लोक-

नमामि हृदये शेषे लीलाक्षराविधसायनम् ॥
लक्ष्मीसहस्रलीलाभिः सेव्यमानं कलानिधिम् ॥१॥

और ताही समय श्रीमहाप्रभूनके सन्निधान पद कीये ॥ सो पद-

राग बिलावल-"चकईरी चलि चरण सरोवर जहां न प्रेम वियोग" यह पद सम्पूर्ण करिकें सूरदासजीने गायौ सो यह पद दशमस्कंधके मंगलाचरणकी कारिकाके अनुसार कीयौ सो यामें कह्यौ है जो तहां श्रीसहस्रसहित नितक्रीडत "शोभित सूरदास या भांति" पद कीये ताते जानी जो सूरदा-सकों सम्पूर्ण सुबोधिनी स्फुरी सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने जान्यौ जो लीलाको अभ्यास भयौ पाछें सूरदासजीने नंद महोत्सव कीयौ सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे गायौ ॥

राग देवगन्धार-"ब्रज भयौ महरके पूत" ॥ जब यह बात सुनी ॥ सो यह श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे गायौ सो सुनिके श्रीआचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये और

अपने श्रीमुखते कहैं जो सूरदास मानों निकटही हुते पाछें सूरदासजीनें अपने सेवक कीये हुते तिन सबनको नाम दिवायौ पाछें सूरदासजीनें बहुत पद कीये पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनें सूरदासजीकों पुरुषोत्तम सहस्रनाम सुनायौ तब सूरदासजीको सम्पूरण भागवत स्फुर्तना भई पाछें जो पद कीये सो श्रीभागवत प्रथम स्कंधते द्वादशस्कंधतांई कीये तातें वे सूरदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू गऊघाट ऊपर दिन दोय तीन विराजे पाछें फेरि ब्रजको पाव धारे तब सूरदासजीहू श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके साथ ब्रजकों आये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

अब जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू ब्रजकों पधारे सो प्रथम श्रीगोकुल पधारे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके साथ सूरदासजीहू आये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने अपने श्रीमुखसों कह्यौ जो सूरदास श्रीगोकुलकों दर्शन करौ सो सूरदासनें श्रीगोकुलकों दंडवत करी सो दंडवतमात्र श्रीगोकुलकी बाललीला सूरदालजीके हृदयमें फुरी और सूरदासजीके हृदयमें प्रथम श्रीमहाप्रभूनने सकल लीला श्रीभागवतकी स्थापी हैं याते दर्शन करतमात्र सूरदासजीकों श्रीगोकुलकी बाललीला स्फुर्दनाभई तब सूरदासजीने विचारयौ मनमें जो श्रीगोकु-

लकी बाललीलाको वर्णन करिकैं श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगें सुनाइये जन्मलीलाको पद तौ प्रथम सुनायो है अब श्रीगोकुलकी बाललीलाको पद गायौ ॥ सो पद–

राग बिलावल–सो नितकरन पुनीतलियै ॥ घुटुरुवन चलत रेणु तनमंडत सुरत वेषकीये ॥ १ ॥ चारुकपोललोल लोचन छबि गोरोचनको तिलकदिये ॥ लारलटकन मानो मतमधुपगन माधुरी मधुरपिये ॥ २ ॥ कठुलाकंठ बजत केहरि नख राजत है सखी रुचिरहिये ॥ धन्य सूर एकौ पल यह सुखकहाभयौजीये ॥ ३ ॥

यह पद सूरदासजीनें गायौ सो सुनिके आप बहुत प्रसन्न भये पाछें और हू पद गायौ तब श्रीमहाप्रभूजी अपने मनमें बिचारे जो श्रीनाथजीके यहां और तो सब सेवाकौ मंडानभयौ और कीर्तनको मंडान नाहीं कीयो है ताते अब सूरदासजीको दीजियै तब आप श्रीजीद्वारपधारे सो सूरदास-जीको साथ लीयेही सो श्रीनाथजीद्वार जाय पहुँचे तब आप स्नानकरिकें मंदिरमें पधारे तब सूरदासजीसों कह्यौ जो सूरदास ऊपर आऊ स्नान करिकें श्रीनाथजीकौ दर्शन करि तब सूरदासजी पर्वतऊपरजायकें श्रीनाथजीकौ दर्शन कीयौ तब आपने कह्यौ जो सूरदास कछू श्रीनाथजीको सुनावौ तब सूरदासजीने प्रथम विग्यप्तको पद गायौ॥सोपद–

राग धनाश्री—" अबहों नाच्यौ बहुतगोपाल" ॥ यह पद सम्पूर्ण करिकें श्रीनाथजीके आगें गायौ तब श्रीमहाप्रभूजीने कह्यौ जो अबतौ सूरदास तुममें कछू अविद्या रही नाहीं तुम्हारी अविद्या तो प्रभूननें दूर कीनी ताते कछू भगवद्यश वर्णन करों तब सूरदासजीने महात्म और लीला ऐसो जसकरिकें गाय सुनायौ ॥ सो पद—

रागगौरी—" कोन सुकृत इन ब्रजवासिनकों ॥ " यह पद सम्पूर्ण करिके गायौ सो सुनिकें श्रीमहाप्रभूजी बहुत प्रसन्न भये सो जैसो श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें मार्ग प्रकाश कीयौहौ ताके अनुसार सूरदासजीने पद कीये श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके मार्गको कहा स्वरूप है महात्म ज्ञानपूर्वक सुदृढस्नेह कीयौ परमकाष्टा हैं और स्नेह आगें भगवानको महात्म रहत नाहीं ताते भगवान वेर वेर महात्म्य जनावत हैं नाम प्रकरनमें पूतना कारि सकट तृनावर्त करि गर्गाचार्य कारि यमुलार्जुन कारि वैकुंठ दर्शन कारि ऐसें कारिकें भगवानने बहुत महात्म्य जतायौ पारि इन ब्रजभक्तिनको स्नेह परम काष्टापन्न है ताते ताही समय तौ महात्म्य रहै पाछें विस्मृत होजाय ॥ प्र० ॥ २ ॥

और सूरदासजीनें सहस्रावधि पदकीये हैं ताको सागर कहिये सो सब जगतमें प्रसिद्धि भये सो सूरदासजीके पद

देशाधिपतिने सुने सो सुनिकें यह बिचारौ जो सूरदासजी काहू बिधिसों मिले तो भलौ सो भगवदिच्छाते सूरदासजी मिले सो सूरदासजी सो कह्यौ देशाधिपतिने जो सूरदासजी में सुन्यो है जो तुमने बिसन पद बहु कीये हैं जो मोकों परमेश्वरनें राज्य दीयौ है सो सब गुनीजन मेरौ जस गावत हैं ताते तुमहूं कछू गावौ तब सूरदासजीने देशाधिपतिके आगे कीर्तन गायौ ॥ सो पद–

रागबिलावल–"मनारे तू करि माधौसों प्रीति" ॥ यह पद देशाधिपतिके आगें संपूर्ण करिकें सूरदासजीनें गायौ सो यह पद कैसो है जो या पदको अहर्निश ध्यान रहेतौ भगवदनुग्रहकी सादा सार्ति रहै और संसारते सदा वैराग्य रहै और कुसंगको सदा भय रहै और भगवदीयके संगकी सदा चाह रहै श्रीठाकुरजीके चरणारबिंद ऊपर सदा स्नेह रहै देशादिके ऊपर आसक्ति न होय ऐसो पद देशाधिपतिको सुनायौ सो सुनिकें देशाधिपति बहुत प्रसन्न भया और कह्यौ जो सूरदासजी मोंको परमेश्वरने राजदीनों है सो सब गुनीजन मेरौ जस गावत हैं ताते मेरो जस कछू गावौ तब तब सूरदासजीने यह पद गायौ ॥ सो पद--

राग केदारौ–"नाहिन रह्यौ मनमें ठौर" ॥ यह पद संपूर्ण करिकें सूरदासजीनें गायौ सो सुनिकें देशाधिपति

अकबर बादशाह अपने मनमें विचार्यौ जौ य मेरौ जस काहेको गावेंगे जो इनको कछू मेरी बातकौ लालच होय तौ गावै येतो परमेश्वरके जन हैं और सूरदासजीते या पदके समाप्तमें गायौ ॥ "होजो सूर ऐसें दर्शको इमरत लोचन-प्यास" ॥ यह गायौ हौ देशाधिपतिने पूछौ जो सूरदासजी तुम्हारे तो देखियत नाहीं सो प्यासेकैसें मरत हैं और बिन देखें लोचन तुम उपमाकों देत हौ सो तुम कैसें देत हौ तब सूरदासजी कछू बोले नाहीं तब फेरि देशाधिपति बोलौ जो इनके लोचन हैं सोतो परमेश्वरके पास हैं सो उहां देखत हैं सो वर्णन करत हैं तब देशाधिपतिनें सूरदासजीके समाधानकी मनमें बिचारी जी इनको कछू दीयौ चाहिये पारि यह तौ भगवदीय है इनकों काछू काहू बातकी इच्छा नाहीं पाछें सूरदासजी देशाधिपतिसों बिदा होयकें श्रीनाथजीद्वार आये॥

प्रसंग ॥ ३ ॥

एक समय सूरदासजी मार्गमें चले जाते हैं सो कोऊ चौपड खेलत हुते सो वा चौपड खेलमें ऐसे लीन है जो कोऊ आवते जातेको सुधि नाहीं ऐसे खेलमें मग्न हैं सो देख सूरदासजीके संगके भगवदीय है तिनसों सूरदासजीनें कह्यौ जो देखो वह प्राणीकैसौ अपनो जनमारो खोवत हैं भगवाननें तौ मनुष्य देह दीनी है सो तो अपनी सेवा भज-

नेके लिये दीनी है सो येतौ या देहसों हाड कूटत हैं यामें यह लौकिकसिद्धि नाहीं सो काहेते जो या लोकमें तो अपजस और परलोकमें भगवानते बहिर्मुख ताते श्रीठाकुरजीने इनकों मनुष्य देह दीनी है तिनकों चौपड ऐसी खेलनी चाहियै सो ता समय एकपद सूरदासजीने अपने संगकेनसों कह्यौ ॥ सो पद–

राग केदारौ–मन तू समझि सोच विचार ॥ भक्ति बिन भगवान दुर्लभ कहतनिगम पुकार ॥ १ ॥ साधसंगति डारि फाँसा फेरि रसनासारि ॥ दाव अबकें पर्‍यौ पूरौ उतरि पहिली पार ॥ २ ॥ वाकसत्रे सुनि अठारे पँचहीकों मारि ॥ दूरत तजि तीनकौन चमकि चौक विचार ॥ ३ ॥ काम क्रोधजंजालभूल्यौ ठग्यो ठगनी नारि ॥ सूरहरिकें पद भजन बिन चल्यौ दोउ करझार ॥ ४ ॥

यह पद सूरदासजीनें अपने संगके भगवदीयनसों कह्यौ सो या पदमें सूरदासजीनें कहा कह्यौ "मनतू समझि सोच विचार" य तीन्यौ वस्तु चौपडमें चाहिय सोइ तीनों वस्तु भगवानके भजनमें चाहियै काहेते जो समझि न होयतौ श्रवण कहा करेगौ ताते पहिले तौ समझ चहियै और सोच कहिय चिंतासों भगवानके प्राप्तकी चिंता न होय तौ संसार ऊपर बैरा-

ग्यकैसें आवै तातें सोच कहियै और बिचार जा या जीवकों बिचारहीं नाहीं तौ संगदुसंगमें कहा करेगौ तातें बिचार चाहियै सो ये तीनों वस्तु होंयतौ भगवदीय होय तातें ये तीनों वस्तु भगवदीयकों अवश्य चाहिये और चौपडमें हूँ ये तीनों वस्तु चाहिये समझ कहै गिनवो न आवतो गोटकेसें चलै और सोच अगम जो मेरे यह दाव पडैतो यह गोटचलूं बिचारजो वाहीमें तनमन जो ये तीनों वस्तु होय तो चोपडखेली जाय सो वे सूरदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥

बहुर सूरदासजी श्रीनाथजीद्वार आयकें बहुत दिनतांई श्रीनाथजीकी सेवा कीनी बीच२में श्रीगोकुल श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शनकों आवते सो एक समय श्रीसूरदासजी श्रीगोकुल आये श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन कीये और बाललीलाके पदबहुत सुनाये सो श्रीगुसांईजी सुनिकें बहुत प्रसन्न भये पाछें श्रीगुसांईजीनें एक पालना संस्कृतमें कीयौ सो पालना सूरदासजीकों सिखायो सो पालना सूरदासजीनें श्रीनवनीतप्रियाजी झुलत हुते ता समय गायौ ॥ सो पद–

राग रामकली--"प्रेमपर्य्यंके शयनं" यह पद सूरदास जीने सम्पूर्ण करिकें गाय सुनायौ श्रीनवनीतप्रियाजीकों

पाछें या पदके भावके अनुसार बहुत पदकीये सो सुनिकें श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये पालनाके भाव अनुसार पद गायो ॥ सो पद--

राग बिलावल--बालविनोद आंगनमेंकी डोलनि ॥ मणिमयभूमिसुभगनंदालयबलिबलि गईतोतरी बोलनि ॥१॥ कठुलाकंठरुचिरकेहारि नखब्रजमालबहुलई अमोलनि ॥ वदन सरोज तिलक गोरोचन लरलटिकन मधुगनिलोलनि ॥२॥ लीन्यौकर परसत आननपर कछू खाय कछू लग्यो कपोलनि ॥ कहैं जन सूर कहांलों वरनों धन्य नंदजीवन जग तोलनि ॥ ३ ॥

गोपाल दुरे हैं माखन खात ॥ देखि सखी सोभा जो बढी अतिस्याम मनोहारि गति ॥ १ ॥ उठि अवलोकि ओट ठाडी ह्वै जिह विधि नहीं लखि लेत ॥ चक्रतनैन चहूं दिस चितवत और सबनकों देत ॥ २ ॥ सुंदर कर आनन समीप हरिराजत यह आकार ॥ जनुजल रुहतजि वेर बिधिसों लाये मिलत उपहार ॥ ३ ॥ गिरिगिरि परत बदनते ऊपर ह्वैदधि सुतके बिंदु ॥ मानहू सुधाकन खोरवत पियजियदुंद ॥ ४ ॥ बालबिनोद बिलोक सूरप्रभु बित भई ब्रजकी नारि ॥ फुरतन बचन वरजिवेकों मनराही बिचार बिचार ॥ ५ ॥

राग जैतश्री--कहां लगवरनो सुंदरताई ॥ खेलत कुमर कतिक आंगनमें नैन निरख सुखपाई ॥ १ ॥ कुल है लसत श्यामसुन्दरके बहु बिधिरंगविवनाई ॥ मानउ नवधन ऊपर राजत मधुवा मनुष्य चढाई ॥ २ ॥ सेतपीत अरु असितलाल मणि लटकनिभाल रुराई ॥ मानहूं असुर देव गुरुसों मिलि भूमिजसो समुदाई ॥ ३ ॥ अतिसुदेशमृदु चिहरहरत मनमोहन सुखवगराई ॥ मानहूं मंजुलकंज ऊपर वर अलि अवलि फिर आई ॥ ४ ॥ दूधदंत छबि कही न जात कछू अलि पल लप झलकाई ॥ किलकत हंसत दुरति प्रगटत मानो विधुमें बिपुलताई ॥ ५ ॥ खंडत बचन देत पूरन सुख अद्भुत यह उपमाई ॥ घुटुरुन चलत उठत प्रमुदितमन सूरदास बलिजाई ॥ ६ ॥

राग रामकली—देखौ सखी एक अद्भुत रूप ॥ एक अम्बुजमध्य देखियत बीस दधिसुतजूप ॥ १ ॥ एक अवली दोय जलचर उभे अर्क अनूप ॥ पंचवार चढिगहि देखियत कहौ कहा स्वरूप ॥ २ ॥ सिसुगनमें भई सोभा कोऊकरौ बिचार ॥ सूर श्री गोपालकी छबि राखो यह निरधार ॥ ३ ॥ ऐसे पद सूरदासजीनें गाये पाछें फेरि श्रीनाथजी- द्वार आये ॥ प्रसंग ॥ ५ ॥

अब सूरदासजीनें श्रीनाथजीकी सेवा बहुत कीनी बहुत

दिन ताईं ता उपरांत भगवदिच्छा जानी जो अब प्रभूनकी इच्छा बुलायवेकी है यह विचारिकें जो नित्य लीला फलात्मक रासलीला जो जहां करे हैं ऐसी जो परासोली तहां सूरदासजी आये श्रीनाथजीकी ध्वजाकौ दंडौत करिकें ध्वजाके साम्हे सन्मुख करिकें सूरदासजी सोये परि अंतःकरन यह जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू दर्शन देयंगे अब यह देह तौ थकी ताते अब या देहसों श्रीनाथजीको दर्शन होयतो जानिये परमभाग्य है श्रीगुसांईजीको नाम कृपासिंधु है भक्तनके मनोरथ पूरन कर्त्ता हैं ऐसे विचारके सूरदासजी श्रीगुसांईजीकौ चिंतवन करत हैं और श्रीगुसांईजीकेसे कृपासिंधु हैं जैसे सूरदासजी उहां स्मरण करत हैं तैसेही श्रीगुसांईजी इनको छिनहूं नहिं भूलत है श्रीनाथजीकौ सिंगार हो तौ ता समय सूरदासजी मणिकोठामें ठाडे २ कीर्तन करते सो ता दिन श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीको सिंगार करत हुते और सूरदासजीको कीर्तन करत न देखो तब श्रीगुसांईजीने पूछौ सूरदासजी नाहीं देखियत सो काहेते तब काहू वैष्णवनने कह्यौ जो महाराज सूरदासजीतो आज परासोलीकी ओडी जात देखे हैं तब श्रीगुसांईजीनें जान्यौ जो भगवदिच्छाते अवसान समें हैं ताते सूरदासजी परासोली गये हैं तब श्रीगुसांईजीनें अपने सेवकनसों कह्यौ जो पुष्टमार्गकों जिहाज जात हैं जाकों कछू लेनों होय तौ

लेउ और जो भगवदिच्छाते राजभोग आरती पाछें रहत हैं तो मैंहू आवतहों पाछें श्रीगुसांईंजी वेर २ सूरदासजीकी खबार मंगाया कर जा आवै सोई कहैं जो महाराज सूरदास-जीतो अचेत हैं कछू बोलत नाहीं ऐसे करत श्रीनाथजीके राजभोगको समय भयो सोराजभोग आरती करिकें श्रीगुसां-ईंजी श्रीगिरिराजते नीचे उतरे सो आप परासोली पधारे भीताराया सेवक रामदासजी प्रभृत और कुम्भनदासजी और श्रीगुसांईंजीके सेवक गोविंदस्वामी चत्रभुजदास प्रभृत और सब श्रीगुसांईंजीके साथ आये सो आवतही सूरदासजीसों श्रीगुसांईंजीनें पूछा जा सूरदासजी कैसेहो तब सूरदासजीनें श्रीगुसांईंजीको दंडोत करिकें कह्यो जो महाराज आये हो महाराजकी बाट देखत हुतो यह कहिकें सूरदासजीने एकपद गाया ॥ सा पद–

राग सारंग–देखो देखौ हरिजूको एक सुभाव ॥ अति-गंभीरउदारउदधिप्रभू जान सिरोमनराय ॥ १ ॥ राईजितनी सेवाको फल मानत मेरुसमान ॥ समझिदास अपराध सिंधु सम बूंदनएको जानि ॥ २ ॥ बदन प्रसन्न कमल पद संमुख दीखतही है ऐसें ॥ ऐसें विमुखहू भये कृपाया मुखकी जब देखौ तब तैसे ॥ ३ ॥ भक्त विरह करत मय करुणा डोलत पाछें लागे ॥ सूरदास ऐसे प्रभूकों कत दीजे पीठ अभागे४॥

यह पद सूरदासजीनें कह्यौ सो सुनिके श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ जो ऐसो दैन्यप्रभू अपने सेवकनको देहि या दैन्यके पात्र एही है तब वा वेर श्रीगुसांईजी पास ठाडे हुते और चत्रभुजदासहू ठाडेहुते तब चत्रभुजदासनें कह्यौ जो सूरदासजीने बहुत भगवत् जश वर्णन कीयौ पारि श्रीआचार्यजी महाप्रभूनका जस वर्णन ना कीयौ तब यह वचन सुनिकें सूरदासजी बोले जा मैंतो सब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकोही जसवर्णन कीयो है कछून्यारौ देखूं तौ न्यारौ कहूं पारि तेरे साथ कहत हौं या भांति कहिकें सूरदासजीने एक पद कह्यो ॥ सो पद—

राग बिहागरौ—भरो सो दृढ इन चरणनकेरौ ॥ श्रीवल्लभनखचन्द्रछटाबिनु सब जगमांझि अन्धेरौ ॥ ॥ १ ॥ साधन और नहीं या कलिमें जासोंहोतनिबेरौ ॥ सूर कहा कहि दुबिधिआंधिरौ बिनामोलकोंचेरो ॥ २ ॥

यह पद कह्यो पाछें सूरदासजीकौं मूर्छा आई तब श्रीगुसांईजी कहैं जो सूरदासजी चित्तकी वृत्ति कहां है तब सूरदासजीनें एक पद और कह्यौ ॥ सो पद—

राग बिहागरो—बलिबलिबलिहौ कुमर राधिका नंदसुवनजासों रतिमानी ॥ वे अति चतुर तुम चतुर सिरोमन प्रीतिकरी कैसें होत है छानी ॥ १ ॥ वे जुधरततन कनक

पीतपट सो तो सब तेरी गति ठानी ॥ ते पुनि श्यामसहेज वे शोभा अंबर मिस अपने उरआनी ॥ २ ॥ पुलिकित अंग अबहीह्वै आयौ निरखि देखि निज देह सियानी ॥ सूरसुजान सखीके बूझे प्रेम प्रकाश भयौ विहसानी ॥ ३ ॥

यह पद कह्यौ इतनौं करिकें सूरदासजीको चित्त श्रीठाकुरजीको श्रीमुखतामें करुणारसकें भरे नेत्र देखे तब श्रीगुसांईजीने पूछौ जो सूरदासजी नेत्रकी वृत्ति कहां है तब सूरदाजीने एक पद और कह्यौ ॥ सो पद-

राग बिहागरो--खंजन नैनरूपरसमाते ॥ अतिसै चारु चपल अनियारे पल हिंजरा न समाते ॥ चलि चलि जात निकट श्रवणनके उलटिपुलटिताठंकफंदाते ॥ सूरदासअंजल गणअटके नातर अब उडि जाते ॥ १ ॥

इतनों कहतही सूरदासजीने या शरीरको त्याग कीयो सो भगवल्लीलामें प्राप्तभये पाछें श्रीगुसांईजी सब सेवकनसहित श्रीगोवर्द्धन आये ताते सूरदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं सो इनकी वार्ताको पार नाहीं ताते इनकी वार्ता कहांताई लिखिये ॥ प्र० ॥ ६ ॥ वै० ॥ ८८ ॥

परमानन्ददास कन्नौजिया ब्राह्मण ति०

सो परमानंददासजी परमभगवल्लीला मध्यपाती श्रीठाकुरजीके परमसखा हैं सो जब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप भूतलपर प्रगट भये तब श्रीगोवर्द्धन नाथजीकी आज्ञाते दैवी जीवनके उद्धारार्थ और तैसई श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकों श्रीठाकुरजीकों परकार सब प्रगट भयौ और आप श्रीगोवर्द्धन पर्वतमें प्रगट भयौ सो गोपालदासजी वल्लभाख्यान गाये हैं जो अनेक जीव कृपा करे "वादेशांतरपरवेश" ताते परमानंददासजीकौ जन्म कन्नौजमें हैं कन्नौजिया ब्राह्मणके घर भयौ सोवे परमानंददासजी बहुत योग्यभये और कविभये भगवत्कृपाके पात्र भयेकीर्तन बहुत आछौ गावते ताते परमानंददासजीके संगसमाज बहुत रहतो आप स्वामीकहावते आपसेवक करते सोभगवदिच्छाते एक समय परमानंददासजी कन्नोजते आप प्रयागकों आये सो प्रयागमें उतरे सो वहां कीर्तन बहुत आछे गावते ताते बहुत लोग कीर्तन सुनिवेकों आवते और अडेलते कार्यार्थ लोग बहुत आवते सो इनके कीर्तन सुनिकें पार अडेलमें जाय कहते जो परमानंददासकी इहां प्रयागमें आये हैं सो कीर्तन बहुत आछें गावत है सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक जल घरिया कपूरछत्री सो उनके रागउपर बहुत आसक्ति परि वे अवकाश नाहीं पावें जो परमानंद

दासजीके कीर्तन सुनिवेकूं आवे सेवामें अवकाश नाहीं पावें जो भागजायसकें सो एक दिन एक वैष्णव भागते अडेलमें आयौ सो वाने कह्यौ जो आज एकादशी है सो परमानंद-दासजी आज जागरनकरेंगे सो यह सुनिकें वा जलघरि-यानें अपनें मनमें विचार्यो जो आज परमानंदजीकें कीर्तन सुनिवेकों चलनों सो वे छत्री कपूर जलघरिया अपनी सेवासों पहुंचकें रात्रिकों अपने घर आये सो घर आयकें अपने मनमें विचार कीयौ जो या बेर नावतौ मिलेगी नाहीं ताते कहा कर्तव्य परि वे पेरवेमें भले निपुन हुते सो मनमें विचारी जो पेरकें पारजैये पाछें अपने घरते चले सो श्रीयमुनाजीके तीरउपर आयठाडे भये तब पर्दनी-पहरकें वस्त्र सब मांथेसों बांधिकें श्रीयमुनाजीमें पैरकें प्रयाग आये पाछें वस्त्र पहरकें जाठौर परमानंद स्वामी उतरे हुते तहां आये सो इनको कछू मिलापतौ परमानंदस्वामीसों हुतौ नाहीं जहां और सब जने बैठे हुते तहाँ एऊजाय बैठे परि एउ श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक हैं सो सब कोऊ जानत हुते ताते सबननें इनकों आदर करकें बैठायो सो ये बैठे ता पाछें परमानंदस्वामीनें कीर्तनको प्रारंभ कीयौ सोपरमानंदस्वामीनें विरहके पदगायै सोविरहके पद काहेको गाये सो प्रथम इनको स्वरूप कहि आये है कही जो यह

लीला मध्यायाती श्रीठाकुरजीके परमानंदस्वामी परमसखा हैं सो उहांसो बिछुरे और इहांतो अबही श्रीठाकुरजीको दर्शन नाहीं भयो और श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको दर्शन अब होयगो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके मार्गको यह सिद्धांत है जो भगवदीयको संग होयतो श्रीठाकुरजी कृपाकरें ताहीके लिये श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने परमानंदस्वामीके ऊपर अनुग्रह करिकें अपने कृपापात्र भगवदीयके अंतःकरणनमें प्रेरनाकारिकें परमानंदस्वामी ये इहां पठाये सो ये श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक कैसे हैं जो जिनको श्रीठाकुरजी एकक्षनहूं नाहीं छोडत इनको संगही रहत है काहेतें सूरदासजी गाए है "भक्तिविरह करतकरुणामय डोलत पाछें २ " और जगन्नाथजोसीकीहु वार्तामें लिख्यौ है जो जब रजपूतनें तरवार चलाई तब श्रीठाकुरजीनें हाथ पकर्‍यौ ताते श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवकनके सदा श्रीठाकुरजी निकटही रहत है ताते परमानंदस्वामीने विरहके पद गाये सो पद–

राग बिहागरौ–ब्रजके बिरही लोग बिचारे ॥ बिन गोपाल ठगेसे ठाढे अति दुर्बल तनहारे ॥ १ ॥ मात जसोदा पंथ निहारत निरखत सांझ सकारे ॥ जो कोई कान्ह कान्ह कहि बोलत अंखियन बहुत पनारे ॥२॥ यह

मथुरा काजरकी रेखा जे निकसेते कारे ॥ परमानन्द स्वामी बिनु ऐसे जैसे चन्दा विनु तारे ॥ ३ ॥ और पद गायौ सो पद—

राग बिहागरो--सब गोकुल गोपाल उपासी ॥ जो गाहक साधनके उधौ सो सब बचन ईस पुरकासी ॥ १ ॥ जद्यपि हरिहम तजी अनाथ करि अब छांडत क्यों रति-जासी ॥ अपनी सीतलता तहां छोडत जद्यपि बिधुराह है ग्रासी ॥ २ ॥ किंह अपराध जोग लिखि पठयौ प्रेम भज-नते करत उदासी ॥ परमानन्द अंसीको बिरहन मांगें मुक्ति पुनरासी ॥ ३ ॥

राग कान्हरो—कौन रसिक है इन बातनकौ ॥ नंद नंदन विन कासों कहियै सुनिरी सखी मेरे दुखिया मनको ॥ १ ॥ कहावे यमुना पुलिन मनोहर कहा वह चन्द सरद रातिकौ ॥ कहावे मंद सुगंध अमल रस कहावे षट् पद जल जातनकौ ॥ २ ॥ कुहावे सेज पौढिबो बनकौ फूल बिछोना मृदुपातनकौ ॥ कहावे दरस परस परमानंदकोमल-तन कोमल गातकौ ॥ ३ ॥

राग कान्हरो—माईको मिलवै नंदकिसोरे ॥ एक बारको नैन दिखावें मेरे मनको चोरे ॥ १ ॥ जागतजा मगन तनहीं खूंटत क्यों पाऊंगी भोरे ॥ सुनरी सखी अब कैसें

जीजै सुन तमचर खगरोरे ॥ २ ॥ जो यह प्रीति सत्य अंतरगति जिन काहू बन होरे ॥ परमानंद प्रभू आन मिलेंगे सखी सीस जिन ढोरे ॥ ३ ॥

इत्यादिकपद विरहके ऐसे परमानंद स्वामीने सगरी राति गाये पाछिली घडी चारि रात्र रही तब जो जो जागरनमें आये हुते सो सब अपने घरकों गये तैसेंई श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक एक जलघरिया कपूरहूं परमानंद स्वामीसों जैसी कृष्ण स्मरण कहिकें चले और परमानंद स्वामीके कीर्तन सुनिकें बहुत प्रसन्न भये और परमानंद स्वामीसों कह्यौ जो जैसे हमने सुने हुते ताते अधिक देखे तुम परम भगवद् अनुग्रह पूरण होये जल घरिया क्षत्री कपूर श्रीमहाप्रभूनके परम भगवदीय हैं ये जो चलि आये सो परमानंद स्वामीके ऊपर अनुग्रह करिवेकों आये हैं नातर भगवदीय काहेकों काहूके घर जाय और यह ऊपर काहे आये हैं जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके निकटही रहत हैं सो याको हेत यह जो निकट रहत हैं तो इन जलघरिया क्षत्री कपूरकी गोदमें बैठिकें श्रीनवनीत प्रियाजीनें परमानंदस्वामीके पद सुने जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके मार्गकी मर्यादा है जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके अनुग्रह बिना श्रीठाकुरजी कृपा न करे सो उन जलघरिया छत्री कपूर ऊपर श्रीआचार्यजी

महाप्रभूनको परम अनुग्रह है ताते श्रीनवनीतप्रियाजी इनकी गोदमें बैठिके परमानंदस्वामीके पद काहेको सुनने पडे सो ताकोहेत यह जो भगवदीय परमानंदस्वामीके ऊपर श्रीनवनीतप्रियाजी अनुग्रहकरिवेकों आप पधारे हैं तातें सुनें सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक जलघरिया क्षत्री परमानंदस्वामीसों जैसी कृष्ण करिके चले सो श्रीयमुनाजीके ऊपर आये सो वहां आयके विचार कीयौ जो नावकी बाट देखै तो अवार होयगी और सेवा छूटेगी और श्रीआचार्यजी महाप्रभूभी खीजैंगे ताते जैसे पैरके आये हुते तैसेंही चले सो पैरके पार गये सो पार आवतही स्नान करिकें अपनी सेवामें तत्पर भये पाछें वहां प्रागमें परमानंदस्वामीकी रात्रिके जागरनके श्रीमतिसों आंखिलगी निद्रा आई सो इतनेमें स्वप्न आयौ सो स्वप्नमें देखे जो जैसे रात्रिके जागरनमें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक जलघरिया क्षत्री बैठे हैं और उनकी गोदमें श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन भये और स्वप्नमें श्रीनवनीतप्रियाजी परमानंदस्वामीसों कहैं और परमानंदस्वामीकी निद्रा खुली सो वा श्रीमुखको कोऊ सौंदर्य कोटिकंदर्पलावण्य परमानंद स्वामीने देख्यौ सो स्वप्नमें तो हृदयमें धारिलीयौ और मनमें चटपटी लगी सो यह दर्शन फेरि कब होयगो तब यह मनमें विचार्‍यौ जो यह दर्शन उन

श्रीआचार्यजी महाप्रभूके सेवक क्षत्री जलघरिया विना न होयगो ताते होयतो उनके पास जैये जो उनसों मिले तब कार्य सिद्धि होय ऐसो परमानंदस्वामीने अपने मनमें विचार कीयो सो ततकाल प्रागते अडेलकूं चले सो श्रीयमुनाजीके तीर ऊपर आय ठाडे भये सो प्रातःकालको समय भयौ सो प्रथम नाव चली तापर बैठिकें पार उतरे तब आगें जायकें देखें तो श्रीआचार्यजी महाप्रभूजी स्नान संध्यावंदन करत हैं सो परमानंदस्वामीकों श्रीमहाप्रभूजीको कैसो दर्शन भयौ साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम श्रीकृष्णचंद्रसो श्रीगुसाईंजी वल्लभाष्टकमें लिख्यो है "सोवस्तुतःकृष्णएवच" ऐसो दर्शन भयौ जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक जलघरिया क्षत्रीकपूरकी गोदमें श्रीठाकुरजी काहेको बैठे यह कारण जिनके साथ ऐसे प्रभू विराजत हैं पर परमानंदस्वामीके मनमें यह जो क्षत्री कपूर मिले तौ आछी सो काहेते जो जिनके साथे ऐसे प्रभू और जिनके दर्शनते श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों दर्शन भयौ ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने अपने श्रीमुखसों कह्यौ जो परमानंद कछू भगवदीय जस वर्णन करि ॥ तब परमानंद स्वामीनें बिरहके पद गाये ॥ सो पद–

राग सारंग–कोनबेरभई चलेरीगोपाले ॥ होंननसारगई-

हौंन्योते वारवार बोलत ब्रजबोले ॥ १ ॥ तेरौतनको रूप कहां गयौ भामिन अरु मुखकमलसुखाय रह्यौ ॥ सब सौभाग्य गयौ हरिके संग हृदयसों कमल बिरहदह्यौ ॥२॥ को बोलेकोनैनउघारे कोप्रतिउत्तरदेहि विकलमन ॥ जो सर्वस्वअक्रूर चुरायौ परमानंदस्वामीजीवनधन ॥ ३ ॥

राग सारंग–जियकी साधन जियहीरहीरी ॥ बहुरि गोपाल देखि नाहीं पाए बिलपतकुञ्जअहीरी ॥ १ ॥ एक दिनसो जसमीप यह मारग वेचन जातदहीरी ॥ प्रीतके लिये दानमिस मोहन मेरी बाँहगहीरी ॥ २ ॥ बिन देखें घडी जातकल्पसम विरहाअनलदहीरी ॥ परमानंद स्वामी बिन दर्शन नैनननींदबहीरी ॥ ३ ॥

राग संगम–वह बात कमलदलनैननकी ॥ वारवार सुधि आवत रजनी बहु दुरिदेनी सेनी सेनकी ॥ १ ॥ वह लीला वह रास सरदको गोरजरजनी आवनि ॥ अरुवहऊचीटेरम- नोहर मिसकरिमोहसुनावनि ॥ २ ॥ वसन कुञ्जमें रास खिलायो विथा गमाई मनकी ॥ परमानंदप्रभूसों क्योंजीवे जो पोखीमृदुवैनकी ॥ ३ ॥

या भांति परमानंदस्वामीनें विरहकेपद गाये सो सुनिके परमानंदस्वामीसों कह्यौ जो कछू बाललीला वर्णन करि तब परमानंदस्वामीने कह्यौ जो महाराज मैं कछू समझत

नाहीं तब श्रीमहाप्रभूननें कह्यौ जो स्नान करि आउ हम तोकों समझावेंगे तब परमानंदस्वामीनें श्रीमहाप्रभूसों पूछो जो महाराज आपको सेवकविरक्त कहांहै तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो कछू टहलकरत होयगो तब परमानंदस्वामी आगे जायकें देखें तो यमुनाजलकी गागर लैकें वह कपूर छत्री आवत हैं तब निकट आये सो साम्है मिले सो उनको देखके परमानंदस्वामी बहुत प्रसन्न भये और परमानंदस्वामीनें उनको नमस्कारकरी औ कह्यौ जो रात्रिको जागरनमें आप पधारे हुते सो श्रीठाकुरजीनें आपकी गोदमें बैठिके मेरें कीर्तन सुने सो आपकी कृपाते श्रीठाकुरजीने मोसों कह्यौ जो मैं श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक जल घरियाक्षत्रीकी गोदमें बैठिकें तेरे कीर्तन सुने हैं और आपकी कृपाते मेरो भाग्य सिद्ध भयो है सो आवतही तुम्हारी कृपाते मोकों दर्शनभयौ इतनी बात सुनिके उन जलघरियाने कह्यौ जो ऐसे मति कहौ जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू सुनेंगे तो खीजेंगे सो सेवा छोडके क्यों गये ताते यह बात मति कहो तब इतनी सुनिके परमानंदस्वामीकों आश्चर्य भयो और कह्यौ जो ए धन्य हैं जिन ऊपर श्रीठाकुरजीकों ऐसो अनुग्रह है और ये अपनों स्वरूप छिपावत हैं पाछें परमानंद स्वामीवतो स्नानको गये और जलघरिया जलकी

गागर लेके मंदिरमें गयौ पाछें परमानंदस्वामी श्रीयमुनाजीमें स्नान करिकें तत्काल आप श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे आय ठाडे भये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यौ जो परमानंदस्वामी आगे आऊ बैठो तब परमानंदस्वामी आप आगे आय बैठे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने परमानंदस्वामीको नाम सुनायौ पाछें मंदिरमें पधारकें श्रीनवनीतप्रियाजीके सन्निधान परमानंदस्वामीकों ब्रह्मसंबंध करवायौ पाछें अनुग्रह करिकें परमानंदस्वामीकों अनुक्रमणिका सुनाई काहेते जो प्रथम परमानंदस्वामीसों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें अपनें श्रीमुखसों कह्यौ जो भगवद्यश वर्णन करि सो परमानंदस्वामीनें विरहको पद गायो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो परमानंदस्वामी बाललीला गाउ तब परमानंदस्वामीने कह्यौ जो राजमें कछू समझत नाहीं सो परमानंदस्वामीने काहेते कह्यौ जो ऊपर कहि आये हैं जो ये श्रीठाकुरजीसो बिछुरे हैं सो विछुरेके दुःखकी तौ स्फुर्ति रही और संयोग जो सुख भयौ ताको विस्मरन भयौ जो काहेते जो सबलीला विशिष्ट पूरणपुरुषोत्तमतौ श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों घर पधारे हैं सो परमानंददासकों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें अनुक्रमणिका सुनाई तब सब लीलाकी स्फुर्ति गई और अनुक्रमणिका सुनाई ताको कारण कहा जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूको नाम

है " श्रीभागवतपीयूषसमुद्रमथनक्षमः " सो श्रीभागवतको श्रीगुसांईजी अमृतको समुद्रकारिकें वर्णन किये हैं सो अनुक्रमणिकाद्वारा श्रीभागवतरूपी समुद्र श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें परमानंदस्वामीके हृदयमें धरचौ तातेवाणीतो सब अष्टकाव्यकी समानहै और ये दोऊ परमानंदस्वामी और सूरदासजी सागरभये सो याते जो श्रीभागवतरूपी अमृतसागरको स्वरूप इनके हृदयमें श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें धरचौ सो काहेते जो सबकोऊ सूरसागर और परमानंदसागर कहते अब परमानंददाससो श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीमुखसों कहै जो बाललीला वर्णन करि सो परमानंदजीने ततकाल बाललीलाके पद करिकें श्रीनवनीतप्रियाजीके सन्निधानगाये ॥ ॥ सो पद–

रागसांमरी--माईरीकमल नैनश्यामसुन्दरझूलतहैंपलना ॥ बाललीलागावतं सबगोकुलके ललना ॥ १ ॥ अरुणतरुणकमलनखमनिजसजोती ॥ कुंचितकचमकराकृत लटकतगजमोती ॥ २ ॥ अंगूठागहिकमलपानमेलतमुखमाहीं ॥ अपनों प्रतिबिम्बदेखिपुनिपुनिमुसिकाहीं ॥ ३ ॥ जसुमतिके पुन्यपुञ्जवारवारलाले ॥ परमानंदस्वमोगोपालसुतसनेहपाले ॥ ४ ॥

यह पदसुनिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्नभये फेरि और पद गायौ ॥ सो पद–

राग बिलावल—जसोधातेरेभाग्यकीकही न जाय ॥ जोमूरतिब्रह्मादिकदुर्ल्लभसो प्रगटे हैं आय ॥ १ ॥ शिवनारदसनकादिकमहामुनिमिलवेकरतउपाय ॥ तेनंदलाल धूरधूसरवपु रह गोदलिपटाय ॥ २ ॥ रतनजडितपोढाय पालने वदन देख मुसिकाई ॥ झूलौमेरेलालबलिहारीपरमानंदजसगाई ॥ ३ ॥

राग बिलावल—"मणिमय आंगन नन्दके खेलत दोऊ भैया" सो ऐसें बाललीलाके पद परमानंददासने गाय सो सुनिकें श्रीआचार्यजी बहुत प्रसन्नभये सो परमानंददासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके पास है सो परमानंददासकों आपने कीर्तनकी सेवा दीनी सो परमानंददासजी श्रीनवनीतप्रियाजीको नित्य नये पद करिकें भाँति भाँति के सुनावते तब अनोसर होतो तब परमानंददासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगें पद कीर्तन करे श्रीआचार्यजी महाप्रभूनित्य कथा कहते सो परमानंददासजी नित्य सुनते सो ताही प्रसंगके कीर्तन करिकें परमानंददासजी सुनावते सो एक दिन परमानंददासजीनें श्रीठाकुरजीके चरणार्बिंदको महातम सुन्यौ सो चरणार्बिंदके महात्मको कीर्तन करि श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको सुनायो सुनिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये ॥ सो पद—

राग कान्हरौ—चरण कमल वंदौ जगदीश गोधनके संग धाए ॥ जे पदकमल धूरि लपटाने कारि गहि गोपीनके उर लाए ॥ १ ॥

यह पद सम्पूरण करिके परमानंददासजीनें गायौ और श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके स्वरूपको और प्रार्थनाको पद गायौ ॥ सो पद—

राग कान्हरौ—"यह मांगों गोपीजनवल्लभ" ॥ यह परमानंदस्वामीने सम्पूर्ण करिकें गायौ सो सुनिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू अपने मनमें जाने जो यह मिसकरके परमानंददासजी या पदकों सुनायकें ब्रजके दर्शनकी प्रार्थना कीनी है ताते ब्रजकों अवश्य चलनों ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

श्रीआचार्यजी महाप्रभू यह विचार करें जों ब्रजकों पधारवेकों उद्यमकीयो सो दामोदरदास हरिसानी-कृष्णदास मेघन परमानंददासजी और यादवदास हलवाई तथा रसोईकी सामग्री संगलेकें चले और सब वैष्णव संगले आप आचार्यजी महाप्रभू ब्रजको पधारे सो ब्रजको आवत परमानंददासको गाम कन्नौज आयो तब परमानंददाने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों वीनती कीनी जो महाराज मेरे घर पधारियें आपके अनुग्रहते मेरो भाग्य सिधि भयो है अब मेरो घरहू पावन करिये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू आप अंतरयामी कृपानि-

धान भक्तमनोरथपूरक आप कृपा करिकें पधारें सो परमानंददासके घर आछी भांतिसों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो पाछें भोग सरायकें आप प्रसाद लीयौ पाछें आप गादीतकियानके ऊपर बिराज तब परमानंददाससों कह्यौ जो कछू भगवद्यशगावौ ॥ तब परमानंददासने मनमें बिचारी जो या समय श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको मन तो ब्रजमें श्रीगोवर्द्धननाथजीके पासहै ताते विरहके पद गाऊं सो विरहको पद ऐसो गायो जानें छिनहूं कलप समान जाय ॥ सो पद—

राग सोरठा—हरि तेरी लीलाकी सुधि आवै ॥ कमल नैन मनमोहनी मूरत मनमन चित्र बनावै ॥ १ ॥ एक वार जाय मिलत माया करि सो कैसे बिसरावै ॥ मुख मुसिक्यान वंक अविलोकन चाल मनोहर भावै ॥ २ ॥ कबहुक निवड तिमर आलिंगन कबहुकपिक सुरगावै ॥ कबहुक सभ्रम क्कासि २ कहि संगहीन उठि धावै ॥ ३ ॥ कबहुक नैन मूंदि अंतरगति मणिमालापहरावै ॥ परमानंदश्याम ध्यान करि ऐसे बिरह गवावै ॥ ४ ॥

यह पद परमानंददासने गायौ सो सुनिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकों मूर्छा आई सो जा लीलाको पद परमानंददासनें गायौ ता लीलाविषै श्रीआचार्यजी महाप्रभू मान भये सो

देहानुसंधान न रह्यौ सो तीन दिनलों श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकों मूर्छा रही सो सबरे सेवक दामोदरदास हरसानी प्रभृति श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके दर्शन करे सो वैसेही बैठे रहे चतुर्थ दिनके प्रातःकाल श्रीआचार्यजी महाप्रभू सावधान भये तब सब वैष्णव प्रसन्न भये तब परमानंददासजी मनमें डरपै जो फेरि ऐसो पद न गाऊ फेरि सूधे पद गाए ॥ सो पद–

राग बिभाग–माईरीहोंआनंदगुनगाऊं ॥ गोकुलकी चिंतामणिमाधौ जो मांगो सो पाऊं ॥१॥ अबते कमलनैन ब्रज आये सकल संपदा बाढी ॥ नंदरायके द्वारे देखौ अष्ट महासिद्धिठाढी ॥ २ ॥ फूले फले सदा वृन्दावन कामधेनुदुह्दिजै ॥ मारगमेघइंद्रवरषामें कृष्ण कृपा सुख लीजै ॥ ३ ॥ कहत जसोधा सखियनआगें हरि उत्तकर्षजनावै ॥ परमानंददास कोठाकुर मुरली मनोहर भावै ॥ ४ ॥ और हू पद गायौ ॥ सो पद–

राग गौरी--"विमलजस बृन्दावनके चंद्रको" ॥ यह पद संपूर्ण करिके गायौ फेरि और गायौ--

राग सारंग–"चलिरी नंदगांव जायवसियै" ॥ यह पद संपूर्ण करिकें गायौ सो पदमें यह कह्यौ जो चलरी नंदगांव जायबसियै सो श्रीमहाप्रभूजी सुनिके ब्रजकों पधारे सो प्रथम

श्रीगोकुल पधारे सो श्रीगोकुलआवतही श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीयमुनाजीके तीर ऊपर छोंकरके नीचे बैठकमें ताहां श्रीआचार्यजी महाप्रभू बिराजै और एक बैठक श्रीद्वारिकानाथजीके मंदिरके पास है सो भीतरकी बैठक है सो रात्रिके विश्राम तथा रसोईकी ठौर है उहां श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको घर हुतो जब आप श्रीगोकुल पधारते तब उहांई उतरते सो यह भीतरकी बैठक है पाछें सब वैष्णवनने श्रीयमुनाजी स्नान कीयै और परमानंददासजीहू श्रीयमुनाजीको जस वर्णन कीयै ॥ सो पद—

राग रामकली--श्रीयमुनाजीयहप्रसादहोंपाऊं ॥ तिहारे-निकटरहोंनिसवासर रामकृष्णगुनगाऊं ॥ १ ॥ मंजन बिमल पावनजलचिंताकुलखबहाऊं ॥ तिहारीकृपाभानकी तनयाहारिपदप्रीतबढाऊं ॥ २ ॥ बिनतीकरौयहीवरमांगौ अधमसंगविसराऊं ॥ परमानंददास फलदातामगनगोपाल-लडाऊं ॥ ३ ॥

राग रामकी—"श्रीयमुनाजी दीनजान मोहिदीजै" सो ऐसे पद संपूरणकारिकें श्रीयमुनाजीके परमानंददासजीनें बहुत गाये श्रीआचार्यजीके आगें तीर विषें गाये ता उपरांत श्रीमहाप्रभूजीनें परमानंददासकों बाललीलाविशिष्ट श्रीगोकुलके दर्शन करवायै सो परमानंददासको ऐसो दर्शन भयो

सो सब व्रजभक्त श्रीयमुनाजलकी गागरिभारि ले जात हैं और श्रीठाकुरजी मार्गमें खेलते हैं और व्रजभक्तिनकों जलकी गागरि उठाय देत हैं और उनकी कचुतोरे हैं या भांतिसों दर्शन भये सो तेसोई पद श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगें गायौ ॥ सोपद–

राग विलावल--जमुनाजल घर भरिचली चन्द्रावलि नारी ॥ मारग खेलत मिलि घनश्याम मुरारी ॥ १ ॥ नैन-नसों नैनामिले मन रह्यौ है लुभाई ॥ मोहनमूरत जियवसी पगधरो न जाई ॥ २ ॥ तबकी प्रीति प्रगटभई यह पहली भेंट ॥ परमानंद ऐसी मिली जैसी गुडमें चैंट ॥ ३ ॥

राग सारंग--लालनेकटेकोमेरीबैयां ॥ ओघटघाटचल्यौ नहीं जाई रपटतहों कालिन्दीमहियां ॥ १ ॥ यह पद संपूरणकरकें ऐसे पद गाये तापाछें परमानंददासनें बाललीलाके पद बहुत गाये और श्रीगोकुलकों स्वरूप जामें आवे ऐसो पदगायो ॥ सो पद–

राग कान्हरो--गावतगोपीमधुव्रजवानी ॥ जाके भुवनवसतत्रिभुवनपति राजानंदयसोधारानी ॥ १ ॥ गावत वेदभारतीगावत गावतनारदादिमुनिज्ञानी ॥ गावत गुन गंधर्व काल शिव गोकुलनाथ महातम जानी ॥ २ ॥ गावत चतुरानन जदुनायक गावत शेषसहस्र मुखरास ॥ मनक्रम वचन प्रीत

यह अंबुज अबगावत परमानंददास ॥ ३ ॥ यह पद परमानंददासनें गायौ पाछें और पद गायौ ॥ सो पद—

राग कान्हरौ--जसुमति गृह आवत गोपीजन ॥ वासरताप निवारन कारन बारंबार कमलमुख निरखन ॥ १ ॥ चाहतप करि देहरी उलंघम किलक किलकहुलसत मनहीं मन ॥ लोंन उतारि दोऊकरिवारी फेरवार तन मन धन ॥ २ ॥ लेन उठाय चापतहीयौ भारि प्रेम दिवस लागै दृग दरकन ॥ चली लै पलनापोढावनको अरुकसाय पोढे सुन्दर घन ॥ ३ ॥ देत असीस सकल गोपीजन विरजीवोलोगगजमुन ॥ परमानंददासको ठाकुर भक्त वत्सल भक्ति मन रंजन ॥ ४ ॥

राग हमीर--"चितै चितै चितवारचोरी भाई" ॥ यह पद सम्पूरण करकें गायौ सो ऐसे पद परमानंदस्वामीने बहुत गायौ ता पाछें श्रीगोकुलनाथजीके दर्शन करिकें परमानंददास श्रीगोकुल ऊपर बहुत आसक्ति भये सब ऐसे पद गायै जामें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी प्रार्थनाकीनी जो मोकों श्रीगोकुलमें आयकें चरणारबिंदके नीचें राखो नितप्रति प्रभूनके दर्शन करौ सर्व लीलाविशिष्ट पूरन पुरुषोत्तम हैं और यह पद गायौ ॥ सो पद--

राग कान्हरौ--यह मांगौजसोदानंदन ॥ चरणकमल-

मनमनमधुकर या छबिनैननपाऊं दर्शन ॥ १ ॥ चरणकमलकी सेवा दोऊतन राजत बिजैलतावनंदन ॥ वृषभानुनंदिनी-मेरेउरवसुप्रानजीवनघन ॥ २ ॥ ब्रजवसिवोजमुना अचिवो श्रीवल्लभको दास यही पन ॥ महाप्रसादपाऊं हरि गुनगाऊं परमानंददास जीवनधन ॥ ३ ॥

राग कान्हरौ--"जबलगिजमुनागायगोवर्द्धन तबलग गोकुलगांवगुसांई" ॥ यह पदसम्पूरण प्रार्थनाके पद गाये तब कितनेक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोकुलमें बिराजे ता पाछें सब वैष्णवनकौं संग लेकें श्रीगोवर्द्धन नाथजीके दर्शनको पधारे ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभू स्नान करिकें पर्वत ऊपर पधारे सो आवतही परमानंददासनें श्रीनाथजीकौं श्रीमुखदे-खिकें वहांके वहां रहै तब श्रीमहाप्रभूननें श्रीमुखसों कह्यो जो परमानंददास कछू भगवतलीला गावो तब परमानंददास अपने मनमें विचारे जो कहा गाऊं तब ऐसे विचारौ जो जामें प्रथम अवतारलीला पाछें चरणारविंदकी बंधना पाछें भगवद्वर्णनको स्वरूप ता पाछें बाल क्रीडा ता पाछें श्रीठा-कुरजीको महातम ऐसौ पद परमानंददासनें गायौ सो पद--

राग कान्हरौ--मोहननंदरायकुमार ॥ प्रगटब्रह्मनिकुंज नायक भक्तिहित अवतार ॥ १ ॥ प्रथमचरण सरोजबन्दो

श्यामघनगोपाल ॥ मकरकुंडलगंडमंडित चारुनैन विशाल ॥ २ ॥ बलिरामसहित विनोदलीला सेकरहेता दास परमानन्दप्रभूहरिनिगम बोलत नेत ॥ ३ ॥ और आसक्तिको पद गायौ—

राग पूरवी—मेरौमाईमाधौसोंमनलाग्यौ॥ मेरौ नैन औरकमलनैनकौ इकठौरौकरिमान्यौ ॥१॥ लोकवेदकी कानितजीमें न्योतीपनेआन्यौ ॥ एकगोविंदचरणके कारणवैर सबनसोंठान्यौ ॥२॥ अबको भिन्नहोयमेरीसजनीदूधमिल्यौजैसेपान्यौ॥ परमानंदमिली गिरधरसों है पहलीपहचान्यौ ॥ ३ ॥

ऐसे पद परमानन्ददासनें गाये ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभू सेनआरतीकर श्रीनाथजीकों पौढाये तब अनोसरकारि आप नीचे पधारे तब परमानन्ददासहू नीचे आय बैठे तब रामदासभीतरियानें परमानन्ददासको महाप्रसाद दूध पठायौ सो दूध परमानंददासजी लेवे लागे तब तातो लाग्यौ तब परमानंददासजीनें सीरोकरिकें लीयौ तापाछें रामदासनें पूछौ जो तुमका महाप्रसाद दूध पठायौहो सो आयौ तब परमानन्ददासने कही जो हां आयौ पारि दूध बहुत तातो हुतौ सो ऐसो दूध श्रीठाकुरजी कैसें आरोगतहें ताते दूधतो सुहातो भलौ तब रामदासनें कह्यौ जो बहुत आछौ आप भगवदीयहौ जैसे आज्ञाकरोगे तेसे करेंगे तब सकारें सब सेवक ध्यान

करिकें श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवामें तत्पर भये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू स्नानकरिकें श्रीगिरिराज ऊपर पधारे तब श्रीगोवर्द्धननाथजीकों जगाये तब वा समय परमानंददासजी जायकें श्रीठाकुरजीके जगायवेको पद गायौ ॥ सो पद–

रागविभास–जागोगोपाललाल मुखदेखोंतेरौ ॥ पाछें ग्रहकाजकरों नित्यनेममेरौ ॥ १ ॥ विगसत निसा अरुण दिसा उदित भयौ भानु ॥ गुंजत अंगपंकजवन जागियै भगवान ॥ २ ॥ द्वारेठांडेबंदीज नकरतहैं पुकार ॥ वंसप्रसंगगावतहरिलीलासार ॥ ३ ॥ परमानंदस्वामी दयाल जगतमंगलरूप॥ वेदपुराणपठतमहिमालीलाअनूप ॥ ४ ॥

यह पद परमानन्ददासने गायौ फिरि कलेऊको पदगायौ ॥ सो पद–

राग रामकली–पिछावारेह्वैग्वालंनटेर सुनायौ॥ कमल नैन प्यौरोकरतकलेऊ कोटन सुखलों आयौ ॥ १ ॥ अरी मैयागैया एकवनब्यायरही हैं बछरा उहांहींबसायौ ॥ मुरलीलईनलकुटियानलीनी अर बरायकोउसखानबुलायौ ॥ २ ॥ चक्रतभईनंदजूकी रानी सत्यआय किधोंअपनों पायौ ॥ फलो नअंगसमातरसबत्रिभुवनपति सिरछत्र जा छायौ ॥ मिल बैठे संकेत सघनवन विविधि भांति कीयौ

मन भायौ ॥ परमानंद सयानी ग्वालनि उलटि अंग गिरधर पिय प्थायौ ॥ ४ ॥

ऐसे पद परमानंददासनें गायौ ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीके मंगलाके दर्शन खुले तब परमानंददासनें श्रीगोवर्द्धननाथजीसों पूछौ जो आप तातौ दूध क्यों आरोगत है तब श्रीनाथजीनें कह्यौ जो ये हमको समर्पत है सो आरोगत है ता पाछें परमानंददासजी नित्यकीर्तनकरिकें सुनावते तब तासमय एक राजा दर्शनकों आयों सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शन करे तब फेरि आयकें रानीसों कही जो श्रीगोवर्द्धननाथजी ठाकुर बहुत सुंदर हैं ताते तूजायकें दर्शन करिआउ तब रानीनें कही जो जैसे हमारी रीतिहै सो होयतो दर्शन करें तब राजानें कही जो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शनमें काहेको परदा है तब रानीने मानी नहीं तबराजाने श्रीआचार्यजी महाप्रभूनसों वीनती कीनी जो महाराज मैंतो रानीसों बहुतकहतहों परि वह आवत नाहीं ताते आप कृपाकरिकें दर्शन करवावौ तौ वहकरै तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कही जो यहां लेआवो जो प्रथम वाकों एकांतमें दर्शन करवावेंगे तापाछें और लोगदर्शनकरेंगे तब राजा अपनी रानीकों लिवायके श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शन करवाये सो सबलोग सरकि गये तब रानीदर्शन करिवे लागी तब इतनमें

श्रीगोवर्द्धननाथजीने सिंहपौरके किवाडखोलदीये सो सब भीरदौरके रानीके ऊपरिपरी सो रानीके सब वस्त्र निकसपरे और बहुत लज्जितभई तब राजाने रानीसों कही जो मैंने तोसों पहिलेही कह्यौ हुतौ जो श्रीठाकुरजीके दर्शनमें काहेको परदा है ये ब्रजके ठाकुर हैं इननें काहूको परदा राख्यौ नाहीं तब वा समय परमानंददासजीने ॥ पद गायौ--

राग देवगंधार--"कोनियह खेलवेकी वानि ॥ मदनगोपाललालकाहूकी राखतनाहिनकानि" ॥ १ ॥ यह एकतुकपरमानंददासजीनें गाईहुती तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यौ जो परमानंददास ऐसे कहौ जो भली यह खेलवेकी वानि ॥ तब परमानंददासजीनें एसौही पद गायो ॥ सोपद--

राग देवगंधार--भलीयहखेलवेकीवानि ॥ मदनगोपाल लालकाहूकी नहिनराखतकानि ॥ १ ॥ अपनेहाथले देत हैं चनवर दूधदही घृतसानि ॥ जोवरजोतो आंखदिखावै परधनकोंदिनदान ॥ २ ॥ सुनिरी जसोधा सुतके करतब पहल मांटमथानि ॥ फोरिडारिदधिडारिआजरमेंकोनसहै नितहानि ॥ ३ ॥ ठाडीदेखतनंदजूकीरानी मूंदि कमल मुखहानि ॥ परमानंददासजानत हैं बोलि बूझिधों आनि ॥ ४ ॥

यह पद परमानंददासने गायौ ता पाछें कितेक पद गाये

जो जो लीला श्रीठाकुरजीने करी सो ता ता लीलाके पद परमानंददासनें गायौ सो एक दिन भगवदीय रामदासजो कुंभनदासजी सब वैष्णव मिलिकें परमानंदजी जहां रहत हुते तहां आयै सो भगवदीय आये जानिकें परमानंददासजी बहुत प्रसन्नभये जो आज मेरे घर भगवदीय आये हैं सो मेरो बडौ भाग्य है आज मेरो भाग्य सिद्धि भयौ है सो काहेते जो श्रीठाकुरजी भगवदीयके हृदयमें सदा सर्वदा विराजत हैं ताते भगवदीयकी कृपा होय तौ श्रीठाकुरजी अनुग्रह करें जो ये सब भगवदीय मेरे घर पधारे हैं सो प्रथम भगवदीयकी न्यौछावरिकरी चाहिये जो ऐसो तो कछू नाहीं जो न्यौछावरि करा जब यह बिचारकें परमानंद-दासने ऐसेही पद कह्यौ ॥ सो पद—

राग हमीर—आये मेरे नन्दनंदनके प्यारे ॥ मालातिलक मनोहर बानो त्रिभुवनके उजियारे ॥ १ ॥ प्रेम सहतवसत मन मोहन नेकहुटरतनटारे ॥ हृदय कमलके मध्य बिराजत श्रीव्रजराजदुलारे ॥ २ ॥ कहा जानोंकोनपुण्य प्रगट भयौ मेरे घर जो पधारे ॥ परमानंद प्रभुकरी न्योछावर बारबारहों वारे ॥ ३ ॥

यह पद भगवदीय भेटकरि अपने आयै भगवदीयनकों विदाकियै ता पाछें ऐसी रीतिसों परमानंददासनें श्रीनाथजीकी

भलीभांतिसो सेवाकीनी सो वे परमानंददासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं सो इनकी वार्ता कहांताईं लिखिये ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥ वैष्णव ॥ ८९ ॥

अथ कुंभनदास गोरवा तिनकी वार्ता

सो वे कुम्भनदासजी श्रीगोवर्द्धनपर्वतके पास जमुनावतौ गांव है तामें रहते सो जमुनावतौ नाम वागांवको काहेते है जो जमुनाजीको प्रवाह सारस्वतकल्पमें याके निकट हुतौ ताते जमुनावतौ नाम वा गांवको है तांमें कुम्भनदासजी रहते और परासोली चंदसरोवरके ऊपर उन कुम्भनदासजीकी धरती हुती सो वहां खेती करते सो कुम्भनदासजी श्रीगोवर्द्धननाथजीके परमसखा हुते और कृपापात्र हुते सो अबही श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रकट होयके श्रीमहाप्रभूजीको बुलावेंगे तब ये भगवदीय प्रसिद्ध होयंगे सो एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभू पृथिवीपरिक्रमा करत झारखंडमें श्रीगोवर्द्धननाथजीनें आज्ञा दीनी जो हम गोवर्द्धनमें तीन दमन हैं ॥ नागदमन इन्द्रदमन देवदमन तिनके मध्यमें हम देवदमन हैं सो मेरो नाम है ताते तुम आयके हमकों पधरावौ और हमारी सेवाको प्रकार प्रगट करौ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पृथ्वीपरिक्रमा उहांही राखिकें

वेग पधारे तब दामोदरदास हरसानी कृष्णदास मेघन गोविंदद्दुबे जगन्नाथजोसी रामदास ये पांच वैष्णव संघ हुते सो श्रीआचार्यजी महाप्रभू श्रीगोवर्द्धनकी तरहटी आयकें सद्दूपांडेके चोंतरा ऊपर बिराजे सो आगें श्रीगोवर्द्धधननाथजीके प्रागट्यमें यह सद्दूपांडे भवानीनरो श्री आचार्यजीमहाप्रभूनके सेवक भये हुते तिनकी श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा सोंपी और ब्रजवासी ब्रजमें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक बहुत भये और कुंभनदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी शरण आये सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें श्रीगोवर्द्धननाथजीको एक छोटोसो मंदिर सिद्धि करवायो तामें श्रीनाथजीकों पधराये और रामदास चोहानकों सेवाकी आज्ञा दीनी और सब ब्रजवासी लोग दूध दही माखन लावते सो श्रीगोवर्द्धननाथजी आरोगत हुते और रामदासकों भगवदिच्छातें जो आप प्राप्त होय सो भोग धरते और आप प्रसाद लेते और जे ब्रजवासी लोग श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक भये हुते तिनकों श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने आज्ञा दीनी जो यह मेरो सर्वस्व है सो तुम सब बातनसों यत्न राखियो और सेवामें तत्पर रहियो और कुंभनदासकों और सब सेवकनकों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें आज्ञा दीनी जो तुम देवदमनके दर्शन

किये विना महाप्रसाद मति लीजियो तब या भांतिसों आज्ञा करिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पृथ्वीपरिक्रमा झारखंडमें राखी हुती अब कुंभनदासजी नित्य श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको कृपाते श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शनकों आवते सों कुंभनदास कीर्तन बहुत नीके गावते जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कुंभनदासजीकों नाम सुनायो और ब्रह्म संबंध करवायौ तब कुंभनदासजी नित्य नये पद करिकें श्रीनाथजीको सुनावते और श्रीनाथजी कुंभनदासजीके घर पधारते और बहुत क्रीडा करते खेलत वार्ता करते और बहुत कृपा कुंभनदासजीके ऊपर करते अब रामदासजी श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा करन लागे सो एक समय मलेक्षको उपद्रव भयो सो यहां मानिकचंदपांडे सद्दूपांडे रामदासचौहान कुंभनदास सब मिलिक विचार किया जो यह मलेक्ष आयौ है सो यह धर्मका द्वेषी है सो कहा कर्तव्य है तब सबने कहा जा यामें कहा कर्तव्य कहा पूछनों अपनो बिचार्यौ कहा होत है ताते श्रीनाथजीको पूछा जो महाराज कहा करें तब श्रीनाथजीने आज्ञा दीनी जो हमको यहांते ले चलों हम यहांते उठेंगे तब सबननें पूछो जो महाराज कहां पधारोगे तब आपनें श्रीमुखसों कह्यौ जो टोडके घनेमें चलेंगे तब एक

भैसा मंगायौ तापर श्रीगोवर्द्धननाथजीको बैठाये तब एक ओरते तौ रामदास पकरें रहै और एक ओरते कुंभनदास पकरे रहै और सब सेवक संग चल जात हैं तहां घनेमें कांटे बहुत हुतें सो उहां कांटेनमें बैठे सो वस्त्र सबनके फटिगये और सरीरमें कांटे लगे दुःख बहुत पाया सो घनेमें एक तालाव हुतौ तहां रूखनको एक चौक है तहां बडरूख नीचे श्रीनाथजी बिराजे सो कछूक सामग्री संग्रह हुती सो रामदासने भोगधरि जलको करुआ भरिकें आगे धरिकें सब वैष्णव बैठे तब श्रीगोवर्द्धननाथजीनें कुंभनदाससों कह्यौ जो कुंभनदासजो कछू गावौ तब कुंभनदासजीतौ मनमें कुढरहे हुते तब एक पद नयो करिके गायो ॥ सो पद--

राग सारंग—भावत है तोय टोडको घनौ ॥ कांटे लगे गोखरू बूढे फटचौ जात यह तनौ ॥ १ ॥ सिहों कहा लोकटीकोडर यह कहा वानकबन्यौ ॥ कुंभनदासप्रभू तुम गोवर्द्धनधर वह कोन रांडढेडनीको जन्यौ ॥

यह पद कुंभनदासनें गायौ सो सुनिके श्रीनाथजी मुसिक्यायकें चुप करि रहे इतनेमें श्रीगोवर्द्धनते समाचार आये जो वह मलेक्षकी फोज आई हुती सो पाछी फिर-गई तब श्रीगोवर्द्धननाथजी पर्वत ऊपर मंदिरमें पधारे ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

अब श्रीनाथजी पर्वत ऊपर मंदिरमें पधारे सो व्रजके लोगनकों बहुत हर्ष भयौ सो धन्य देवदमन जो ऐसो उपद्रव आयो हुतौ सो इनके प्रतापते सब मिटि गयौ तब कुंभनदासजी प्रसन्न होयकें पद गाये सो पद श्रीगोवर्द्धननाथजीको सुनाये ॥

राग श्रीचर्चरी—"जयति जयति हरिदास सर्वधरनें" ॥ यह पद सम्पूरण करिकें गायौ पाछें और पद गाय ॥ सो पद—

राग सारंग—"कृष्णतंनतरयातीर" यह पद सम्पूरण करिकें कुंभनदासने गायौ पाछें नित्य ऐसे पद कुंभनदासजी देवदमनको सुनावते तब कुंभनदासजीके पद सब जगतमें प्रसिद्ध भये सो सब लोग इनके पद गावते तब इनको पद काहू कलामतने सीख्यौ सो फतेपुर सीकरीमें देशाधिपतिके आगें कुंभनदासजीको पद कीयो भयौ पद वा कलामतने गायौ सो सुनके देशाधिपतिको चित्त वा पदमें गडगयौ और माथौ धुनौ जो ऐसेहू महापुरुष व्है गये हैं जिनकों ऐसे दर्शन परमेश्वरके होत हैं तब वा कलाभतने कह्यौ जो अजी साहब अबहू हैं सो सुनिकें देशाधिपति बहुत प्रसन्न भयौ और वा कलामतसों कह्यौ जो वे कहां हैं तब वा कलामतनें कही जो श्रीगोवर्द्धनके पास जमुनावतौ गांव हैं तहां वे रहत

हैं तब देशाधिपतिने कही जो यहां बुलावौ हम उनसों मिलेंगे तब देशाधिपतिने मनुष्य और असवारी कुंभनदासके बुलायवेकों भेजे तब कुम्भनदासजी तो घर हुते परासोलीमें बैठे हुते सो मनुष्यनने उहां बतायदीये तब कुंभनदासजी घरतो हुते नाहीं पातसाहने यादकीये हो तब कुंभनदासने कही जो भैय्या मैं कछू देशाधिपतिको चाकरतौ नाहीं मेरो देशाधिपतिसों कहा काम है तब देशाधिपतिके मनुष्यननें कही जो बाबा हमतो काम कछू समझत नाहीं परिहमको देशाधिपतिको हुकम है जो कुम्भनदासकोंले आवो ताते यह पालकी है यह घोडाहै जापर चाहो तापर बैठिकें चलियै हमतो आये हैं सो आपको ले जायंगे तब कुंभनदासनें मनमें विचारकीयौ जो विनाजाये तौ निर्वाहनहोयगो सो कुम्भनदासजी तत्काल उहांते पनहिं पहिरके चले तब कुंभनदासजीकों जो लेवेको आये हुते तिनने कही जो बावासवारीमें बैठिये तब कुम्भनदासने कह्यौ जो भैय्या मैं तौ कबहूं बैठचौ नाहींपाछें ऐसेंही चले सो फतहपुर सीकरी आय पहुंचे सो देशाधिपतिके डेराहुते तहां गये तब मनुष्य-ननें देशाधिपतिसों कह्यौ जो कुंभनदासजी आये हैं तब देशाधिपतिनें कुंभनदाससों कही जो कुम्भनदासजी आवो बैठौ सो आय बैठे सों वह स्थल कैसोहै जामें जडावकी

रावटी तामें मोतीनकी झालरी लगी है ऐसो स्थल है तामें बैठे तब मनमें बहुत दुःखलाग्यौ और कह्यौ जो यासो तौ हमारे ब्रजके हींसनके रूख आछे हैं सो जिनहैं श्रीगोवर्द्धननाथजी खेलत हैं तब इतनेमें देशाधिपति बोल्यौ जो कुंभनदासजी तुमने बिसन पद बहुत कीये हैं सोमेने तुमको बुलायो है ताते तुम कछू बिसनपद गावो तब कुंभनदासजी तौ मनमें कुढे हुते जो विचारें कहागाऊं मेरीवाणीकेभक्ता तौ श्रीगोवर्द्धनधरहैं और कछू गाये बिना मेरौकाम चलेगौ नाहीं ताते ऐसो गाऊं जो कबहूं मेरो नाम न लेय काहेते जो याकेसंगते मेरे प्रभूछूट हैं ताते कछू कठौर बचनकहूं जो बुरोमानेगौं तो कहा करेगो तब यह मनमें आई "जो जांको मनमौहनसंगकरे एकोके सबसे नहीं सिरने जो जगवैरपरे" यह विचारिकें तासमय कुंभदासजीने एक नयौ पदकरिकें गायौ ॥ सो पद--

राग सारंग--भक्तनकौकहासीकरीकाम ॥ आवत जात पन्हैयाटूटीविसरगयोहरिनाम ॥ १ ॥ जाको मुखदेखे दुखलागै ताकोकरनपरीपरनाम ॥ कुंभनदासलालगिरधर दिन यह सब झूठौ धाम ॥ २ ॥

यह पद गायो सोदेशाधिपति अपने मनमें बहुतकट्यौ और कह्यौ जो इनको काहूबातकोलालच होय तो मेरो

जसगावें इनकोंतो अपने परमेश्वरसों सांचोस्नेहहै इतनों कहिकें देशाधिपतिनें कुंभनदासकों सीखदीनी तब कुंभनदासजी उहांतेचले सो मार्गमें आवन अतिक्लेश जो कब हों प्रभूनकों श्रीमुखदेखों सो ऐसो विचारके कुंभनदासजी आवत हैं ता समय पद गायौ ॥ सो पद--

राग धनाश्री--कबहूदेखहों इन नैननु॥ सुंदरश्याम मनोहरमूरत अंग अंगसुखदेननु ॥ १ ॥ वृन्दावन बिहारदिनदिनप्रतिगोपवृन्दसंगलैनंनु ॥ हंसिहंसि हरिखपतौवनपावन बांटिबांटिपयफेननु ॥ २ ॥ कुंभनदासकितेदिनवीते कियेरेणुसुखसेननु ॥ अब गिरिधरबिन निसऔरवासर मननरहत क्योंचेननु ॥ ३ ॥

यह पद मार्गमें गावत आये सो आयकें श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शनकियै और दोय दिनसो दर्शन नभये सो कुंभनदासजीकों दोयजुगकी बराबर बीते सो श्रीमुखदेखतेही सब दुःख विसरगयौ तब एकपदगायौ ॥ सोपद--

राग धनाश्री–नैनभरिदेखौंनंदकुमार ॥ तादिनतेसब भूलिगयौहों विसरचौपनपरवार ॥ १ ॥ दिनदेखेहोंविकल भयोहों अंगअंगसबहारि ॥ तातेसुधिहै सावरीमूरतिकी लोचनभरिभरिवार ॥ २ ॥ रूपरासपैमितनहीं मानोंकेसेमिसेलोकन्हाई ॥ कुंभनदासप्रभू गोवर्द्धनधरमिलियैबहुररीमाई ॥ ३ ॥

राग धनाश्री--हिलगनिकठिनहैयामनकी ॥ जाके लियै देखिमेरीसजनी लाजगईसबतनकी ॥ १ ॥ धर्मजाउ अरु-लोगहंसो सब अरुगावोकुलगारी ॥ सोकयोंरहैताहिबिनदेखे जो जाको हितकारी ॥ २ ॥ रसलुब्धकनिमखनछांडत ज्योंआधीनमृगगानौं ॥ कुंभदाससनेहपरम श्रीगोवर्द्धनध-रजानौ ॥ ३ ॥

ऐसेपद बहुत कुंभनदासजीनें गाये सो सुनिके श्रीनाथजी बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ "यह मोबिन रहत नाहीं" ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

और एकसमय राजामानसिंह सबठौरते दिग्विजयकरिकें अपनें देसकूं चले तब मनमेंविचारे जो बहुतदिनमें आये हैं ताते मथुरावृन्दावन होयकेंचलनों सो यह विचारकें आगरेते चले सो मथुराआये तब बिश्रांत स्नान करिकें श्रीकेसोराय-जीके दर्शन करिकें वृन्दावनचले सो उष्णकालके दिनहुते तब वृन्दावनके सब महंतननेजानी जो आज यहां राजामा-नसिंह दर्शनको आवेगो सो यह जानिके श्रीठाकुरजीकों आछे २ जरीके वागे बहुत आभरणपहराये पिछवाई चंदोवा सब जरीनके बांधें इतनेमें राजा मानसिंह दर्शनकों आयौ सौभीतारि मंदिरके आयकें श्रीठाकुरजीके दर्शनकीयै सो उष्ण-कालके दिन हुते सो बहुत गरमी पडे सो ता समय राजा

मानसिंह पै ठाडौ न रह्यौ गयौ सो ऐसे दर्शन चार पांच- जगह खडे हुते सोतहांसबठौर दर्शनकरि सब ठोरते बिदाहो- यकें अपनेडेरामें आये सो डेरा आयकें मनमेंविचारेजो अब- हीकूंचकरें सो वहांसो अस्वारहोयकें चले सो तीसरेपहर गोवर्द्धन गांवआये सो मानसीगंगाऊपर डेराकीयै सो तहां श्रीहरदेवजीके दर्शन कियै सो वहां वृन्दावनके महंतनने बडेठाठबनायेहैं तेसौंई यहां ठाठ बनायराख्यौ हुतौ सो राजा- मानसिंहतहांते दर्शनकरिकेचले तब काहूनेकही जो महाराज यहां श्रीगोवर्द्धननाथजी बहुत सुन्दरठाकुरहैं तहां आपदर्श- नकोंचलो तबराजा मानसिंहने कह्यौ जो यहां तो अवश्य चलनो ये ठाकुर सब ब्रजके राजा हैं ताते इनके दर्शनतो अवश्यकरने तब तहांते चले सो गोपालपुरगांव आये तब आयकेंपूछी जो दर्शनको कहा समय है तब काहूने कही जो उत्थापनके दर्शनतो होय चुके हैं अब भोगके दर्शन होयंगे तब यह सुनिकें राजामानसिंह श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शनकों गिरराजऊपर आये सो उष्णकालके दिन मार्गके श्रमित दूर- केचले आयेसो गरमीमें राजा बहुत व्याकुल भयोहुतो इतनेमें भोगके दर्शन खुले सो राजामानसिंहको मणिकोठामेंलेगयै तिनदिननमें श्रीनाथजीकीसेवा वैभवसोंहोतहुती बडो मंदिर- सिद्धि भयोहुतौ श्रीगोवर्द्धननाथजीके आगें गुलाबजलको

श्रृंगार भयोहुतो निजमंदिर मणिकोठा तिवारी सब जलम-यहोय रहे हुते सो तासमय राजामानसिंह दर्शनकोंगये हुते सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शन करिकें साष्टांगदंडवत कीनी और गरमीमें राजा व्याकुल भयोहुतो सो सीतलताईभई बडो चैनभयो और श्रीगोवर्द्धननाथजीको श्रीमुखदेखकें राजा बहुत प्रसन्नभयो और कह्यो जो साक्षात् पूरणब्रह्म श्रीकृष्ण वृन्दावनचन्द्र श्रीगोवर्द्धननाथजी हैं आगें श्रीभागवतमें सुन्यौ हुतौ सो आज देखे आजकोदिन है सो धन्य है और आज मेरौ बडोभाग्य है और मनमें कह्यो जो यह भोगको समय है सोतौ प्रभूनकी राजधानीको समय है सोवे प्रभू विराज हे आगे तालमृदंगबाजत हैं कीर्तन होतहै सो कुंभनदासजी ठाडे २ मणिकोठामें दर्शन करत हैं और कीर्तन गावत हैं सो राजा मानसिंहको मन वा पदमें गडगयोहुतौ तेसौई कोटिकंदर्पलावण्य स्वरूप और तेसौंई कीर्तनकुंभनदासजी करत हुते ॥ सो पद–

राग नट -रूपदेख नेना पल लागै नाहीं ॥ गोवर्द्धनके अंग अंगप्रतिनिरखिनेनमनरहततही ॥ १ ॥ कहा कहौकछू कहत न आवै चितचोरयोमांगवै दही ॥ कुंभनदास प्रभूके मिलनकी सुन्दर बात सखियनसों कही ॥ २ ॥

राग धनाश्री -आवतमोहनमनजुहरयौहो ॥ होंग्रह अपने-

सचुसोंबैठी निरखिवदनं अस्वराविसरचौहौ ॥ १ ॥ रूपनिधानरसिकनंदनंदननिरखिवदनधीरजनधरचौहौ ॥ कुंभनदासप्रभू गोवर्द्धनधर अंगअंगप्रेम पियूष भरचौ हौ ॥ २ ॥

ऐसे पद कुंभनदासजी गावत है इतनेमें राज भोगके दर्शनहोय चुके तब राजा मानसिंह दंडौत करिकें अपने डेरामें गयौ तब कुंभनदासजी संध्या आरतीके दर्शन करिकें अपनी सेवासों पहुंचकें अपने घरकों गये तब राजामानसिंह अपने डेरामें जायकें अपने पासके मनुष्य हुते तिनमें श्रीगोवर्द्धननाथजीके सिंगारका वार्ता करन लागे और कह्योजो यह श्रीगोवर्द्धननाथजीके आगें कौन गावत हुतो इनने ऐसे विसन पद गाये हैं जो कछू कहिवेमें नाहीं आवत तब काहूने कही जो महाराज एक ब्रजवासी है कुंभनदास नाम है सो आपने सुनेही होयंगे देशाधिपतिसों मिले हुते सो है तब राजामानसिंहने कही जो हमहू इनसों मिलेतौ आछौ तब राजामानसिंह सवारे उठे सो श्रीगिरिराजकी परिक्रमाको निकसे जो परासोली आये सो परासोलीमें कुंभनदासजी न्हायकें बैठे इतनेमें श्रीगोवर्द्धननाथजी पधारे श्रीमुखसों कहे जो कुंभनदासजी हों तो एक बात कहूंगो तब इतनेमें राजामानसिंह आयौ सो कुंभनदासजीको प्रणाम करिकें बैठो और श्रीनाथजीतौ उहांते दूरजाय ठाडे भये सो श्रीनाथजीतो एक

कुंभनदासजीको देखेहै और इनकों भतीजीकों देखेंहै तब कुंभनदासजीकी दृष्टी तौ श्रीनाथजीके संगहीगई सो श्रीनाथजी बैठेहैं तहां कुंभनदासजी देखवो करे तब भतीजी बोली जोबावा राजाबैठेहैं तब कुंभनदासजीने कही जोमें कहाकरूं जो बैठेहैं तो जाबात कहतहुते सो तो भाजिगये सो अब कहेंगे तब दूरते श्रीनाथजी कहैं जो कुंभनदासमें बातकहूंगो तब कुंभनदासजी प्रसन्नभयै और भतीजीसों कह्यौ जो अमुकी आरसी लाउ तिलककरों तब भतीजीने कही जोबावा आरसीतौ पडियापीगई तब राजानै कुंभनदासजीकी भती-जीसों जो अरीछोरी पडिया कहा पीगई तब वह कठौठीमें पानी लायकें कुम्भनदासजीके आगें धरचो तब कुम्भनदासजी वामें देखिकें तिलक करन लागै इतनेमें राजा मानसिंहनें अपनी सोने की आरसी कुंभनदासजीकें आगें धरी और कह्यौ जो बाबायामें देखिकें तिलक करिये तब कुंभनदासजी बोले जो अरे भैय्या याको हों कहा करूंगो हमारे तौ यहां छानिके घरहैं ताते कोऊ याके पाछें हमारो जीव लेयगो ताते हमें तौ यह नाहिं चाहियत है तब राजा मानसिंहने इनके आगें सोनेकी थैलीधरी तब कुंभनदासनें कह्यौ जो भैया हमको धनतौ चाहियै नाहीं हमारे तो यह खेती है ताको धन आवत है सो खातहैं तब राजा मानसिंहने कह्यौ जो

भलौ आपको गामहै ताको लिखौहै कारि देउ तब कुम्भदासनें कह्यौ जो भैया होतों ब्राह्मण नाहीं जो तेरौ उदक लेउ तब फेरि राजा मानसिंहनें कह्यौ जो बाबा कछू तो आज्ञा करौ तब कुम्भनदासनें कह्यौ जो हमारौ कह्यौ करोगे तब राजा मानसिंहनें हाथ जोर कह्यौ जो महाराज आप कहौगे सो करूंगो तब कुम्भदासनें कह्यौ जो फेरि मेरे पास तुम मत आईयौ तब राजा मानसिंहनें कह्यौ जो महाराज धन्य है यह मायाके भक्ततौ सगरी पृथ्वीमें फिरौ सो बहुत देखे परिभगवद्भक्ततौ एक एही देखे यह कहिकें राजा मानसिंह कुंभनदासकों दंडौत करिकें उठि चल्यो तब फेरि आयकें कुंभनदाससों श्रीनाथजीनें वह बात कही और बहुत प्रसन्न भयौ तब फेरि कुंभनदासजी श्रीगिरराजऊपर आयकें श्रीनाथजीकी सेवामें तत्पर भये ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

और एक समय कुंभनदासजीकों मिलिवेकों बृन्दावनके महंत हरिवंश भृत आये सो यह जानिकें आये सो महापुरुष है इनसों श्रीठाकुरजी बोलत हैं बातें करत हैं और काव्य इनकी सुनी सो कीर्तन बहुत सुन्दर कीये ताते ऐसे पद श्रीठाकुरजीके साक्षात्कार विना न होय यह जानिकें कुंभनदाससों मिलवै आयै सो कुंभनदाससों मिलिकें बहुत

प्रसन्न भये और कह्यौ जो कुंभनदासजी तुमने विसन पद बहुत कीयै सो हमनें आयकें सुने हैं और आपको पद श्रीस्वामिनीजीकौ नाहीं सुन्यौ ताते आप कोइ स्वामिनी-जीकौ पद सुनावौ तब कुंभनदासजीनें श्रीस्वामिनीजीकौ पद करिकें गायौ ॥ सो पद–

राग रामकली ॥ ताल चरचरी–कुमारिराधिकाकेतुव सकल सौभाग्यकीवादनपरकोटिसचंद्रवारौं ॥ खंजनकुरंगसत-कोटिजं घन ऊपर सिंहसतकोटि उपर न्योंछावर उतारौं मत्तसतकोटि चालिपर कुंभसतकोटि इन कुचनपारिवारि डारौं ॥ १ ॥ कीर दशकोटि दशननपरिकह्निवारौ पंककंदूरवहू-कसतकोटि अधरन ऊपर वारि रुचिर गर्भटारौ ॥ नागसत-कोटिवैनीऊपरकपोतसतकोटिकारिजुगलपर वारनेनाहिनकोऊ-लोकउपमाजुधारौ ॥ २ ॥ दासकुंभन स्वामिनी सुनख सिखअति अद्भुत सुठान कहालगि समारौ ॥ लाल गिरधर-कहत मोहितौ ह्लिलौ जीवह रूप छिनछिन निहारौ ॥ ३ ॥

यह पद कुंभनदासनें गायौ सो सुनिके महंत बहुतही रीझे और कहैं ॥ जो हमनें श्रीस्वामिनीजीके पद बहुत किये हैं परिवहां उपमादीनीहो और वारि फेरिडारी ताते कुंभनदासजी आप बडे महापुरुष हौं आपकी सराहना कहां तांई करियै वा महंतनें कुंभनदासकी बडी बडाई करी बहुत

रीझे ता पाछें वे महंत आदि सब कुंभनदासजीसों बिदा होयकें अपने घरगये ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥

और एक समय श्रीगुसांईजी श्रीगोकुलमें अपने घरते श्रीनवनीतप्रियाजीसों आज्ञा मांगिकें बिदेसाथ द्वारिकाकों पधारे सो श्रीगुसांईजी नाथजीद्वारि पधारे सो श्रीनाथजीको सेवासिंगार किये ता पाछें आपभोजनकरिकें गादीऊपर बिराजे तब सब सेवक दर्शनकों आये तब बात चलतमें कुंभनदासकी बातचली तबकाहू वैष्णवने कह्यौ जो महाराज कुंभनदासजीकों द्रव्यको बहुत संकोच है सात बेटाहू हैं और उपजततो एक खेतीकी है ताको धन आवत है तासों निरवाहकरत हैं सो यह बात श्रीगुसांईजीने अपन मनमें राखी वा पाछें उत्थापनकेसमय कुंभनदासजी दर्शनको आये तब श्रीगुसांईजी अपने श्रीमुखसों कहैं जो कुंभनदास हम श्रीद्वारिका रणछोडजीके दर्शनको पधारेंगे और बिदेसहू होयगो वैष्णवनें बहुतकरिकें लिख्यौ है ताते जो तुम संगचलोतो बिदेसमें भगवदीयकौ ग्रहकालबाधा न होय तब भगवदीयको काल व्यतीतहो जाय कछू जान्यौ न परे औ में सुन्यौहो जो कछू तुम्हारे द्रव्यको संकोच है सो उहां सिद्ध होयगो ताते सर्वथा तुमको चल्यौ चाहिये तब कुम्भनदासजीनें कही जो

आज्ञा इतनेमें दर्शनकौ समय भयो सो श्रीगुसांईजी आप स्नान करिकें श्रीनाथजीके मंदिरमें पधारे श्रीनाथजीकी सेवासों पहुंचिके श्रीनाथजीकौ पौढायकें बैठकमें पधारे और कुंभनदास जीकौ सीखदीनी जो कुम्भनदासजी तुम सेवासौ पहुंचिकें वेग आईयौ हम कालि आरती करिकें अपछरा-कुंड ऊपर जाय रहेंगे तब कुम्भनदासजी श्रीगुसाईजीकों दंडौत करिकें अपने घरकों आये सवारे सेवासों पहुंचकें श्रीनाथजीके दर्शन करिकें अपछराकुंड ऊपर आये और श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीसों सीखमांगिकें आप नीचे आये पाछें आप भोजनकीये और सब सेवकनकों महाप्रसाद लिवायौ ता पाछें समयें ताहीकौ महूर्तहुतौ सो श्रीगुसांई आप पर्वत नीचे आये सोई अपछराकुंड ऊपर आये सो तहां अपछराकुंड ऊपर डेरा करे हुते सब सेवक आगाऊ सो ठाडे हुते सो श्रीगुसांईजी डेरा पधारिकें पोढे इतनेमें सब सेवक सामान लेकें वेऊ आये सो कुम्भनदास उहां बैठिकें विचारत हुते कहिये जो कहिवेकी होय प्राननाथ बिछुरनकी विरियां जानत नाहिं न कोऊ यह विचार करत उत्थापनको समय भयौ तब आप गुसांईजी आप भीतर डेरामें जागे और कुम्भनदासजीकूं दर्शनकी सुधि आई सो वहां पुंछरीकी

ओर कोनेंमें जायकें बैठि कीर्तन गावत है और आखिनमेंते जलको प्रवाह बहतहो सो कुम्भनदासने एकपद गायो॥सो पद--

राग सारंग—केते है जुगरो बिन देखें ॥ तरुण किशोररसिक नंदनंदन कछूक उठति मुखरेखें ॥ १ ॥ वह वह शोभा वह कांति बदनकी कोटिकचंदविसेखें ॥ चितवन वह हास्य मनोहर वह नटवर वपुभेषें ॥ २ ॥ श्याम सुंदर संग मिलि खेलनकी आवत जिये अपेखें ॥ कुंभनदास लालगिरधर विन जीवन जन्म अलेखें ॥ ३ ॥

यह पद कुंभनदासनें गायौ सो श्रीगोसांईजी आप डेराके भीतरसुनों सो कुंभनदासजीकों कलेश श्रीगुसांईजीसो सह्यौ न गयौ सो श्रीगुसांईजी आप डेराके बाहर पधारें और श्रीमुखते कह्यौ जो कुंभनदास अब तुम बेगि जाउ तुम्हारा बिदेसहोय चुक्यौ और जो तुम्हारी अवस्थाहै एसो उनकी अवस्था है सो कैसें जानिये जो श्रीअक्काजीनें गज्जनधावनकों पानलेवेको पठायौ सोगज्जनकोंतों भगवद् आसक्ति देखें विना एकक्षणहू न रह्यौ जाय सो गज्जनधावन पानलेवेको बाहिर गये सोथोरीसी दूर गये और ज्वरचढि आयौ सो मूरछा खायकें गिरे और श्रीअक्काजीने श्रीनवनीतप्रियाजीकों भोग समर्प्यो तब श्रीनवनीतप्रियाजीनें गज्जनधावनको बोलन सुन्यौ तब श्रीनवनीतप्रियाजीनें अपने

श्रीमुखसों कह्यौ जो मेरो गज्जनधावन कहां है तब श्रीअक्काजीनें कह्यौ जो वहतौ पानलेवेकों गयो है तब श्रीनवनीतप्रियाजीनें कह्यौ जो मेरौ गज्जनधावन आवेगौ तब आरोगूंगौ सो श्रीहस्त खेंचकें बैठरहे तब बेगिगज्जनधावनकों बुलायौ तब गज्जनधावननें कही जा बावा आरोगौ तब श्रीनवनीतप्रियाजो आरोगे हैं यह श्रीआचार्यजी महाप्रभूकी मर्यादा है जो जितनों सेवकको स्वामी ऊपर स्नेह होय और भगवदगीतामें भगवान कहेंहै ॥

श्लोक—ये यथामां प्रपद्यंते स्तांस्तथैवभजाम्यहम् ॥ यह आधौ श्लोककह्यौ ताते श्रीमुखसों कहैं जो इहां तुम्हारी बिवस्था और उनकी बिवस्था है सो ऐसो कुंभनदासकों और श्रीनाथजीकों बिरहहुतो ताते श्रीगुसांईजीनें कुंभनदासकों सीख दीनी तब कुंभनदासनें श्रीनाथजोके दर्शन कीये तब कुंभनदासने एकपद गायौ ॥ सो पद—

राग सारंग—जो ये चौंपमिलनकी होय ॥ तौ क्यौंरहै ताहि विन देखें लाखकरौ जिनकोय ॥ जो ये विरह परस्परव्यापै जो कछूजीवनवनै ॥ लौकलाजकुलकी मर्याद एकौ चितनगनै ॥ कुंभनदास प्रभूजायतन लागी और न कछू सुहाया ॥ गिरधरलाल तोहि विन देखे छिनछिना कलपा विहाय ॥

सो यहपद कुंभनदासनें श्रीनाथजीके सन्निधान गायौ सो सुनिकें श्रीनाथजी बहुत प्रसन्न भये सो कुंभनदास श्रीनाथ-जीकों देखकें प्रसन्न भये ॥ प्र० ॥ ५ ॥

और एक समय कुंभनदासजी श्रीगुसांईजीके पास बैठहुते तब कुंभनदासने श्रीगुसांईसों कह्यौ जो महाराज बेटा डेढ है और हेंतो साथ तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो कुंभनदास डेढकोकारन कहा तब फेरि कुंभनदासजी कहैं जो महाराज आखौबेटा तो चत्रभुजदास है और आधौ बेटा कृष्णदास हैं सो श्रीनाथजीकी गायनकी सेवा करत है तासों आधौ है कुंभनदासजी कृष्णदाससों आधौ क्योंकहैं ताको हेत यह जो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने पुष्टिमार्ग प्रगटकीयो है सो पुष्टिमार्गकहा है जो ब्रजभक्तनको हेंत यहमार्ग प्रगट कीयो है सो भगवदीय गाये हैं“जो सेवा रीतिप्रति ब्रजजगकी जन-हितजगप्रगटाई” सो ब्रजभक्तनकी कहारीति है जो ठाकुरजीके सन्निधानतौ सेवाकरैं और श्रीठाकुरजी वनमें पधारे तब गुणगानकरें जो ये वस्तु होयतौ आखौ और इनमेंते एक होयतौ आधौ ताते चत्रभुजदास सेवा और गुणगान है ताते आखौ और कृष्णदासमें एक सेवा है सो आधौ तब श्रीगुसांईजी श्रीमुखते कहे जो भगवदीय है तेई बेटा हैं और बहुत भयेतौ कौन कामके यह चत्र भुजदासकी वार्तामें लिखे हैं ॥ प्रसंग ॥ ६ ॥ वैष्णव ॥ ९० ॥

अथ कृष्णदासकी वार्ता

सो वे कृष्णदास श्रीनाथजीकी गायनकेग्वालहुते श्रीगुसांई जीने इनको गायनकी सेवादीनी हुती सो कृष्णदास श्रीनाथजीकी गायनकी सेवा करते सवारे खिरकसेवासों पहुंचकें फेर गायन चरायवेको जाते सोसगरेदिन कृष्णदासगायनकी सेवा करते सो एकदिन गायचरायकें पूछरीकेपोर कृष्णदासगायनके संग आवतहुते सो सगरी गायतो खिरकमें आई औरगायबडीहुती ताकों औन बहुतभारी हुतो सो वहगाय बहुत हरवे २ चलती सोवा गायकों आवत अंधियारौपरिगयो सो तहांपर्वतकेनीचे अँधियारेमें एक नाहर निकस्यो सो गायपै दोरयो तब कृष्णदासकहैं जो अरे अधर्मी यह श्रीनाथजीकी गाय हैं तू भूखोहोयतो मेरे ऊपर आऊ तब इतनेमें गायतो भाजिखिरकमें गई और नाहरनें कृष्णदासको अपराध कियो और ऊपर कहि आये हैं जा गायसब खिरकमें आई तब श्रीनाथजी आप गाय दुहिवेकों आये सो सब गाय ग्वाल दुहत हैं और वह बडी गाय सो वह गायकों श्रीदुहिवेकों बैठे और कृष्णदास बछराथामें हैं और वह गाय बछराकों चाटत है सो ऐसे दर्शन कुंभनदासजीकों भये ता पाछें गोदुहन करिकें

श्रीनाथजी गिरिराजऊपर मंदिरमें पधारे तब श्रीगुसांईजीनें भोग समर्प्यो और कुंभनदासजी खिरकमेंसे आये सो दंडौती सिलापास ठाडे भये इतनेमें समाचार आये जो कृष्णदासकों नाहरने मार्यौ सो सुनिकें कुंभनदास मूर्च्छा खायके गिरे सो ऐसे गिरे जो देहानुसंधान भूल गये तब कुंभनदातजीकों सब कोऊ बुलावे परि बोले नाहीं तब यह समाचार काहूनें श्रीगुसांईजीसों कहै जो महाराज कृष्णदासको नाहरनें मार्यौ और गायकों कृष्णदासनें बचाई सो कृष्णदास उहांही परेहैं तब श्रीगुसांईजी कहै जो गाय कबहूं न छोडि आवै अंत समय गाय संकल्प करत हैं ताको गाय उत्तम लोकको ले जात हैं और कृष्णदासनें तो श्रीनाथजीकी गाय बचाई हैं ताते कृष्णदासकों गाय कैसें छोडि आवैगी और श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो कुंभनदासजी कहां है तब काहूं वैष्णवनें कही जो महाराज कुंभनदासजीकों क्लेश बहुत बाधा कीयौ है जो कुंभनदासजी ऊपर आवत हुते सो कुंभनदासजीके आगें काहूनें कृष्णदासके समाचार कहें सो सुनतही कुंभनदासजी मूर्छा खायकें गिरे सो लोग बहुतही बुलावत हैं परि आवत नाहीं तब श्रीगुसांईजीने अपने श्रीमुखसों कह्यो जो फेरि कुंभनदासजीकी खबर लावो जो कुंभनदासजीकी देह कैसे है सो वे आयकें कुंभनदासजीकों पुकारें तब ये समा-

चार श्रीगुसांईजीसों कहैं जो महाराज कुंभनदासजीतौ कछू समझत नाहीं तब श्रीगुसांईजी तौ सेनभोगके दर्शन करिकें श्रीनाथजीकों पोढायकें आप नीचे पधारे सो देखकें मार्गके साम्हैं कुंभनदासजी परे हैं और लोग चारयौ ओर ठाडे हैं सो कहत हैं जो कुंभनदासजी कैसे भगवदीय हैं परि पुत्रको सोक बहुत बुरो होउ है या पीरासों कोई बच्यौ नाहीं काहेते जो अपनी आतमाहै तब यह बात लोगनकी सुनिके श्री-गुसांईजी मनमें विचारे जो यहांतो कारण कछू और है और लोगनकोंतौ कछू और भाखत है ताते भगवदीयको स्वरूप करिवेके लिये श्रीगुसांईजी अपने श्रीमुखसों कही जो कुंभनदासजी सवारे तुम वेगी आईयौ तुमको श्रीगोवर्द्धनना-थजीके दर्शन करावेंगे तुम मनमें खेद मति करौ इतनों श्रीगुसांईजो श्रीमुखसों कहैं तब कुंभनदासजी उठि ठाडे भये और प्रसन्न भये तब श्रीगुसांईजीकों दंडौत करिकें कुंभनदासको जो कार्य करनो हौ सो सब कीयौ पाछें सवारे कुंभनदासजी दर्शनकों आये श्रीनाथ-जीकों सिंगार करिके श्रीगुसांसाईजीसों कह्यौ जो प्रथम कुंभनदासजीकों दर्शन कराय देउ सो कुंभनदासजी वैष्ण-वनके ऊपर यहकार कीयौ जो सूतकीको कौन मंदिरमें जानदेतौ सो कुंभनदासजीके अनुग्रहते सब कोउ दर्शन

करते हैं सो कुंभनदासजी नित्य एक बेर दर्शन करिकें परासोलीमें जाय बैठते सो वहां बैठे २ विरहके पद गावते सो पद–

राग धनाश्री–तुम्हारे मिलन बिन दुखित गुपाल ॥ अति आतुर ब्रजसुंदरप्यारे बिरहीबेहाल ॥ १ ॥ सीतलचंदतपत भयोदाहत किरणकमलजनुजाल ॥ चंदनकुसुमसुहाय धनसारलगतवदीज्वाल ॥ २ ॥ कुंभनदासप्रभूनवधनतुमबिन कलकलतामानोंसूषोजीवपाकाल ॥ अधरामृत वंशीसीचिलेउतुम गिरगोवर्द्धनलाल ॥ ३ ॥

राग धनाश्री–अब दिनरात्रि पहारसेभये ॥ तब ते निघटतनाहिनिजबते हरिमधुपुरीगये ॥ यह जानियै विधाता जुगसमकीने जामनयै ॥ जागत जागविहातनके ऐसें प्रीतठयै ॥ ब्रजवासीअतिपरमदीनभये व्याकुलसोचलयै ॥ उन प्राणदुखित जलरुहगनदारुणहेमपयै ॥ कुंभनदासबिछुरतनंदनंदनबहुतसंतापकरे ॥ अब गिरधरविनरहतनिरंतरनौतननीरछयै ॥

राग केदारो–औरनकों समीपबिछुरनों आयौ मेरी हिसा ॥ अबकोजसोवेसुखअपने आलीमोकोंचाहतरिसा ॥ नाजानों यह विधाताकी गति मेरे आंकलिखे ऐसौकोंनरिसा ॥ कुंभनदासप्रभूगिरधरकहत निसदिनरहज्योंचातकवन त्रिसा ॥

ऐसे पद गाय २ कुंभनदासजीनें सूतते पद कियें पाछें शुद्ध होयकें कुंभनदासजी भगवत्सेवामें आयै ऐसी जिनकों दर्शनकी आरति सो वे कुंभनदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ताको पार नहीं ताते इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये प्र० ॥ १ ॥ वै० ॥ ९१ ॥

अथ कृष्णदास अधिकारी ति० वार्ता

सो वे कृष्णदास शूद्र एक वेरद्वारीका गये हुते सो श्रीरणछोरजीके दर्शन करिकें तहांते चले सो आपन मीरांबाईके गांव आयौ सो वे कृष्णदास मीरांबाईके घर गये तहां हरिवंशव्यास आदि दे विशेषसह वैष्णव हुते सो काहूकों आये, आठ दिन काहूको आये दशादिन काहूको आये पंद्रहदिनभये हुते तिनका बिदा न भई हुती और कृष्णदासनें तो आवतही कही जो हूंतोचलूंगो तब मीरांबाईने कही जो बैठो तब कितनेकमहोर श्रीनाथजीको देनलागी सो कृष्णदासनें न लीनी और कह्यौ जो तू श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी सेवकनाहीं होव ताते तेरी भेंट हम हाथते छूवेंगे नाहीं सो ऐसे कहिकें कृष्णदास उहांते उठिचले सो जब आगे आये तब एक वैष्णवनें कह्यौ जो तुमने श्रीनाथकीभेट नाहीं लीनी तब कृष्णदासने कह्यौ जो भेटकी कहां है पारि मीरां-

बाईके यहां जितने सेवक बैठे हुते तिन सबनकी नाक नीचे करिकें भेटफेरी है इतने इकठोंरे कहां मिलते यह हूं जानेंगे जो एकवेर शूद्र श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकौ सेवक आयौ हुतो ताने भेट न लीनी तो तिनके गुरूकी कहाबात होयगी ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

और प्रथम सेवा श्रीनाथजीकी बंगाली करते सों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें मुकुटकाछनी हीराके आभरन भराय दीने हैं सो नित्य करते सो भेट आवती सो खरच होती कछू संग्रह न राखते सब खरच होय जातौ और बंगाली सेवा करतें पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कृष्णदासकों आज्ञादीनी जो तुम श्रीगोवर्द्धनरहौ सेवा टहलकरौ तब कृष्णदास अधिकारीभये अधिकारकरन लागै पाछें एक दिन मथुराकौ चलनलागै सो अडींगलों पहुंचे तब पेंडेमें अवधूतदास मिले महापुरुष हुते व्रजमें फिऱ्यौ करते सो कृष्णदासकौ मिले तब अवधूतदासनें कह्यौ जो कृष्णदास तुम कहां चले तब कृष्णदासनें कही जो मथुराजातहौ कछू काम है तब अवधूतदासनें पूछौ जो श्रीनाथजीकी सेवा कोन करत है तब कृष्णदासने कही जो बंगाली करत हैं तब अवधूतदासनें कही जो श्रीनाथजीकों अपनौ वैभवबढावनो है ताते तुम बंगालीनको दूर क्यों नाहीं करत सो

अवधूतदाससों श्रीनाथजीने कह्यौ जो मोकों बंगाली बहुत दुःख देत हैं सो तब बंगाली श्रीनाथजीकों भोग धरते सो उनकी चुटियामें छोटोसो स्वरूप हुतौ देवीकोंसो साम्हेंबैठावते जब भोगसरावते वादेवीकौ अपनी चुटियामें धरलेते ऐसे सदाकरते सो बात अवधूतदासकों श्रीनाथजीने जनाई ताते अवधूतदासने कृष्णदाससों कह्यौ जो तुम बंगालीनकों दूरकरौ तब कृष्णदासने कही जो श्रीगुसांईजीकी आज्ञाविनाकेसे काढें तब अवधूतदासनें कह्यौ जो तुम अडेलमें जायकें श्रीगुसांईजीकी आज्ञाले आवौ जैसे बने तैसे इन बंगालीनकों काढौ तब कृष्णदास अडींगते फिरे सो श्रीगोवर्द्धन आये तब बंगालीनसों कह्यौ जो हूंतौ श्रीगुसांईजीके पास अडेल जातहों तुम श्रीनाथजीकी सेवा सावधानीसों करियों और सब सेवकहुते तिनसों कृष्णदासनें कह्यौ जो हूंतो श्रीगुसांईजीके पास कछू काम है सो अडेलकों जातहों तुम सावधान रहियो ता पाछें श्रीनाथजीसों विदा होयके अडेलकों चले सो दिन १५ में श्रीगुसांईजीके पास आय पहुंचे सो आयकें श्रीगुसांईकों दंडोत कीये तब श्रीगुसांईजीनें पूछौ जो कृष्णदास तुम क्यों आये तब कृष्णदासनें कह्यौ जो श्रीनाथजीकों अपनों वैभव बढावनों है और बंगालीनने बहुत माथौ उठायो है जो भेट आवत है सो लेजात हैं सो सब अपने

गुरूनको देत हैं तब श्रीगुसांईजी कहैं जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू असुरव्यामोहलीला दिखाई ता पाछें श्रीगोपीनाथजी पूरबको परदेशकीयौ सौएकलक्षकी भेटभई पाछें अडेल आये तब श्रीगोपीनाथजीनें कही जो यह पहलो परदेशहै ताते यामें आयौ सो सब श्रीनाथजीको है श्रीनाथजीकों विनियोग कियौ चाहिये ता पाछें श्रीगोपीनाथजी दिनदशबारह रहकें पाछें श्रीनाथजीद्वार पधारे सो जाय पहुंचे तब श्रीगोपीनाथजीनें दर्शन कीयौ पाछें जोलायेहुते सो सबभेट कियौ आभूखन सब जडावके समराये थार कटोरा डबरा चमचा तष्टी प्रभृत सब सोंनारूपाके कियै सबकरिकें श्रीनाथजीसों विदाहोयकें श्रीगोपीनाजी अडेल आये तापाछें बंगाली वरस एककें भीतर सब लेगये अपने गुरूके यहां जायकें दीयौ यह बात श्रीगुसांईजीनें कृष्णदाससों कही और कह्यौ जो बंगालीननें माथौ उठायौ परिवे श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके राखे हैं सोकैसे निकलेंगे तब कृष्णदासनें श्रीगुसांईजीसो कह्यौ जो महाराज श्रीनाथजीकी आज्ञा है जो बंगालीनकों निकासौ ताते आप या बातमें कछू मतिबोलौ मोकों आप आज्ञा करौतौ अपनों आप करलेउंगो जैसे बंगाली निकसेंगे तैसे काढुंगो उब श्रीगुसांईजीनें कह्यौ जो अवश्य तब कृष्णदासनें कह्यौ जो महाराज दोयपत्र लिखये

एकराजाटोडरमल्लके नामका एकबीरबलकेनामकौ तब श्रीगु-सांईजीनें दोय पत्रलिखदीने राजा टोडरमल्लकौ और बीरबलकों लिखौ जो कृष्णदासकों श्रीनाथजी द्वार भेजे हैं जो तुमसों कृष्णदास कहै सो करि देउंगे सो पत्र लेकें श्रीनाथजीद्वारको चलें सो आगरे आये तहां टोडरमल्ल राजा बीरबलसों मिले पत्र श्रीगुसांईजीके हुते सो दीये सो उन पत्र बांचिकें कृष्णदाससों कह्यौ जो तुम कहौ तैसें करें तब कृष्णदासने कह्यौ जो अबतो में मथुरा जातहौं बंगालीनकों काढिवेकों ता पाछें कृष्णदास राजा टोडरमल्लसों बिदा होयकें श्रीनाथजीद्वारको चले सो मथुरा आये तब मार्गमें अवधूतदास मिले तब कृष्णदाससों अवधूतदासने कही जो कृष्णदासजी ढील कहा करि राखी है बंगालीनकौ काढौ श्रीनाथजीकी ऐसी इच्छा है श्रीनाथ-जीकों अपनों वैभव फैलावनों है तब कृष्णदासने कह्यौ जो श्रीगुसांईजीकी आज्ञा लेके आयौ हौ अब जायकें बंगाली-नकौ काढत हौं इतनों कहिकें कृष्णदास चलै सो श्रीनाथ-जीद्वार आये सो वे बंगाली सब रुद्रकुंड ऊपर रहते सो उहां उनको झोंपरी हुती सो कृष्णदासने जराय दीनी तब सोर भयौ तब बंगाली सेवा छोडकें पर्वतके नीचे आये तब कृष्णदासनें पर्वत ऊपर अपने मनुष्य पठाय दीये तब बंगा-

ली देखेंतौ कृष्णदासनें झोपरीमें आग लगाय दीनी है तब सब बंगाली कृष्णदाससों लरन लागे तब कृष्णदासनें द्वै २ चार ४ लाठी सबनके दीनी तब वे बंगाली तहांते भाजे सो मथुरा आये तब रूपसनातनके पास आयकें सब बात कही तब इतनेमें कृष्णदासहू आय ठाडे भये तब रूपसनातनें कृष्णदासके ऊपर खीजकें कह्यौ जो क्योंरे शूद्र तू कोन जो इन ब्राह्मणनकों मारे तब कृष्णदासने कही जो हूं शूद्र-हों परि तुमहू तौ अग्निहोत्री नाहीं तुमहूतो कायस्थ हो तब सनातनने कह्यौ जो यह बात पात्साह सुनेगौ तौ तू कहा जबाब देयंगो तब कृष्णदासनें कह्यौ जो होंतो नीके जबाब देउंगौ परि तुमको जुबाब देतमें दुःख होयगो और तुमको जवाबआवेगौ जो तुम कायस्थ होयकें इन ब्राह्मणनसों दंडौत करावत हो तब रूपसनातन तौ चुप ह्वै रहे और बंगालीनसों कह्यौ जो तुम जानौ येजानों तब बंगाली मथु-राके हाकिम पास गये तब कृष्णदास जाय ठाडे भये तब हाकिमने कह्यौ जो भयौ सोतौ भयौ परि अब इनकौं राखौ तब कृष्णदासनें कह्या जो अब तौ इनको न राखेगें येतौ हमारे चाकर हुते सो हमने इनकों सेवा सोंपी हुती सो ये सेवा छोडकें क्यों आये जो इनकी झोंपरी जरगई हुती तौ हम नई छवाय देते ताते अब हमतौ न राखेंगे ताऊपर तुम

कहतहो जो हम श्रीगुसांईजीकों लिखेगें वेकहेंगे तैसे करेंगे तुम श्रीगुसांईजीकों लिखौ पाछें कृष्णदास श्रीनाथजीद्वार आये और बंगाली सब अपने श्रीकुंड आये तब कृष्णदासनें श्रीगुसांईजीकों पत्र लिखौ तामें बंगाली काढे सो सब समाचार बिस्तार करिकें लिखे और लिख्यौ जो अब पधारियैतौ भलौ है सो पत्र श्रीगुसांईजीके पास अडेल आयौ तापाछें श्रीगुसांईजीके पास अडेलते चले सो श्रीनाथजीद्वार आये तब वे बंगाली सब आये तब श्रीगुसांईजीसों कह्यौ जो हमकों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें सेवामें राखेहुते सो कृष्णदासनें हमकों काढे तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो तुम सेवा छोडके क्योंगये दोष तुम्हारो है ताते अबतो सेवामें न राखेंगे तब वा बंगाली बहुत बीनती करनलागे जो महाराज अब हम खायंगे कहा तब श्रीगुसांईजीने इनकों श्रीनाथजीके बदले श्रीमदनमोहनजीकी सेवादीनी और कह्यौ जो इनकी सेवा तुमकरियों जो आवै सो खाईयो तब वे बंगाली श्रीमदनमोहनजीकी सेवा करन लागे ताते उन बंगालीनने श्रीगोवर्द्धन रहिवौ छोडदीयौ ता पाछें श्रीनाथजीकी सेवामें गुजरातीं ब्राह्मण भीतरिया राखे श्रीनाथजीकों अपनों वैभवबढावनों हौ सों सब भीतरियानकों नेग और सबसेवकनकों नेग जोजाभांति श्रीनाथजीने कह्यौ ताभांति श्रीगुसांईजीने

बांधौ तबते श्रीनाथजोकी सेवा प्रनालिकाते होनलागी और कृष्णदास अधिकार करनलागे प्रसंग ॥ २ ॥

बहिर श्रीनाथजीने कृष्णदासकों आज्ञादीनि जो श्याममतिको लेकें ताल पखावज लेकें तू परासोलीमें आईयौ कुसोश्यामकुमर आछौ मृदंग बजावते सो श्रीनाथजीकी सैन आरती उपरांत अनोसर भयौ तब कृष्णदास श्यामकुमरके घर गये तब कृष्णदासने श्यामकुमरसों कही श्रीनाथजीने आज्ञा करी है सो मृदंगलेके परासोली चलौ तब श्यामकुमरने कह्यो जो मोहूकों श्रीनाथजीनें आज्ञाकरी है ताते चलियै तब श्यामकुमर मृदंगलेकें आयौ तब कृष्णदास और श्यामकुमर येदोऊजने पारासोलीसों देखेतौ श्रीनाथजी स्वामिनीजी सहित बिराजे हैं तब श्रीनाथजीने श्यामकुमरसों कह्यौ जो तूतौ मृदंग बजाय और कृष्णदाससों कह्यौ जो तू कीर्तन करि औ श्रीनाथजी और श्रीस्वामिनीजी नृत्यकीयौ तहां कृष्ण दासने पदगायौ ॥ सो पद—

राग केदारौ—श्रीवृषभानुनन्दनी नाचतगिरधरसंग लागडाट उरपतिरपरासंगराखौ ॥ झपतालमिल्यौ रागकेदारौ सप्तसुरन अबघरतानरंगराख्यौ ॥ पाईसुखसिद्धि भरतकामविविधि रिद्धि अभिनवदल सतसुहागहुलास रंगराख्यौ ॥ वानता सतजूथ संगलिये निरखत क्यों सघसचंद बलिहारि कृष्णदाससुघररंगराखौ ॥

यह पद कृष्णदासनें गायौ श्यामकुमरनें मृदंगबजायौ श्रीनाथजी जौर स्वामिनीजी नृतकीयो ताते श्रीमहाप्रभूजीकी कानिते श्रीनाथजी कृष्णदासके ऊपर ऐसी कृपा करतहुते ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

और कृष्णदासने बहुत पदकीयै तब एक समय सूरदाजीनें कृष्णदाससों पूछा जो तुम पदकरत हौ तामें मेरी छाया है तब कृष्णदासने सूरदासजीसो कह्यौ जो अबके ऐसो पदकरूं जो जामे तुम्हारी छाया न आवे तब कृष्णदास एकांतमें बैठिकें एकाग्रचित्तकरिकें नयौपद करनलागे जो जामें तीन तुकको कीयो और चौथीतुक बने नाहीं तब बडी दोयलो विचारे जो आगें तुक चलत नाहीं तो भलौ फेरी प्रसादलेकें विचारेंगे सो जापत्रमें लिखत हुते सो पत्र तथाद्वातिलेखनी उहांईधरिकें प्रसाद लेवेको उठे जबकृष्णदास प्रसाद लेवेको बैठे तब श्रीनाथजीनें आप तीन तुक वा पत्रमें अपने श्रीहस्तसों लिखिदीये कृष्णदासनें आधौ पद कियौ हुतौ ताकों आप श्रीनाथजी पूरौकरिकें आपतौ पधारे ता पाछें कृष्णदास प्रसाद लेकें आये तब देखौ तौ श्रीनाथजी पूरौपदकरिकें श्रीहस्तसों लिखि गये हैं सो देखके कृष्णदास बहुत प्रसन्नभयौ और कहे जो सूरदासजी आवेंतौ पदसुनावे तब उत्थापनके समय सूरदासजी दर्शनकों आये

तब कृष्णदासने कह्यौ जो सूरदासजी नयौपद एकमैंनें कीयो है तामें तुम्हारी छाया नाहीं धरी तब सूरदासजीने कह्यौ जौ कहौ सुनों तौ जानों तब पद कह्यौ सो पद—

राग गौरी—आवतवनेंकान्हगोपबालकसंगनेंचुकीखुर रेणु छुरतु अलकावली ॥ भौहैंमनमथचापवक्रलोचनबान सीससोभितमत्तमयूरचंद्रावली ॥ उदित उडुराजसुंदर सिरोमणि वदन निरखि फूलीनवलजुवतीकुमुदावली ॥ अफूणसकुच-अधरबिंबफलहसातकहत ॥ कछुकप्रकटित होत कुंददसनावली ॥ श्रवणकुंडलभालतिलकवेसरिनाक कंठकौस्तुभमणि-सुभगत्रिवलावली ॥ रत्नहाटकखचित पुरसिपादिकनिपाति बीच राजत सुभपुलकमुक्तावली ॥

अथ श्रीनाथजीकृत—वलयकंकणबाजूबंद आजानुभुज मुद्रिकाकरदलबिराजत नखावला कणतरमुरलिकामोहित अखिलविश्वगोपिकाजनमसिग्रक्षथितप्रेमावली ॥ कटि क्षुग्रघंटिकाजटितहीरामयी नाभिअम्बुजवलितभृगरोमावली ॥ धायकबहुकचलतभक्तहि तजानिपियगंडमण्डल रुचिरश्रमजलकणावली ॥ पीतकोसयपरिधानें सुन्दर अंग चरणनुपुरवायगीतसबदावली ॥ हृदय कृष्णदासगिरवर धरणलालकीचरणनखचन्द्रिकाहरति तिमिरावली ॥

यह पद कृष्णदासनें सूरदासजोके आगें कह्यौ सो सूरदासजी तीन तुक तांई तौ बोले नाहीं और तीनतुकके आगे

कहनलागै तब सूरदासजीने कृष्णदाससों कह्यौ जो कृष्णदास मेरे तुमसों वाद है और प्रभूनसों वाद नाहीं में प्रभूनकी वानी पहिचान तहों तब कृष्णदास चुपकररहे तातेकृष्णदास ऐसे भगवदीय हैं ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥

और एकसमय श्रीनाथजीके भंडारमें कछू सामग्रीचाहिय- तहुती सो कृष्णदास गाडालेकें आगरेकौ आये सो आगरेके बाजारमें एकवेश्या नृत्यकरत हुती ख्यालटप्पा गावतहुती और भीरहुती सब लोग तमासो देखतहुते सो कृष्णदास बाजारमें तमासेमें जाय ठाडे भये तबभीर सरकगई तब वह वेश्या कृष्णदासके आगें नृत्य करन लागी सो वह वेश्या बहुत सुन्दर और गावै बहुत आछौ नृत्य तेसोईकरे सो कृष्णदास वा वेश्याके ऊपररीझे और मनमें कहें जो यहतो श्रीनाथजीके लायकहै ता पाछें वा वेश्याकों दशमुद्रातो उहांही दीये और कही जोरात्रिकों समाज सहित आइयौ तापाछें कृष्णदास उहां हवेलीमें उतरे सोसामग्री चहियत हुती सो सब लेकें गाडा लदायसिद्धिकरवायौ तापाछें रात्रि- पहरगई तब वेश्यासमाजसहित आई तापाछें नृत्यभयौ गान- भयौ वापै कृष्णदास बहुतरीझें सोरुपेया सतएकदिये तब वा वेश्यासों कह्यौ जो तेरौ गानहू आछौ और नृत्यहू आछौ परिहमारो सेठ है सो तेरे ख्यालटप्पा ऊपर रीझेगो नाहीं ताते होंकहों सो गाइयौ तापाछें कृष्णदासनें एक पूरबीरा-

गमें पदकरिकें सिखायौ तापाछें दूसरे दिन वावेश्याको साथ लेके चले सो आगरेते आये पाछें तीसरे दिन श्रीनाथजी द्वार आये सामग्री सब भंडारमें धराई तापाछें जब उत्थापनको समय भयौ तब कीर्तनिया काहूकों बागे न दीये तब वा वेश्याकों समाज सहित लेगये श्रीगुसांईजी मंदिरमें ठाढे श्रीनाथजीकों मूंढाकरत है और मणिकोठामें वेश्या नृत्य करन लागी औ यह पद गायौ ॥ सो पद—

राग पूरवी—मोमन गिरधर छबिपर अटक्यौ ॥ ललित त्रभंगी अंगन परिचलिगयौ तहांईठटक्यौ ॥ १ ॥ सजल श्यामघन चरणनीलह्वै फिरचित अनितनभटक्यौ ॥ कृष्णदास कियौप्राणन्यौछावरि यह तन जगसिरपटक्यौ ॥ २ ॥

यह पद वा वेश्यानें गायौ सो जब गावत २ पिछलीतुक आई जो "कृष्णदासकियौ प्राण न्यौछावर यह तन जग सिरपटक्यौ" इतनों कहत मात्र वा वेश्याके प्रान ततकालनिकसिगये और दिव्य स्वरूप धरिके श्रीनाथजीकी लीलामें प्राप्तभई और वा वेश्याके समाजी हुते सो मरन लागे जो हमारी तौ यातें जीविकाहुती अब हम कहा खायंगे तब कृष्णदासनें कह्यौ जो तुम क्यों रोवतहौ चलौ नीचे खायवेको देऊं तब उन समाजीनकों नीचे लायकें कृष्णदासनें सहस्र रुपया दे बिदा किये कृष्णदासने अपने मनते समर्पी याते श्रीनाथजीनें वा वेश्याकों अंगीकार करी ताते

श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कानितें सेवककी समर्पी वस्तुया-भांतिसों अंगीकार करत हैं ॥ प्रसंग ॥ ५ ॥

और कृष्णदासको गंगाबाईसों बहुत स्नेहहुतो सो श्रीगुसांईजीकों न सुहावतौ सो एकदिन श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीकों भोगसमर्पितहुते सो सामग्री ऊपर गंगाबाईकी दृष्टीपरी ताते श्रीनाथजी आरोगे नाहीं परिभोगतौ समर्प्यौ ता पाछें समय भयौ तब भोग सरायो तब आरती करि अनोसरि करिकें श्रीगुसांईजी आप नीचे पधारे तब सेवक आदि भीतरिया सबने प्रसाद लीयौ तब श्रीगुसांईजी आप तौ भोजन करिकें पोढे तब श्रीनाथजीनें भीतरियाकों लातमारिकें जगायौ और वासूं कहैं जो हूंतौ भूखो हूं तब व भीतरियाने कह्यौ जो महाराज श्रीगुसांईजीनें भोग समर्प्यौ हौ और तुम भूखे क्यों रहै तब श्रीनाथजीने कही जो राजभोगमेंतो गंगाबाईकी दृष्टी परीहुती ताते राजभोग आरोग्यौ नाहीं तब वह भीतरिया उठि श्रीगुसांईजीके पास आयौ सो श्रीगुसांईजी भोजन करिकें पोढे हुते तब भीतरियाने आयकें श्रीगुसांईजीके चरण दाबै तब श्रीगुसांईजी चौंकि उठे तब देखेंतौ श्रीनाथजीको भीतरियाहै तब वा भीतरियासों पूछौ जो यहां इतनीबेर कहां आयौ हौ तब वा भीतरियाने कह्यौ जो महाराज आज श्रीनाथजी भूखे हैं मोकों लात मारिकें जगायौ और कह्यौ जो आजतौमें भूखौ हौं

तब मेने श्रीनाथजीसों कह्यौ जो महाराज भोगतौ श्रीगुसाईजीने समर्प्यौं हौ तुम भूखे क्यों रहे तब श्रीनाथजीनें कही जो सामग्रीपरतो गंगाबाईकी दृष्टि परी तातेमें नाहीं आरोग्यो तब श्रीगुसांईजी सुनतही ततकाल स्नानकरिकें पर्वतऊपर पधारे सो वह भीतरियाहू स्नान करिकें श्रीगुसांईजीके साथ ही आयौ तब श्रीगुसांईजीके वा भीतरियासों कही जो भात और बडी करौ जो तत्काल सिद्ध होय आवै तब भात औबरडीकरीसो तत्काल सिद्धभयो तब श्रीनाथजी कौ भोग समर्प्यौं पाछें भीतरिया रसोईकरिकें स्नानकरिकें पर्वतऊपर आये तब श्रीगुसांईजीकी आज्ञा भई जो राजभोग इकठौरो समर्प्यों ता पाछें समय भयौ तब भोगसराय सेन आरती करी तब श्रीनाथजीकों पोढाये भोगसरचौ हो सो प्रसाद एक डबरामें उहांई रहगयौ तब रामदास भीतरियानें कही जो पहले भोग समर्प्यौं हुतौ सो उहांहीरह गयौ तब श्रीगुसांईजी डबरामेंते ठलायकें लेतउतरे पाछें सब सेवकनकौं वह बडी भातको महाप्रसाद रंचक २ बांटि दीनों ता पाछें श्रीगुसांईजी आपहू आरोगे सो वह बडी भातको प्रसाद अति अद्भुतिभयौ अतिअलौकिक स्वादभयौ सो श्रीगुसांईजी आपसरायौ तब कृष्णदास ठाढे हुतेरतब कृष्णदासने कही जो महाराज आपही करनहारे आपही आरोगनहारे तो क्यों न उत्तम होय तब श्रीगुसांईजीने हंसके कही जो यह तुम्हारेही कीये भोगत हैं ॥ प्रसंग ॥ ६ ॥

अब जो यह बात श्रीगुसांईजीनें कही जो यह तुम्हारेही कीये फल भोगत हैं सो यह बात सुनकें कृष्णदासने श्रीगुसांईजीसों बिगाडी तब श्रीगुसांईजीसों कृष्णदासने कही जो तुम पर्वतऊपर मति चढो तब श्रीगुसांईजी आप तौ तहांते फिरे सो परासोलीमें आय रहै तब मनमें विचारौ जो कृष्णदास कहामने करेगौ परि श्रीनाथजीकी इच्छा ऐसी है सो श्रीनाथजीकी इच्छा जानिकें कछू बोले नाहीं सो आप परासोलीमें रहैं सो परासोलीमें ध्वजाके साम्हे बैठिकें विज्ञप्ति कियौ और श्रीगुसांईजी तीनदिनतौ श्रीगोवर्द्धनरहते और तीनदिन श्रीगोकुलरहते तब ते परासोली आय रहै तब श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीके मंदिरकी खिरकी परासोलीकी और पडती ताके साम्हें बैठिते तब श्रीनाथजी आप खिरकीमें आय दर्शन देते तब यह जानिकें कृष्णदासने परासोलीकी ओर खिरकी बनवाय दीनी तब ते श्रीगुसांईजी गोकुलते जब परासोली आवते तब रामदासजी सबसेवक आदिदे श्रीनाथजीके राजभोग आरती करिकें अनोसरिकें श्रीगुसांईजीके दर्शनको परासोली आवतेसो आयकें चरणोदक लेय पाछें प्रसादलेते सो कृष्णदासकों सुहावतौ नाहीं और सबसेवक श्रीगुसांईजीके दर्शन विना महाप्रसाद केसे लेंय परि सेवकनमों कृष्णदासकी चले नाहीं और श्रीगुसांईजी एक पत्र लिखकें रामदास भीतरियाकों देते और कहते जो श्रीनाथ-

जीको दे दीजौ सो पत्र श्रीनाथजीको देते श्रीनाथजी विज्ञप्त उत्तर लिखिकें रामदासको देते सो रामदास श्रीगुसांईजीको देते तब श्रीगुसांईजी वा पत्रकों वांचिकें पानीमें पीजाते या भांतिसों छे महीना बीते परि श्रीगुसांईजीनें श्रीनाथजीकों अधिकारी वैष्णव जानिकें और श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकों सेवक जानि कछू न कह्यौ परि श्रीनाथजीके बिरहको स्नेह बहुत करते या भांति छे महीना भये तब एक दिन राजा बीरबल आय निकसे तब ता दिन तौ श्रीगुसांईजी परासोलीहुते श्रीगिरधरजी घर हुते तब राजा बीरबलनें श्रीगुसांईजीकौ खबर कराई तब पोरियाननें कही जो श्रीगुसांईजीतो परासोली है श्रीगिरधरजी घरहैं तब राजा श्रीगिरधरजीके दर्शनकों आये तब बीरबलसों श्रीगिरधरजीने कही जो कृष्णदास अधिकारी काकाजीकौ श्रीनाथजीके दर्शन नाहीं करन देत सो काकाजीकों खेद बहुत होत है काकाजी परासोलीमें जाय दर्शन करत हैं तब बीरबलनें श्रीगिरधरजीसों कह्यौ जो अबहूं जायके कृष्णदासकों काढूंगौ यों कहिकें राजा बीरबल श्रीगिरधरजीसों बिदा होयकें मथुरा आये और श्रीगुसांईजी परासोलीते श्रीगोकुल आये और बीरबलने पांचसो मनुष्य भेजे और कह्यौ कृष्णदासकों पकरि लावौ सो वे मनुष्य श्रीगोबर्द्धन आयकें कृष्णदासकों पकरि लाये सों वे बीरबलनें कृष्णदासको

बंदीखानेमें दीनों तब श्रीगिरधरजीसों कहवाय पठाई जो कृष्णदासकों बंदीखानेमें दीनो है तब श्रीगिरधरजीनें श्रीगुसांईजीसों कही जो कृष्णदासको बंदीखानेमें दीने हैं तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो हाय हाय श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवकनको ऐसो कष्ट तब श्रीगुसांईजीने श्रीगिरधरजीसों कह्यौ जो तुमनें कह्यौ होयगो तब श्रीगिरधरजीनें कह्यौ जो हमने तो बीरबलसों सहजही कह्यौ हुतौ जो काकाजीकों दर्शन नाहीं करन देते सो काकाजीकों बहुत खेद होत है तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो भोजन जब करूंगो तब कृष्णदास आवेगो तब श्रीगिरधरजी ततकाल घोडा मंगाय असवार होयकें मथुराकों आये तब बीरबलसों कह्यौ जो काकाजी भोजन नाहीं करत ताते कृष्णदासकों छोड देउ तब राजा बीरबलनें कृष्णदास श्रीगिरधरजीके हवालें कर दियौ तब श्रीगिरधरजी ततकाल संगले श्रीगोकुल आये तब श्रीगुसांईजीने सुनी जो श्रीगिरधरजी कृष्णदासको साथ लेके आवत हैं सो श्रीगुसांईजी ठकुरानी घाट ऊपर पहुंचे और वा ओरते कृष्णदास आये सो श्रीगुसांईजीकों दर्शन कियो और दंडौत करी और एक नयौ पद करिकें गायौ ॥ सो पद—

राग केदारो—श्रीबिट्ठलजूके चरणकीवलि ॥ हमसे पतितउधारनकारन परमकृपालआये आपनचलि ॥ उज्जलअरुणदयारंगरंजित दशनखचंद्रविहरत मन निरदलि ॥ सुभग-

करसुखकरशोभन पावनभक्तिमुदितललितकर अंजलि ॥ अतिसेमरदुलिसुगंधसुशीतल परतत्रिविधितापडारतमल ॥ भजिकृष्णदास वार एक सुधिकरि तेरौकहाकरेगौ रिपुकल ॥

यह पद श्रीगुसांईजीके आगे गायौ पाछें श्रीगुसांईजी कृष्णदासकों अपने घर ले काये पाछे कृष्णदाससों श्रीगुसां-ईजीनें कह्यौ जो उठौ भोजनकरौ तब कृष्णदासने कह्यौ जो महाराजआपभोजन करियै पाछेंमें झूठन लेउंगौ तबश्रीगुसांईजी भोजनको बैठे तब कृष्णदासनें एक पद और गायौ सो पद—

राग कान्हरौ—ताहीकौंसिरनाइये जो श्रीवल्लभसुतपद रजरतिहोय ॥ कीजैकहा आनऊँचेपदतिनसोंकहासगाई मोय॥ सार सार विचारमतौकारि श्रुतिवचनगोधनलियौनिचोय ॥ तहांनवनीतप्रगटपुरुषोत्तमसहजई गोरसलियो ॥ विलीय जाके मनमें उग्र भरम है श्रीविठ्ठल श्रीगिरधरदोय ॥ ताकौ संग-विषमविषहूते भूलिहूचातुरकरहै जिनकोय ॥ जिन प्रतापदे-खिअपने चख असमसारजोभिदेन तोहि ॥ कृष्णदासतेसुरते असुर भये असुरते सुर भये चरणनछोह ॥ ४ ॥

यह पद सुनिकें श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भयै पाछें श्रीगुसांईजी भोजन करिकें पधारे तब कृष्णदाससों कह्यौ जो अब जाउ भोजन करौ तब कृष्णदास भीतर गये तब श्रीगिरधरजीनें श्रीगुसांईजीकी झूठनकी पातर कृष्णदासके

आगे धरी तब कृष्णदासनें महाप्रसाद लिनोंपाछें बीडा दोय-दीयैरात्रिकों कृष्णदास वहांई सोयरहै तापाछें पिछली रात्रि घडी दोय रही तब श्रीगुसांईजी उठे देह कृतकरिकें स्नान कियौ श्रीनवनीत प्रियाजीके मंगलाके दर्शन करिकें बाहिर पधारे तब श्रीनाथजी द्वार पधारवेकी तैयारीकीये तब घोडा दोय मंगाये एक घोडा ऊपर श्रीगुसांईजी असवार भये एक घोडा ऊपर कृष्णदास असवारकीयौ और श्रीगोकुलते चले सों श्रीनाथजीद्वार दिनपहर सवा एकचढे जाय पहुंचे सो यहां श्रीनाथजीको राज भोग आयौ हुतौ सो श्रीगुसांईजी तत-काल स्नान करिकें ऊपर पधारे और श्रीगुसांई विज्ञप्तिपत्र परासोलीते लिखते सो रामदास भीतारियाके हाथ पठावते ताकों प्रतिउत्तर श्रीनाथजी पत्रमें लिखिके श्रीगुसांईजीको पठावते सो श्रीगुसांईजी जलमें घोरपीजाते सो पिछले दिनको पत्र श्रीनाथ-जीके हस्ताक्षरको सो श्रीगुसांईजी राख हुते सो पत्र साथही ले आये हुते पाछें श्रीनाथजीकों राजभोग आयौ हुतौ सो समय भयौ तब श्रीगुसांईजी भोगसरायवेको पधारे तब श्रीगु-सांईजीको देखके श्रीनाथजी बहुत प्रसन्न भये और पूछौ जो नीकेहौ तब श्रीगुसांईजी कहें जो तुमको देखे सोई दिननीके हैं पाछें परस्पर दोऊ जने मुसिक्याये पाछें श्रीगुसांईजी राजभोग सरायौ पाछें वह पत्र हुतो सो झापीमें धरयौ पाछें राजभोगके दर्शन खुले तब कृष्णदासने कीये

पाछे श्रीगुसांईजी राजभोग आरती करि अनोसरि करि नीचे पधारे पाछें रसोई करि भोग समर्पित भोजन करि श्रीगुसांईजी पोढे सो उत्थापनते घडी दोय पहले उठे पाछें उत्थापनको समय भयौ तब स्नान करि ऊपर पधारे सो संखनाद करवायौ श्रीनाथजीके उत्थापन भये पाछें सेन आरती उपरांत दर्शन करिकें कृष्णदासकों श्रीनाथजीके सन्निधान बुलायौ और कह्यौ जो कृष्णदास तुम अधिकार करौ और श्रीनाथजीकी सेवा नीकी भांतिसों करियौ तब कृष्णदासने श्रीनाथजीके सन्निधान एक पद गायौ ॥ सो पद—

राग कान्हरौ—परमकृपालश्रीवल्लभनंदन करत कृपानिज-हाथ दे माथै॥ जे जनशरण आये अनुसरहीग हिसोंपति श्रीगोव-र्द्धननाथै॥ परमउदारचतुर चिंतामणिराखत भव धराते साथैं॥ भजिकृष्णदास काज सब २ सरहीं जो जानें श्रीविट्ठलनाथै॥२॥

यह पद गायौ और वीनती कीनी जो महाराज मेरौ अपराध क्षमा करौ तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ तुमारौ अपराध श्रीनाथजी क्षमा करेंगे पाछें कृष्णदासको बिदा कीयो पाछें श्रीनाथजीको पोढायकें श्रीगुसांईजी नीचे उतरे श्रीगुसांईजी परम दयाल कृष्णदासको सत कछूमनमें आनों श्रीआचार्यजीकें सेवक जानि अनुग्रह कीयौ पाछें श्रीगुसांईजी दिन दोय रहै पाछें श्रीगोकुल पधार फिर कृष्णदास श्रीगुसांईजीकी आज्ञाते अधिकार करन लागे ॥ प्रसंग ॥ ७ ॥

सो बहुती वरसलो भली भांतिसों अधिकार कियों पाछें वैष्णवने कृष्णदाससों कही जो मोकों एक कूआ बनवावनों है और मोकों अपने देशकों जानों है ताते द्रव्य तुमकों दे जातहौं सो तुमबनवाय दीजो तब कृष्णदासने कहीते जो आछौ तब वह वैष्णव तीनसौ रुपैया देकें अपने देशको गयौ तब कृष्णदासने उन रुपैयानमें एकसों रुपैया एक कूल्हरामें धरिकें आमकें वृक्षके नीचे गाड दीये कह्यौ जो दोयसे रुपैया लाचुकेंगे तब इनको काढेंगे सो आछौ मुहूर्त देखिकें रुद्रकुंड ऊपर कूआ खुदायौ तब कितनेक दिनमें वह कूआ मोहताई बनके तयार भयौ और दोयसे रुपैया लगै मठोठाबाकी गह्यौ तब उत्थापनके दर्शन करिकें कृष्णदास कूआ देखनको गये सो हाथमें आसाहुतौ सो आसाटेकके कूआके ऊपर ठाडे भये सो वह आसा सरक्यौ तब कृष्णदास कूआमें जाय परे तब तो मनुष्य दोय कूंआमें उतरे सो बहुतेरोढूढें परिकृष्णदासको शरीरढून पायौ तब सब मनुष्य रहांते फिर आये सो ता समय श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीको सेन भोग धरिकें मंजूषविराजेहुते और रामदास श्रीगुसांईजीके पास बैठे हुते तासमय काहूनें आयकें कह्यौ जो महाराज कृष्णदासने कूआ बनबायोहौ सो कृष्णदास देखन गये हुते सो आसाटेकिकें कूआके मौहडे ऊपर ठाडे हुते सो आसासरक्यौसोकूआमें गिरपरे और मनुष्य दोय कृष्णदासको ढूंढवेको उतरे सो बहुतेरौ ढूंढे

परिशरीरहून पायौ कहा जानियै कहाभयौ तब रामदासजी कहैं ॥ जो " अधो गच्छंतितामसाः " ॥

तब श्रीगुसांईजी कहै जो रामदास ऐसें नकहि अब जो कृष्णदासकूआमें गिरेसो शरीरन मिल्यां ताको कारन कहा सो ताको कारन यह जो कृष्णदासमें कोई अलौकिक जीवहुतौ सो श्रीनाथजीकी सेवामें प्राप्त भयौ और कृष्णदासने यासरीरसों श्रीगुसांईजीकी अवीज्ञा करी है जो यह शरीर अलौकिकिक जीव भुगतनों हो सो कूआमें गिरतमात्र कृष्णदासको शरीरलौकिक सब होयकें पूछरीकी ओर एक कृष्ण है पोपरकौ तहां प्रेत होयकें रह्यौ भोग भुगतनकों ताते कृष्णदासको शरीरकूं आमें न मिल्यौ श्रीगुसांईजीकी अवीज्ञाते कृष्णदासकी यह गति भई जो प्रेत होयकें पूछरीकी ओर पीपरके वृक्षऊपर बैठे रहत हैं ॥ प्रसंग ॥ ८ ॥

और एक समय श्रीनाथजीकी भैंसि खोयगई हुती सो गोपीनाथ ग्वाल और चार पांच ग्वाल पूछरीकी ओर ढूंढवेकों गये हुते सो गोपीनाथ देखें तो पूछरीकी ओर श्रीनाथजी खेलत है और एक पीपरऊपर कृष्णदास प्रेतह्वैके बैठे हैं तब कृष्ण दासने गोपीनाथ ग्वालसों कही जो अरे भैया मेरी बीनती श्रीगुसांईजीसों करियो और कहियो जो कृष्णदासने कह्यौ है जो हों तुम्हारो अपराधी हो ताते मेरी यह अवस्था है हूं श्रीनाथजीके पास हूंतो मेरी गति होत

नाहीं ताते मेरौ अपराध क्षमा करौ तो मेरी गति होय और बागमें एक आमके वृक्षके नीचे कूलहरामें एकसौ रुपैया गडे हैं सो काढिकें वा कूआको मठोठा बाकी रह्यौ है सो बनवाओ तो मेरी गति होय सो गोपीनाथग्वालनें यह बात श्रीगुसांईजीके आगें कही जो महाराज कृष्णदास अधिकारीने यह वीनती करी है तब श्रीगुसांईजीने आमके नीचेते रुपैया लायकें मठोठा कूआको बन वायौ तब कृष्णदासकी गति भइ कृष्णदासकों प्रेत जोनमें श्रीनाथजी दर्शन देते ताकौ कारन यह जो श्रीनाथजीकें सन्निधान श्रीगुसांईजीने कृष्णदाससों कह्यौ जो कृष्णदास तुम अधिकार करों श्रीनाथजीकी सेवा नीकी भांतिसों करियो तब कृष्णदासने कह्यौ महाराज मेरौ अपराध क्षमा करौ तब श्रीगुसांईजीने कह्यौ जो तुम्हारौ अपराध श्रीनाथजी क्षमा करेगे सो श्रीनाथजीकी कृपाते श्रीनाथजी अपराध क्षमा कर्यौ सो प्रेत जोनमें दर्शन देते परि स्पर्श न कीयौ जो स्पर्श होयतो उद्धार होय सो उद्धार तौ श्रीगुसांईजीके हाथ है कृष्णदास श्रीनाथजीसों कहते जो महाराज तुम मोकों दर्शन देत हौं मोसों बोलतहो और मैं प्रेतहौं ताते मेरो उद्धार क्यों नाहीं करत तब श्रीनाथजीने कह्यौ जोहूं तोकों दर्शन देतहौं बोलत हौं सोतौ श्रीगुसांईजीके वचनके लिये नाहीं तो प्रेतजोनमें दर्शन नाहीं देतौ और बोलतोहू नाहीं और उद्धारतौ श्रीगुसांई-

जीके हाथ है तेने श्रीगुसांईजीको अपराध कीयौ है वाते श्रीगुसांईजी उद्धार करेंगे तब होयगो ता पाछें श्रीगुसांईजी आप परम कृपाल कृष्णदासके ऊपर दया आई जो अबतौ बहुत दिन भये हैं ताते अब उद्धार होयतौ भलौ तब श्रीगुसांईजी वघाधुट ऊपर आयकें कृष्णदासको करम करवाय उद्धार कीयौ तब कृष्णदासको उद्धार भयौ और लीलामें प्राप्ति भयौ और श्रीगुसांईजी कहें जो कृष्णदासने तीन बात अछी करी एकतौ अधिकार कीयौ सो ऐसो कियो जो फेरि ऐसो न करौ दूसरे कीर्तन किये सो अद्भुत कीये और तीसरे श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक होयकें सेवाहू ऐसी करी जो कोऊ न करेगौ ताते वे कृष्णदास श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ताको पार नाहीं ताने इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ प्रसंग ॥ ९ ॥ वैष्णव ॥ ९२ ॥

इति श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक परम कृपापात्र
चौरासी मुख्य वैष्णवनकी वार्ता सम्पूर्ण ॥

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS